समर्पण

दाम्पत्य जीवन को सुखमय
बनाने वाले और नारी जीवन
के महत्व को समझने वाले तथा
गृहस्थाश्रम को स्वर्ग-सुखका अनुभव
करने की अभिलाषा रखने वाले,
आरोग्यता और दीर्घजीवन तथा
उत्तम सन्तान के इच्छुक दम्पतियों
के कर कमलों में यह तुच्छ भेंट
सादर सप्रेम समर्पित है।

यशोदादेवी

इस पुस्तक में

चित्र सूची

चित्र सूची

—:o:—

विषय		पृष्ठ

पहला अध्याय

आनन्द मन्दिर

दूसरा अध्याय

स्त्री पुरुष सम्बन्ध

तीसरा अध्याय

ऋतुचर्या

आवश्यक सूचना

चौथा अध्याय

पाँचवा अध्याय

छठा अध्याय

सातवां अध्याय

आठवां अध्याय

नवां अध्याय

दसवां अध्याय

ग्यारहवां अध्याय

बारहवाँ अध्याय

तेरहवां अध्याय

चौदहवां अध्याय

पन्द्रहवां अध्याय

सोलहवाँ अध्याय

सत्रहवां अध्याय

अठारहवां अध्याय

उन्नीसवाँ अध्याय

बीसवाँ अध्याय

यमराज की कचेहरी

भूल सुधार

पाठक इस तरह सुधार कर पढ़ें

अशुद्ध	शुद्ध
पृष्ठ ९१ मे—	
एकादशी को कपोल मे	एकादशी को गले मे
द्वादशी को गले मे	द्वादशी को गालो मे
तेरस को गाल मे	तेरस को होठ मे
पृष्ठ २६३ पक्ति १६ मे	
वाद स्खलित होगी	पहले स्खलित होगी
चित्र पृष्ठ १९६ मे	
वर्षा वहार पृ० १९१	वर्षा वहार पृ० १२२

कही कही कुछ प्रूफ की और भी भूले रह गई है पाठक क्षमा करे। अगले संस्करण मे ठीक कर दी जायगी।

शम्भु स्वयम्भु हरयो हरिणेक्षणानाम् ।
येनाक्रियन्तसततं गृहकर्मदासाः ॥
वाचामगोचर चरित्र विचित्रताय ।
तस्मै नमो भगवते कुसुमायुधाय ॥ (भर्तृहरि)

जिसने अपने कर्त्तव्य से शिव ब्रह्मा और विष्णु को भी स्त्रियो के प्रेम के कारण गृहकार्य करने के लिये दास बना रक्खा है और जो विचित्र चरित्र मे परम चतुर और विलक्षण है। जिसकी चतुरता का वर्णन नही हो सकता ऐसे भगवान कामदेव को बारम्बार नमस्कार है।

कुसुमायुधधारी कामदेव की महिमा अपार है जिस समय वह अपना प्रचण्ड वेग धारण करता है उस समय देवताओं तक की बुद्धि ठिकाने नही रहती वे भी विषयान्ध हो जाते हैं।

जब जब कामदेव ने अपना उग्ररूप धारण किया तो बड़े बडे योगी और तपस्वी भी उसके वश मे हो गये साधारण पुरुषो की क्या गिनती है। जो महात्मा विश्व को ब्रह्ममय देखते थे वे उसे स्त्रीमय देखने लगे। कभी कभी कामदेव ने देवताओं तक को वह कौतुक दिखलाया कि तमाम ससार काममय हो गया। इससे जाना जासकता है कि—

जब ऐसे ऐसे बलवान् और ज्ञानवान् देवताओ तपस्वियों महर्षियो और योगिराजो तथा विद्वानो तक को कामदेव ने नाच नचा दिया और उन्हे स्त्रियो का दास बना दिया तो साधारण मनुष्यो की क्या गिनती है।

स्त्रिया प्रत्यक्ष रति का स्वरूप और सृष्टि की उन्नति का मूल कारण है, उन्ही के द्वारा मनुष्य मात्र की उत्पत्ति होती है इसीलिये विधि ने उनमे सौन्दर्य की विशेषता रक्खी है। उनके अग अग मे लावण्यता और मोहकता टपकती है। उनमें वह आकर्षण होता है जिसकी शक्ति चुम्बक से भी अधिक होती है।

स्त्रीमुद्रां झषकेतनस्य जननीं सर्वार्थसम्पत्करीं।
येमूढाः प्रविहाययांति कुधियोमिथ्याफलान्वेषिणः।

अर्थात् स्त्रियां कामदेव की मुद्रा है, वे सब अर्थ और सम्पत्ति की करने वाली हैं जो मूढ़ कुबुद्धि उन्हे छोड़कर स्वर्गादि की इच्छा से निकल भागते हैं वे मिथ्याफल के खोजने वाले हैं।

जिस नारी जाति को आज पुरुष उपेक्षा की दृष्टि से देखते हैं उसकी महिमा शास्त्रकारों ने मुक्त कंठ से गाई है।

नारी महिमा

द्रष्टव्येषु किमुत्तमं मृगदृशां प्रेमप्रसन्नं मुखं।
घ्रातव्येष्वपि किं तदास्य पवनः श्राव्येषु किं तद्वचः॥
किं स्वाद्येषु तदोष्ठपल्लवरसः स्पृश्येषु किं तत्तनु-
र्ध्येयं किं नवयौवनं सुहृदयैः सर्वत्र तद्विभ्रमः॥

मनुष्यों के देखने योग्य वस्तुओं मे उत्तम वस्तु क्या है ? मृग-नयनी स्त्रियों का प्रेम से प्रसन्न वदन (मुख), सूंघने की वस्तु में उनके मुख की भाफ. सुनने मे मधुरवाणी, स्वादिष्ट वस्तु में उनके अधर पल्लव (ओठो) का रस. स्पर्श की वस्तु मे उनका कोमल शरीर और ध्यान करने के योग्य उनका यौवन और विलास है।

स्वपर प्रतार कोऽसौ निन्दति,
योलीक पण्डितो युवतीः।
यस्मात्तपसोऽपि फलं स्वर्ग-
स्तस्यापि फलं तथाप्सरसः॥

जो स्त्रियों की बुराई करता है वह झूठा पण्डित है, आप तो ठगा ही गया, औरो को भी ठगाता है क्योंकि तपस्या का फल स्वर्ग है और स्वर्ग का फल स्त्री भोग है। अर्थात् स्वर्ग भोग से भी बढ़कर आनन्द दायक पत्नी का प्रेम है।

सती और शिव का दाम्पत्य प्रेम

यदि स्त्री के प्रेम मे इतना प्रभाव न होता तो शिव और श्रीकृष्ण आदि तक इसप्रकार स्त्री के प्रेम मे मग्न न होते। देवता और बड़े बडे महर्षि तक स्त्रियों का आदर करते थे उनके प्रेम बन्धन मे बधे हुए थे। पढ़िये शिव जी के पत्नी मोह की कथा।

सती राजा दक्ष प्रजापतिकी कन्या थीं इनकी सुन्दरता संसार मे विख्यात थी। सती का विवाह शिव जी के साथ हुआ था, विवाह के पश्चात् सती कैलाशपति शिव जी के यहां आकर बड़े आनन्द से रहने लगी।

यद्यपि शिवजी के यहां किसी बात की कमी न थी परन्तु सती के शरीर पर गेरुए कपड़े और आभूषणों की जगह गले में रुद्राक्ष की माला, हाथों में भी रुद्राक्ष के आभूषण सौन्दर्य की शोभा बढा रहे थे। शिवजी और सती मे इतना अधिक प्रेम था कि एक दूसरे से क्षण भर को भी अलग न होते थे।

एक बार सती के पिता ने बड़ा भारी यज्ञ किया जिसमे भारत वर्ष भर के धनी निर्धन मूर्ख विद्वान सभी को निमंत्रण दिया परन्तु अपनी प्यारी पुत्री सती और उनके पति शिवजी को नहीं बुलाया। जब सती को यह बात नारद जी से मालूम हुई और यज्ञ का दिन निकट आगया तब एक दिन सती ने अपने पति शिवजी से पिता के यहाँ जाने की आज्ञा मांगी। शिवजी ने कहा बिना बुलाए पिता के यहाँ किसी ऐसे उत्सव मे जाना उचित नही है क्योंकि उन्होने समस्त देश के मनुष्यो को निमंत्रण भेजा

श्रीकृष्ण जी का दाम्पत्य-प्रेम (सर्वाधिकार सुरक्षित)

है परन्तु हमारा तुम्हारा नाम भी नहीं लिया। यों साधारण समय में तुम जाना चाहती तो मुझे कोई इनकार न था परन्तु ऐसे समय में न बुलाना हमलोगों का अपमान करना है इस समय यदि तुम बिना बुलाये जाओगी तो तुम्हारा बड़ा अपमान होगा।

तुम्हारे पिता ने हम लोगो का अपमान करने के लिये ही यह यज्ञ किया है ऐसा मेरा ख्याल है। इस कारण बिना बुलाये तुम जाओगी तो तुम्हारा अपमान होगा. तुम्हें पछताना पड़ेगा, तुम्हारा अपमान होने से मेरा अपमान होगा।

सती ने प्रार्थना की कि हे स्वामिन ! पुत्री यदि पिता के यहां बिना बुलाये भी चली जावे तो अपमान नहीं होता क्योंकि पिता का घर भी तो अपना ही घर है। पुत्री के लिये पिता निमत्रण भेजे या न भेजे पुत्री को जाने मे मेरे विचार से तो कुछ अपमान की बात नहीं होनी चाहिये।

इस पर शिवजी ने कहा—इस विषय मे अधिक कहने सुनने की कोई बात नहीं है यदि तुम्हारी इच्छा जाने की ही है तो मैं मना भी नहीं कर सकता चली जाओ। शिवजी की आज्ञा पाकर सती ने पिता के घर जाने की तैय्यारी की। जब चलने लगी तब शिवजी ने फिर समझाया कि देखो वहां जाकर जो कुछ भी कार्य करना वह बड़े विचार से करना और समय का हर समय ध्यान रखना सब कार्य समय का विचार करके करना।

शिवजी ने सती को समझाया तो खुब परन्तु सती को माता का स्नेह खींच ले गया क्योंकि नारद जी सती से कहगये थे कि

"तुम्हें यज्ञ में तुम्हारे पिता ने नही बुलाया इस लिये तुम्हारी माता ने अन्न जल त्याग दिया है और वे बडी दु:खी हैं"।

नारद जी के कहने के अनुसार सती ने माता का दु:ख सुनकर जाना ही उचित समझा, इस लिये शिवजी की बात पर कुछ विशेष ध्यान नही दिया।

सती अपने पिता के यहा पहुंच गईं। घर में सती की माता अन्न जल त्याग कर सती के लिये दु:खित पडी रो रही थी। माता की यह दशा देखकर सती को भी बडा दु:ख हुआ। माता के निकट जाकर सती ने कहा "माता मैं आगई"।

सती की आवाज माता के कानो मे पहुची और वह सुनते ही उठी, सती को हृदय से लगा लिया, माता पुत्री के स्नेह का प्रेम सागर उमड पडा। दोनों परस्पर हृदय से लगकर रोने लगीं। माता से मिलकर सती ने पिता से मिलने की इच्छा प्रकट की। माता ने कहा—नही! बेटी पिता से इस समय मिलना उचित नही है क्योंकि वे इस समय यज्ञशाला मे हैं। ऐसे समय वहा तुम्हारा जाना मै भला नही समझती।

सती को इस बात का बड़ा दु:ख था कि पिता ने मुझे निमंत्रण क्यो नही दिया इसलिये वह पिता से इस बात का उलाहना देने की धुन मे थी इस कारण उसने एक न सुनी। वह यज्ञशाला मे पिता के पास पहुच गई।

सती को देखकर यज्ञशाला मे बैठे हुए सभी ऋषि मुनि आदिको ने सती को पिता के पास जाने के लिये रास्ता दे दिया

सती ने पिता से जाकर नमस्कार किया फिर चारों ओर देखा तो यज्ञ में सब देवताओं के भाग थे पर शिव जी का भाग न था।

सती को देखते ही राजा दक्ष की आंखें सती के ऊपर क्रोध से लाल होगईं और वे कर्कश स्वर से बोले—सती! तुझे किसने बुलाया, तू यहां किस के बुलाने से आई है?

सती पिता की ऐसी क्रोध युक्त वाणी सुनकर चकित रहगईं उनको ऐसी आशा स्वप्न में भी न थी उनके हृदय में पिता के कठोर वचन बाण की समान लगे और वे दुःखित हो बोलीं "पिता जी मुझे बुलाया तो किसी ने नहीं परन्तु मैं माता पिता के स्नेह के कारण स्वयं चली आई क्योंकि मैंने बहुत दिनों से अपनी प्यारी माता और आपको देखा नहीं था। पिताजी! आपसे मिलने की बहुत दिनों से मेरी उत्कण्ठा थी, मैंने क्या अपराध किया है जो आपने अपनी इस प्यारी पुत्री को भुला दिया"?

"पिताजी! आप चाहे मुझे भुलादें परन्तु मैं आपकी पुत्री हूं आपका जो वात्सल्य प्रेम मुझपर रहा है उसे मैं कभी स्वप्न में भी नहीं भूल सकती।"

सती का इस प्रकार पिता से वार्तालाप सुनकर यज्ञशाला में बैठे हुए सभी ऋषि मुनि बड़े ध्यान और आश्चर्य से सती की ओर देखने लगे जिसका हाथ आहुति देने को उठा था वह वैसा ही रह गया। सभी अपने अपने कार्य को भुलाकर सती की नम्रता भरी मधुर वाणी सुनने लगे।

सती की इस प्रकार की नम्रता युक्त विनय से भी राजा दक्ष पर कुछ प्रभाव नहीं पड़ा। वे सती से कहने लगे—तेरा यह बहाना

मेरे सामने न चलेगा। ऐसा बहाना मैं नही सुन सकता यह उसी निर्लज्ज को सुनाना जिसके साथ तेरा सम्बन्ध हुआ है।

सती ने कहा—पिताजी! आप मुझे जो इच्छा हो कहिये परन्तु आप उन्हे कुछ न कहिये आपके मुह से यह बात शोभा नहीं देती आप मेरे स्वामी को निर्लज्ज बना रहे हैं ऐसे कटु-वाक्य मै सुन नही सकती।

राजा दक्ष ने कहा—मै इसमे असत्य क्या कहता हू, तेरा पति निर्लज्ज तो है ही क्योंकि पागल की समान बाघम्बर धारी अमृत और विष को एक समान समझने वाले को मैंने निर्लज्ज कहा तो इसमे बुराई क्या है।

सती बोली—पिताजी! आप उन्हे चाहे जो समझे मेरे तो वे जीवन सर्वस्व और पूज्य देव है। आप उन्हे ऐसे कटु वाक्य न कहे।

राजा दक्ष को सती की बात सुनकर बड़ा क्रोध आगया और वे अपने क्रोध को न सभाल सके। फिर विशेष क्रोध मे आकर वे सती के पति शिवजी को अनेक कटुवाक्य कहने लगे।

सती ने कहा—पिताजी! आप को इतना क्रोध मेरे ऊपर क्यों आरहा है यदि मुझसे जाने अथवा बिना जाने कोई अपराध हो गया हो तो उसके लिये मैं क्षमा चाहती हू, यदि आप मुझे मेरा वह अपराध जिसपर आप इतने अप्रसन्न है बतला कर उसका प्रायश्चित भी बतलादे तो मै उसे करने को अभी तैयार हूं।

राजा दक्ष के होठ क्रोध से कांपने लगे और नेत्र लाल होगये वे बोले—तेरे अपराध का प्रायश्चित्त तेरी मृत्यु के सिवाय और

केवल विवाहित स्त्री पुरुषों के लिये

दाम्पत्य प्रेम

और

रतिक्रिया का गुप्तरहस्य

लेखिका

आयुर्वेदिक स्त्री चिकित्सा में भारत विख्यात

श्रीमती यशोदादेवी

प्रथमबार] [७॥) साढ़ेसात रु०

मुद्रक व प्रकाशक
पं० श्रीराम शर्मा
स्त्री शिक्षा पुस्तकालय
कर्नलगंज, प्रयाग

बनिता हितैषी प्रेस
कर्नलगंज, इलाहाबाद

सा नारी धर्मभागिनी । पृ० १५

कुछ नहीं होसकता, तेरी मृत्यु से ही उस अधम निर्लज्ज शिवका मेरा सम्बन्ध नष्ट होगा तभी तेरा अपराध क्षमा होगा।

सती को पति के लिये "अधम" शब्द पिता के मुख से सुनकर इतना अधिक दुःख और हृदय को कष्ट हुआ कि वे मरने के तैय्यार होकर पितासे कहने लगीं—पिता जी! यदि आपको मेरे प्राणान्त से ही संतोष हो तो मैं तैय्यार हूं, मेरे मरने से ही आप मेरा अपराध क्षमा करने के अभिलाषी है तो मैं आपकी आज्ञा पालन करने को तैय्यार हूं।

राजा दक्ष के मुंह से एक शब्द भी नहीं निकला। सती यज्ञशाला में पद्मासन लगाकर बैठ गई। अपने गेरुवे कपडो से, जो पहिने थी अपने मुख आदि समस्त शरीर को ढक लिया। बात की बात में सती के शरीर से एक प्रचण्ड अग्नि की लपट निकलकर आकाश में विलीन होगई। इस भयानक दृश्य को देखकर यज्ञशाला के सभी ऋषि मुनि आदि अवाक् रहगये। सबके हृदय दुःख से भर गये। सती के शरीर का अंत होते ही शिवजी के गणो को यह समाचार मालूम हुआ। उन्होंने आकर राजा दक्ष के शरीर को, यज्ञशाला और राजमहल आदि को नष्ट कर दिया।

सती की मृत्यु का दु:खदाई समाचार पाकर शिवजी को अपनी प्रिय पत्नी के विछोह का जो दु:ख हुआ वह लिखकर समझाना कठिन है। सती का अपने पति शिव जी पर जैसा प्रेम था उसकी प्रशंसा करना व्यर्थ है। पाठक पाठिकाये इसी घटना से स्वयं समझले कि पिता के मुंह से पति की निन्दा सुनकर सती ने अपने प्राण त्याग दिये, इससे अधिक प्रेम और क्या हो सकता है।

जिस प्रकार सती अपने प्रिय पति से प्रेम करती थीं उससे कही अधिक शिव जी का प्रेम सती पर था। शिवजी ने ससुर के यहां पहुँच कर राजा दक्ष की यज्ञशाला मे जाकर देखा, हवन कुण्ड से हवन की सुगन्धि की जगह रक्त और मांस जलने की दुर्गन्ध आरही थी। राजा दक्ष का शरीर अनेक टुकडों मे इधर उधर पड़ा हुआ था। राज महलो से हाहाकार की आवाज आरही थी।

शिवजी को अपनी पत्नी सती के मृत शरीर को देखकर बड़ा दु ख हुआ। शिवजी ने अपनी प्यारी पत्नी का मृत शरीर उठाकर अपने कंधे पर रखलिया और सती के शोक में पागल के समान पहाड़ो की कन्दराओ में फिरने लगे। शिवजी को अपनी प्यारी पत्नी सती से इतना स्नेह था कि वे उसके मृत शरीर को छोडना ही नही चाहते थे। मृत शरीर को ही देख देखकर उन्हें कुछ सन्तोष सा होता था।

शिवजी रातदिन सती के मृत शरीर को लिये फिरते थे। ससार के सभी कार्य भूल कर केवल सती के शरीर को खिलाते रहते थे और सती के मुख का दर्शन कर सतोप करते थे। शिवजी के इस प्रकार से रहने से देवताओ को वडी चिता हुई परंतु किसी का साहस नही था कि शिवजी के पास आकर सती के मृत शरीर को शिवजी से अलग कराता। इसलिये सब देवताओ ने सभा करके यह निश्चय किया कि जब तक शिवजी से सती का मृत शरीर अलग न किया जावेगा तब तक शिव जी का चित्त शांत न होगा। इस प्रकार सती के शरीर को देवो ने शस्त्रो से टुकडे टुकड़े कर डाला। सैकड़ो टुकडे करके अनेक स्थानों मे भेज दिया जहां

जहां सती के शरीर के टुकड़े गिरे वहां वहां तीर्थ होगये जो देवी मठ कहे जाते हैं जैसे ज्वालामुखी, देवीगिरनार, विन्ध्यवासिनी देवी आदि। भारतवर्ष भरमें १०८ देवी के प्रसिद्ध मंदिर हैं।

शिव और सती का दाम्पत्य प्रेम भारत के धर्मग्रंथों अर्थात् भारत के प्राचीन इतिहास में प्रसिद्ध है। उसी दिन से सती धर्म अर्थात पातिव्रत धर्म की प्रतिष्ठा की नींव पड़ी। जो स्त्री पति के प्रेम के कारण शरीर त्याग करती है वह सती कही जाती है। और उसकी देश पूजा करता है। भारत की स्त्रियों की पतिभक्ति जगद्विख्यात है। भारत की स्त्रियां अपने पति की निन्दा सुनकर अब भी प्राण त्यागने को तैय्यार होजाती हैं।

पति और पत्नी में कैसा प्रेम होना चाहिये यह भारत के प्राचीन ऋषि मुनियों ने और देवताओं ने प्रत्यक्ष दिखला दिया है। शिवजी का दाम्पत्य प्रेम आदर्श प्रेम है। जबसे पति पत्नी में प्रेम का अभाव हुआ। पुरुष स्त्रियों का अनादर करने लगे और स्त्रियां रोगी हो रोगी सन्तान उत्पन्न करने लगीं। पुरुष स्त्री को केवल विषय वासना की तृप्ति करने तथा विषयाग्नि की शान्ति का यंत्र समझ कर अनियम रति क्रिया करने लगे तब से दाम्पत्य प्रेम और सुख का नाश होगया।

जब से मनगढंत कामशास्त्र कोकशास्त्र आदि की अनेक गन्दी पुस्तकों का प्रचार हुआ है तब से देखा जाता है स्त्रियों और पुरुषों की रोगी संख्या दिन प्रति दिन बढ़ती जाती है और इसी कारण हमारे देश के बालकों की रोगी तथा मृत्यु संख्या अन्य देशों के बालकों की रोगी तथा मृत्यु संख्या से अधिक है।

श्रीकृष्ण जी का दाम्पत्य प्रेम

श्रीकृष्ण को देखिये राधा के प्रेम मे किस प्रकार बंधे हुये थे एकबार जब राधा मानकर के श्रीकृष्ण जी से रूठ गईं तब श्रीकृष्ण जी कहते हैं—

जब मान किया राधा ने, दे रसिक श्याम को झटका।
तब प्रभु ने उनके पद पर, था मोर मुकुट को पटका॥
मैं महा रंक हूं प्यारी! तुम विश्व सम्पदा सारी।
मैं रस लोभी मधुकर हूं, तुम हो नन्दन की क्यारी॥
है नारी सुख जीवन का, है यही स्वर्ग इस तन का।
जो मूर्ख नारि को तजकर, लेते है रास्ता बन का॥
नहिं स्वर्ग दूसरा बढकर, कहते हैं कृष्ण सुन राधे!
जो नारि बिना जीते हैं, वे हैं नर बड़े अभागे॥

श्रीकृष्णचन्द्र और राधिकाजी का प्रेम प्रसिद्ध है। श्रीकृष्ण चन्द्र जितने स्त्री-प्रेमी थे उतने ही ज्ञानी भी थे इस बात को सभी जानते है। श्रीकृष्णजी योगिराज भी थे। राधा कृष्ण तथा सती और शिवजी के चित्र और चरित्र से शिक्षा मिलती है कि पत्नी के प्रेम से बढ़कर स्वर्ग भी नही है।

प्राचीन काल के आदर्श पुरुषो या महान व्यक्तियों के चरित्रो पर आप ध्यान देंगे तो आपको मालूम होगा कि उनका जीवन दाम्पत्य प्रेम से कैसा आनन्दमय था। वे स्त्री के साथ अपने सांसारिक जीवन को स्वर्गीय बना लेते थे और स्त्री के साथ ही आध्यात्मिक जीवन का भी आनन्द लाभ करते थे। इसीलिये सभी ने दाम्पत्य प्रेम को स्वर्गीय सुख बतलाया है और उसकी प्रशंसा की है।

दाम्पत्य प्रेम और स्वर्ग

दाम्पत्य प्रेम संसार का वह दुर्लभ पदार्थ है जिसको चाहना साधारण पुरुषों से लगाकर देवता तक करते हैं। दाम्पत्य प्रेम के सुख से अधिक सुख स्वर्ग में भी नहीं है। शास्त्रकारों ने बतलाया है।

स्वर्गेऽपि दुर्लभं ह्येतदनुरागः परस्परम् ।
रक्त एको विरक्तोऽन्यस्तस्मात्कष्टतरं नु किम् ॥

अर्थात् पति पत्नी का पारस्परिक प्रेम स्वर्ग का भी दुर्लभ पदार्थ है किन्तु एक के अनुरक्त और दूसरे के विरक्त होने पर इसकी अपेक्षा कष्टकर और क्या होसकता है। भाव यह है कि पति पत्नी में प्रेम न हो, एक दूसरे के विरुद्ध इच्छा वाला हो तो इसकी बराबर इस जन्म में दूसरा कोई दुःख और कष्ट भी नहीं है।

शास्त्रों के इन वाक्यों का प्रत्यक्ष उदाहरण घर घर देखा जाता है। पति पत्नी में कलह बनी रहती है इसका कारण आगे इसी पुस्तक में विस्तार पूर्वक बतलाया जावेगा। पति पत्नी में अनबन रहने से मनुष्य को जीवन भर दुःख और कष्ट भोगने पड़ते हैं। महर्षि मनुजी कहते हैः—

सन्तुष्टो भार्य्यया भर्ता, भर्त्रा भार्य्या तथैव च।
यस्मिन्नेव कुले नित्यं, कल्याणं तत्र वै ध्रुवम् ॥

जिस घर में पति पत्नी परस्पर एक दूसरे से संतुष्ट रहते हैं उस घर में आनन्द और सुख निसन्देह अचल भाव से स्थित रहता है।

देखने मे आता है कि प्राय. पति पत्नी मे अनेक प्रकार की असन्तुष्टता बनी ही रहती है इसका कारण यह है कि पुरुष स्त्री के महत्व को नही समझता इस कारण पति के जो नियम और कर्त्तव्य हैं उनमें सैकड़ा पीछे दो ही चार पति उनका पालन करते होंगे। उन्ही का जीवन स्वर्ग-सुख का अनुभव करता होगा। जो इस ओर ध्यान नही देते वे सुखी कैसे रह सकते है।

याज्ञवल्क्य ऋषि कहते है.—

यत्रानुकूल्यं दम्पत्योस्त्रिवर्गस्तत्र वर्द्धते।

जिस घर मे स्वामी और स्त्री की परस्पर अनुकूलता है उस घर मे धर्म, अर्थ, काम इन तीनो की वृद्धि होती है। अर्थात् पारस्परिक धर्म पालन मे धर्म्म कार्यों की वृद्धि होती है। उस घरमे धर्म्म का वास होता है और धन सम्पत्ति की उन्नति होती है। उत्तम सन्तान उत्पन्न होती है। जिस घर मे पति पत्नी एक दूसरे को सन्तुष्ट नही कर सकते उस घर मे कलह रहती है। धन सम्पत्ति और सन्तान से वह घर दु खी रहता है अर्थात् वे पति पत्नी धन से दुखी और सन्तान से दुखी रहते हैं तात्पर्य यह है कि उस घर में बालक रोगी निर्वल दुर्वल और कम आयु वाले होते हैं। उस घर के मनुष्य धन हीन होते हैं। क्योंकिशास्त्रकारो ने बतलाया है:-

पत्नी मूलं गृहं पुसां यदिछन्दोऽनुवर्तिनी।
गृहाश्रमसमं नास्ति यदि भार्य्या वशानुगा॥

तथा धर्म्मार्थ कामानां त्रिवर्ग फलमश्नुते ।

पत्नी ही गृहस्थाश्रम की जड है । यदि स्त्री पति की इच्छानुगामिनी हो तो गृहस्थाश्रम की तुलना (बराबरी) किसी से भी नहीं हो सकती और स्त्री के सहित पति धर्म, अर्थ, काम, इन तीनों फलों को भोगता है ।

धर्म्म से शुभ कर्म्म, अर्थ से धन सम्पत्ति और काम से उत्तम सन्तान की प्राप्ति होती है ।

अनुकूल कलत्रोयस्तस्य स्वर्ग इहैव हि ।
प्रतिकूल कलत्रस्य नरको नात्रसंशयः ॥

स्त्री के अनुकूल होने पर अर्थात् पति से पत्नी का सच्चा प्रेम और सन्तुष्टता होने पर इसी लोक में स्वर्ग का भोग होता है अर्थात् आनन्द और सुख मिलता है । यदि स्त्री प्रतिकूल हुई अर्थात स्त्री पति में प्रेम न हुआ सन्तुष्टता न हुई तो इस लोक में ही नरक भोग होता है इसमें कुछ भी सन्देह नहीं है । इन दोनो बातों का अनुभव बहुतेरे पति पत्नियो को होगा । वे ही दाम्पत्य प्रेम और परस्पर की सन्तुष्टता का तथा असन्तुष्टता का सुख दुःख समझते होंगे ।

शास्त्रकारों ने बतलाया है कि—

न कामेषु न भोगेषु नैश्वर्य्ये न सुखे तथा ।
स्पृहा यस्या यथा पत्यौ सा नारी धर्म्म भागिनी ॥

जो स्त्री काम, भोग ऐश्वर्य और सुख किसी की भी अभिलाषा नहीं करती केवल स्वामी के प्रेम मे ही सन्तुष्ट है वही स्त्री धर्मलाभ करती है।

यहां देखा जाता है कि शास्त्रकारो के इन वाक्यों से बिलकुल विरुद्ध व्यवहार हो रहा है। सैकड़ा पीछे निन्नानवे पुरुष अधिक विषय, अनियम रतिक्रिया के कारण प्रमेह सुस्ती स्वप्नदोष शीघ्रपात और नपुसकता आदि रोगों मे घिर जाते है जिस के कारण पत्नी को किसी प्रकार भी सन्तुष्ट नही कर सकते। वे पत्नी को भी रोगी बना देते है इसलिये पति पत्नी रोगी सन्तान उत्पन्न कर घर भर की चिकित्सा में धन की बरबादी करते हैं और सुखमय जीवन नष्ट कर देते हैं।

बहुतेरे पुरुष विवाह होने के पहिले ही अनेक प्रकार से वीर्य का सत्यानाश मार बैठते है। जो विवाह होने के पहिले बचे भी रहे वे विवाह होते ही अधिक और अनियम रतिक्रिया करके शक्ति हीन रोगी निर्बल और दुर्बल होजाते हैं तथा स्त्रियो को भी रोगी बना देते हैं इस प्रकार पति पत्नी रोगी हो दुःखमय जीवन व्यतीत करते हैं।

आमदनी कम, खर्च ज्यादा होने के कारण ऐश्वर्य और सुख भोग से भी स्त्रियो की अभिलाषा पूरी नही होती इसलिये सैकड़ा पीछे निन्नानवे दम्पति ऐसे मिलेगे जिनमें उपयुक्त प्रेम नहीं होता इसी कारण गृहस्थी का सुख जैसा चाहिये नहीं मिलता। बल्कि दाम्पत्य जीवन दुखमय हो जाता है।

श्री रामचन्द्रजी का आदर्श प्रेम

पति पत्नी का प्रेम भी स्वर्ग है इस को सभी मनुष्यों ऋषि मुनियों और देवताओं तक ने माना है। सीता और रामचन्द्रजी का दाम्पत्य प्रेम विख्यात है। सीता का प्रेम तो सभी जानते हैं। यहां हम रामचन्द्रजी का प्रेम सचित्र दिखलाते हैं। जब सीता जी को रावण हर कर लंका को ले गया और रामचन्द्र जी मृग का बध करके लौटे तो सीता को कुटी में नहीं पाया। वे व्याकुल हो वहीं बैठकर इसभांति विलाप करने लगे।

ऐ मेरे दिल व जानकी प्यारी कहां है तू।
गजा जनक की राजकुमारी कहा है तू॥
तेरे लिये हूं वन में दुखारी कहा है तू।
दुख मुझपै है वियोग का भारी कहा है तू॥
है तेरे देखने की जो आशा लगी हुई।
आंखों में जानेजार है प्यारी रुकी हुई॥
जङ्गल मुझे उजाड है रौनक थी वन की तू।
कांटों में बनके भी थी कली या चमन की तू॥
हरदेश में रफ़ीक थी मुझ बे वतन की तू।
मेरे शरीके हाल थी रजो मेहन की तू॥
लछिमन शरीके दर्द थे तू गम गुसार थी।
कांटों की सेज पै मुझे फूलों की हार थी॥
थीं नन्हीं नन्हीं कुन्द की कलिया बहार पर।

सुरखी गज़ब की कैसी थी इक इक अनार पर।
जोवन वरस रहा था हर एक आवशार पर।
आलम था चांदनी का अजब सब्जाजार पर॥
भौंरे कमल पै मस्त ममोले थे बनमें खुश।
तती मगन हवा में तो बुलबुल चमन में खुश॥
आवाज प्यारी प्यारी अजब कोकिला की थी।
छवि आह चादनी में किसी महलक़ा की थी॥
हंसो की चाल इक बुते नाजुक अदा की थी।
अठ खेलिया थीं शोखी की वह भी बला की थीं
हर शै को नाज हुस्न पै तेरे करम से था।
फूलों पै आब तुझ गुलेराना के दम से था॥
बन वासियों को तेरे ही दम से करार था।
एक एक हंस चाल पै तेरे निसार था॥
मुखडे से तेरे शब में चाद शर्मसार था।
हाला गले का उतरा हुआ तेरा हार था॥
भौंरे थे शर्मगीं तेरी जुल्फे सियाह से।
घायल हिरन भी थे तेरी तीरे निगाह से॥
जङ्गल में हम सरूद तेरे कोकिला न थी।
तेरी सी मीठी मीठी सुरीली सदा न थी॥
कहदूं सिफत अनार के दानों में क्या न थी।
खुश रंग थे पै दंतों की तेरी जिया न थी॥
सांचे में तू ढली हुई पुतली थी नूर की।

बाइस थी तू ही एक मेरे दिल के सरूर की ॥
सम्बुल में अब है जुल्फे चलीपा की बू नहीं ।
नसरीन में भी कामते जेबा की बू नहीं ॥
फूलों में बनके तुम्हें गुलेराना की बू नहीं ।
कलियां महक रही हैं पै सीता की बू नहीं ।
उजड़ा हुआ पड़ा है मेरा आश्रम बरंग ।
किससे कहूँ मैं जाके हाय अपना गम ददंग ॥
थी जिसके मुंह की चांद सी शोभा किधर गई ।
प्यारी थी जिसकी जुल्फे चलीपा किधर गई ॥
ऐ कासा सारे बनके पखेरू जवाब दो ।
देखा हो तुमने जाते तो आहू जवाब दो ॥
पत्ता भी बन का आह कोई डोलता नहीं ।
भौंरा खमोश फूल पै है बोलता नहीं ॥
तूती भी मुंह में कन्द जरा बोलता नहीं ।
कोई भी मेरे दिल की गिरह खोलता नहीं ॥
सीता का किससे जाके मैं पूछूं निशान हैफ ।
कांटों की हाय भरकी भी चुप है जबान हैफ ॥
जङ्गल की चलने वाली हवाओ जवाब दो ।
सीता को जल्द ढूँढ के आओ जवाब दो ॥
मेरे जिगर की आग बुझाओ जवाब दो ।
तुमही तो तर्स खाओ लताओ जवाब दो ॥
बोलो तुम्हीं तुम्हें तो है पत्तों जबा मिली ।

कुछ तुमको तू ये जानकी ये रस्ते आ मिली ॥

छाई हुई है वन में उदासी शिताव आ ।

प्यारी है मेरे प्राणों की त ला जवाव आ ॥

खूनी जिगर है शाहिदे गुलगू निकाव आ ।

दिलमें निशात आंखो में बनकर हिजाव आ ॥

व्याकुल हूं मैं रमेश तेरे इश्तियाक में ।

जङ्गल की खाक छानूगा तेरे फिराक में ॥

प्राचीन समय मे पति पत्नी में अत्यन्त गाढ प्रेम रहता था। धनी निर्धन राजा महाराजा सभी स्त्रियों के महत्व को समझते थे। जब से लोग अज्ञानता वश विषयांध हो पत्नी के महत्व को भूलकर स्त्री को केवल विषय भोग की मशीन समझकर विपरीति रति करने लगे और विषय की लोलुपता मे अपने शरीर-स्वास्थ्य को भूल गये तो उसका वही निश्चित परिणाम होने लगा कि पति पत्नी दोनों रोगी होने लगे, शक्तिहीन हो रोगी और निर्बल सन्तान उत्पन्न करने लगे इसका परिणाम यह हुआ कि दाम्पत्य जीवन का सच्चा आनन्द और सुख जाता रहा। क्योंकि जब स्त्री पुरुष दोनो रोगी रहते हैं और सन्तान भी रोगी तथा दुर्बल होती है तो हृदय की प्रसन्नता जाती रहती है। प्रसन्नता के नाश हो जाने से दाम्पत्य प्रेम का जो आकर्षण पति पत्नी मे होना चाहिए वह नही रहता, उसका नाश होजाता है। पति पत्नी प्रेम बन्धन मे एक दूसरे से अन्य मनस्क हो जाते हैं।
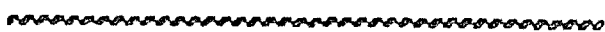
दाम्पत्य प्रेम की अद्भुत कथा

महाराजा रामचन्द्र के बाबा (दशरथ के पिता राजा अज) का विवाह अत्यन्त सुन्दरी राजकन्या इन्दुमती से हुआ था। राजकुमार अज का विवाह कर और उन्हें राजगद्दी देकर राजा अज के पिता रघु ने संन्यास ले लिया परन्तु पुत्र के अत्यन्त विनय और आग्रह करने पर वन को न जाकर वे वहीं एकान्त में कुटी बनाकर रहने लगे और कुछ दिनो से योग समाधि से शरीर त्याग दिया। राजा अज ने बड़ी योग्यता से राज्य किया उनके न्याय और प्रजा प्रेम के कारण प्रजा राजा रघु के मृत्यु शोक को भूल गई।

राजा अज के रानी इन्दुमती के गर्भ से दशरथ नामक पुत्र उत्पन्न हुआ। एक दिन इन्दुमती सहित राजा अज वन विहार करने गया, उसी समय गोकरणनाथ जी को बीना सुनाने के लिये नारद जी आकाश मार्ग से जा रहे थे, पवन के लगने से उनकी वीणा के ऊपर से फूलो की माला उड़कर इन्दुमती के हृदय पर गिरी। रानी उसके लगते ही मर गई।

अभिभूय विभूतिमार्तवीं,
मधु गन्धातिशयेन वीरुधाम्।
नृपतेरमरस्रगाप सा,
दयितोरुस्तनकोटि सुस्थितिम्॥

वह दिव्य माला मधु और गन्ध की अधिकता से लताओं

के ऋतु वैभव का पराभव करके सती इन्दुमती के स्तनों के अग्र-भाग पर गिरी।

क्षणमात्र सखीं सुजातयोः,
स्तनयोस्तामवलोक्य विह्वला।
निमिमील नरोत्तमप्रिया,
हृतचन्द्रा तमसेव कौमुदी॥

सुन्दर स्तनो वाली उस क्षणमात्र सखी को देखते ही राजा अज की प्रिया राहु ग्रसे चन्द्रमा की चांदनी के सामन व्याकुल होकर मर गई।

वपुषा करणोज्झितेन सा,
निपतन्ती पतिमप्यपातयत्।
ननु तैलनिषेक बिन्दुना,
सहदीपार्चिरुपैति मेदिनीम्॥

इन्द्रियो के छोडे हुए शरीर से गिरती हुई उसने पति को भी गिराया, जैसे टपकते हुए तेल की बूंद के संग दीपक की लव भी धरती पर गिर पड़ती है।

अपनी प्राणप्यारी पत्नी इन्दुमती के गिरते ही राजा अज भी मूर्छित हो पृथ्वीपर गिर पडा। राजा की मूर्छा तो सेवको के अनेक उपायो, पखे की वायु आदि से दूर होगई परन्तु रानी इन्दुमती सदैव के लिये मूर्छित हो सोगई।

प्रतियोजयितव्य वल्लकी,

समवस्थामथ सत्व विप्लवात् ।

स निनाय नितान्तवत्सलः,

परिगृह्योचितमंकमङ्गनाम् ॥

तब चेतना दूर होजाने से बिना तार चढ़ी वीणा के समान उस प्रिया को पति प्रेमी ने उठाकर अत्यन्त प्यार से गोदी मे रखा ।

पतिरङ्क निषण्णया तया,

करणापायविभिन्न वर्णया ।

समलक्ष्यत बिभ्रदाविलां,

मृगलेखामुषसीव चन्द्रमाः ॥

पति की गोद मे रक्खी हुई, इन्द्रियो के अभाव से विपरीत रंगवाली (प्यारी) से वह (अज) प्रातःकाल मे मलिन मृगचिन्ह लिये चन्द्रमा के समान दिखाई दिया ।

कुसुमान्यपि गात्रसंगमा-

त्प्रभवन्त्यायुरपोहितुं यदि ।

न भविष्यति हन्त साधनं,

किमिवान्यत्प्रहरिष्यतो विधेः ॥

जब फूल भी शरीर के संग से आयु का नाश करने को समर्थ है तो खेद है कि मारने वाले दैव का साधन और कौन सी वस्तु न होगी।

स्रगियं यदि जीवितापहा,
हृदये किं निहिता न हन्ति माम्
विषमप्यमृतं क्वचिद्भवे-
दमृतं वा विषमीश्वरेच्छया ॥

राजा अज बोला यदि यह माला ही जीवन को नष्ट करनेवाली है तो हृदय पर रक्खी हुई मुझे क्यो नही मारती, कही विष भी अमृत होजाता है और कही अमृत भी विष होजाता है।

अथवा मम भाग्यविप्लवा-
दशनिः कल्पित एष वेधसा।
यदनेन तरुर्न पातितः,
क्षपिता तद्विटपाश्रिता लता ॥

राजा अज फिर कहने लगा, क्या मेरे खोटे भाग्य से विधाता ने इस माला को वज्र कर दिया है जिसने वृक्ष को न मारकर वृक्ष के आश्रित लता का नाश किया।

कृतवत्यपि नावधीरणा-
मपराद्धेऽपि यदा चिरं मयि।

राजा अज और रानी इन्दुमती का दाम्पत्य प्रेम

कथमेकपदे निरागसं,
जनमाभाष्यमिमं न मन्यसे॥

राजा अज पागल की समान उस मरी हुई अपनी प्राण प्यारी से कहने लगा—मेरे बहुत अपराध करने पर भी जब तूने मेरा तिरस्कार नही किया फिर अब एकाएकी अपराध रहित अर्थात् विना अपराध किये ही इस जन (मुझ) को बोलने के योग्य क्यो नही समझती कि मुझसे बोले। इस प्रकार राजा अज अपनी प्राण प्यारी स्त्री के वियोग मे नाना प्रकार से विलाप करते हुए कहता है:—

ध्रुवमस्मि शठः शुचिस्मिते,
विदितः कैतववत्सलस्तव।
परलोकमसंनिवृत्तये,
यदनापृच्छ्य गतासि मामितः॥

हे उज्वल हसने वाली ! तूने निश्चय ही मुझे कपट से प्यार करने वाला शठ जाना इसी कारण मुझसे विना पूछे ही तू फिर न आने के लिये मुझे छोड़कर परलोक को चली गई।

दयितां यदि तावदन्वगा—
द्विनिवृत्तं किमिदं तया विना।

सहतां हतजीवितं मम,
प्रबलामात्मकृतेन वेदनाम् ॥

यह मेरा नष्ट जीवन यदि प्यारी के पीछे चला गया था तो फिर किस निमित्त लौट आया अब अपने कर्मों का प्रबल दुःख सहे।

इन्दुमती के मरते ही राजा अज भी मूर्छित हो गया था परन्तु सेवकों ने पखा आदि उपायो से उसे सचेत किया इसी लिये वह कह रहा है कि मैं तो प्यारी के साथ ही चला गया था फिर क्यों लौट आया।

मनसापि न विप्रिय मया,
कृतपूर्व तव किं जहासि माम्।
ननु शब्दपतिः क्षितेरहं,
त्वयि मे भावनिबन्धना रतिः ॥

राजा अज फिर कहता है—मैंने पहिले कभी मन से भी तेरा अप्रिय कार्य नही किया फिर तू मुझे क्यो त्यागती है, पृथ्वीपति तो मै नाममात्र से हूँ मनकी प्रीति तो तुझ मे ही है।

हे प्राण प्यारी! फूलो से गुथी टेढी काली अलको को कंपाकर वायु मेरे मनको तेरे लौट आने को आशावान बनाती है।

हे प्राणेश्वरी! मेरी बात सुन, रात्रि चन्द्रमा को फिर भी मिलती है, चकवे को चकवी फिर मिलती है इस कारण वह दोनो

बियोग का दुख सहने में समर्थ हैं, सदा के निमित्त गई तू मुझे क्यों न भस्म करेगी। मैं यह दुख किस प्रकार सहूं।

हे हृदयेश्वरी! बोलती क्यों नहीं, इतनी अधिक मुझसे क्यो रूठगई है। तुझे दया नहीं आती, मैं कबसे तुझे बुला रहा हूँ तेरा कोमल शरीर फूलों की शैया पर भी दुखता था। अब बता वह चिता का चढ़ना कैसे सहेगा?

हे प्रिये! तूने आमको और प्रयगुलता को जोड़ माना था। उन दोनों के विवाह मगल को बिना किये तेरा जाना उचित नहीं है।

तेरा प्रफुल्लित किया अशोक जिस पुष्प को उत्पन्न करेगा उस तेरे अलकों के भूषणरूप को मैं तेरी दाह की अजली मे कैसे लगाऊंगा?

ये सखी जन सब दुःख सुख की साथी हैं। द्वितीया के चन्द्रमा की समान तेरा पुत्र है, एक तेरा ही प्रेमी मैं हूँ फिर भी तू मुझ पर दया नही करती, तेरा यह कर्त्तव्य कठोर है।

आज मेरा धीरज नष्ट हुआ, रतिक्रीड़ा मिट गई, गाना गया, ऋतुए उत्सवहीन हुई, गहनो का प्रयोजन समाप्त हुआ, शय्या सूनी हुई।

तू मेरी भार्य्या, बुद्धि देने मे अर्थात् सलाह देने मे सहायक, एकान्त की सखी, गान आदि विद्याओ की अच्छी प्यारी शिष्या थी। तुझे कठोर मृत्यु ने हर कर बता मेरा क्या नही बिगाड़ा अर्थात् सब कुछ हर लिया।

सब प्रकार का ऐश्वर्य (सुख) होने पर भी तेरे विना अज का सुख यही पर आज समाप्त हो गया क्योंकि मेरे सब सुख तेरे ही साथ थे।

इस प्रकार शोक मे ग्रसित कोशलपति अज ने प्यारी स्त्री के निमित्त शोक करके वृक्षो की शाखाओं को उनसे चूते हुए रस के आंसुओ से रुदन कराया अर्थात् अज के विलाप को सुनकर वृक्षो की शाखाओ से भी आसू टपकने लगे।

बड़ी कठिनाई से, अनेक उपायों से राजा अज ने गोद से इन्दुमती को छुडाया और उसी माला से उसका शृंगार कर अगर चन्दन आदि की चिता बनाकर उसकी मृतक्रिया की।

राजा अज को अपनी पत्नी इन्दुमती इतनी प्यारी थी कि वह उसके साथ ही मरने को तैय्यार था परन्तु यह विचार कर कि ससार कहेगा राजा अज विद्वान होकर भी स्त्री के पीछे मर-गया इस कलक के भय से उसने अपने शरीर को अग्नि में न जलाया, कुछ जीने की इच्छा या प्राणो के मोह से नही।

राजा अज को इस प्रकार स्त्री के प्रेम में व्याकुल सुनकर महर्षि वशिष्ठ जी ने अपने शिष्य को राजा अज को समझाने के लिये भेजा क्योंकि वशिष्ट जी यज्ञ कर रहे थे इसलिये स्वयं न जासके। वशिष्ठ जी के शिष्य ने आकर राजा अज को बहुत समझाया परन्तु उसके शोक को दूर न कर सका। बहुत समझाने पर राजा अज ने कह दिया कि ऐसा ही करूगा। यह कह कर अज ने वशिष्ठ के शिष्य को बिदा किया।

राजा अज पत्नी वियोग में चिन्तित रहने लगे और अपने पुत्र दशरथ को बालक समझकर उन्होंने शरीर को रखना (जीवित रहना) उचित समझा। प्यारी स्त्री इन्दुमती का चित्र देखने और उसे स्वप्न में देखकर क्षणमात्र संयोग के आनन्द से जैसे तैसे अज ने आठ वर्ष व्यतीत किये।

राजा अज ने अच्छी प्रकार सिखाये, धनुर्धारी कुमार दशरथ को प्रजा की रक्षण विधि में शास्त्रानुसार उपदेश करके स्वयं अपने शरीर को त्यागने की इच्छा से अन्नखाना छोड दिया।

राजा अज गंगा और सरयू के जलों के संगम तीर्थ में शरीर त्याग कर शीघ्र देवलोक में जा, पहिले शरीर से अधिक शोभायमान सुन्दरी भार्या के साथ फिर नन्दन वन के क्रीडा मन्दिरों में विलास करने लगे।

पिता के स्वर्गवास होने पर दशरथ ने राज्य किया। राजा दशरथ महापराक्रमी यशस्वी धर्मिक उदार और सत्यवादी न्यायी प्रजा पालक राजा हुए।

ऊपर के वर्णनों से इस बात का पता अच्छी तरह चलता है कि वास्तव में दाम्पत्य प्रेम क्या है और उसका कितना महत्व है। साथ ही यह पता चलता है कि दाम्पत्य प्रेम का असर सन्तान पर कितना सुखकर पड़ता है। दाम्पत्य प्रेम में बंधने वालों की ही सन्तान हृष्ट पुष्ट सुन्दर स्वरूपवान और निरोग रहती है। इसलिये नारी जाति के महत्व को समझते हुये प्रत्येक गृहस्थ को सुदृढ़ दाम्पत्य प्रेम रखकर गृहस्थाश्रम का आनन्द लूटना चाहिये।

दाम्पत्य प्रेम का प्रभाव

यह दाम्पत्य प्रेम का ही प्रभाव था कि राजा दशरथ के ही समान उनके पुत्र श्री रामचन्द्र भी हुए और उन के पुत्र लव और कुश भी वैसे ही पराक्रमी तेजवान और कीर्तिवान हुए।

उत्तम सन्तान उत्पन्न करने के लिये पति पत्नी में गाढ़ प्रेम रहना सबसे जरूरी है दाम्पत्य प्रेम स्वर्ग का भी दुर्लभ पदार्थ है।

उत्तम सन्तान की प्राप्ति की इच्छा रखने वाले पति पत्नी दोनो को प्रेम से रहना चाहिये। जिस प्रकार पत्नी के लिये शास्त्रकारों ने पातिव्रत धर्म्म का पालन करना आवश्यक बतलाया है उसी प्रकार पति को भी पत्नीव्रत करना बतलाया है।

दोनो को अपने अपने व्रत पालने से ही उत्तम सन्तान उत्पन्न होती है। जहां पति पत्नी में प्रेम नहीं होता और पत्नीव्रत तथा पतिव्रत का पालन नहीं होता वहां सन्तान भी ठीक नहीं होती। व्यभिचारी तथा विषयी पति की सन्तान भी वैसी ही दुर्गुणों वाली होती है। पर स्त्री गमन करने वाले व्यभिचारी कहे जाते हैं और अपनी स्त्री से नियम विरुद्ध रात दिन विषय करने वाले विषयी कहे जाते हैं। वीर्य को नष्ट करने में दोनों एक ही समान हैं। इस लिये उत्तम सन्तान की इच्छा रखने वाले को नियम पूर्वक केवल अपनी ही स्त्री से प्रेम रखकर रतिक्रिया करनी चाहिये। जिससे सन्तान आरोग्य और दीर्घजीवी हो। दाम्पत्य प्रेम का जो बड़ा भारी प्रभाव सन्तान पर पडता है वह प्रभाव कई पुश्तों तक वैसा

ही बना रहता है। जो अज्ञानी पुरुष स्त्री को विषय वासना की तृप्ति का खिलौना समझते हैं वे बड़ी भारी भूल करते हैं। वे परमात्मा के बनाये नियमों के विरोधी हैं और अपने इस अमूल्य मनुष्य जीवन के शत्रु हैं।

इस समय देश में बहुतेरे लोग ऐसे वर्त्तमान हैं जो स्त्री को केवल विषय वासना की तृप्ति के लिये ही समझकर उसका उचित सत्कार नहीं करते, पैर की जूती समझकर उसका आदर नही करते। परमात्मा ने स्त्री को पुरुषों के जीवन की रक्षा के लिये उत्पन्न किया है। यदि स्त्रियां न होतीं तो यह ससार कुछ भी न था। स्त्री बिना ससार के सभी सुख और ऐश्वर्य निरस और फीके हैं। बल्कि यों कहना चाहिए कि सृष्टि का कारण स्त्री जाति ही है।

स्त्री सृष्टि रूपी वाटिका की सर्वश्रेष्ठ फुलवाड़ी है, फुलवाड़ी ही नहीं सुन्दर सुगन्धित फूल है। स्त्री से ही परमात्मा के रचे हुए इस संसार की शोभा है। जिस घर में सुशीला स्त्री नही है वह घर नरक यातना की समान दु:खदाई है और जिस घरमे स्त्री नही है स्त्री से शून्य वह घर स्मशान से भी भयानक है। स्त्री से ही घर इन्द्रपुरी का सा आनन्द और सुख देने वाला है। इसलिये पुरुषों को यदि दाम्पत्य प्रेम का प्रभाव देखना है। उससे पूरा आनन्द भोगना है तो स्त्री को विषय वासना की तृप्ति की ही मशीन न समझें बल्कि जीवन यात्रा के लिये सर्वश्रेष्ठ सुख देने वाली समझकर वेद शास्त्रों की आज्ञानुसार नियमानुकूल वर्तें।

विवाह का उद्देश्य

स्त्रिया भी कई प्रकार की होती हैं उन स्त्रियों के योग्य पुरुष भी कई प्रकार के होते हैं। किस स्त्री का किस प्रकार का पुरुष होना चाहिये वैसे ही पुरुष से विवाह होने पर दाम्पत्य जीवन का सच्चा आनन्द मिलता है।

यही मिलान विवाह के पहिले देखा जाता है परन्तु जब से इस बात का विशेष ध्यान देना लोगों ने कम करदिया है तब से ही स्त्री पुरुषो मे विषय शक्ति अधिक बढ़गई है। बेमेल विवाह होने से पत्नी पति को प्रसन्न नहीं कर सकती न पति पत्नी को ही सन्तुष्ट कर सकता है इसी कारण सैकडा पीछे पचानवे घरों में अनबन रहती है और पति पत्नी मे कलह मची रहती है।

जिन देशो मे स्त्री पुरुष स्वय अपनी अपनी पसन्द (मेल) की स्त्री और स्त्री अपने मेल का पुरुष देखकर विवाह करते हैं वहा भी भूल होजाने से पति पत्नी में अनबन रहती है और वह अनबन पति पत्नी को अलग करदेती है, पत्नी तलाक देकर पति से अलग हो जाती है। उन देशों मे यह खिलवाड़ सा प्रति दिन हुआ ही करता है।

न निष्क्रयविसर्गाभ्यां भर्त्तुर्भार्य्या विमुच्यते।
एवं धर्म्म विजानीमः प्राक् प्रजापति निर्म्मितम्॥

पति पत्नी का जो सम्बन्ध है, वह दान विक्रय वा त्याग द्वारा भी नष्ट नही हो सकता। यह नियम पूर्व काल से ही विधाता

दाम्पत्य प्रेम की रेखा राजा अज और रानी इन्दुमती (सर्ग १३ ...)
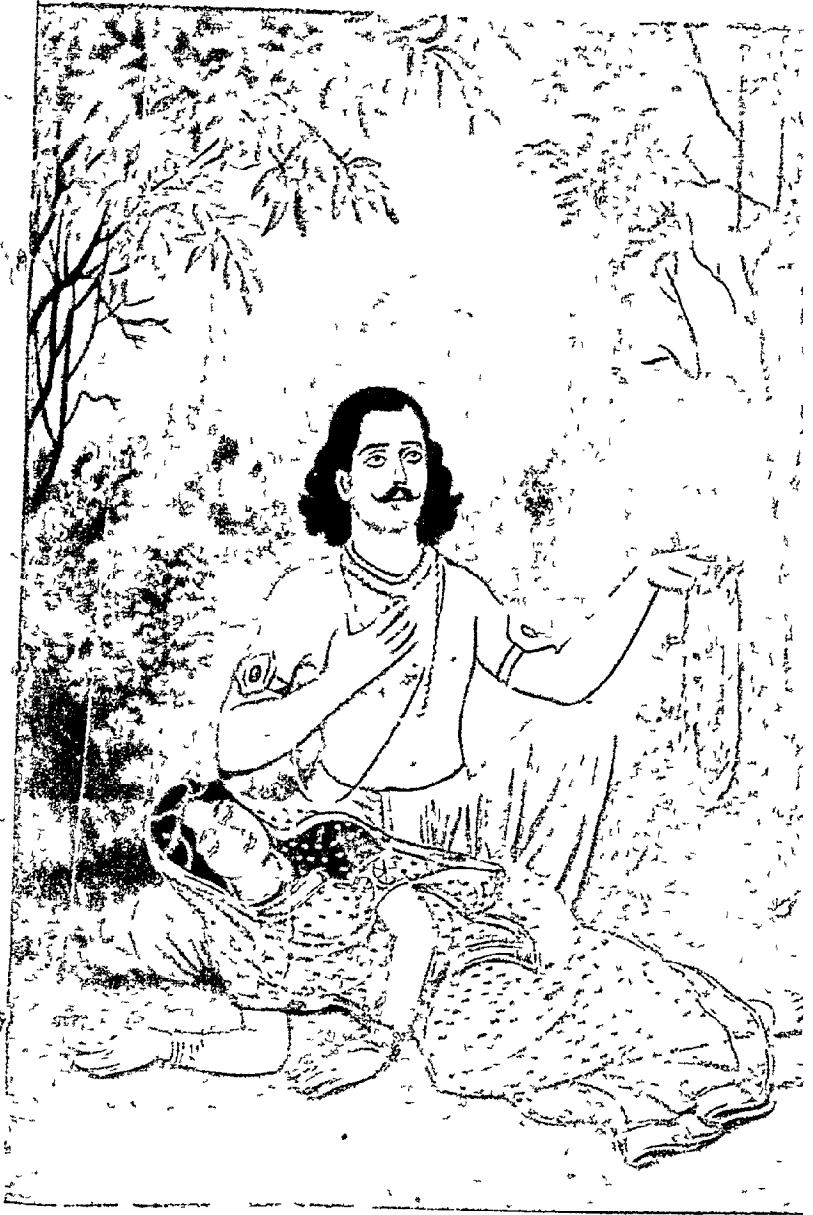
ने बनाया है। मनुसंहिता के अनुसार पति पत्नी का सम्बन्ध जीवन भर का संग है। पति से पत्नी किसी दशा में अलग नहीं हो सकती न त्याग देने से, न बेच देने से, न दान में देने से। इसलिये विवाह का नियम हमारे शास्त्रकारों ने बड़े विचार के साथ रक्खा है परन्तु इस समय इतना विचार किया नहीं जाता। नाई बारी और पुरोहितों की रायपर विवाह होता है, वे इधर की उधर मिलाकर मेल मिला देते हैं परन्तु वह मेल शास्त्रोक्त नहीं होता।

शास्त्रकारों ने बतलाया है:—

सम्यग्धर्म्मार्थकामेषु दम्पतिभ्यामहर्निशम्।
एकचित्ततया भाव्यं समानव्रतवृत्तितः॥ मनु०

धर्म, अर्थ और काम विषय में पति को पत्नी सर्वदा एक मन होना चाहिये। एक मन होने से ही गृहस्थी रूपी गाड़ी ठीक चलती है क्योंकि पति पत्नी उस गाड़ी के दो समान पहिया हैं।

अनृतावृतुकाले च मंत्र संस्कार कृत्पतिः।
सुखस्य नित्यं दातेह परकाले च योषितः॥

मन्त्रादि द्वारा विवाह कर्त्ता स्वामी सब समय में स्त्री को सुखदाता, आनन्द देने वाला होता है केवल इसी काल में नहीं परकाल में भी वह पत्नी को सुखदेने वाला होता है। पढिये विवाह सम्बन्ध में:—

वेद शास्त्रों की आज्ञा

ओं गृभ्णामि ते सौभगत्वाय,
हस्तं मया पत्या जरदष्टिर्यथासः ।
भगो अर्यमा सविता पुरन्धिर्मह्यं,
त्वादुर्गार्हपत्याय देवाः ॥

अर्थात् विवाह के समय वर दुलहिन से कहता है—हे वरानने ! जैसे मैं ऐश्वर्य सुसन्तानादि सौभाग्य की बढ़ती के लिये तेरे हाथ को ग्रहण करता हू वैसे तू मुझ पति के साथ जरा अवस्था (वृद्धावस्था) को सुख पूर्वक प्राप्त हो। पत्नी कहती है—हे वीर ! मैं वृद्धि के लिये आपका हाथ ग्रहण करती हू, आप मुझ पत्नी के सौभाग्य के साथ वृद्धावस्था पर्यन्त प्रसन्न और अनुकूल रहिये। आपको मै और मुझको आप आज से पति पत्नी भाव करके प्राप्त हुए हैं। पति कहता है, सकल ऐश्वर्य युक्त न्यायकारी सब जगत् की उत्पत्ति का कर्त्ता, बहुत प्रकार के जगत् का धर्त्ता परमात्मा और ये सब सभा मण्डप मे बैठे हुए विद्वान लोग गृहस्थाश्रम कर्म के अनुष्ठान के लिये तुझको मुझे देते हैं। आज से मै तुम्हारे हाथ और तुम मेरे हाथ बिक चुके। अब कभी एक दूसरे के प्रति अप्रियाचरण न करेंगे।

ओं भगस्ते हस्तमग्रभीत् सविता हस्तमग्रभीत ।
पत्नी त्वमसि धर्मणाहं गृहपतिस्तव ॥

हे प्रिये । ऐश्वर्य युक्त मैं तेरे हाथ को ग्रहण करता हूं तथा धर्म्म युक्त मार्ग में प्रेरक मैं, तेरे हाथ को ग्रहण कर चुका हूं । तू धर्म से मेरी पत्नी भार्या है और मैं धर्म्म से तेरा गृहपति हूं । हम तुम दोनों मिलकर घरके कामों की सिद्धि करें और जो दोनों का अप्रियाचरण व्यभिचार है उसको कभी न करें जिससे घरके सब काम सिद्ध हों, उत्तम सन्तान, ऐश्वर्य और सुख की सदा वृद्धि होती रहे ।

ममेयमस्तु पोष्यामह्यं त्वादाद् वृहस्पतिः ।
मया पत्या प्रजावति शं जीव शरदः शतम् ॥

हे अनघे ! सब जगत् के पालन करने वाले परमात्मा ने जिस तुझको मुझे दिया है वही तू जगत भर में मेरी पोषण करने योग्य पत्नी हो । तू मुझ पति के साथ सौ शरद ऋतु अर्थात् सौ वर्ष पर्यन्त सुख पूर्वक जीवन धारण कर ।

इसी प्रकार वधू भी वर से प्रतिज्ञा कराती है ।

हे भद्र वीर ! परमेश्वर की कृपा से आप मुझे प्राप्त हुए । मेरे लिये आपके विना इस जगत् में दूसरा पति अर्थात् स्वामी पालन करने वाला और सेव्य इष्टदेव कोई नहीं है, न मैं आपसे अन्य दूसरे किसी को मानूंगी । जैसे आप मेरे सिवाय दूसरी किसी स्त्री से प्रीति न करेंगे वैसे मैं भी किसी दूसरे पुरुष के साथ (कुटिल) प्रीति भाव से वर्त्ताव न करूंगी । आप मेरे साथ सौ वर्ष पर्यंत आनन्द से जीवन व्यतीत कीजिये ।

त्वष्टा वासो व्यदधाच्छुभे कं,
बृहस्पतेः प्रशिषा कवीनाम् ।
तेनेमां नारीं सविता भगश्च,
सूर्यामिव परिधत्तां प्रजया ॥

हे शुभानने ! जैसे इस परमात्मा की सृष्टि में उसकी तथा आप्त विद्वानों की शिक्षा से दम्पती होते हैं, जैसे बिजली सबको व्याप्त हो रही है वैसे तू मेरी प्रसन्नता के लिये सुन्दर वस्त्र और आभूषण तथा मुझसे सुख को प्राप्त हो। इस मेरी और तेरी इच्छा को परमात्मा सिद्ध करे। जैसे सकल जगत् की उत्पत्ति करने वाला परमात्मा, पूर्ण ऐश्वर्य युक्त उत्तम प्रजा (सन्तान) से इस तुच्छ मुझ नर की स्त्री को आच्छादित शोभा युक्त करे वैसे मैं इन सबसे सूर्य की किरण के समान तुझको वस्त्र और भूषणादि से सदा सुशोभित रक्खूगा ।

इन्द्राग्नी द्यावापृथिवी मातरिश्वा,
मित्रावरुणा भगो अश्विनोभा ।
बृहस्पतिर्मरुतो ब्रह्म सोम,
इमां नारीं प्रजया वर्धयन्तु ॥

हे मेरे सम्बन्धी लोगो ! जैसे बिजली और प्रसिद्ध अग्नि सूर्य और भूमि अन्तरिक्षस्थ वायु प्राण और उदान तथा ऐश्वर्य, सद्वैद्य

और मन्त्रीसंरक्षक दोनों श्रेष्ठ, न्यायकारी धर्मी प्रजा का पालन करने वाला राजा, सभ्य मनुष्य, सबमें व्याप्त परमात्मा और चन्द्रमा तथा सोमलतादि ओषधि ये सब प्रजा की वृद्धि और पालन करते हैं वैसे ही इस मेरी स्त्री को तुम भी बढ़ाया करो। जैसे मैं इस स्त्री को प्रजा आदि अर्थात् सन्तान से सदा बढ़ाया करूंगा। इसी प्रकार स्त्री भी प्रतिज्ञा करती है कि मैं भी अपने पति को सदा आनन्द ऐश्वर्य और सन्तान से बढ़ाया करूंगी। जैसे ये दोनों मिलके प्रजा को बढ़ाया करते हैं वैसे हम दोनों मिलके गृहस्था-श्रम के अभ्युदय को बढ़ाया करें।

अहं विष्यामि मयि रूपमस्या,
वेददित्पश्यन्मनसा कुलायम्।
न स्तेयमद्मि मनसोदमुच्ये,
स्वयं श्रन्थानो वरुणस्य पाशान्॥

हे कल्याणी! जैसे मनसे कुलकी वृद्धि को देखता हुआ मैं इस तेरे रूप को प्रीति से प्राप्त और उसमें प्रेम द्वारा व्याप्त होता हूं वैसे ही तू मेरी पत्नी मुझ में प्रेम से व्याप्त होकर अनुकूल व्यवहार को प्राप्त हो। जैसे मैं मन से भी तुझ भार्या के साथ चोरी को छोड़ देता हूं अर्थात्, तुझसे छिपाकर और तेरी इच्छा के विरुद्ध किसी उत्तम पदार्थ का चोरी से भोग न करूंगा, कोई कार्य न करूंगा। मैं पुरुषार्थ से शिथिल होकर भी उत्कृष्ट व्यवहार में विघ्नरूप दुर्व्यसनी पुरुषों के बन्धनों को दूर करता

रहूंगा वैसे ही तू मेरी भार्या भी करती रहे। इसी प्रकार वधू भी कहती है कि मैं भी आपकी इच्छा के विरुद्ध आपका कोई अप्रिय कार्य न करूंगी।

पाठक पाठिकाओ! हमारे देश मे विवाह का लक्ष्य स्त्री पुरुष का प्रेम से रहकर उत्तम सन्तान उत्पन्न करने का है। यही वेद और शास्त्रो में बतलाया है क्योंकि स्त्री पुरुष को परमात्मा ने सृष्टि की उन्नति के ही लिये उत्पन्न किया है।

भारतवर्ष मे विवाह बन्धन पति पत्नी का एक बड़ा भारी बन्धन समझा जाता है और इस बन्धन मे बधे रहकर पति पत्नी प्रेम पूर्वक उत्तम सन्तान उत्पन्न कर मनुष्य जीवन का आनन्द भोगे यही विवाह का लक्ष्य है। जिन देशो मे विवाह बन्धन नही समझा जाता वहा विवाह केवल मन बहलाव के लिये ही किया जाता है और जब पति पत्नी मे कुछ भी अनबन हो जाती है तो पत्नी पति से अपना सम्बन्ध तोड़ देती है। पति का कुछ अधिकार नही रहता। पाश्चात्य देशो मे इस प्रकार की अनेक घटनाये नित्यप्रति हुआ करती हैं।

हमारे देश में पति पत्नी का सम्बन्ध किसी समय किसी प्रकार टूट नही सकता क्योंकि वेद की आज्ञानुसार विवाह के समय पति पत्नी दोनो परस्पर प्रतिज्ञा करते हैं।

ओं मम व्रते ते हृदयं दधामि।
मम चित्तमनुचित्तं ते अस्तु॥

मम वाचमेकमना जुषस्व ।
प्रजापतिष्ट्वा नियुनक्तु मह्यम् ॥

अर्थात पति पत्नी से कहता है—हे वधू ! तेरे अन्तःकरण और आत्मा को मैं अपने कर्म के अनुकूल धारण करता हूँ. मेरे चित्त के अनुकूल तेरा चित्त सदा रहे। मेरी वाणी को तू एकाग्र चित्त से सेवन किया कर। प्रजा का पालन करने वाला परमात्मा तुझको मेरे लिये नियुक्त करे।

इसी प्रकार पत्नी कहती है—हे प्रिय वीर स्वामिन् ! आपका हृदय और आत्मा अपने प्रियाचरण कर्म के अनुकूल धारण करती हूँ। मेरे चित्त के अनुकूल आपका चित्त सदा रहे। आप एकाग्र चित्त होकर मेरी वाणी का, जो कुछ मै आपसे कहूँ उसका सेवन सदा किया करें क्योंकि आज से प्रजापति परमात्मा ने आपको मेरे आधीन किया है जैसे मुझको आपके आधीन किया है अर्थात इस परमात्मा की बताई हुई प्रतिज्ञा के अनुसार दोनों व्यवहार करें जिससे सर्वदा आनन्दित और कीर्तिमान होके सब प्रकार के व्यभिचार अप्रियभाषणादि को छोड़कर परस्पर प्रीतियुक्त रहें।

वेद में परमात्मा की इस आज्ञानुसार प्राचीन समय में सभी भारतवासी चलते रहे हैं तभी आरोग्य और दीर्घजीवी होते थे। सन्तान भी आरोग्य और दीर्घजीवी होती थी। जबसे इन आज्ञाओं का उल्लंघन किया गया तब से दाम्पत्य प्रेम का अभाव

हो गया और पति पत्नी दोनों रोगी हो रोगी और अल्पायु सन्तान उत्पन्न करने लगे। वेद मे आज्ञा है:—

ओं इमां त्वमिन्द्रमीढ्वः सुपुत्रां शुभगां कृणु।
दशास्यां पुत्रनाधेहि पतिमेकादशं कृधि॥

ईश्वर पुरुष और स्त्री को आज्ञा देता है कि हे (मीढ्व) वीर्य सचय करने वाले परमऐश्वर्ययुक्त इस वधू के स्वामिन्! तू इस वधू को उत्तम पुत्र युक्त सुन्दर सौभाग्य भोगवाली कर। इस वधू मे दश पुत्रो को उत्पन्न कर अधिक नहीं। और हे स्त्री! तू भी अधिक कामना मत कर किन्तु दश पुत्र और ग्यारहवां पति को प्राप्त होकर सन्तोष कर। यदि इससे आगे सन्तान की इच्छा करोगे तो तुम्हारे दुष्ट अल्पायु निर्बुद्धि सन्तान होगी और तुम भी अल्पायु और नाना प्रकार के रोगो से ग्रसित हो जाओगे इसलिये अधिक सन्तान उत्पन्न करने की इच्छा न करना इत्यादि।

इससे तात्पर्य यही है कि सन्तान के ही लिये सभोग किया जाना चाहिये और अधिक सन्तान उत्पन्न करने वाले माता पिता और सन्तान दोनो निर्बल दुर्बल और रोगी कम आयु वाले होगे। इस नियम के अनुसार स्त्री पुरुष तथा सन्तान की भी आयु सौ वर्ष से कम न होगी। इसके विषय में भी वेद मे परमात्मा की आज्ञा है।

आरोग्यता और दीर्घ जीवन (१०० वर्ष आयु) प्राप्त कर,

शास्त्रकार और स्त्रियाँ

उत्तम, आरोग्य और दीर्घ जीवी सन्तान उत्पन्न होने के विषय में वेद की आज्ञा है.—

सोमो वधूयुरभवदश्विनास्तामुभा वरा ।

सूर्या यत्पत्ये शंसन्तीं मनसा सविता ददात् ॥

अर्थात्—सुकुमार शुभ गुण युक्त वधू (पत्नी) की इच्छा करनेवाला पति तथा पति की कामना करने वाली भार्या, दोनो ब्रह्मचर्य से विद्या प्राप्त करे और दोनो श्रेष्ठ समान गुण कर्म स्वभाव वाले हों ऐसी जो सूर्य की किरणवत सौन्दर्य गुण युक्त पति के लिये मन से गुणकीर्तन करने वाली पत्नी है उसको पुरुष और इसी प्रकार के पुरुष को स्त्री सकल जगत का उत्पन्न करने वाला परमात्मा देता है अर्थात् बड़े भाग्य से दोनो स्त्री पुरुष का, जोकि बराबर गुण कर्म स्वभाव वाला हो, जोड़ा मिलता है । परमात्मा कहता है.—

इहैव स्तं मा वियौष्टं विश्वमायुर्व्यश्नुतम् ।

क्रीडन्तौ पुत्रैर्नप्तृभिर्मोदमानौ स्वस्तकौ ॥

अर्थात्-हे स्त्री और पुरुष ! मै परमेश्वर आज्ञा देता हूं कि जो तुम्हारे लिये पहिले विवाह मे प्रतिज्ञा हो चुकी है जिसको तुम दोनों ने स्वीकार किया है उसी मे तत्पर रहो, उसी के अनुसार चलो और वर्ताव करो । प्रतिज्ञा से विरुद्ध मत होओ । कोई कार्य प्रतिज्ञा के वाहर मत करो ।

ऋतुगामी होके वीर्य का अधिक शासन करके सम्पूर्ण आयु जो १०० सौ वर्ष से कम नहीं है उसको प्राप्त होओ। पूर्वोक्त धर्म रीति से पुत्रो और नातियों के साथ क्रीड़ा करते हुये उत्तम गृहवाले आनन्दित होकर गृहस्थाश्रम मे प्रीति पूर्वक वास करो। यजुर्वेद अध्याय ४० मंत्र २ मे ईश्वर की आज्ञा है:-

कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतँ समाः।
एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे॥

अर्थात्—मैं परमात्मा सब मनुष्यो के लिये आज्ञा देता हूं कि प्रत्येक मनुष्य इस ससार मे शरीर से समर्थ होके सत्कर्मो को करता ही करता १०० एक सौ वर्ष पर्यन्त जीने की इच्छा करे। आलसी और प्रमादी कभी न होवे। इस प्रकार उत्तम कर्म करते हुये तुम (मनुष्य) मे इस हेतु से उलटा पन रूप दुःखद कर्म लिप्यमान कभी नही होगा और तुम पापरूप कर्म मे लिप्त कभी मत होओ। इस उत्तम कर्म से कुछ भी दु.ख नही होता इसलिये तुम स्त्री पुरुष सदा पुरुषार्थी होकर उत्तम कर्मो से अपनी और दूसरो की सदा उन्नति किया करो ।

इन वेद मंत्रो से स्पष्ट है कि यदि मनुष्य नियम पूर्वक रहे अच्छे कर्म करता हुआ रहे तो एक सौ वर्ष से कम आयु न हो बल्कि इससे भी अधिक हो सकती है ।

प्राय. लोग कहा करते हैं कि कलियुग मे मनुष्य की अवस्था एक सौ वर्ष की होती है। इसी वेद मन्त्र के अनुसार नियम पर चलने वाले, अपनी आरोग्यता का ध्यान रखने वाले प्रायः

अब भी एक सौ वर्ष से अधिक की आयुवाले देखने मे आते हैं। एक सौ वर्ष के लगभग आयु वाले तो अनेको देखे जाते हैं और उनकी सन्तान भी हृष्ट पुष्ट और आरोग्य देखी जाती है।

वेद आयुर्वेद और धर्म्मशास्त्र सभी से यह बात साबित होती है कि विवाह का लक्ष्य उत्तम सन्तान उत्पन्न कर दीर्घजीवी हो मनुष्य जीवन का सच्चा आनन्द और सुख भोगना है परन्तु अज्ञानता और भूल से विवाह होते ही पुरुष विषय-वासना की तृप्ति की इच्छा से, आनन्द की इच्छा से सन्तान की इच्छा से नहीं, स्त्री संभोग मे लिप्त होकर शक्तिहीन निर्बल दुर्बल और अल्पायु होते हैं। इससे यह भी मालूम होता है कि पुरुषों ने विवाह का लक्ष्य केवल विषय भोग ही समझ रक्खा है दाम्पत्य प्रेम या सन्तान उत्पत्ति नही।

भारत वर्ष मे इस समय अधिकांश मनुष्य प्रायः ऐसे हैं जो स्त्री संभोग केवल विषयानन्द के लिये ही करते है। एक सन्तान उत्पन्न होने के बाद तो विरले ही पुरुष दूसरी सन्तान की इच्छा से स्त्री संभोग करते है। उनका संभोग केवल क्षणिक आनन्द का कारण होता है। कितने ही पुरुष ऐसे देखे जाते है जिन को अपनी स्त्री में गर्भ रह जाने से आन्तरिक कष्ट होता है क्योंकि गर्भावस्था में उन्हे मजबूरन यदि पूरे नौमास के लिये नहीं तो एकाध मास के लिये तो संभोग छोडना ही पड़ता है। परन्तु शास्त्रानुकूल विवाह का यह सच्चा लक्ष्य नही है और न इससे मनुष्य जीवन की सफलता ही है।

दाम्पत्य प्रेम का अभाव

दाम्पत्य प्रेम का भी यही हाल है कि पुरुष ने स्त्री को केवल विषय भोग के ही लिये समझ रक्खा है इसलिये जैसा चाहिये स्त्री पुरुष को वैसे दाम्पत्य प्रेम का आनन्द नहीं मिलता। इसी कारण सन्तान भी रोगी निर्बल दुर्बल और कम आयुवाली होती है।

दाम्पत्य प्रेम के विषय मे भी यहां वेद और शास्त्रो का मत बतलाया जाता है। वेद मे परमात्मा आज्ञा देता है—

देवा अग्रे न्यपद्यन्त पत्नीः,
समस्पृशन्त तन्वस्तनूभिः ॥
सूर्येव नारि विश्वरूपा महित्वा,
प्रजावती पत्या संभवेह ॥

हे सौभाग्यवती स्त्री! तू इस गृहाश्रम मे, प्रथम जैसे विद्वान् लोग उत्तम स्त्रियो को प्राप्त होते है और शरीरों से शरीरो को स्पर्श करते है वैसे विविध सुन्दर रूप को धारण करने वाली सत्कार को प्राप्त होकर सूर्य की कान्ति के समान अपने स्वामी के साथ मिलके उत्तम सन्तान उत्पन्न करने वाली हो।

संपितरावृत्विये सृजेथां,
माता पिता च रेतसो भवाथः।

मर्य इव योषामधिरोहयैनां,
प्रजां कृण्वाथामिह पुष्यतं रयिम् ॥

अर्थात्—हे स्त्री पुरुषो ! तुम बालकों के उत्पन्न करने वाले ऋतु समय में सन्तानों को अच्छे प्रकार उत्पन्न करो। माता और पिता दोनों वीर्य को मिलाकर गर्भाधान करने वाले हों। हे पुरुष! इस अपनी स्त्री को प्राप्त होने वाले पति के समान सन्तानों से बढ़ो और दोनों इस गृहाश्रम में प्रेम पूर्वक मिलकर सन्तान को उत्पन्न करो और पालन पोषण करो तथा पुरुषार्थ से धन को प्राप्त करो।

तां पूषञ्छिवतमामेरयस्व,
यस्यां बीजं मनुष्या वपन्ति।
या न ऊरू उशती विश्रयाति,
यस्यामुशन्तः प्रहरेम शेपः ॥

अर्थात्—हे वृद्धिकारक पुरुष! जिसमें मनुष्य लोग वीर्य को बोते हैं। जो हमारी कामना करती हुई ऊरू को विशेष सुन्दरता से आश्रित करती है। जिसमें सन्तानों की कामना करते हुए हम उपस्थेन्द्रिय का प्रहरण करते हैं उस अतिशय कल्याण करने हारी स्त्री को सन्तान उत्पत्ति के लिये प्रेम से प्रेरणा कर।

हे स्त्री और पुरुष! जैसे सूर्य सुन्दर प्रकाशयुक्त प्रभात वेला में प्राप्त होता है वैसे ही सुख से घरके मध्य में सन्तान उत्पत्ति

की क्रिया को अच्छे प्रकार जानने वाले, सदा हास्य और आनन्द युक्त बड़े प्रेम से अत्यन्त प्रसन्न हुए उत्तम चाल चलनवाले, धर्मयुक्त व्यवहार में अच्छे प्रकार चलने वाले, उत्तम पुत्र वाले, श्रेष्ठ गृहादि सामग्री युक्त उत्तम प्रकार जीवों को धारण करते हुए गृहस्थाश्रम के व्यवहारों को पूर्ण करो।

इहेमाविन्द्र संनुद चक्रवाकेव दम्पती।
प्रजयै नौ स्वस्तकौ विश्वमायुर्व्यश्नुताम् ॥

अर्थात्—हे इन्द्र! परमैश्वर्य युक्त विद्वान्! आप संसार में इन स्त्री पुरुषों को समय पर विवाह करने की आज्ञा दीजिये और ऐसी व्यवस्था दीजिये कि जिससे ब्रह्मचर्य पूर्वक शिक्षा को पाकर दम्पति (पति और पत्नी) चकवा चकवी के समान एक दूसरे से प्रेमबद्ध रहें अर्थात प्रेम में बंधे रहें (एक दूसरे के विरुद्ध आचरण न करें) और गर्भाधान विधि से उत्पन्न हुई सन्तान से ये दोनों सुखी होकर सम्पूर्ण १०० वर्ष पर्यन्त आयु को पावें।

प्रबुध्यस्व सुबुधा बुध्यमाना,
दीर्घायुत्वाय शतशारदाय।
गृहान् गच्छ गृहपत्नी यथासो,
दीर्घं त आयुः सविता कृणोतु ॥

हे पत्नी! तू (शतशारदाय) सौ वर्ष पर्यन्त दीर्घ काल जीने के लिये उत्तम बुद्धि युक्त सज्ञान हो मेरे घर को प्राप्त हो और

मुझ घर के स्वामी की स्त्री, जैसे तेरा दीर्घकाल पर्यन्त जीवन हो। वैसे ही उत्तम ज्ञान और उत्तम व्यवहार को यथावत जान, अपनी आशा को सब जगत् की उत्पत्ति और सम्पूर्ण ऐश्वर्य का देनेवाला परमात्मा कृपा से सदा सिद्ध करे जिससे तू और मैं सदा उन्नतिशील होकर आनन्द में रहें।

सहृदयं सांमनस्यमविद्वेषं कृणोमि वः।
अन्यो अन्यमभिहर्यतवत्सं जातमिवाघ्न्या॥

ईश्वर आज्ञा देता है—

हे गृहस्थो! मैं ईश्वर तुमको जैसी आज्ञा देता हूँ वैसा ही करो जिससे तुमको अक्षय सुख हो अर्थात् जैसी अपने लिये सुख की इच्छा करते और दुःख नहीं चाहते हो वैसे ही पिता माता सन्तान स्त्री पुरुष दास मित्र पड़ोसी और अन्य सबसे समान हृदय से रहो। मनसे सम्यक प्रसन्नता और वैर विरोधादि रहित व्यवहार को तुम्हारे लिये स्थिर करता हूं।

जैसे उत्पन्न हुये बछडे पर गाय प्रेम से वर्त्तती है वात्सल्य-भाव रखती है तुम भी एक दूसरे से प्रेम पूर्वक कामना से वैसा ही वर्त्ताव करो।

सन्तुष्टो भार्यया भर्त्ता भर्त्रा भार्या तथैवच।
यस्मिन्नेव कुले नित्यं कल्याणं तत्र वै ध्रुवम्॥

हे गृहस्थो! जिस कुल मे पत्नी से पति और पति से पत्नी

सदा प्रसन्न रहते हैं उसी कुल में निश्चित कल्याण होता है और जिसमें दोनों परस्पर अप्रसन्न रहते हैं उस कुल में नित्य कलह वास करता है जैसा कि आजकल प्राय पति पत्नी मे कलह रहा करती है।

यदि हि स्त्री न रोचेत पुमांसं न प्रमोदयेत् ।
अप्रमोदात् पुनः पुंसः प्रजनं न प्रवर्त्तते ॥

यदि स्त्री पुरुष पर रुचि न रक्खे या पुरुष को प्रसन्न न करे तो अप्रसन्नता से पुरुष के शरीर में कामोत्पत्ति भली भांति न हो के सन्तान नहीं होती और यदि होवे तो दुष्ट होती है।

इसी प्रकार गर्भाधान क्रिया के समय पुरुष स्त्री को प्रसन्न न करे तो स्त्री को उत्तेजना नहीं होती इसलिये गर्भ रहता ही नहीं है।

स्त्रियान्तु रोचमानायां सर्वंतद्रोचते कुलम् ।
तस्यां त्वरोचमानायां सर्वमेव न रोचते ॥ मनु०

जो पुरुष स्त्री को प्रसन्न नहीं करता उस स्त्री के अप्रसन्न रहने से सब कुल भर अप्रसन्न और शोकातुर रहता है और जब पुरुष से स्त्री प्रसन्न रहती है तब सब कुल आनन्द रूप प्रसन्न दिखलाई देता है।

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः ।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफलाक्रियाः ॥

जिस घर मे नारियों की पूजा अर्थात् सत्कार होता है उस कुल मे दिव्य गुण, दिव्य भोग और उत्तम सन्तान उत्पन्न होती है और जिस कुल मे स्त्रियों की पूजा अर्थात् आदर सत्कार नहीं होता उस कुल की सब क्रियाएं निष्फल होती है।

शोचन्ति जामयो यत्र विनश्यत्याशु तत्कुलम्।
न शोचन्ति तु यत्रैता वर्द्धते तद्धि सर्वदा॥

जिस कुल मे स्त्रियां अपने अपने पुरुषो के दुष्टाचरणों से वा व्यभिचारादि दोषो से शोकातुर रहती है वह कुल शीघ्रही नाश को प्राप्त होजाता है और जिस कुल मे स्त्रीजन पुरुषो के उत्तमाचरणों से प्रसन्न रहती हैं वह कुल सर्वदा बढ़ता रहता है।

यदि पुरुष श्रेष्ठ हो तो दुष्टा स्त्रियां भी सभल जाती हैं। शास्त्र बतलाता है, ऋषियों का कहना है।

एताश्चान्याश्च लोकेऽस्मिन्नपकृष्ट प्रसूतयः।
उत्कर्ष योषितः प्राप्ताः स्वैःस्वैर्भर्तृगुणैः शुभैः॥

अर्थात्-इस संसार में दुष्टाचरण युक्त बहुत स्त्रियां अपने अपने पतियों के शुभ गुणों से सुधर गई और सुधर जाती हैं तथा सुधर जायंगी इसलिये यदि पुरुष श्रेष्ठ हो तो स्त्रियां श्रेष्ठ और पुरुष दुष्ट हों तो स्त्रियां दुष्ट होजाती हैं। इससे प्रथम पुरुषो को उत्तम होकर स्त्रियों को उत्तम बनाना चाहिये।

प्रजनार्थं महाभागा पूजार्हा गृहदीप्तयः ।
स्त्रियः श्रियश्च गेहेषु न विशेषोऽस्ति कश्चन ॥

हे पुरुषो ! संतानोत्पत्ति के लिये महा भाग्योदय करने वाली पूजा के योग्य गृहस्थाश्रम को प्रकाश मय करती हुई सतानोत्पति करने कराने वाली घरों मे स्त्रियां ही हैं। वे श्री अर्थात् लक्ष्मी स्वरूप होती हैं । लक्ष्मी और स्त्रियों मे कुछ भी भेद नहीं है । क्योंकि दोनो से ही घर की समान शोभा है ।

अपत्यं धर्मकार्याणि शुश्रूषा रतिरुत्तमा ।
दाराधीनस्तथा स्वर्गः पितृणामात्मनश्चहि ॥

इसका अर्थ यह है कि संतानोत्पत्ति, धर्म कार्य, उत्तम सेवा और रति सुख आदि तथा अपना और पितरो का जितना सुख है वह सब स्त्री ही के आधीन होता है ।

इसलिये अपनी शुभ कामना चाहने वाले तथा आरोग्य दीर्घजीवी होकर उत्तम सतति की इच्छा रखने वाले और मनुष्य जीवन का आनन्द तथा सुख चाहने वाले पुरुषो को हर प्रकार से स्त्रियों को प्रेम पूर्वक रखकर प्रसन्न रखना चाहिये। केवल उन्हे विषय भोग की सामिग्री समझ कर रतिक्रिया की ही मशीन न समझनी चाहिये । अपनी आरोग्यता तथा स्त्री की आरोग्यता के लिये, दोनो के दीर्घजीवन के लिये नियम पूर्वक रतिक्रिया कर उत्तम संतान उत्पन्न करनी चाहिये । तभी जीवन का सच्चा सुख और आनन्द प्राप्त होता है ।

सीता और रावण का सम्वाद

दाम्पत्य प्रेम के लिये आवश्यक है कि अपनी स्त्री के विना दूसरी स्त्री का सर्वदा त्याग रक्खे। वैसे ही स्त्री भी अपने विवाहित पुरुष को छोड़कर अन्य पुरुषों से सदैव पृथक रहे। परस्त्री गमन से बड़े २ धीर वीर विद्वानों का भी तेज नष्ट हो जाता है रावण को देखिए जब वह हत तेज होकर भिखारी के रूप में सीता के सामने आया फिर जब उन्हें जबर्दस्ती उठाकर ले गया और धमकाया तो सीता जी क्या उत्तर देती हैं:—

क्रोधातुर दशशीस, जानकी-निकट खड़ा हो,
डरता बोला किन्तु, प्रकट में बड़ा कड़ा हो।
सीते ! मुझको देख, तुझे डरना न चाहिये,
बनवासी के लिये, व्यर्थ मरना न चाहिये॥
यद्यपि राक्षसों के लिये, कुछ भी नहीं अधर्म है,
तो भी तुझे प्रसन्न ही, रखना मेरा कर्म है।
सीते मुझको मान, तुझे भी मान मिलेगा,
अपमानित कर मुझे न, तेरा काम चलेगा॥
भोग योग्य नृपसुते ! वृथा हठ योग न कर तू,
मुझे समझ निज दास, समझ लङ्का को घर तू।
कौन वस्तु है विश्व में, जिसे न ला दूंगा तुझे,
यदि निज सस्मित वदन को, क्षण भर दिखला दे मुझे॥
मैं तेरा होचुका, और तू मेरी होगी,

रावण हततेज होकर भिखारी के रूप में सीता के समाने आया।

सतीत्वरक्षा (रावण सीता संवाद) । पृ० ५१ (सर्वाधिकार सुरक्षित)

किसी भांति हे भीरु ! न इसमें देरी होगी ।
हो सकता है राम, न मेरे दास बराबर,
कर आहार-विहार, राम से चित्त हटाकर ॥
भारतेश मैं जनक को, तुरत बना दूंगा प्रिये !
और तुझे क्या चाहिये, आज्ञा दे उसके लिये ।
अल्प काल में नष्ट, नव वयस होजाती है,
बीत गई जो घडी, नहीं फिर वह आती है ॥
अपनी अनुपम देह, व्यर्थ मत मिट्टी कर तू,
छोड राम का ध्यान, प्रेम से मुझको वर तू ।
तेरी चेरी मयसुता, होगी सौत आज से,
क्यों उत्तर देती नहीं ? नाहक चुप है लाज से ॥

दशकन्धर के वचन, श्रवण कर सीता बोली,
किन्तु राम-पद से न, तनिक मति उसकी डोली ।
मुझसे मन को हटा, लगा उसको निज-जन में,
राजनीति को समझ, दशानन अपने मन में ॥
कभी भूलकर भूप को, अन्याय न करना चाहिये,
ध्यान-सहित निज धर्म को, मन में धरना चाहिये ।
क्यों गिरता है मूढ़ ! अन्ध हो अधर्म कूप में ?
व्यर्थ न कालिख लगा, स्वयं हो भूप रूप में ॥
छल करके, पर-वस्तु तुझे हरना न चाहिये,
निर्बल को बल-विवश, कभी करना न चाहिये ।

अधर्म दृष्टि जिस भूप की, हुई अन्य के साथ में,
राज-दण्ड रहता नहीं, रावण ! उसके हाथ में ॥
जिसकी है जो वस्तु, उसे वह फिर मिलती है,
सदा किसी की नहीं, चालबाजी चलती है ।
शठ ! हठ मत कर कभी बड़ा धोखा खायेगा,
केवल तेरा अयश, जगत में रह जावेगा ॥
छल विहीन के साथ में, छल करना अन्याय है,
रावण अब भी सभल जा, सविनय मेरी राय है ।
पल में सब सम्पत्ति, नष्ट होती है खल की,
निर्बल दल की आह, नहीं होती है हलकी ॥
विमल चाल को छोड, चाल तू मत चल छल की,
सुस्थल तज मत पैठ, कोठरी में कज्जल की ।
भूतल पर अन्याय का, फल मिलता है शीघ्र हीं,
कुशल नहीं है दीखता, तेरा, तू टल जा कहीं ॥
निर्गन्धा हो भूमि, धूम से हीन अनल हो,
स्पर्श रहित हो वही, रूप के सहित अनिल हो ।
रावण ! ये हो जायं, सभी अघटित घटनायें,
पर मन डिगता नहीं, सती का लोभ दिखाये ॥
चल यौवन ही नहीं, किन्तु जीवन भी चल है,
जिसको है यह ज्ञान, उसीका जन्म सफल है ॥
इसीलिये लङ्केश, पतिव्रत मैं पालूंगी,

तेरे मुख पर राख, अयश की मैं डालूंगी।
टालूंगी जीती नहीं, निगमागम आदेश को,
देश वेश प्रतिकूल जो, धिक है उस सुख लेश को॥

क्यों राक्षस! क्या तुझे, काल ने आघेरा है?
इसीलिये हित वाक्य, नहीं सुनता मेरा है।
क्यो करके अन्याय, कलङ्कित तू होता है?
शीघ्र चेत जा मोह, दिवस में क्यो सोता है॥
पुरजन परिजन भी तुझे, क्यों समझाते हैं नहीं?
क्या वे तेरे साथ में, दुख सुख पाते हैं नहीं।
साधु-वेश धर प्रथम, मुझे तूने फुसलाया,
वश में करके अहो, भयङ्कर भय दिखलाया॥
क्षत्रिय करसे छीन, मुझे क्यों दुख देता है!
निज प्रज्ञा से काम, नहीं क्यों तू लेता है।
मूढ! किसी की एक सी, राज्यश्री रहती नहीं,
उत्पीडक के भार को, मही सदा सहती नहीं॥
मन में निज-गति देख, तनिक भी गर्व न कर तू,
हे राक्षस मत शलभ-तुल्य, उड करके मर तू।
शस्त्र सुसज्जित सभी, सुभट हैं तेरे तो क्या,
राज्य सैन्य से रहित, राम मेरे हैं तो क्या॥
न्यायपरायण ईश वह, न्यायी जनके हाथ में,
विजय-जयन्ती को कभी, देगा ही रह साथ में।

भारत की मैं पतिव्रता हूं, सुन दशकन्धर !
नश्वर है जब देह, मृत्यु का फिर क्या है डर॥
देश धर्म के लिये, निछावर जो होती हैं,
कीर्ति-बीज को विपुल, विश्व में वे बोती हैं।
शारीरिक सुख के लिये, धर्म न छोड़ूगी कभी,
कुल मर्यादा से नहीं, मैं मुख मोड़ूगी कभी ॥
पर तू अच्छी बात, कभी क्या सुन सकता है,
मुक्ता को क्या कभी, चकोर चुन सकता है।
पूर्व पुण्य सब क्षीण हुये, मानो अब तेरे,
सभी काम विपरीत, लगे होने अब तेरे ॥
रोवेगा तू नरक में, खोवेगा निज-राज को,
ईश्वर रक्खेगा सदा, राक्षस ! मेरी लाज को।

इस प्रकार पर स्त्री सती-सीता की इच्छा करने वाला रावण मारा गया। सुग्रीव की स्त्री की इच्छा करने वाला बालि मारा गया।

कीचक बध

पाण्डवो को महारानी द्रौपदी के सहित अज्ञातवास के समय जब राजा विराट् के यहां रहना पड़ा। उस समय महारानी द्रौपदी राजा विराट् के यहां दासी बनकर रही। उन्हीं के यहां युधिष्ठिर भीम अर्जुन नकुल सहदेव भिन्न २ पदों पर कार्य करने लगे।

वाली के वियोग मे तारा विलाप

कीचक वध

रानी द्रौपदी रूप गुण में अद्वितीय थीं कोई उनका सानी न था। अपनी लावण्य रूपी प्रभु की इस अद्भुत देन को वे कहां छिपी रख सकती थीं। उन्होंने अपना राजसी वेश छोड़ दिया था, सब सुख सम्पत्ति पर लात मार दी थी परन्तु वे अपने रूप को कैसे छिपा सकतीं थीं या बदल सकतीं थीं।

राजा विराट् की सेना का सेनापति था कीचक। वह बड़ा बहादुर और रूपवान योद्धा था। तमाम राज्य पर उसकी धाक जमी हुई थी। उसके भय से कोई चू तक न करता था।

बलवान, बहादुर और रूपवान होते हुए भी कीचक में एक जबर्दस्त अवगुण था। वह अवगुण था विषय वासना, काम लोलुपता, परस्त्री गमन। जिस अवगुण के कारण उच्च से उच्च पुरुष का पतन हो जाता है। जो अवगुण तमाम गुणों को ले डूबता है। उसीमें कीचक की राक्षसी प्रवृत्ति थी।

अन्तःपुर में उसका आना जाना था। एक दिन मलिन-वसना सती साध्वी द्रौपदी पर उसकी दृष्टि पड़ी। द्रौपदी को देखते ही उस कामान्ध का मन चंचल हो उठा। उस दिन से वह नित्य ही द्रौपदी के देखने की ताक झाक में रहने लगा। धीरे धीरे उसकी नीचता बढ़ी। वह द्रौपदी से मुसकुरा मुसकुरा कर बातें भी करने लगा। उस दुष्ट की दृष्टि उस पर गड़ गयी। द्रौपदी नीचे को मुख किये हुए शुद्ध सरल निश्छल हृदय से उसकी बातों का उत्तर दे दिया करती थीं। वे उसको उसी भांति देखती थीं जिस प्रकार कोई पुत्री अपने पिता को देखती है।

एक दिन कामी कीचक ने एकान्त का मौका पाकर अपना नीच प्रस्ताव उसके सामने रखा। वे सहम गईं, बोलीं—आप इतने यशस्वी और प्रतापी मेरे पिता के समान होकर ये कैसी बाते कर रहे हैं ? आगे से आप कभी इस प्रकार बात चीत करने का साहस भी न करे।

एक दिन फिर मौका पाकर कीचक ने द्रौपदी से कहा—यदि सीधे रास्ते पर न आई तो जबर्दस्ती की जायगी।

सती द्रौपदी की आखे क्रोध से लाल होगईं। उन्होंने बड़े तीव्र शब्दो से कीचक को फटकारा और धिक्कारा।

उनका उग्र रूप देखकर कीचक कुछ सहम गया फिर अभिमान वश अपने बल का स्मरण कर बलात्कार करने के लिये द्रौपदी की ओर झपटा।

कीचक ने आगे कदम बढ़ाया ही था कि कान मे आवाज पड़ी-रे नीच कामी ! ठहर, देख तेरा काल मै आगया। कीचक ने सामने देखा तो भीम एक पेड़ लिये आरहे थे। भीम ने आकर कीचक को उठाकर दे पटका और उसकी जीवन लीला वही समाप्त करदी।

इसी प्रकार अनेक पुरुष पर स्त्री की इच्छा करने से मारे गये। चाहे कितना ही बलवान साहसी यशवान विद्वान पराक्रमी कोई भी हो, अधर्म का फल उसे अवश्य मिलता है।

जब देवताओ और बड़े बड़े योद्धाओ को भी पर स्त्री की इच्छा करने से प्राणो तक का दण्ड मिला तो साधारण पुरुषे। की क्या गिनती है। इसलिये पर स्त्री गमन से दूर रहना चाहिये।

कामशास्त्र

जितने शास्त्र प्राचीन ऋषियों ने बनाये हैं, वे सब मनुष्यमात्र की आरोग्यता तथा दीर्घजीवन के लिये बनाये हैं। सभी शास्त्रों की शिक्षा मनुष्यमात्र के लिये समान उपयोगी है।

कामशास्त्र भी इसी का समर्थक है। कामशास्त्र में भी रतिक्रिया विधान और गर्भक्रिया विधान की ही शिक्षा दी गई है परन्तु विषयी पुरुषों ने उसका नाम लेकर मनगढ़न्त विषय बढ़ा दिये हैं। इस समय जितनी पुस्तकें कामशास्त्र कोकशास्त्र सम्बन्धी निकल रही हैं। जिनको सब असली कोकशास्त्र बतलाकर नोटिस देते हैं। पाठकों! को यह विचारना चाहिये कि सब ही अपने कोकशास्त्र कामशास्त्र को असली बतलाते हैं तो नकली कौनसा है। इससे समझ लेना चाहिये कि असली एक भी नहीं है सब मनगढ़न्त हैं।

विषयी लोग धोखे में आकर चौरासी आसनों का नाम सुनकर कोकशास्त्र मगा लेते है और ठगे जाते है। क्योंकि उनमें सच्चे आसनादि के चित्र तो निकलते नहीं, बहुत सी झूठी सच्ची मनगढ़न्त बाते भरी रहती हैं। ग्राहक हाथ मलकर रह जाते हैं। इसलिये ऐसी बातों से हमेशा बचना चाहिये। कोई भी वस्तु मगाने से पूर्व उसकी असलियत के विषय मे पूरी तरह से निर्णय कर लेना चाहिये तब मंगाना चाहिये। केवल पुस्तक के नाम मात्र से उद्वेग में न आ जाना चाहिये।

सावधान ! सावधान !! सावधान !!!

कोकशास्त्र के आसनों की अभिलाषा से कोकशास्त्र मंगाने वालो को सावधान होजाना चाहिए। जिस प्रकार के आसनों की इच्छा से असली कोकशास्त्र के भ्रम में कोकशास्त्र मंगाते हैं उन आसनों के प्रकाशित करने का किसी को मजाल नहीं है क्योंकि असभ्यता पूर्ण चित्रों के छापने की सरकार से मुमानियत है। यदि कोई कानून के खिलाफ चित्र या लेख छापे तो वह दण्ड का भागी होगा। इसलिये कोई छाप ही नही सकता परन्तु नोटिस इस ढंग से देते हैं कि नोटिस वालों की बातों में आकर विषयी लोग पुस्तक मंगा ही लेते हैं और उन पुस्तको में व्यर्थ के मन गढ़न्त प्रयोगों को पढ़ सुनकर अपने शरीर का सत्यानाश मार बैठते हैं। वे आसन जिनकी खोज मे विषयी लोग रहते हैं शरीर को बड़ी भारी हानि पहुंचाने वाले हैं। ऐसे आसन (विपरीत आदि रति) से पुरुष को ही नही स्त्री को भी बड़ी भारी हानि पहुँचती है और सन्तान भी रोगी निर्बल तथा कम आयुवाली होती है।

इसलिये सब विषयी पुरुषो को सावधान रहना चाहिये कोकशास्त्र के आसनो की खोज मे न पडना चाहिये और कोकशास्त्र कामशास्त्र आदि जो मनगढ़त विषयों से भरे पड़े हैं उनके व्यर्थ के प्रयोगों के चक्कर मे पड़कर अपने धन को अपने शरीर को कदापि बर्बाद न करना चाहिये क्योंकि विषय की लोलुपता मे शास्त्र विपरीत रतिक्रिया आदि करने से कभी कभी भयंकर बीमारियां हो जाती हैं। जिससे बहुत हानि की संभावना रहती है।

कामशास्त्र का उद्देश्य

कामशास्त्र का उद्देश्य रतिक्रिया की उत्तम विधि है जिससे सन्तान आरोग्य और दीर्घ जीवी हो तथा पति पत्नी प्रेम पूर्वक रहकर रतिक्रिया का आनन्द भोगते हुये स्वय आरोग्य और दीर्घजीवी हो। आरोग्य और दीर्घ जीवी सन्तान उत्पन्न कर सकें। परतु कामशास्त्र की आड़ मे लोग मनगढ़ंत विपय लिखकर कामशात्र को वदनाम कर रहे है इसी कारण सज्जन पुरुष कामशास्त्र और कोकशास्त्र से घृणा करते हैं, इस नाम से ही चिढते है। केवल विपयी ऐसी पुस्तके मगाते हैं।

जो पुस्तके कामशास्त्र सम्बन्धी कोकशास्त्र आदि अनेक नामो से प्रकाशित हुई हैं उनमे दो एक को छोड करके सभी वहुत गन्दी हैं, सभी विपय उनमे ऐसे भर दिये गये हैं कि वे स्त्री पुरुषों के देखने योग्य वास्तव मे नहीं हैं। इसी कारण श्रेष्ठ लोगो को ऐसी पुस्तकों से घृणा होगई है।

कामशास्त्र में क्या है

कामशास्त्र का लक्ष्य तो पाठकों को मालूम ही होगया अव यहां यह भी वतलादेना आवश्यक है कि कामशास्त्र मे क्या है, कामशास्त्र में दाम्पत्य प्रेम का विधान है। पति स्त्री को किस प्रकार प्रसन्न रख सकता है जिससे स्त्री पुरुष दोनो प्रेम वन्धन मे रहकर एक दूसरे का जीवन सुखी वना सकें और रतिक्रिया की उत्तम विधि जानकर उत्तम आरोग्य और दीर्घजीवी सन्तान

उत्पन्न कर सके। विपरीत रति तथा अनियम रतिक्रिया के अनिष्ट-कारी विषय वासनाओ और मनगढन्त अहित कर आसनो से बचे रहकर उनसे होने वाले अनेक रोगों से बचे।

यों तो जितने शास्त्र हैं सब मनुष्य मात्र के हित के लिये बने हैं परन्तु उनमे ऋषियो के बताए हुए नियमों पर कितने मनुष्य चलते हैं यह सभी को मालूम है। धर्म्म शास्त्र वैद्यकशास्त्र आदि के नियमो पर न चलने वाले अनेक प्रकार के रोगो तथा कुकर्मों में फसकर अनेक कष्ट भोगते हैं

इसी प्रकार कामशास्त्र के विषय को न जानकर रतिक्रिया तथा विधान में कुछ ज्ञान न होने से गर्भाधान क्रिया ठीक नहीं कर सकते और शीघ्रही वीर्य चीणता, रज चीणता, प्रमेह, स्वप्नदोष, शीघ्रपात, सिथिलता और नपुसकता के दास बन जाते हैं और स्त्री को भी शीघ्रही रोगी निर्बल और दुर्बल बना देते हैं। जवानी में ही बुढ़ापे की सी दशा होजाती है जिसके कारण स्त्री पुरुष दोनों का जीवन दुःखमय व्यतीत होता है।

कामशास्त्र के ज्ञान की आवश्यकता

इस लिये विवाह होते ही स्त्री पुरुष सब को ही कामशास्त्र का कुछ ज्ञान अवश्य होजाना चाहिये जिससे पति पत्नी दोनों अनियम से बचते रहे। यो तो इस विषय की शिचा किसी को नहीं दी जाती। पशु पची मनुष्य और प्राणी मात्र सबको ही प्रकृति गर्भविधान की शिचा स्वय देती है।

मनुष्य और पशु पची सबको ही रतिक्रिया गर्भाधान के

लिये है अन्तर इतना है कि मनुष्य के सिवाय अन्य जीवों की रति-क्रिया केवल गर्भाधान के ही लिये है आगे उसके अच्छे बुरे रोगी निरोगी अल्पायु या दीर्घायु होने का उन्हे कुछ भी ज्ञान नही। आनन्द और सुख वे कुछ नही जानते। जब तक दूसरा बच्चा न हो और पक्षियो मे जब तक वह स्वय उड़ने लायक न होजाय तब तक ही उसे खिलाने पिलाने का ज्ञान और प्रेम नर मादा को रहता है। पशुओ के जब दूसरा बच्चा हो गया फिर पहिले की कुछ भी परवाह नहीं रहती, कुछ भी प्रेम नही फिर तो वह पास आता है तो माता मारने और काटखाने को दौडती है।

वात्सल्य प्रेम और जीवन भर उनकी आरोग्यता की चिन्ता रखना उन्हें योग्य बनाना यह मनुष्यो मे ही है। इसलिये परमात्मा ने मनुष्यों को ही इस योग्य बनाया है क्योकि सृष्टि की उन्नति अवनति मनुष्यों पर ही निर्भर है और मनुष्य ही सृष्टि की सर्व-श्रेष्ठ शोभा है। यदि मनुष्य न होता तो सृष्टि की कुछ भी शोभा न होती इस लिये इस बात की अत्यन्त आवश्यकता है कि मनुष्य आरोग्य रहकर दीर्घ जीवी हो और आरोग्य दीर्घजीवी सन्तान उत्पन्न कर मनुष्य जीवन का आनन्द भोगे।

परमात्मा ने वेद भी इसी लिये बनाये हैं कि वेदों से सृष्टि का ज्ञान हो। मनुष्य का कर्त्तव्य है कि वह उस ज्ञान को प्राप्त कर उत्तम जीवन व्यतीत करे। संसार में वेद प्राणिमात्र के विशेष कर मनुष्य मात्र के हित केही लिये बनाये गये हैं। पशु पक्षियों को उनकी आवश्यकता नहीं है।

धर्म्म-शास्त्रादि भी इसी लिये ऋषियो ने बनाये हैं कि धर्म्म शास्त्रो से मनुष्य धर्म्म मार्ग पर चले। स्त्री पुरुष अपने धर्म्म कर्त्तव्य जानकर अधर्मों से बचे। संसार मे धनवान कीर्तवान होकर धार्मिक जीवन व्यतीत करे।

ऐसी पुस्तको की अधिक बिक्री देखकर कुछ सज्जन पुरुषों ने भी कोकशास्त्र कामशास्त्र आदि नाम रखकर पुस्तके निकाली हैं उन्होने इस बात का ध्यान अवश्य रक्खा है कि अधिक गन्दा विषय न आने पावे परन्तु यथार्थ मे वे पुस्तकें भी कामशास्त्र के विषय को पूरा नही करती हैं।

हमने यही सब बाते विचार कर वर्त्तमान नवयुवक दम्पतियों की दशा देखकर और आयुर्वेद के अनुसार उत्तम कामशास्त्र की पुस्तकों का अभाव देख कर इस "आनन्द मन्दिर विवाह विज्ञान" कामशास्त्र को मनुष्य मात्र के हित के लिये वेद शास्त्र वैद्यक और कामशास्त्र सम्बन्धी ग्रन्थो से उपयोगी विषयो को चुनकर इसको तैय्यार किया है आशा है सब सज्जन इसे आदि से अन्त तक पढ़कर लाभ उठावेंगे।

कर्नलगज	}	सबकी आरोग्याकांक्षिणी
इलाहाबाद	}	यशोदादेवी
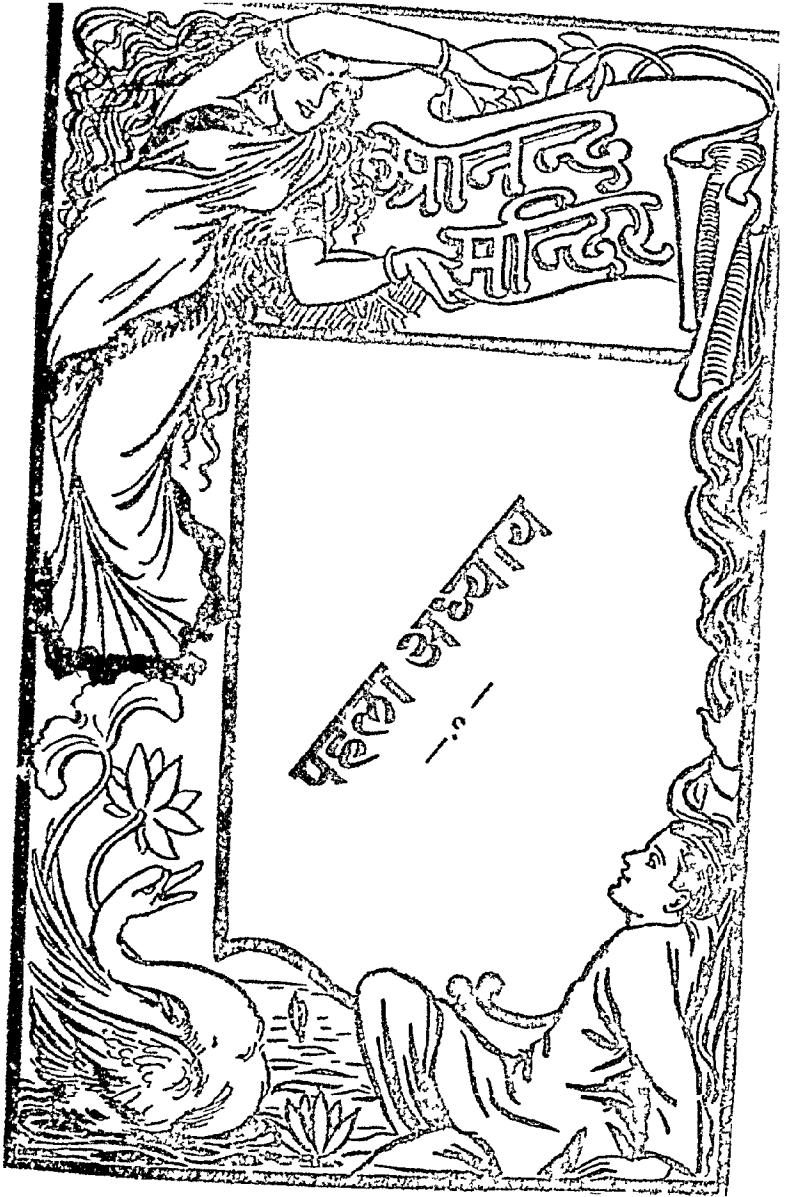
पहला अध्याय

हेमन्त ऋतु

आनन्द और सुख

सुखं वाञ्छन्ति सर्वेहि तच्चधर्म्म समुद्भवम् ।
तस्माद्धर्म्मः सदा कार्य्यः सर्ववर्णैं प्रयत्नतः ॥

(दक्ष सहिता)

सब ही सुख और आनन्द की इच्छा करते है परन्तु शुभ कार्य्यों के बिना किसी को भी सुख प्राप्त नही होता अतएव यदि सुख और आनन्द भोगने की इच्छा है तो यत्न सहित धर्म्मा-

चरण करना सब वर्णों का अर्थात् मनुष्य मात्र का कर्त्तव्य है।

तस्याः स्तनौ यदि घनौ जघनं विहारि ।
वक्त्रं च चारु तव चित्त किमाकुलत्वम् ।।
पुण्यं कुरुष्व यदि तेषु तवास्ति वाञ्छा ।
पुण्यैर्विना न हि भवन्ति समीहितार्थाः ।।

भर्तृहरि

हे कामेच्छुक पुरुषो ! पराई सुन्दर युवती स्त्री को देखकर चित्त को क्यो विचलित करते हो । महात्माओ की आज्ञा पालन करो । जो उपाय उन्होंने बतलाए हैं उन उपायो मे सुन्दर भार्य्या और सब सांसारिक सुखो के प्राप्त करने के सरल उपाय हैं ।

श्लोक का भी यही अर्थ है—

जिस स्त्री के स्तन पुष्ट और जंघाए विहार करने योग्य हैं, मुख सुन्दर है । उसे देखकर हे चित्त ! क्यो व्याकुल होता है, यदि उनमे तेरी वांछा है तो पुण्य कर क्योंकि पुण्य के विना मनोरथ सिद्ध नही होते ।

ऋषियो ने ठीक बतलाया है:—

शुभ्रं सद्म सविभ्रमा युवतयः श्वेतातपत्रोज्ज्वला ।
लक्ष्मीरित्यनुभूयतेस्थिरमिव स्फीतेशुभे कर्मणि ।।

इसका अर्थ यह है कि:—

उत्तम स्वच्छ घर, अच्छे हाव भाव वाली सुन्दर स्त्री और

लक्ष्मी अर्थात् धन सम्पत्ति तब ही स्थिरता पूर्वक अर्थात् अधिक काल तक आनन्द सहित भोग मे आती हैं जब पुण्य भी अधिक किये हों अर्थात् शुभ कर्म्मों की भी अधिकता हो।

शास्त्रकारों का वचन है:—

विच्छिन्ने नितरामनङ्ग कलह-
क्रीड़ानुटचन्तुकं।
मुक्ताजालमिव प्रयाति झटिति-
भ्रश्यद्दिशो दृश्यताम्॥

कामदेव की क्रीड़ा की कलह मे टूटे हुए मोतियों के हार की समान सब सुख भोग शीघ्र ही छिन्न भिन्न हो जाते हैं अर्थात् नष्ट हो जाते हैं।

तात्पर्य यह कि जब पुण्य क्षय हो जाता है यानी किये हुए शुभ कर्मों का फल भोग पूरा हो जाता है तब मनुष्य के सब सुख इस प्रकार से छिन्न भिन्न हो जाते हैं जैसे पति पत्नी में रति क्रीड़ा की कलह से मोतियों का हार टूट जाने से हार के मोती छिन्न भिन्न हो जाते हैं, इधर उधर बिखर जाते हैं।

इसीलिये ऋषियों ने बतलाया है कि सांसारिक सुख भोग और सुन्दर स्त्री स्थिरता से अर्थात् अधिक काल तक तभी भोग में आते हैं जब कि शुभकर्म भी अधिक किये हों। इसलिये मनुष्य को चाहिये कि सुख भोगों के साथ ही साथ शुभकर्म्मों की

वृद्धि करता रहे। पूर्व जन्म के किये हुए पुण्य और शुभकर्म्मों से ही मनुष्य को इस जन्म मे धन सम्पत्ति और सांसारिक सब सुख तथा सुन्दर स्त्री भोगने मे आती है।

यदि शुभकर्म्म न किये हो और पूर्व जन्म का किया हुआ पुण्य इस जन्म मे साथ न दे तो धन सम्पत्ति और ससार के सभी बहुमूल्य पदार्थ तथा सुन्दर रूपवती स्त्री होने पर भी भाग्यहीन पुरुष भोग नही सकते। यह निश्चय वेद शास्त्र सम्मत है कि शुभ कर्म्मो से ही मनुष्य सुख भोग करता है। शुभ कर्म्म न किये हों तो सांसारिक सभी पदार्थों से वह मनुष्य हीन रहता है और यदि कुछ पदार्थ कर्म्मों से प्राप्त भी हो तो उन्हे भोग नहीं सकता केवल चौकीदारी करता है।

मुझे २५ वर्ष स्त्रियो की चिकित्सा करते हुए व्यतीत हुईं, इस बीच मे मैंने लाखो ही स्त्रियो और स्त्रियो द्वारा उनके पतियो की चिकित्सा कर इस विषय के हजारो उदाहरण पाये।

कई वर्ष व्यतीत हुए, एक रियासत से मेरे पास एक बडे भारी जिमीदार अपनी स्त्रियो को लेकर इलाज के लिये आये जिनके छै स्त्रियां थीं। उन जिमीदार की अवस्था लगभग चालीस वर्ष की थी। उन्होंने सन्तान के लिये छै विवाह किये। उनकी आमदनी कई लाख रुपया सालाना की थी। उनकी स्त्रियो की जबानी मुझे मालूम हुआ कि वे इतने सुस्त थे कि छै स्त्रियो से विवाह करके एक स्त्री से भी एक बार भी उचित रीति से सभोग नहीं कर सके। उनकी सब मे छोटी स्त्री की, जिसका हाल मे ही विवाह हुआ

था, सोलह साल की अवस्था थी और अन्य पांचो स्त्रियां भी जवान थीं।

उन सब स्त्रियो ने मुझ से अपना २ खुलासा हाल बतलाया कि विवाह करके एक दिन पति जी पास आये, घंटो उद्योग करने से उनकी कुछ इच्छा हुई सो भी उचित रीति से नही। इच्छा होते ही शीघ्रपात हो जाने से बात करते ही सुस्त हो गये इसी प्रकार सभी स्त्रियो ने अपना अपना हाल मुझसे खुलासा बतलाया।

उनके भोजनो का यह हाल था कि मूग की दाल और पुराने चावल का भात तथा परवल, लौकी की तरकारी के सिवा यदि कभी पूड़ी खाले या मलाई रबड़ी हलुवा खाले तो दस्त आने लगे। यदि कब्ज हो जाय तो एक दो सप्ताह तक मूग की दाल का पानी भी स्वप्न हो जाय।

उनकी यह दशा होश सम्भालने के समय से ही थी। उन स्त्रियां ने मुझ से कहा कि हम मे से कोई भी ऐसी नही है कि जिसने एक दिन भी संभोग सुख का अनुभव किया हो।

उन जिमींदार साहब को और भी अनेक रोग ऐसे थे कि वे उचित रीति से रतिक्रिया कर ही नही सकते थे सन्तान कैसे होती। वे शेखी के मारे विवाह करते जाते थे परन्तु किसी योग्य न थे।

उनकी स्त्रियो को भी उचित संभोग न होने से अनेक रोग

उत्पन्न हो गये थे। छहो स्त्रियां रोगी हो गई थीं उसका कारण वही था जैसा कि शास्त्रकारो ने बतलाया है:—

अमैथुनं जरा स्त्रीणामनध्वा वाजिनं जरे।

अर्थात्—जिस स्त्री को कभी सभोग सुख नही मिलता अर्थात् जिन्हे रतिक्रिया का आनन्द कभी नही मिलता वे स्त्रियां शीघ्रही वृद्धा हो जाती हैं और उन्हे अनेक प्रकार के रोग आ घेरते हैं। जैसे घोड़ा बधे रहने से अर्थात् घोड़े से मेहनत का काम न लेने से वह वुड्ढा और रोगी होजाता है।

उन सब स्त्रियो के साधारण रोगो का जिनका इलाज हो सकता था, करके आराम कर दिया गया परन्तु उनके पति को जवाव दे दिया क्योंकि उन्हे रोग नही था पूर्व कर्म्मों का भोग था जोकि उन्हे भोगना ही था।

इसी प्रकार के अनेक धनवान् जिन्हे किसी वात की कमी न थी और जिनके दो दो तीन तीन रूपवती स्त्रियां भी थी परन्तु पूर्वजन्म के कर्मों के अनुसार वे उस धन सम्पत्ति के चौकीदार थे इसलिये सुख भोग नही कर सकते। पाठको ने भी इस प्रकार के अनेको धनवान् मनुष्य देखे होंगे। ससार मे ऐसे उदाहरणों से ही पता लगता है कि धन सम्पत्ति और सुन्दर स्त्री पूर्वजन्म के पुण्य से ही भोग मे आती है। इसलिये पराई धन सम्पत्ति और रूपवती स्त्री को देखकर चित्त को विचलित न होने देना चाहिये उन्हे प्राप्त करने के लिये शुभकर्म करने चाहिये।

शुचिः सौधोत्सङ्गः प्रतनु वसनं पङ्कजदृशो ।
निदाघे तूर्णं तत्सुखमुपलभन्ते सुकृतिनः ॥

अर्थात्—अच्छी सुगन्धित माला, पंखे की वायु, चांदनी, पुष्पो का पराग, तड़ाग, चन्दन, अच्छी ऊंची श्वेत घर की छत और अच्छे मलमल के महीन वस्त्र तथा सुन्दर स्त्री इत्यादि पदार्थों से पुण्यवान पुरुष ही सुख उठाते हैं।

जो सब सुख होते हुए भी सुख भोग नही कर सकते उन्हे शुभ कर्मों से रहित समझना चाहिए।

ससार के वहुमूल्य पदार्थ हुए ही तो क्या? सुन्दर स्त्री मिली ही तो क्या? यदि पूर्वजन्म मे अथवा इस जन्म मे पुण्य नही किया, शुभ कर्म नही किये तो सब व्यर्थ है। उनकी धन सम्पति किस काम की, नवयौवना सुन्दरी स्त्री घर मे मौजूद होते हुए भी रोगी होने के कारण वे सुख नही भोग सकते।

पाठकों ने अनेक ऐसे मनुष्यो को भी देखा होगा कि जो आज सब प्रकार से सुख भोग कर रहे हैं परन्तु देखते ही देखते थोड़े समय मे ही उनके वे सब सुख पीछे वतलाए हुए कामक्रीड़ा की कलह से टूटे हार के मोतियो की समान सब सुख छिन्न भिन्न हो गये। न वह धन सम्पत्ति रही न वे सुख रहे न वह स्त्री रही फिर वतलाइये यह सब पुण्य क्षय का फल नही है तो क्या है।

पूर्व जन्म और इस जन्म के शुभाशुभ कर्म

पूर्व जन्म के कर्म्मों को जाने दीजिये। इसी जन्म के कर्मों का फल देखिये। जो पुरुष कोई बुरा कर्म करता है उसे इसी जन्म मे ही अनेक प्रकार के फल भोगने पड़ते हैं।

जो पुरुष धन की बेकदरी करके बुरे कर्म्मों मे धन खर्च करते है वे एक दिन निर्धन होकर अनेक प्रकार के कष्ट भोगते है और एक एक पैसे को दूसरो के आगे हाथ फैलाते है, रोते पछताते है। उनका जीवन बड़े कष्ट से व्यतीत होता है। इसी प्रकार जो पुरुष शरीर के राजा कामदेव का अनादर करता अर्थात् बेकदरी करके बुरे कर्म्मों मे खर्च करता है। अर्थात् वीर्य को नष्ट करता है उसे इसी जन्म मे उसका फल भोग मिलता है।

कामदेव की बेकदरी करने से शरीर मे अनेक प्रकार के रोग उत्पन्न होजाते है जिससे नाना प्रकार के दु.ख मिलते है। जो पुरुष विवाह होते ही अनियमित स्त्री प्रसग करके वीर्य का सत्यानाश मारते है अर्थात् कामदेव का निरादर करते है अथवा बिना विवाह के ही कुसगति मे पड़कर अनेक प्रकार के कुकर्म्मों से वीर्य का सत्यानाश करते है वे अनेक प्रकार के रोगो मे ग्रसित हो जीवन भर दु ख भोगते है।

जो पुरुष रात दिन विषयवासना की तृप्ति की ही इच्छा-पूर्ति मे लगे रहते है वे अपनी तथा अपनी स्त्री की आरोग्यता नष्ट करते हैं और कामदेव जो शरीर का राजा है उसके बिगड़ जाने से

पत्नी का प्यार

उन्हें ऐसा दण्ड मिलता है कि वे पीछे पछताते हैं और बड़ा कष्ट भोगते हैं। फिर उन्हें स्त्री प्रसंग का कुछ भी आनन्द नहीं मिलता और दाम्पत्य सुख का आनन्द नष्ट होजाता है।

आयुर्वेद बतलाता है.—

पुनर्दाराः पुनर्वित्तं पुनः क्षेत्रं पुनः सुतः ।
पुनः श्रेयस्करं कर्म न शरीरं पुनः पुनः ॥

इसका अर्थ यह है कि स्त्री धन सम्पत्ति और जायदाद तथा सन्तान इत्यादि संसार के सब पदार्थ फिर से मिल जाते हैं परन्तु मनुष्य शरीर फिर फिर से नहीं मिलता। इसलिये इस बहुमूल्य शरीर की रक्षा के लिये आरोग्यता का सदैव ध्यान रखना मनुष्य-मात्र का परम कर्त्तव्य है।

बहुतेरे मनुष्य यह समझते हैं कि जब हम इस जन्म में अपने पूर्व कर्मों का फल भोग रहे हैं तो अच्छा बुरा जो कुछ कर रहे हैं उससे क्यों रुके क्योंकि वह तो पूर्व जन्म का फल है जो रोकने से भी नहीं रुक सकता। वास्तव में उनके ऐसे विचार भ्रम पूर्ण और गलत हैं। उन्हें यह अच्छी तरह समझ लेना चाहिये जैसा कि ऊपर बताया गया है कि बहुतेरे कर्मों का फल इसी जन्म में मिलता है। फिर हम जो फल भोग रहे हैं वे पिछले कर्मों के हैं और जो कर्म कर रहे हैं वे अगले जन्म के लिये। इसलिये इस जन्म और अगले जन्म का विचार कर शुभ कर्म ही करना चाहिये।

कामदेव चरित्र

हमारे देश की जितनी प्राचीन गाथाएं हैं वे किसी न किसी प्रकार के लक्ष्य से खाली नही है उनका लक्ष्य भी उच्चे आदर्शों से भरा हुआ है।

मनुष्य के हृदय मे कामोद्दीपन करने वाले (जिसके वेग से वीर्य स्खलित होता है) देवता का नाम कामदेव है। यह ऐसा बलवान् है कि इसके सामने बड़े बड़े देवता ऋषि मुनि भी हार मान गये हैं। जब कोई ऋषि मुनि घोर तपस्या करने लगता है अपने जीवन को सुखमय और आनन्द मय बनाने लगता है तब इन्द्र आदि देवताओं को यह ईर्षा उत्पन्न होती है कि कही यह तपस्या के प्रभाव के फल से मेरा पद न छीन लेवे इसलिये इन्द्र आदि सब देवता इकट्ठे होकर उस तपस्वी का तप भग कराने के लिये कामदेव की शरण लेते हैं। वे पहिले तो अपने यहां की अप्सराओं को भेजते है। वे तपस्वियो के पास जाकर अपने हाव भाव सुन्दरता शृंगार आदि से उनकी तपस्या भंग करती हैं। यदि अपसराओं का कोई उपाय न चला तब अन्त मे वे कामदेव की शरण लेते है।

इस विषय मे अनेक मनोरञ्जक कथाए प्राचीन ग्रन्थो में पाई जाती है। इस विषय मे, एक बडा ही मनोरञ्जक उदाहरण रम्भा और शुकदेव मुनि की कथा का है। प्रसग वश यहां रम्भा और शुकदेव मुनि का कुछ वृत्तान्त लिखा जाता है.—

रम्भा और शुकदेव मुनि

एक समय व्यास जी के पुत्र शुकदेव मुनि तपस्या कर रहे थे। इन्द्र को यह देखकर बड़ी ईर्षा उत्पन्न हुई। उन्होंने कामदेव को बुलाकर शुकदेव जी की तपस्या भंग करने के लिये कहा, तब कामदेव ने सलाह दी कि रम्भा नामक आप के यहां जो परम सुन्दरी अप्सरा है उसे भेजिये। इस कार्य को वह पूरा करेगी।

राजा इन्द्र ने रम्भा को बुलाकर आज्ञा दी कि तुम जाकर शुकदेव जी का तप नष्ट करदो। इन्द्र की आज्ञा पाकर रम्भा सुन्दर श्रृंगार करके शुकदेव जी के पास आई। शुकदेव जी तपस्या कर रहे थे, ब्रह्म के ध्यान में मग्न थे।

इन्द्र की भेजी हुई परम सुन्दरी रम्भा शुकदेव जी के पास आकर सामने बैठ गई और शुकदेव जी का तप भंग करने के लिये अनेक उपाय करने लगी। रम्भा बोली—हे मुने! तप में क्या रक्खा है तपस्या का फल स्वर्ग में नहीं है इसी लोक में मौजूद है। जो सुख और आनन्द गृहस्थाश्रम में स्त्रियों से मिलता है वह सुख स्वर्ग में कदापि नहीं मिलता, इस लिये तप करना व्यर्थ है।

शुकदेव जी बोले—

अचिन्त्य रूपोभगवन्निरञ्जनो,
विश्वम्भरो ज्ञानमयश्चिदात्मा।

विशोधितो येन हृदिक्षणंनो,

वृथागतं तस्य नरस्य जीवनम् ॥

अर्थात्—हे रम्भे ! सुनो, जिसका रूप हृदय मे चिन्तन करने से भी ध्यान मे नही आता। जो सर्व शक्तिमान, सब जगह विराज मान है। जो विश्वका पालन करने वाला, ज्ञान, मय, चैतन्य, विश्व व्यापी, आनन्द का सागर है। ऐसे परमात्मा का जिसने क्षण-मात्र भी अपने हृदय मे ध्यान नही किया उसका जीवन व्यर्थ गया।

रम्भा बोली—

हे मुने ! आदि काल से ही यह नियम चला आता है कि स्त्री का सुख स्वर्ग से भी अधिक है सुनिये.—

स्वर्गेऽपि दुर्लभं ह्येतदनुरागः परस्परम् ।

पति पत्नी का परस्पर प्रेम स्वर्ग का भी दुर्लभ पदार्थ है जिसके पत्नी नही है उसका जीवन व्यर्थ है।

शुकदेव जी बोले—

चतुर्भुजश्चक्रधरो गदायुध:,

पीताम्बरः कौस्तुभ मालया लसन् ।

ध्यानेधृतो येन न बोधकाले,

वृथागतं तस्य नरस्य जीवनम् ॥

अर्थात्—शुकदेव जी कहते है, चार भुजाओ वाले चक्रधारी

गदाधारी, पीताम्बरधारी, कौस्तुभमणि की माला से सुशोभित ऐसे भगवान को जिसने योग काल मे स्वस्थ जाग्रत अवस्था मे ध्यान मे धारण नही किया उस नर का जीवन व्यर्थ ही गया।

रम्भा बोली—

विचित्र वेषा नवयौवनाढ्या,
लवङ्ग कर्पूर सुवासि देहा।
नालिंगिता येन दृढं भुजाभ्यां,
वृथागतं तस्य नरस्य जीवनम् ॥

हे मुने! विचित्र वेष (शृगार) वाली, युवावस्था से पूर्ण, सुन्दर यौवनवती, कर्पूर आदि सुगन्धित पदार्थों से सुवासित शरीर वाली स्त्री पाकर जिस पुरुष ने उसे आलिगन कर आनन्द भोग नहीं किया उसका जीवन व्यर्थ गया।

शुकदेव मुनि कहने लगे—

विश्वम्भरो ज्ञानमयः परेशो,
जगन्मयोऽनन्तगुण प्रकाशः।
नाराधितोनोऽपिकृतंनयोगे,
वृथागतं तस्य नरस्य जीवनम् ॥

अर्थात्—जगत के पालक पोषक ज्ञानमय, जगद् रूप, अनन्त गुणो को प्रकाशित करने वाले, परमात्मा का जिसने ध्यान नहीं

क्रिया और योग मे ध्यान न दिया उस मनुष्य का जीवन व्यर्थ गया।

रम्भा बोली—

चन्द्रानना सुन्दर गौर वर्णा,
व्यक्तस्तनी भोग विलास दक्षा।
नान्दोलिता वैशयनेषु येन,
वृथागतं तस्य नरस्य जीवनम्॥

हे मुने! चन्द्रमा के समान मुख वाली, सुन्दर और गौर वर्ण वाली, भोग विलास मे चतुर, प्यारी पत्नी का जिसने सेवन नही किया उस मनुष्य का जीवन व्यर्थ गया।

शुकदेव जी बोले—

स्वरूपं शरीरं नवीनं कलत्रं,
धनं मेरुतुल्यं वचश्चारुचित्रम्।
हरेरंघ्रियुग्मे मनश्चेन्नलग्नं,
ततःकिं ततःकिं ततःकिं ततःकिम्॥

शुकदेव मुनि कहते है कि जिसने विष्णु भगवान के चरणो में मन नही लगाया उसके सुन्दर नवीन यौवनवती स्त्री तथा सुमेर पर्वत के समान धन, सुन्दर विचित्र वाणी आदि सब प्रकार के सुख भोग होने से क्या हुआ अर्थात् कुछ भी नही हुआ। ऐसा मनुष्य जीवन व्यर्थ ही गया इस लिये यह सब निरर्थक है।

रम्भा बोली—

आनन्द रूपा तरुणीनतांगी,
सद्धर्मसंसाधन सृष्टिरूपा ।
कामार्थदा यस्य गृहे न नारी,
वृथागतं तस्य नरस्य जीवनम् ॥

हे मुने ! जो पुरुष को आनन्द देने वाली, मनको मोहित करने वाली, युवावस्था से पूर्ण अंगवाली, पतिव्रता, सृष्टि की आदि धर्म्म को साधने वाली, सन्तान उत्पन्न करने वाली पुरुषो की सब कामनाओं को पूर्ण अर्थात् काम अर्थ की देने वाली सुन्दर पत्नी जिसके घरमें नहीं है उस नर का जीवन व्यर्थ है ।

शुकदेव जी बोले—

पत्न्यार्जितं सर्व सुखं विनश्वरं,
दुःखप्रदं कामिनि भोग सेवितम् ।
एवं विदित्वा न धृतोहि योगो,
वृथागतं तस्य नरस्य जीवनम् ॥

पत्नी के विषय भोग से होने वाले सब सुखो को अनित्य और दुखदाई जानकर जिसने योगाभ्यास धारण कर परमात्मा का ध्यान नहीं किया उसका जीवन व्यर्थ गया, उसने इस शरीर को नष्ट कर दिया ।

रम्भा कहने लगी—

प्रियम्वदा चम्पक हेम वर्णी,
हारावलीमण्डित नाभिदेशः।
संभोग शीला रमिता न येन,
वृथागतं तस्य नरस्य जीवनम्॥

प्रिय बोलने वाली, चम्पा और सुवर्ण सरीखे वर्णवाली अर्थात सुन्दर शरीर वाली, फूलो की मालाओ से सुशोभित नाभि-वाली. दाम्पत्य प्रेम मे उत्तम शील स्वभाव वाली पत्नी के संग जिस ने आनन्द नही भोगा उस नर का जीवन व्यर्थ गया।

शुकदेव जी बोले—

श्रीवत्सलक्ष्म्यां कृतहृत्प्रदेश-
स्ताक्ष्यर्ध्वजः शार्ङ्गधरः परात्मा।
न सेविता येन नृजन्मनोपि,
वृथागतं तस्य नरस्य जीवनम्॥

जिसका हृदय वत्सचिन्ह की शोभा से युक्त है, गरुड की ध्वजावाले और शार्ग धनुष को धारण करने वाले ऐसे परमात्मा रूप श्रीकृष्ण चन्द्र की भक्ति का जिस मनुष्य ने सेवन नहीं किया उसका जीवन व्यर्थ गया।
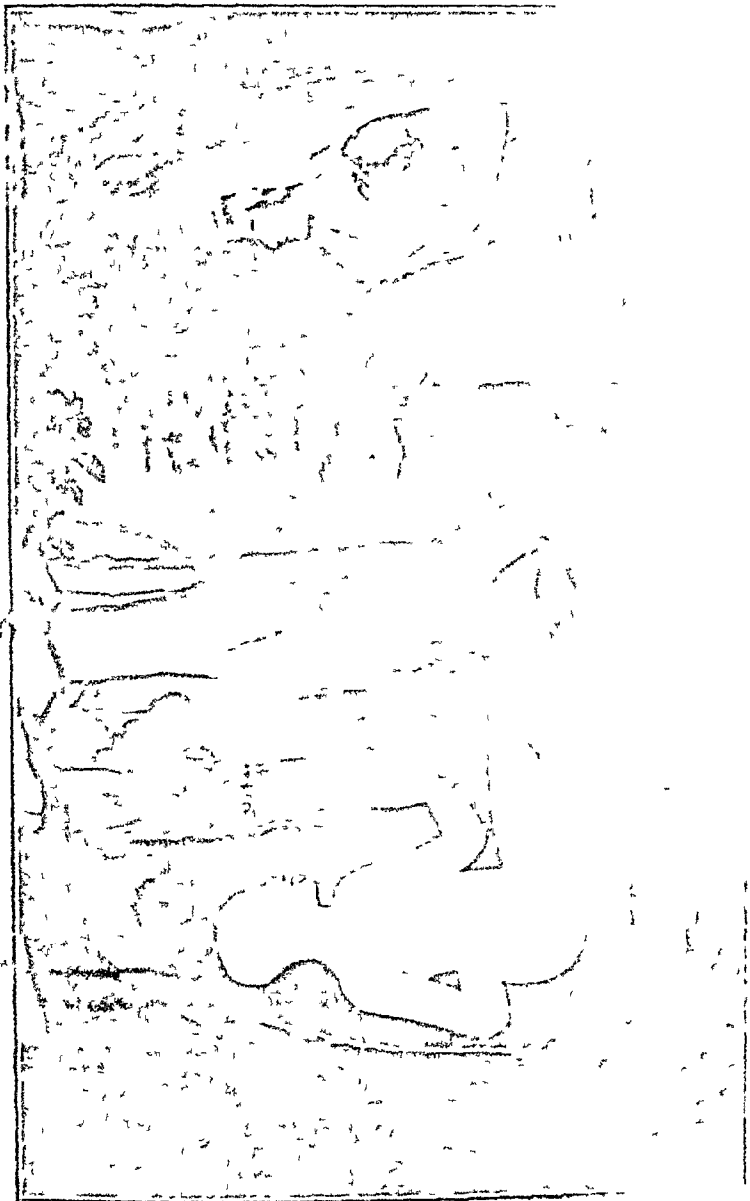
रम्भा बोली—

समस्तश्रृंगार विनोद शीला,
लीलावती कोकिल कण्ठनाला ।
विलासिता नो नव यौवनाढ्या,
वृथागतं तस्य नरस्य जीवनम् ॥

सम्पूर्ण श्रृगार करने मे चतुर और अपने हावभाव आदि प्रसन्नता से पति को प्रसन्न करने तथा हास्य क्रीड़ा आदि मे पति को मोहित करने वाली, कोयल के समान मधुर कण्ठवाली, युवा-वस्था को प्राप्त हुई ऐसी अपनी प्यारी पत्नी के साथ आनन्द पूर्वक जिस पति ने जीवन व्यतीत न किया उसका जीवन व्यर्थ है ।

रम्भा और शुकदेव जी के इस प्रकार हुए वार्तालाप का पूरा वर्णन करने मे पुस्तक बढ़ जावेगी इसलिये इतना ही लिखना उचित समझा। इस रम्भा और शुकदेव जी के सम्वाद से भी इस वात की पुष्टि होती है कि इस ससार मे मनुष्य के लिये दाम्पत्य प्रेम स्वर्ग से भी वढ़कर है । जिन्हे अभाग्य वश दाम्पत्य सुख का साधन नही है वे परमात्मा का भजन करे । मनुष्य के लिये दोही साधन है, गृहस्थाश्रम अथवा ईश्वर भक्ति। इन्ही दो मे सुख है रम्भा ने जो कुछ कहा है ठीक ही कहा है और शुकदेव जी ने भी ठीक ही कहा है । सारांश यह कि जिसे दाम्पत्य सुख का भोग प्राप्त नही, न जिसने ईश्वर भक्ति ही की है उसका जीवन व्यर्थ है । कामदेव के विषय मे शिव जी की कथा पढिये ।

कामदेव और शिवजी

शिवजी की पहिली स्त्री सती का देहान्त होजाने पर शिवजी को बड़ा दुःख हुआ। इनका विचार फिरसे विवाह करने का न था इसलिये पत्नी की मृत्यु के बाद वे तपस्या करने लगे। शिवजी सब देवों के देव महादेव कहलाते है। उनकी शक्ति भी महान है, इसलिये वे घोर तपस्या करने में लगगये।

कामदेव बड़े ठाट बाट के साथ अपनी स्त्री रति को लेकर शिवजी का तप भग करने गया। शिवजी तपस्या मे थे, पार्वती के पिता ने पार्वती जी को शिवजी की सेवा के लिये भेजा था। जब पार्वती शिवजी के पास पहुँची तो अच्छा अवसर देखकर कामदेव ने शिवजी पर अपना बाण चलाने की तैय्यारी की। शिवजी को मालूम होगया, उन्हे कामदेव पर बड़ा क्रोध आया। शिवजी के तीन नेत्र थे, तीसरा नेत्र महान क्रोध आने पर वे खोलते थे। शिव ने क्रोध से उसी तीसरे नेत्र से कामदेव की ओर देखा। नेत्र खुलते ही उसमें से बडी विकट अग्नि की लपट निकली। उस लपट के निकलते ही कामदेव भस्म होने लगा। उसकी स्त्री रति वहीं खड़ी थी। रति अपने पति कामदेव को जलते देखकर पति के जीवनदान की शिवजी से प्रार्थना करने लगी परन्तु जब कामदेव भस्म हो गया तो रति अचेत हो पृथ्वी पर गिर पड़ी। बहुत देर के बाद जब उसको होश आया तब वह विलाप कर रोने लगी। उसका विलाप पत्थर के हृदय को भी पिघला देने वाला था।

अपने प्राणप्यारे पति की मृत्यु का पतिप्राणा स्त्रियों को जो दुःख होता है उसे देखने वालों का भी हृदय फटने लगता है क्योंकि संसार मे स्त्रियों के लिये पति से बढ़कर कोई दूसरा प्यारा नहीं है। विलाप करते करते रति सती होने को तैयार हो गई, कामदेव तो जलकर भस्म होगया था, शरीर का वहां नाम निशान तक नही रहा था केवल राख रह गई थी, उसी को शरीर मे लगाकर वे सती होने को तैयार हुई। तब आकाश वाणी हुई हे कामदेव की प्यारी स्त्री! तुम अपने प्राणों को नष्ट मत करो तुम्हारा पति कुछ दिन मे फिर मिलेगा, सन्तोष रखो। पति के बिछोह का दुःख तुमको अधिक दिन नही भोगना पड़ेगा।

हे सुन्दरी! शीघ्रही वह दिन आने वाला है जब शिवजी पार्वती की तपस्या से प्रसन्न होकर उनके साथ विवाह करेंगे और विवाह करके प्रसन्न होंगे तब तुम्हारे पति कामदेव को फिर से जीवित करदेंगे। तुम सन्तोष रखो। शिवजी देवों के भी महादेव हैं, उन्हें मारने और जिलादेने की पूरी सामर्थ्य है। इस समय तुम्हारा पति ब्रह्मा के शाप से शिवजी के क्रोध से भस्म हुआ है वह फिर जीवित होगा। इस प्रकार आकाश वाणी को सुनकर कामदेव की स्त्री रति को धैर्य हुआ। उसने सती होने का विचार छोड़ दिया परन्तु पति के ध्यान मे शोकाग्नि से दिन प्रतिदिन शरीर को क्षीण करती हुई उस दिन की प्रतीक्षा करने लगी।

पार्वती की तपस्या पूरी हुई और शिवजी ने पार्वती से

विवाह् कर लिया। तब तक कामदेव को जो ब्रह्मा ने शाप दिया था उसका समय भी पूरा होगया इसलिये सब देवताओ ने शिवजी से प्रार्थना की हे शिव ! कामदेव को फिर से जीवनदान देकर अपनी सेवा के लिये जीवित कोजिये नही तो ससार का काम कैसे चलेगा, कामदेव से ही सृष्टि को रचना संभव है इसलिये इसका जीवित होना अत्यन्त आवश्यक है। शिवजी ने देवताओं की प्रार्थना स्वीकर करके कामदेव को जीवित करदिया। कामदेव की स्त्री रति पति को पाकर प्रसन्न हुई। इस प्रकार कामदेव जीवित होकर सबको सताने लगा ऋषि मुनि तपस्वी योगी यती देवता और मनुष्य तथा सभी जीवधारी कामदेव के वश मे है।

जो मनुष्य कामदेव को अपने वश मे करके ईश्वर में ध्यान लगाते है वे देवताओ की ईर्षा के कारण तप नही करने पाते। जो अपनी इन्द्रियो को वश मे करके परमात्मा का ध्यान करते है वे धन्य है। जो मूर्ख पुरुप स्त्री को दुःख देकर गृहस्थाश्रम से निकल भागते है वे किसी ओर के नहीं रहते।

जो गृहस्थाश्रम मे रहते हुए परमात्मा का भजन करते है वे इस लोक और परलोक दोनों मे आनन्द भोग करते हैं ऐसा धर्मशास्त्रो मे ऋषियो ने कहा है। इसलिये किसी से भी घृणा या विरक्ति का भाव दिखाना ठीक नही है। आजकल वहुतेरे इसी तरह के संयमी ब्रह्मचारी, साधू दिखलाई पड़ते है जो नारि मुई घर संपति नासी, मूड़ मुड़ाये हुए सन्यासी।

आनन्द मन्दिर
छठा अध्याय

कामशास्त्र और वैद्यकशास्त्र से

रतिक्रिया विज्ञान और गर्भ विधान

स्त्री पुरुष पर पड़ने वाली कामदेव की भिन्न २ अवस्थाओं और दशाओं का जिसमें वर्णन है उसी का नाम कामशास्त्र है। कामशास्त्र भी वैद्यक शास्त्र का महत्व पूर्ण अङ्ग है परन्तु विषयी पुरुषों ने उसे विषय वासना की तृप्ति का ही मुख्य शास्त्र समझ रक्खा है और उसकी खोज में फिरते हैं। विषयी पुरुषों की यह दशा देख कर कुछ स्वार्थियों की बन आई है।

दो एक को छोड़कर बाकी कामशास्त्र तथा कोकशास्त्र नाम की पुस्तकों को सज्जन पुरुष घृणा की दृष्टि से देखते हैं। विषयी लोग सचित्र आसनों के नाम पर मर रहे हैं जहां सचित्र चौरासी आसन वाला कोकशास्त्र नाम देखा कि खुश हो गये और मंगाकर देखा तो रोने लगे क्योंकि जितने सचित्र चौरासी आसनों सहित कोकशास्त्रों के नोटिस हैं किसी में विलायती वेश्याओं स्त्री पुरुषों के अनेक प्रकार के चित्र हैं किसी में देशी वेश्याओं के चित्र हैं किसी में दो चार इधर उधर के व्यर्थ के चित्र हैं इस प्रकार की आजकल बहुतेरी पुस्तकें देखी जाती हैं।

जिन्होंने कामशास्त्र के उपयोगी विषयों को नहीं देखा है वे उन्हीं पुस्तकों को कामशास्त्र समझकर उनसे हानि उठा रहे हैं। कामशास्त्र भी वैद्यक शास्त्र का ही अंग है। उसमें भी नियम पूर्वक रतिक्रिया कर उत्तम सन्तान उत्पन्न करने की ही विधि बतलाई गई है।

कामशास्त्र के ही अन्तर्गत विवाह विज्ञान है। हमारे देश में ऋषियों ने बड़े विचार के साथ विवाह करना बतलाया है क्योंकि विवाह बन्धन मनुष्य की आयु पर्यन्त ही नहीं कई पीढ़ियों से सम्बन्ध रखता है इस कारण बहुत विचार करने की आज्ञा है। विवाह का नियम जो भारतवर्ष मे है वह ससार में कहीं नहीं है। विवाह बन्धन अन्य देशो मे बन्धन नहीं समझा जाता, न वहा इतनी देख रेख और विचार ही किया जाता है। विवाह हो जाने पर भी जब स्त्री चाहे पति को छोड़ सकती है विवाह होने के पहिले जिन गुणो के कारण पुरुष को पसन्द करके स्त्री ने उसे अपना जोड़ा मिलाया था विवाह होने के बाद यदि उसमें कुछ कमी आगई तो स्त्री पति को छोड़ देती या छोड़ सकती है। पति भी इसी प्रकार छोड सकता है परन्तु पति के लिये कुछ कठिनाई होती है।

जिन देशो अथवा जिन जातियो मे विवाह का कोई शास्त्र सम्मत नियम नहीं है वहां तथा उन जातियो मे पत्नी जब चाहे पति को छोड सकती है परन्तु भारतवर्ष की उच्च जातियो में विवाह का वड़ा भारी महत्व है इसलिये यहां पति को पत्नी छोड़ नहीं सकती। जिन जातियो मे छोड़ने का रिवाज है उन मे भी विरादरी का दंड आदि वड़ी कठिनाई पड़ती है। भारतवर्ष के प्राचीन पुरुषों ने विवाह के विषय में पहिले ही इतना विचार रक्खा है कि विवाह वन्धन टूट न सके। इसीलिये जन्मपत्र के अनुसार अनेक बाते मिलाई जाती हैं।

वर और कन्या की प्रकृति नाड़ी वर्ग और शुभाशुभ लक्षण मिलाकर विवाह होता है परन्तु फिर भी कुछ न कुछ मिलान रह जाता है जिसका परिणाम आगे चलकर बुरा होता है। प्रकृति आदि न मिलने से स्त्री पुरुष मे कलह रहती है। प्राचीन समय मे जन्म पत्र का ठीक ठीक मिलान करके विवाह होता था। कुछ समय से धर्म्म सम्बन्धी सभी बातो मे कमी और असावधानी होने लगी है इसी प्रकार विवाह आदि मे भी होती है इसलिये ठीक मिलान न कर पति पत्नी की प्रकृति और स्वभाव आदि न मिलने से नाना प्रकार के कष्ट होते हैं और दाम्पत्य प्रेम का जैसा चाहिये आनन्द नही मिलता।

आजकल प्रथम तो जन्म पत्र ही ठीक नही बनते। बच्चे वाले पडित को बच्चे के पैदा होने का समय अन्दाज से बतलाते हैं क्योंकि प्रायः घड़ी बहुत कम घरों मे होती है। इसलिये बहुत कम घर ऐसे होते हैं जिनमे जन्म समय का वक्त बिलकुल ठीक देखकर जन्म पत्री बनाई जाती होगी। दूसरे जन्म पत्री बनाने मे जितने पाण्डित्य की आवश्यकता होती है उतनी विद्वत्ता पण्डित मे होती नहीं। वे अट संट जो समझते हैं, बना देते हैं। इसके बाद जन्म पत्री के मिलाने वाले भी बहुत कम मिलान करते हैं वे केवल अपने मतलब साधन की बात सोचते हैं। यही कारण है कि आजकल जन्म पत्री का मिलान करके भी व्याह होने पर अधिकतर उसका परिणाम विपरीत होता है। जिस दाम्पत्य प्रेम के लिये जन्म पत्री मिलाई जाती है वह दाम्पत्य प्रेम नष्ट होजाता है।

स्त्री के भेद

स्त्रियां चार प्रकार की मानी गई हैं।

१—पद्मिनी २—चित्रणी ३—शंखनी ४—हस्तिनी

पद्मिनी स्त्री के लक्षण

रूपवती, सुन्दर, चन्द्रमुखी और नेत्रो मे मृगी की समान सुन्दर जिसे मृगनयनी कहते है, पुष्ट स्तन वाली, सुशील, स्वभाव वाली, कोमलाङ्गी (शरीर के अग कोमल हो सांवला या गोरा कैसा ही शरीर हो,) आहार न वहुत कम न अधिक करने वाली, मीठी वोली वाली, मधुर चाल वाली, मानवती, विलास दक्षा, लज्जावती, धर्म्म कार्यों मे रुचिवाली, पतिव्रता के समान शरीर की गन्ध-वाली, बुद्धिमती, कभी अपमान की वात न सह सकने वाली जो स्त्री हो ऐसी स्त्री पद्मिनी कही जाती है।

चित्रणी स्त्री के लक्षण

मृगनयनी अर्थात् जिसके नेत्र मृगी की समान सुन्दर और वड़े हों, चन्द्रमुखी, सुन्दर मुखाकृति वाली, पतिप्राणा, प्रेम के महत्व को समझने वाली, प्रसन्न मुख, सगीत प्रेमी, शिल्पकला मे रुचि रखनेवाली, विद्या प्रेमी, मधुर भाषण करने वाली, सुन्दर, सुडौल, शरीर वाली और सांवले वर्णवाली, जिसका उदर छोटा, स्तन ऊंचे और हथिनी के समान मन्द चाल वाली, ऐसी स्त्री को चित्रणी कहा है।

शंखिनी स्त्री के लक्षण

भूरे नेत्रों वाली, दुबले शरीर वाली, तिरछी चितवन और लम्बे केशों वाली, छोटे स्तन, चंचल चालवाली, नशीली वस्तुओं की रुचि रखने वाली, भांग आदि पीने की इच्छा वाली, कर्कश बोली वाली, दुष्ट स्वभाव वाली हो क्रोधी हो सांवली या गोरी वर्ण वाली हो तथा विषय भोग में अधिक इच्छा रखने वाली हो तो ऐसी स्त्री शंखिनी कही जाती है।

हस्तिनी स्त्री के लक्षण

जिसके पसीने में हाथी कैसी गन्ध आती हो, ठिगने शरीर वाली, मोटी, दुष्ट स्वभाववाली, हथिनी की समान चाल वाली, स्तन-भार से ऊपर का शरीर झुका हुआ सा कुछ कुछ प्रतीत हो, घुंघराले बालवाली, लज्जाहीन, लाल बड़े बड़े होठों वाली, खूब खाने वाली, गोरे शरीर वाली और जिसके मासिकधर्म के रक्त में भी हाथी कैसी गन्ध आती हो ऐसी स्त्री को हस्तिनी कहा है। और भी अनेक प्रकार की स्त्रियां कही हैं परन्तु मुख्य चार ही हैं।

जिनके आर्त्तव के चढ़ाव उतार में प्रतिपदा, पूर्णिमा अमावस्या आदि का क्रम नहीं भी होता है उनके भी ऋतु धर्म के दिनो और उसके ठहराव के दिनो का तो क्रम होता ही है। अर्थात जिस प्रकार पन्द्रह दिन चन्द्रमा घटता बढ़ता है उसी प्रकार सभी स्त्रियों के ऋतुकाल की १६ रात्रियां बतलाई गई हैं और ऋतु धर्म की शुरुआत पर उनकी घटती बढ़ती चन्द्रमा की ही भांति होती हैं।

स्त्री के शरीर में आर्तव का चढ़ाव उतार

स्त्री के शरीर मे आर्तव का चढाव उतार इस प्रकार होता है जैसे समुद्र मे ज्वार भाटा का नियम है। जिस प्रकार चन्द्रमा की कला से अर्थात् घटने बढ़ने से समुद्र का जल घटता बढ़ता है उसी प्रकार का स्त्री के आर्तव का सम्बन्ध चन्द्रमा से है। चन्द्रमा के ही हिसाब से स्त्रियो का आर्तव समस्त शरीर मे चक्कर लगाया करता है। मेरे पास अनेक स्त्रियां मासिकधर्म्म सम्बन्धी ऐसे रोगों वाली भी आईं और आया करती हैं जिनका मासिकधर्म्म ठीक पूर्णिमा तिथि के दिन होता है और बहुत अधिक गिरता है और पन्द्रह दिन तक जारी रहता है। पन्द्रह दिन के बाद कम होने लगता है और पूर्णिमा के पहिले ही बिलकुल बन्द होकर पूर्णिमा को फिर जारी हो जाता है। इसी प्रकार के अनेक दोष मासिकधर्म्म मे पाये गये। कुछ स्त्रियां ऐसी भी देखने मे आई जिनको हर महीने कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा को ऋतुधर्म के रक्त का कुछ अश दिखलाई देकर बन्द हो गया और उसी दिन से गर्भाशय मे पीडा होनी आरम्भ हुई। वह पीड़ा दिन दिन बढती गई फिर ठीक पन्द्रहवे दिन मासिकधर्म्म आरम्भ हुआ और पन्द्रह दिन तक जारीरहा पूर्णिमा को एकदम बन्द हो गया।

कोकशास्त्र कामशास्त्र सम्बन्धी पुस्तको मे जो कामदेव का चढाव उतार बतलाया गया है वह आर्तव का ही चढाव उतार है इसका हिसाब इस प्रकार है:—

अंगुष्ठे पद गुल्फजानु जघने नाभौ च सक्षः स्तने।
कक्षा कण्ठ कपोल दन्त वसने नेत्रालिके पद्धनि॥

इसका अर्थ यह है कि स्त्री के आर्तव का चढ़ाव उतार कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा से आरम्भ होता है।

१—प्रतिपदा को पैर के अंगूठे मे
२—द्वितीया को पैर के तलवे में
३—तृतीया को पैर के घुटने मे
४—चौथ को जांघ में
५—पंचमी को गुप्त स्थान मे
६—छठ को कमर मे
७—सप्तमी को नाभि मे
८—अष्टमी को हृदय मे
९—नवमी को स्तन में
१०—दशमी को बगल में
११—एकादशी को कपोल मे
१२—द्वादशी को गले मे
१३—तेरस को गाल मे
१४—चौदश को आंख में
१५—अमावस को शिर मे

इस प्रकार हर महीने की प्रतिपदा से १५ दिन मे पैर के

अगूठे से शिर तक चढ़ता है और फिर दूसरे पक्ष मे शिर से उतर कर उसी क्रम से दूसरी ओर से पैर के अगूठे पर आता है।

इस प्रकार आर्तव का हर महीने एक चक्कर पूरे शरीर में होकर योनि मार्ग से निकलता है। जितने आर्तव की गर्भ धारण के लिये शरीर को आवश्यकता है उतना शरीर मे प्रकृति रहने देती है। इसी प्रकार आहार विहार के अनुसार फिर आर्तव वनना आरम्भ होता है और महीने भर तक वनता तथा शरीर मे चक्कर लगाता है वही समय पर फिर निकलता है।

इसके विषय मे अनेक ग्रन्थो मे यह पाया जाता है कि स्त्रियो को स्खलित करने के लिये जिस स्थान मे जिस तिथि को कामदेव हो उस तिथि को उस स्थान मे नख गडावे और आलिगन चुम्बन आदि करे इससे स्त्री शीघ्र ही स्खलित होजाती है। किन्तु यह वात विलकुल मनगढत है। इसका तात्पर्य कुछ और है।

कामशास्त्र सम्बन्धी जितनी पुस्तके प्रकाशित हुई है प्राय सब मे यह वतलाया गया है कि जिस तिथि को कामदेव जिस स्थान पर हो उस स्थान को नखो से दातो से खीचे ताने, नाखून गडावे इस विधि से स्त्री शीघ्र ही द्रवित होजाती है।

एक पुस्तक मे लिखा है स्त्री के अगो मे जिस समय काम की स्थिति हो उस समय वहा पर चुम्बन करे नाखून गड़ावे, दांत गडावे या ताड़न करे इन उपायो से स्त्री के कामदेव को जाग्रत करना चाहिये। शिर के वालो को अपने हाथ की अंगुलियो मे लपेट कर खीचना चाहिये।

चित्रणी स्त्री

इसी प्रकार के अनेक घृणित उपाय बतलाये गये हैं जिनको मैं यहां लिखना उचित नहीं समझती।

स्त्री का कामदेव क्या मानो कुम्भकरण की नींद होगई, जिसे जगाने में पुरुष को इतने कठिन उपाय करने की जरूरत है। पाठको! विचार कीजिये विषयी लोगों ने स्त्रियों को क्या समझ रक्खा है ऐसी पुस्तकों के प्रचारकों को भी इस बात का कुछ विचार नहीं होता। वे अपने स्वार्थ साधन के लालच से विषयी लोगों के चित्त प्रसन्नार्थ कुछ का कुछ मनगढ़त लिख देते है।

मैंने २५ वर्ष तक लाखों स्त्रियों की चिकित्सा करके इस बात का अनुभव किया कि स्त्रियों के आर्तव का चढ़ाव उतार चन्द्रमा के हिसाब से है क्योंकि मेरे यहां जो स्त्रियां आर्तव दोष वाली इलाज के लिये आया करती हैं उनमे यदि साधारण खराबी हुई तो रोग की परीक्षा करके औषधि देदी, वे दो चार दिन ठहर कर अपने घर चली गई। और जिनमें अधिक खराबी हुई वे ठहर कर इलाज कराती है और आराम होकर जाती हैं।

ऋतुदोष वाली स्त्रियों के विषय मे मैं लिख चुकी हू। आर्तव का चढ़ाव उतार चन्द्रमा के हिसाब से होता है। अभी हाल में एक स्त्री मेरे पास आर्तव दोष की आई थी और उसने मेरे यहां ठहर कर इलाज कराया उसका ऋतुधर्म्म प्रतिपदा से आरम्भ हुआ। कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा को उसके पीड़ा आरम्भ हुई और वह पीड़ा दिन दिन क्रमश. बढ़ती गई और अठाइसवे दिन खूब पीड़ा होकर मासिकधर्म्म अधिक तादाद मे हुआ।

उस स्त्री की जबानी मालूम हुआ कि वह ठीक २८-या २९ वें दिन इसी कष्ट से ऋतुधर्म्म मे होती है और कई वर्ष से उसके मासिकधर्म्म का यही हाल है। प्रतिपदा से पीडा आरम्भ होती थी और चौदह पन्द्रह दिन में खूब बढ़ती थी। मासिकधर्म्म के एक दिन पहले पीड़ा इतनी अधिक बढ़ती थी कि उसे नशैली औषधियों के इञ्जक्शन लगवाने पड़ते थे जिससे पीड़ा मालूम न हो। मेरे यहां वह दो तीन महीने रही। हर महीने उसे इसी प्रकार का कष्ट होता था।

मैंने उससे पूछा तो मालूम हुआ उसे जब से मासिकधर्म्म आरम्भ हुआ तब से ही वह ठीक २८ वे दिन मासिकधर्म्म से होती रही है। विवाह के बाद अधिक प्रसग के कारण उसके मासिकधर्म्म मे यह खराबी उत्पन्न होगई कि कष्ट से होने लगा और बहुत अधिक होने लगा। मेरे यहां तीन महीने रहकर उसने इलाज कराया। तब सब शिकायते दूर हुईं और वह अपने घर को गई।

इस प्रकार अनेक ऐसी स्त्रियों के रोगो से निश्चय होता है कि स्त्रियो का आर्तव वास तिथि के हिसाब से होता है।

स्त्रियों के ये भेद और लक्षण कामशास्त्रो में ही बतलाये गये हैं। अन्य धर्म ग्रन्थो तथा आयुर्वेद शास्त्रो में यह तो बतलाया गया है कि किन चिन्हों वाली लड़की का कैसा स्वभाव होता है और कैसी लड़की से विवाह करना चाहिये तथा विवाह के समय किन बातों का ध्यान रखना चाहिये। सम्भव है उन्ही ग्रन्थो के आधार पर कामशास्त्र में ये भेद किये गये हों।

अमृत और विष

वैद्यकशास्त्र मे अमृत और विष दोनों प्रकार की औषधियो की विधि और सेवन बतलाया गया है। विष से जो औषधियां विधि पूर्वक तैयार कर पथ्य से सेवन की जाती हैं वे विषों द्वारा तैयार हुई औषधियां अमृत का काम कर दिखलाती हैं। जो मूर्ख उन्हें विना समझे ही तैयार कर अथवा अज्ञानी चिकित्सकों की तैयार की हुई औषधियां सेवन करते हैं वे अमृत की समान गुणकारी होने पर भी विष की समान प्राण नाशक हैं।

इसी प्रकार अमृत की समान औषधियां विना जरूरत के सेवन की जावे तो वे भी विष की समान हानि कारक होती है। इसका तात्पर्य यह है कि:—

सन्तान की इच्छा मे संभोग के समय स्त्री को प्यार और प्रेम मे आलिंगन चुम्बनादि से प्रसन्न करके सीधे आसन से सभोग करे, नोच खसोट आदि से नही। जब स्त्री पति के प्यार से प्रसन्न होगी तब सभोग मे भी उसकी इच्छा पूरी होगी और वह स्खलित होकर गर्भधारण करेगी।

इसका मूर्ख लोग यह आशय समझते हैं कि स्त्री को आलिंगन चुम्बन आदि उपायो से पुरुष के साथ ही स्खलित होना चाहिये उन मूर्खों को यह नही मालूम है कि स्त्री पुरुष एक साथ स्खलित होने से यदि गर्भ रह गया तो नपुंसक सन्तान उत्पन्न होगी।

चारों प्रकार के पुरुषों के लिक्षण

स्त्रियों की तरह पुरुषों के चार भेद है—

१—मृग २—वृषभ ३—शशक ४—अश्व।

मृग पुरुष के लक्षण

हृष्ट पुष्ट, सुन्दर बलवान सुन्दर नेत्रों वाला हो और कमल कैसी सुगन्धि शरीर मे आती हो, शरीर सुकोमल चिकना कान्ति वाला हो और डील डौल मे न बहुत लम्बा बेडौल न ठिगना हो, प्रसन्न चित्त रहने वाला पर उपकार करने मे उत्साही धैर्यवान् अतिथि सेवक, धर्मकार्यों तथा ईश्वर मे भक्ति रखने वाला, सदैव सन्तोष रखने वाला हो ऐसे पुरुष को मृग कहा है।

जिस प्रकार मृग के नेत्र बड़े बड़े और सुन्दर होते हैं नेत्रो मे चचलता और साथ ही सुन्दरता भी होती है उसी प्रकार ऐसे ऐसे नेत्र वाले पुरुष को मृग कहा है।

वृषभ पुरुष के लक्षण

अधिक सन्तान उत्पन्न करने वाला, मधुर भाषी, साहसी, धैर्यवान्, कफ प्रकृति वाला, परिश्रमी, उद्योगी, चौड़ी छाती वाला, और अधिक सोने वाला हो, सुन्दर स्त्रियों को प्यारा पाचन शक्ति तीव्र हो, कुछ भारी शरीर वाला हो, शरीर के बाल कुछ घने और कड़े हो, नाक के नथुने कुछ चौडे हो, सदा प्रसन्न, मुख

गर्भिणी स्त्री

रहने वाला और सन्तोषी हो ऐसे लक्षणों वाला पुरुष वृषभ कहा गया है।

शशक नामक पुरुष के लक्षण

शशक पुरुष का शरीर सुडौल सुन्दर हृदय कोमल, धर्मात्मा, सत्य बोलने वाला, स्त्री भोग मे कम इच्छा रखने वाला, अपनी ही स्त्री से प्रेम करने वाला, बुद्धिमान, विद्वान्, और भाग्यवान होता है। परोपकार मे उत्साही, मधुरभाषी, सुशील और गम्भीर विचार वाला होता है।

अश्व नामक पुरुष के लक्षण

अश्व नाम घोडे का है। अश्व पुरुष घोडे के समान चचल, पुष्ट शरीर वाला, कुमार्गी, शरीर का रग सांवला, रतिक्रिया मे अत्यन्त लिप्त रहने वाला, अधिक आहार करने वाला, लज्जाहीन, कुल कलकी, विषयी, व्यभिचारी, क्रोधी स्वभाववाला और घमडी होता है। बड़ों का अपमान करने वाला और पर सतापी होता है।

इसी प्रकार से स्त्री पुरुष अनेक लक्षणो वाले होते हैं यह विषय यदि विस्तार से लिखा जावे तो एक बड़ा भारी ग्रन्थ बन जावेगा इस लिये अधिक लिखना व्यर्थ है क्योंकि जिस पुरुष का जिस स्त्री के साथ विवाह हो चुका है वह तो जैसा है ठीक ही है, जिनका विवाह नही हुआ है उनके विषय मे एक अलग पुस्तक लिखी जारही है, इसलिये यहां इस विषय मे अधिक लिखना अनावश्यक है।

स्त्री पुरुष सम्बन्ध

पद्मिनी स्त्री और शशाक पुरुष

पद्मिनी स्त्री का और शशाक नामक पुरुष का सम्बन्ध उचित सम्बन्ध है क्योंकि शशाक नाम खरगोश का है। खरगोश कोमल शरीर, सुन्दर, विषय भोग में कम इच्छा रखने वाला होता है।

पद्मिनी स्त्री भी भोग की कम इच्छुक होती है इस कारण दोनों का स्वभाव एकसा होता है। इसलिये पद्मिनी स्त्री शशाक नामक पुरुष से सब प्रकार सन्तुष्ट रहती है।

पद्मिनी स्त्री और शशाक पुरुष का सम्बन्ध सन्तान के लिये भी अति उत्तम है। सन्तान भी योग्य बुद्धिमान धर्म्मात्मा सुशील आज्ञाकारी होती है अर्थात् माता पिता के स्वभाव की समान होती है।

पद्मिनी स्त्री की प्राचीन ग्रन्थों में बड़ी प्रशंसा की है। इसी प्रकार शशाक पुरुष को भी माना है, इस कारण जिस घर में पद्मिनी पत्नी और शशाक पुरुष पति है उस घर में ही दाम्पत्य सुख का सच्चा आनन्द मिल सकता है ऐसा ग्रन्थकारों का मत है।

चित्रणी स्त्री और मृग पुरुष

चित्रणी और मृग नामक स्त्री पुरुष का सम्बन्ध होने से दाम्पत्य प्रेम का आनन्द और योग्य सन्तान का सुख मिलता है क्योंकि चित्रणी स्त्री और मृग पुरुष का जोड़ा ठीक है। चित्रणी

स्त्री का स्वभाव और मृग पुरुष का स्वभाव एकसा होता है। इनकी सन्तान भी योग्य होती है।

प्राचीन ग्रन्थों में चित्रणी स्त्री के लिये मृग पुरुष ही योग्य बतलाया है जिस गृह में ये दोनों दम्पति हैं वह घर उन्नति शील होता है।

शंखिनी स्त्री और वृषभ पुरुष

वृषभ पुरुष के लिये शंखिनी स्त्री का सम्बन्ध योग्य बतलाया है क्योंकि इन दोनो का स्वभाव एक सा होता है। शंखिनी स्त्री भोग विलास में अधिक इच्छा रखने वाली होती है और पुरुष भी ऐसे ही स्वभाव वाला होता है इसलिये शंखिनी स्त्री वृषभ नामक पुरुष को ही पाकर सन्तुष्ट रहती है।

हस्तिनी स्त्री और अश्व पुरुष

हस्तिनी स्त्री का सम्बन्ध अश्व जाति के पुरुष से उचित सम्बन्ध है क्योंकि हस्तिनी स्त्री अश्व जाति के पुरुष से सन्तुष्ट रहती है।

हस्तिनी जाति की स्त्री और अश्व जाति के पुरुष का स्वभाव एकसा होता है। दोनो विषय वासना की बराबर ही इच्छा रखते हैं इसलिये हस्तिनी का जोड़ा अश्व पुरुष ही उत्तम माना गया है। इस प्रकार के सम्बन्धों के साथ साथ ऋतु, आहार तथा परिस्थिति आदि का भी दाम्पत्य प्रेम पर बहुत प्रभाव पड़ता है। आगे ऋतुचर्या नामक प्रकरण मे इसविषय पर लिखा गया है।

क्योंकि ऋतुओ से समय समय पर शरीर की प्रकृति बद-लती रहती है और उसी के अनुसार शरीर पर भोजन का भी प्रभाव पड़ता है। हानिकारक भोजन से शरीर पर हानिकर प्रभाव पडेगा और स्वास्थ्य कर भोजन से शरीर पर स्वास्थ्यकर असर पडेगा। अच्छा बुरा भोजन स्वास्थ्य और शरीर पर तथा चित्त से उत्पन्न होने वाले विचारों पर अपना पूरा प्रभाव जमाता है इस लिये सुन्दर स्वास्थ्य और दाम्पत्य जीवन का सच्चा सुख चाहने वाले पुरुष दम्पति को सदैव ऋतुचर्या का पूरा ध्यान रखना चाहिये और उसी के अनुकूल अपना जीवन बनाना चाहिये। इसलिये आगे के अध्याय मे ऋतुचार्या विषय पर प्रकाश डाला गया है।

हस्तिनी स्त्री

आनन्द मन्दिर
तीसरा अध्याय

ऋतुचर्या

हेमन्त ऋतु का आहार विहार

(अगहन और पौष हेमन्त ऋतु)

स्त्री पुरुषो की आरोग्यता और दीर्घ जीवन, संभोग और सौन्दर्य तथा दाम्पत्य प्रेम के लिये यहां आयुर्वेद के अनुसार आहार विहार की ऋतुचर्या विधि लिखी जाती है।

दीर्घप्रचार सुरता किल यत्र रात्रिः,
सुशीतलं वारि विना च यत्नात् ।
यः प्रेयसीकुचयुगं परिरभ्य शेते,
स्वर्गोऽपि तस्य हृदये तृणवद्विभाति ॥

जिस हेमन्तऋतु मे बहुत काल पर्यन्त संभोग करने योग्य रात्रि और विना यत्न के ठढा पानी रहता है (वर्फ की जरूरत नही) ऐसे समय मे जो अपनी प्राण प्यारी पत्नी को आलिंगन कर शयन कर रात्रि व्यतीत करता है वह पुरुष धन्य है। उस पुरुष को स्वर्ग सुख भी तृण के समान प्रतीत होता है।

इसके विरुद्ध जो पुरुष अपनी प्यारी पत्नी को छोड़ पर स्त्री अथवा वेश्या से प्रेम करता है वह मूर्ख इस लोक और परलोक दोनो मे अपना जीवन नष्ट करता है। उसे कुछ दिन में इस कुकर्म के फल निर्धनता, प्रमेह, गर्मी, सुजाक आदि के रूप मे अवश्य

मिलते है जिसके कारण वह इस जन्म में नर्क भोग से अधिक कष्ट और दुःख भोगता है तथा परलोक मे इससे अधिक बुरी गति को प्राप्त होता है।

पृथुजघनकुचाभिर्यौवनोन्मादिनीभि-
र्नवमृगमदमिश्रैः कुंकुमैश्चर्चिताभिः।
भवति शिशिरशान्तिः स्त्रीभिरालिङ्गिताभि-
र्निशि निशि पुरुषाणां जन्मसाफल्यभाजाम्॥

सौन्दर्य और रूप की मदमाती युवती पत्नी, जिसने कस्तूरी मिली केशर शरीर मे लगा रक्खी है ऐसी अपनी प्यारी स्त्री को इस शीतकाल मे आलिगन कर दाम्पत्य प्रेम का अनुभव करते है अर्थात् सुख भोग करते है, आनन्द मे रात्रियों को व्यतीत करते हैं उन्ही मनुष्यो का जन्म सफल होता है। वे पति पत्नी धन्य हैं ऐसा आयुर्वेद कहता है।

जो अपनी प्यारी पत्नी से विरुद्ध पर स्त्री गमन अथवा वेश्या-गमन करते हैं वे मूर्ख अपना बहुमूल्य जीवन नष्ट करते हैं। जो पुरुष अपनी सुन्दर रूप वाली अथवा कुरूप पत्नी जो विधाता ने अपने भाग्य से दे रक्खी है वह कैसी ही हो उसका निरादर करके, उसको दुःखी करके, उसके आत्मा को कष्ट देकर आप पर स्त्री अथवा वेश्याओ से प्रेम करते हैं वे अपने पैरो मे आप कुठाराघात करते हैं। उनका मनुष्य जन्म व्यर्थ है। उन्हें परकाल में भी यम यातना का कष्ट भोगना पड़ता है।

१—प्रतिपदा को पैर ... से

हेमन्ते दधिदुग्धसर्पिरशनामाञ्जिष्ठवासोभृतः,
काश्मीरद्रवलिप्त चारुवपुषः खिन्ना विचित्रै रतैः।
वृत्तोरुस्तन कामिनी जनकृताश्लेषा गृहाभ्यन्तरे,
ताम्बूलीदलपूग पूरितमुखाधन्याः सुखंशेरते ॥

दही दूध तथा घी के नाना प्रकार के भोजन कर लाल रंग के वस्त्र धारण कर, केशर का लेप शरीर में लगाए हुए, दाम्पत्य प्रेम के आनन्द भोग और संभोग से थकित, युवती पत्नियो के हाथ का बीडा और पान सुपारी आदि से जिनका मुख शोभायमान है ऐसे बड भागी पुरुष इस हेमन्तऋतु मे सुख पूर्वक शयन करते हैं।

हेमन्त ऋतु का स्नान

इस ऋतु मे तैल की मालिस समस्त शरीर मे कराकर गरम जल से स्नान करना चाहिये, तैल की तमाम शरीर मे मालिस करके स्नान करना शरीर को पुष्ट करता है और धातु ओज तथा तेज की वृद्धि करता है। कान और आँख की शक्ति को बढाता है। परमात्मा ने जिन को सामार्थ्य दी है उन्हे तैल की मालिस करके और सरसो चिरौजी आदि पदार्थों के उबटन लगवा कर गरम पानी से प्रतिदिन स्नान करना चाहिये।

पीठ में सूर्य की गरमी और पेट तथा हाथ पैर आदि मे अग्नि की गरमी का सेवन करना चाहिये।

हेमन्त ऋतु का आहार

हेमन्त ऋतु मे शीत के कारण ऊपरी शरीर की गरमी भीतर रहती है इस कारण जठराग्नि (पेट की गरमी पाचन शक्ति) प्रबल रहती है । यदि इस ऋतु मे समय पर भोजन रूपी ईंधन न मिले तो यह प्रबल होकर रस रक्त आदि धातुओ को पचाने लगती है जिससे मनुष्य शीघ्र ही निर्बल दुर्बल और शक्ति हीन होजाता है । हेमन्त मे समय पर जिस समय भूख लगी हो अवश्य भोजन करना चाहिये और भोजनों मे स्वादिष्ट खट्टे और नमकीन पदार्थ अवश्य होने चाहिये ।

हेमन्त मे जठराग्नि के प्रबल होने से तथा रात्रि बड़ी होने से प्रात.काल ही भूख लगती है अतएव प्रात.काल शौच आदि कुल्ला दातौन से अवकाश पाकर कुछ खाकर तब अपने प्रति दिन के काम में लगना चाहिये ।

वैद्यकशास्त्र बतलाता है कि भूखा मनुष्य यदि समय पर भोजन न करे और भूख लगी रहने पर भी परिश्रम मे लगजावे तो उसकी जठराग्नि (पेट की पाचन शक्ति) नष्ट हो जाती है जैसे बिना ईंधन के आग बुझजाती है वैसे ही बिना भोजन के परिश्रम करने से अथवा भूखे रहने से पेट की अग्नि बुझजाती है। इसलिये सामर्थ्य के अनुसार प्रातःकाल कुछ खा लेना चाहिये ।

हेमन्त मे आरोग्य रहने के लिये गुड़ मे मिला हुआ हर्ड का ३ से ६ मासे तक चूर्ण प्रति दिन सेवन करना चाहिये ।

बड़ी हर्ड कूट पीस कपड़ छानकर तीन तीन या छैः छैः मासा की पुड़िया बना रक्खे। प्रतिदिन रात को सोते समय एक एक तोला गुड़ मिलाकर खालेवे ऊपर से पानी या गाय का दूध पीलेवे। इससे प्रति दिन पाखाना साफ होता है और भूख खूब लगती है शरीर आरोग्य और फुर्तीला रहता है।

अदरख, लौंग, सोठ, कच्चे आम, अथवा आमला या कैथा की चटनी, पीपर, सौंफ, मेथी, कमलगट्टा, चौलाई का शाक, धनियां, कालीमिर्च, हींग, घी, दूध की खीर, परवल की तरकारी, अरहर मूग की दाल अथवा खड़ी मूग, पुराने चावल, पुराने गेहूँ की रोटी ये सब पदार्थ प्रति दिन हेर फेर कर सेवन करने चाहिये।

चीते की छाल, सेंधा नमक, इलायची, जायफल, चूके का शाक, दही, मट्ठा, जिमीकंद, मुनक्का, जलेबी, हलुवा, आदि पदार्थों का सेवन इस ऋतु मे अत्यन्त हितकारी है।

मूली की तरकारी, जभीरी, अनार, अंगूर सेव, बादाम, अखरोट आदि हेमन्त ऋतु मे हितकारी हैं। गेहूं का दलिया, सांठी के पुराने चावल तथा लाल चावलों का भात नदी या कुए का पानी यह सब हेमन्त ऋतु मे हितकारी है।

हेमन्त ऋतु के हानिकारक पदार्थ

सिंघाड़े, कसेरू, नाडी का शाक, केला की फली, उड़द, आलू, घिया तोरई, भैंस का दूध, मट्ठा, दहीवड़ा ये सब हेमन्त ऋतु में हानि कारक हैं। इस ऋतु मे इनका सेवन न करे।

दिन मे सोना, उपवास करना, शीतल जल से स्नान करना, बहुत देरी का रक्खा हुआ अन्न भोजन करना, हवा में बैठना, शीतल जल पीना, एक ही समय भोजन करना, सत्तू खाना और कसैले, कडुए, तीक्ष्ण, रूखे तथा हलके पदार्थों का सेवन करना, जहां सूर्य का प्रकाश न पहुँचता हो ऐसे स्थान में रहना, ये है ऋतु में हानिकारक हैं। इसलिये शरीर की आरोग्यता न वालों को यह सब छोड़ देना चाहिये।

शिशिर ऋतु का आहार विहार

(माघ और फाल्गुन शिशिर ऋतु)

सर्व हिमोक्तं शिशिरे प्रयोज्यं,
पथ्या कणा तुल्यतमा च सेव्या।
आभुज्य सेवेत जलं सुखोष्णं,
कान्तायुतो वास गृहे वसेत्तु ॥

जो पदार्थ हेमन्त मे सेवन करने, आहार विहार आदि करने बतलाये हैं वे ही शिशिर मे भी सेवन करने चाहिये, इस ऋतु में पीपल का चूर्ण मिलाकर हर्ड सेवन करनी चाहिये अन्य सब वस्तुए हेमन्त की ही समान सेवन करना हितकारी है।

सार्द्रकार्द्रा ससंधाना सबाह्लीका ससैंधवा।
सस्नेहा कामिनी चेयं कृशरा शिशिरेहिता ॥

२—द्वितीया को पैर के तलवे में

शिशिर मे पानी का अचार अदरख, आम, टेटी, लहसोडा छुहारा आदि का अचार और हींग तथा सेंधा नमक पडे हुए तथा घी मे बनाए हुए पदार्थों का सेवन करना चाहिये और अपनी भार्या (स्त्री) को प्रेम और स्नेह से सेवन कर दाम्पत्य जीवन का आनन्द भोगना हितकारी है।

आयुर्वेद ऋतुचर्या के आनन्द भोग के लिये और दाम्पत्य सुख का अनुभव तथा आरोग्यता के लिये बतलाता है:--

मत्तेभकुम्भ परिणाहिनि कुङ्कुमार्द्र-
कान्तापयोधरनटे रतिभारखिन्ने।
वक्षो निधाय भुजपञ्जरमध्यवर्ती-
धन्यः क्षपां क्षपयति क्षणवरस धन्यः॥

अर्थात्--मतवारे हाथी के कुभस्थल को लजाने वाले, केशर आदि सुगन्धित पदार्थों मे सुगन्धि युक्त, कान्ता के स्तनों को दोनों भुज पजरो के मध्य मे ले हृदय मे हृदय लगाकर अपनी प्यारी स्त्री के साथ दाम्पत्य सुख का भोग करते हुए जो पुरुष शिशिर ऋतु की रात्रियो को सुख से व्यतीत करता है वह धन्य है।

कस्तूरिका कुंकुम चन्दनैश्च,
सुचर्चिताया ऽगुरुधूपिताम्बरा।
उर स्थलेनोलुठितानिशायां,
वृथागतं तस्य नरस्य जीवनम्॥

अर्थात्—कस्तूरी केशर चन्दन आदि सुगन्धित पदार्थों का शरीर में लेप किये हो और अगर धूप आदि की सुगन्धि से सुगन्धित वस्त्र धारण किये हो ऐसी अपनी सुन्दर भार्या को इस शिशिर मे स्नेह पूर्वक प्यार न किया उस पुरुष का जीवन व्यर्थ गया।

मन्दं मन्दं दिनान्ते ज्वलति हुतवहः,
पृष्ठतः पार्श्वतो वा।
धन्यो लोकस्तरुण्याः स्तनजघनपरी-
रंभसंभोगसंगी॥

अर्थात्—सांयकाल मे मन्द मन्द अग्नि जल रही हो जिससे आगे पीछे गरमाहट हो रही हो। ऐसे समय मे इस शिशिर मे जो पुरुष अपनी प्यारी युवती पत्नी के साथ प्रेम और स्नेह से ऊंचे ऊंचे रुई के गद्दो पर विलास और शयन करते हैं। वे पुरुष धन्य हैं। उन्ही का दाम्पत्य जीवन प्रेम आनन्द और सुख से व्यतीत होता है।

क्वापि तैलं सुगन्धं ताम्बूलं तप्तभोज्यं।
तरुणिविरचितं वासरे शैशिरेऽस्मिन्॥

कभी तैल की मालिस कराना, कभी सुगन्धियो से शरीर को तर बतर करना, पानो का चबाना और अपनी प्यारी स्त्री का प्रेम पूर्वक स्नेह सहित बनाया हुआ गरमागरम भोजन करना इस शिशिर मे अत्यन्त हितकारी है।

किमिहि बहुभिरुक्तैर्युक्तिशून्यै प्रलापै-
र्द्वयमिह पुरुषाणां सर्वदा सेवनीयम्।
अभिनवमदलीलालालसंसुन्दरीणां-
स्तनभरपरिखिन्नं यौवनं व वनं वा ॥

अर्थात्—कहते हैं कि व्यर्थ की बकवाद करने से क्या मतलब है। इसके विषय में अधिक कहना ही व्यर्थ है। इस संसार में आकर पुरुष के लिये दो ही वस्तुए सेवन करने योग्य हैं। सुन्दर हावभाव युक्त अपनी प्यारी स्त्री का प्रेम पूर्वक सेवन करना और यदि स्त्री न हो तो वनो मे जाकर ईश्वर भजन करके जीवन को आनन्द पूर्वक व्यीत करना।

इन शास्त्रकारो के कहे हुए वचनो का जो पालन करते हैं इन्हीं का जीवन सार्थक होता है। जो अपनी प्यारी स्त्री के न होने पर अथवा होते हुए भी परस्त्री अथवा वेश्याओं से प्रेम करते हैं उनका जीवन व्यर्थ है इसीलिये महाराजा भर्तृहरि जी ने कहा है कि यदि स्त्री से प्रेम न हो तो ईश्वर से प्रेम लगाकर जीवन को आनन्द पूर्वक वन में रहकर व्यतीत करना चाहिये।

यदि स्त्री से प्रेम न हो तो ईश्वर भजन मे आनन्द और सुख प्राप्त होता है क्योंकि वन में रहने वाले ईश्वर भक्तों की भूमि ही सुन्दर शैय्या है भुजाही सिरहाना तकिया है और विरक्तता रूपी स्त्री के सग आनन्द से जीवन व्यतीत होता है।

जो मूर्ख कहते हैं कि—

अभी तो चैन से गुजरती है, आकबत की खुदा जाने।

उन अज्ञानियो को न इस जन्म का ही आनन्द मिलता है न अगले जन्म का। क्योंकि इस जन्म में व्यभिचार आदि से उनके शरीर को आगे चल कर बड़ा कष्ट मिलता है। बड़े बड़े राजा महाराजाओं तक को देखा गया है कि व्यभिचार के कारण तबाह हो गये। सर्वस्व खो बैठे, मान मर्यादा धन सम्पत्ति सब नष्ट होगई। शरीर का सत्यानाश हो गया। तात्पर्य यह कि सब प्रकार से यह अमूल्य मनुष्य जीवन नष्ट हुआ। इसीप्रकार अगले जन्म मे भी उन्हे कष्ट भोगना पड़ता है।

वसन्तऋतु का आहार विहार

(चैत और वैशाख वसन्त ऋतु)

कफश्चितोहि शिशिरे वसन्तेऽर्कांशुतापित।
हत्वाग्निं कुरुते रोगानतस्तं त्वरया जयेत्॥

अर्थात् शिशिर ऋतु मे सचित हुआ कफ वसन्त ऋतु मे सूर्य की किरणो से तापित हो पानी के समान पतला होकर जठराग्नि शक्ति को नष्ट करके अनेक रोगो को उत्पन्न करता है अतएव इस कफ का शीघ्र ही उपाय करना चाहिये जिससे इस ऋतु मे आरोग्यता प्राप्त कर मनुष्य रोगो से बचा रहे।

३—तृतीया को घुटनो मे

कफ नाशक उपाय

वैद्यक शास्त्र बतलाता है कि वसन्त में जुलाब लेकर तथा वमन करके कफ को ठीक करे। भोजन व्यायाम और परिश्रम करे, वायु सेवन करे। कपूर, केशर और अगर मिले चन्दन को शरीर में लगावे, सोंठ डालकर औटाया हुआ जल का सेवन करे। खैर सार चन्दन आदि डालकर औटाया जल तथा पानी मे शहद मिला कर पीना अत्यन्त हितकारी है और नागर मोथा डालकर औटाया हुआ पानी ये सब वसन्त में अत्यन्त हितकारी तथा अरोग्यता को देने वाले हैं।

पुराने जौ गेहूं की रोटी, मूंग की दाल अथवा साबित मूग, परवल की तरकारी, पुराने चावल का भात, बथुआ कचनार की कली, चौलाई का शाक, भरसा करेला, घिया तोरई वसन्त मे सेवन करना हितकारी है।

शहद मिलाकर चार से छै मासे तक बड़ी हर्ड का चूर्ण प्रतिदिन प्रातःकाल और सोते समय सेवन करना अत्यन्त हितकारी है। सरसों, चना, मटर सांठी के चावल, कोदो, अरहर, मसूर की दाल, चूका का शाक, सहजन, बैंगन, सहजन के फूल का शाक इनका सेवन वसन्त में आरोग्यता को देने वाला अत्यन्त लाभदायक है।

बावडी या कुएं का पानी, गाय का गरम दूध मिश्री मिला कर सेवन करना, परिश्रम करना, प्रातःकाल का वायु सेवन,

धानों का लावा, सेंधा नमक पड़ा हुआ गाय का मट्ठा, कढ़ी आदि खाना हितकारी है।

वसन्त ऋतु में हानिकारक पदार्थ

उड़द, दही, आलू, गन्ना, सिंघाडे, बड़ी, मुगौड़ी, पोई का शाक, खिचड़ी, तिल, चिउरा, भैंस का दूध, दिन में सोना, खट्टे पदार्थों का सेवन करना. चिकने गरिष्ट और घी में पकाए हुए देरी में पचनेवाले पदार्थों का सेवन करना वसन्त में हानिकारक हैं इनका सेवन न करे।

रूक्षं कषायं कटुकं च तिक्तं,
ताम्बूलकर्पूर मनोज्ञवेषम्।
क्षौद्रेण पथ्या सह सेवनीया,
स्नेहेन तिष्ठेद्वनितासहायः॥

रूखे, कषैले और कड़ुए रस और पान कपूर तथा शहद मिला हर्ड का चूर्ण सेवन करना अत्यन्त हितकारी है। उज्वल वेष रखना और प्रेम सहित अपनी प्रिय पत्नी के साथ रहना ये वसन्त में आरोग्यता को देने वाले हैं।

अच्छाच्छचन्दनरसार्द्रकरा मृगाक्ष्यो-
धारागृहाणि कुसुमानि च कौमुदी च।

मन्दो मरुत्सुमनसः शुचि हर्म्यपृष्ठं,
ग्रीष्मे मदं च मदनं च विवर्द्धयन्ति ॥

अर्थात्—अति स्वच्छ चन्दन के रस से जिन स्त्रियों का हाथ भीगा है। फुहारे वाले घर में धीमी धीमी सुगन्वित पुष्पों की वायु और चादनी रात में मकानों की श्वेत छत, ये सब सामग्री कामदेव को बढ़ाने वाली है अर्थात् दाम्पत्य प्रेम को विशेष बढाने वाली हैं। वसन्त में जिन भाग्यवान पुरुषो को ये सब प्राप्त हैं वे धन्य हैं, पूर्व जन्म के सचित किये हुए शुभकर्मों से ही पुरुष को ये सब सुख भोगने के पदार्थ इस जन्म में अपनी प्रिय पत्नी सहित मिलते है। जो इनका सेवन नहीं करते वे इस अमूल्य मनुष्य जन्म को व्यर्थ खोते हैं। जो इन पदार्थों को छोड़ व्यभिचार आदि मे फंसकर अपनी प्रिय पत्नी का निरादर करते हैं वे मनुष्य जन्म का कुछ भी आनन्द नही पाते। क्योकि कहा है:—

स्रजोहृद्यामोदा व्यजन पवनश्चन्द्र किरणाः ।
परागः कासारो मलयजरजः सीधु विशदम् ॥
शुचिः सौधोत्सङ्गः प्रतनु वसनं पङ्कजदृशो ।
निदाघे तूर्णं तत्सुखमुपलभन्ते सुकृतिनः ॥

अर्थ—अच्छी सुगन्धित माला, पखे की वायु, चाँदनी रात, पुष्पों का पराग, तड़ाग, चन्दन, श्वेत धाम की अच्छी ऊंची छत,

अच्छे मल मल के महीन वस्त्र और कमल नयनी सुन्दर पत्नी इत्यादि पदार्थों से ग्रीष्म में पुण्यवान पुरुष ही सुख उठाते है।

सुधाशुभ्रं धाम स्फुरदमलरश्मिः शशिधरः।
प्रियावक्त्राम्भोजं मलयजरजश्चातिसुरभिः॥
स्रजो हृद्यामोदास्तदिदमखिलं रागिणिजने।
करोत्यन्तः क्षोभं न तु विषयसंसर्ग विमुखे॥

सफेद अच्छा उज्वल घर और निर्मल चाँदनी का चन्द्रमा, प्यारी पत्नी का मुखकमल, सुगन्धित चन्दन, अच्छे सुगन्धित पुष्पों की माला, ये सब वस्तुएं मनुष्य के जीवन सुख और दाम्पत्य प्रेम की बढ़ाने वाली हैं पुरुषों के हृदय में उत्साह और प्रेम उत्पन्न करने वाली हैं परन्तु जो पुरुष विषय के संसर्ग से विमुख हैं उनके हृदय मे नही।

तात्पर्य यह है कि जो पुरुष ऊपर लिखे सुख दायक पदार्थों की कदर नही जानते और जिनका अपनी प्यारी भार्या से प्रेम नहीं है अथवा जो कर्महीन हैं या जो नपुसंकता आदि रोगों मे ग्रसित हैं अथवा जो भाग्य हीन हैं, भार्या को छोड़कर व्यभिचार आदि मे लिप्त हैं अथवा जो कायर पुरुष गृहस्थी का भार न उठासकने के कारण मूड़ मुड़ाकर गेरुये वस्त्र धारण कर भस्म रमाकर त्यागी वन गृहस्थी से निकल भागे हैं उनके हृदय में इन अमूल्य पदार्थों का कुछ भी प्रभाव नही पड़ता:—

४—चौथ की जांच में (सर्वाधिकार सुरक्षित)
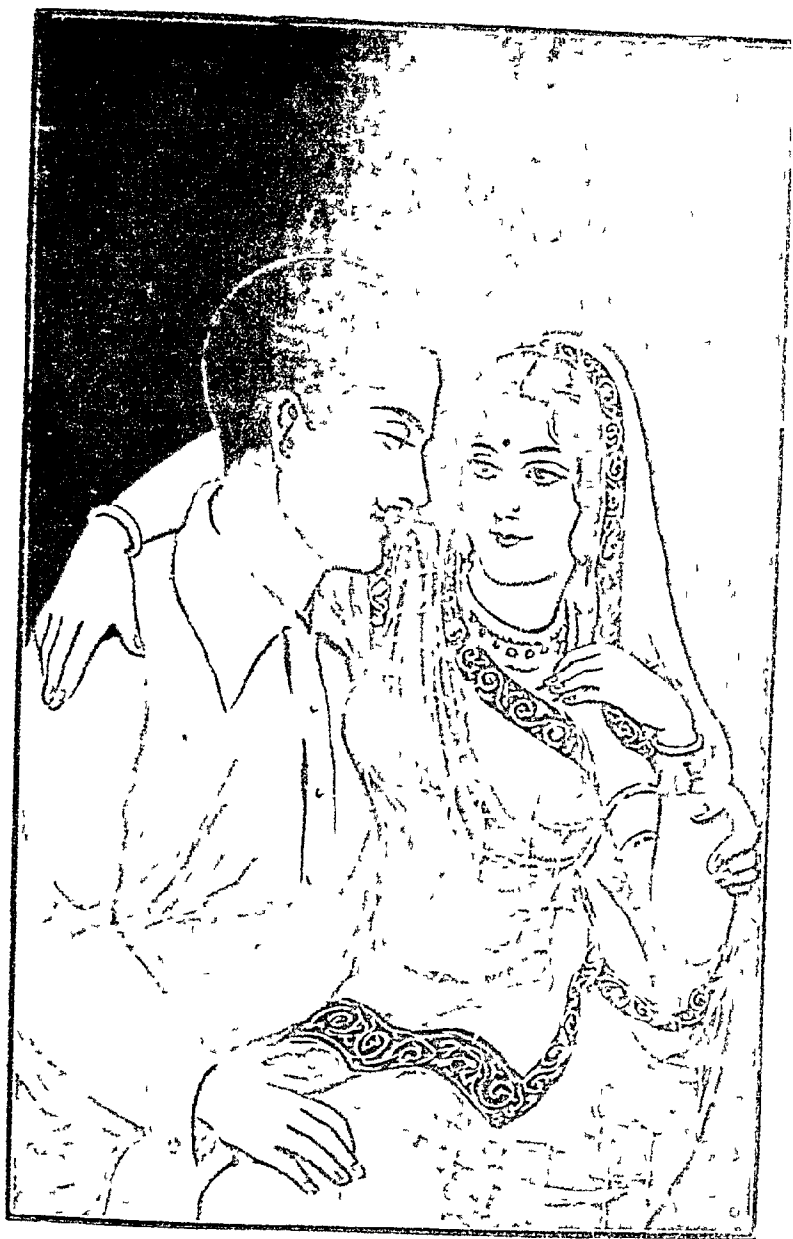
महात्मा भर्तृहरिजी ने ठीक कहा है:—

स्त्री मुद्रां झषकेतनस्य जननीं,
सर्वार्थ सम्पत्करीं ।
ये मूढाः प्रविहाय यांति कुधियो-
मिथ्याफलान्वेषिणः ।

अर्थात्—स्त्रियां कामदेव की मुद्रा हैं सब अर्थ और सम्पति की करने वाली हैं अर्थात् सब सुखो की देनेवाली हैं। जो मूढ कुबुद्धि उन्हें छोड़ कर स्वर्ग पाने की इच्छा से निकल भागते हैं उन्हें विरक्त के वेष में न समझो ।

ते तेनैव निहत्य निर्दयतरं,
नग्नीकृता मुण्डिताः ।
केचित्पञ्चशिखीकृताश्च जटिलाः,
कापालिकाश्चापरे ।।

किन्तु कामदेव ने दया त्याग कर दड देकर उन्हें नङ्गा किया सिर मुड़वाकर किसी के पांच चोटी रखवाई किसी के हाथ में ठीकरा देकर भीख मगवाई। ऐसे पुरुषों के लिये वसंत ही क्या कोई ऋतु सुखकारक नहीं है।

गीतान्तरे च विधिवत्सुरतं निषेव्यं,
दोलाविलासशयने हरिणेक्षणाभिः ।

संवाहितो रणत्कणत्करहस्ततालै-
धन्यःस्वहर्म्ये समये विचिनोति निद्राम् ॥

वसन्त में जो पहिले गान सुनते। गान सुनने के पश्चात् विधि पूर्वक अर्थात् आयुर्वेद के कहे अनुसार स्त्री संभोग करते, तथा स्त्री के साथ प्रेम पूर्वक वडे स्नेह से झूला झूलते और फिर शयन कर वसन्त की राते व्यतीत करते हैं वे धन्य हैं। भाग्यवान पुरुष ही वसन्त के इस आनन्द का सुख भोग करते हैं।

स्निग्धश्चन्दन कुंकुम प्रभृतिभिः कर्पूर संमिश्रितैः।
शय्यां धूपितधौतवस्त्र रचितामास्थाय रम्ये गृहे ॥
गाढ़ालिङ्गनचुम्बनादिरचितैः सवर्द्धयन्मन्मथं।
सेवेत्तां प्रमदां वसन्त समयेश्लेष्मक्षयार्थं पुमान् ॥

कपूर मिश्रित चन्दन और कुकुम आदि से स्निग्ध, अगर की धूनी से धूपित और उज्वल दूध के झाग की समान सफेद वस्त्रों से सजे हुए विछे पलग पर जो अपनी प्यारी पत्नी से प्रेम पूर्वक कामोद्दीपन करते हुए वसन्त मे वढ़े हुए कफ को शान्त करने के लिये दाम्पत्य सुख का आनन्द भोग करते है वे आरोग्यता से सुख सहित वसन्त को व्यतीत करते हैं। इस ऋतु मे स्त्री के साथ जल विहार भी करना चाहिये।

ग्रीष्म ऋतु का आहार विहार

(ज्येष्ठ और आषाढ ग्रीष्मऋतु)

तीक्ष्णांशुरतितीक्ष्णां ग्रीष्मे स ज्ञिपतीव यत् ।
प्रत्यहं चीयते श्लेष्मा तेन वायुश्च वर्द्धते ॥

ग्रीष्म मे सूर्य तीक्ष्ण किरण वाला होकर जगत की चिकनाई को दूर कर देता है अतएव नित्य प्रति कफ क्षीण होता जाता है और वात को वृद्धि होती है अर्थात् वात बढना है ।

वात को शात करने के लिये इस ऋतु मे मीठे चिकने हलके और शीतल पतले पदार्थों का सेवन करना, कुएं का ताजा जल पीना और ताजे जल से स्नान करना, मिश्री मिले जौ के सत्तू, पुराने चावलो का भात, अनार, खस, गुलाव आदि का शर्वत अंगूर अनार आदि फल का सेवन, आंवला, सेव, आदि के मुरब्बे का सेवन करना फूलो की माला धारण करना शरीर मे चन्दन लगाना अत्यन्त हितकारी है ।

गुड़ के साथ हर्डों का चूर्ण प्रतिदिन सेवन करना चाहिये, मिश्री और गाय का घी मिले ठंडे जल सहित सत्तू पीना हितकारी है महीन कोमल सफेद वस्त्रों का पहिनना हितकर है ।

शालि चावलो का भात तथा सांठी चावलों का भात, पुराने जौ और गेहूं की रोटी, मूग, मटर, अरहर, मसूर की दाल, कच्चा तरबूज, कच्ची ककड़ी, कच्चा खीरा, पेठा, करेला बथुआ, पालक, परवल, चौलाई चूका का शाक ये सब सेवन करना हितकारी है ।

मिश्री मिला हुआ गाय का दूध, गाय का मीठा दही, मलाई सहित, मिश्री मिला हुआ गाय का मट्ठा इस ऋतु में अत्यन्त हितकारी है।

सिंघाड़ा, कसेरू, लौकी, गन्ना, पतली खीर, सेमई, माल पुआ, दुधलपसी, दूध और मिश्री मिली हुई फेनी का सेवन करना और दूध भात मिश्री का प्रति दिन सेवन करना हितकारी है। कसरत करना परिश्रम करना प्रात. और सायकाल का वायु सेवन हितकारी है।

चन्द्रपादा दिवास्वप्नं चन्दनं तरणं जले।
लघु स्निग्धं द्रवं पथ्यं कायस्था सगुडा हिता॥
उशीरैश्छादितं गेहं सिक्तैर्नीरैः सुगन्धिभिः।
शीतलं च तरुच्छाया द्राक्षा चोशीरवीजनम्॥
दुग्धाँश्च प्रसूनानि बालाया अधरामृतम्।
हितान्याहुरयेबाले ग्रीष्मे वेधा इमानिहि॥

चन्द्रमा की चादनी का सेवन, दिन में सोना, चन्दन लगाना, जल विहार करना, हलके चिकने और पतले पदार्थों का सेवन करना, गुड मिलाकर हड़ों का चूर्ण सेवन करना।

सुगन्धित जल से छिड़के खस के परदों से आच्छादित घर में रहना, शीतल पदार्थ, घने वृक्षों की छाया, खस के पंखे, दूध भात, फूलों की माला और बाला स्त्री का अधरामृत पानकर दाम्पत्य प्रेम
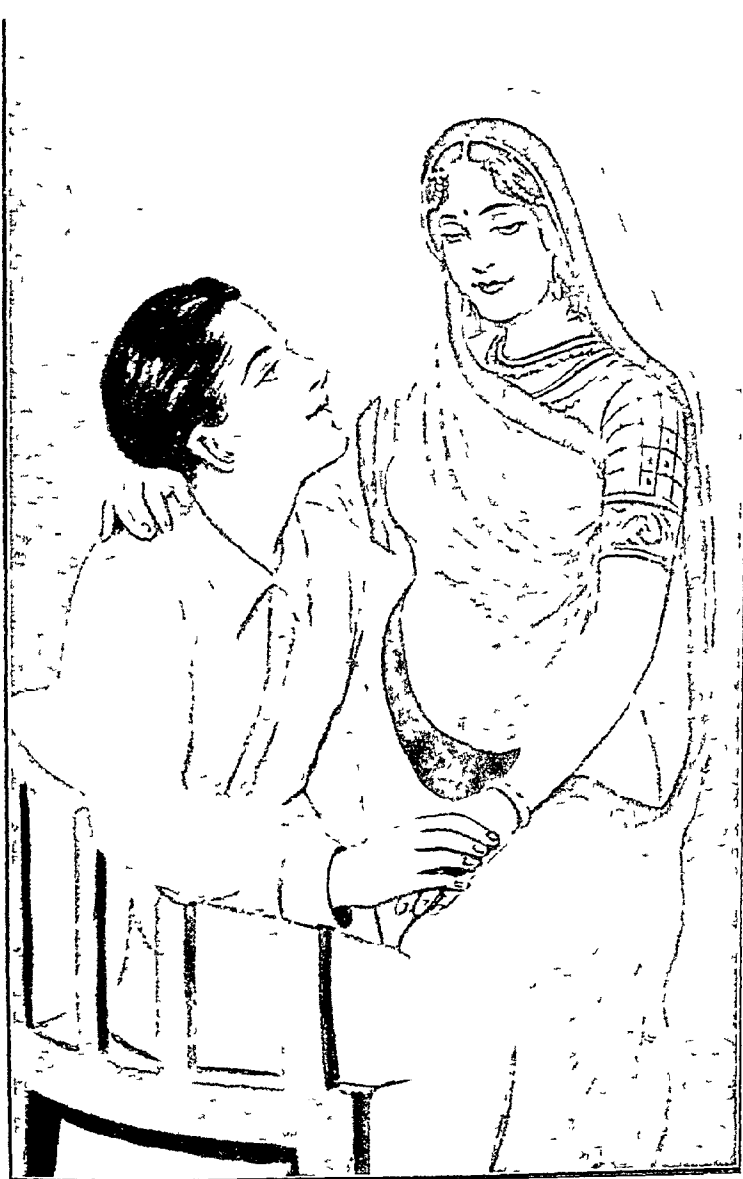
५—पचमी को गुप्तस्थान मे (सर्वाधिकार सुरक्षित)

का आनन्द लेना यही ग्रीष्म मे हितकारी है। ये सब पदार्थ होते हुए भी जो भाग्यहीन पुरुष ग्रीष्म का आनन्द भोग नही करते उनका जीवन व्यर्थ है।

ग्रीष्मऋतु के हानिकारक आहार विहार

क्षार युक्त पदार्थ जैसा सिरका, खट्टे चरपरे पदार्थ, सूर्य की धूप, मद्य, तीक्ष्ण पदार्थ, अधिक नमकीन पदार्थ तथा गरम पदार्थ और तिलों का तैल ये सब ग्रीष्म में हानि कारक हैं। इनका सेवन छोड़ देवे और बैंगन, पका तरबूज, सहजना, लहसन उरद, चौरा, कांगनी, खिचड़ी ये पदार्थ और भय शोक तथा क्रोध ये ग्रीष्म में हानिकारक हैं।

सरसों, राई दही का तोड़, उड़द के बड़े, कढ़ी, जरा हुआ अन्न, स्त्री प्रसंग करना, उपवास करना, रास्ता चलना, परिश्रम करना, तिल आदि की खल अलसी ये सब पदार्थ ग्रीष्म में हानि कारक हैं इसी कारण शास्त्रकारों ने इनका सेवन मना किया है। रात्रि में जागना, अग्नि के सामने रहना, अत्यन्त पवन और सूर्य की किरणों से गरम हुए जल से स्नान करना भी मना है।

वर्षाऋतु का आहार विहार

(श्रावण और भाद्रपद वर्षाऋतु)

केकी कूजति कानने च सरसी म्लानाम्बुपूर्णा तथा।
हंसा मानसमाव्रजंति कमलानिम्लानतांयान्ति च॥

वर्षा में मीठी ध्वनि से मोर बोल रहा है, सरोवरों का पानी गदला होगया है, हंस मानसरोवर को जारहे हैं, कमल कुम्हलाये से हो रहे हैं।

गर्जन्मेघमहीध्रकन्दरदरी शस्यावृता श्यामला।
भात्येवं पवनस्य कोपनकरी वर्षाऋतुः श्रेयसी॥

मेघों की गर्जना से पहाड़ों की कंदराएँ और गुफाएँ प्रतिध्वनित हो रही हैं। पृथ्वी घास से हरी हो रही है। इस प्रकार वात का कोप करने वाली कल्याणकारी यह वर्षा शोभा देती है।

वर्षा में वात का कोप होता है और।वर्षा से अनेक प्रकार के जीव उत्पन्न होते हैं। पृथ्वी के भीतर की गरमी बाहर निकलती है और अनेक प्रकार जीव उत्पन्न होते और मरते हैं इत्यादि कारणों से वायु दूषित होकर अनेक रोगो को उत्पन्न करती है इसलिये वर्षा स्वास्थ्य के लिये अन्य सब ऋतुओं से हानि कारक है क्योंकि इस मे अनेक प्रकार के ज्वर, खांसी, अजीर्ण इत्यादि रोग उत्पन्न होते हैं। इस कारण इस मे पथ्य से रहना बहुत जरूरी है इस मे अहार विहार का अधिक ध्यान रखना चाहिये।

गेहू की रोटी, पुराने सांठी चावलो का भात, उड़द, कुलथी, राई, सरसो, अलसी, पका पेठा, घिया तोरई, बैंगन, परवल, चूका का शाक सेवन करना चाहिये और पका तरबूज,

सेंधा नमक, काली मिर्च, पड़ा हुआ गाय का मट्ठा प्रति दिन सेवन करना चाहिये। पोई का शाक, सहजन की तरकारी, सहजन के फूल का शाक, लौकी, मूली की तरकारी, खीर और कुए का पानी पीना हितकारी है।

गुड़ मिलाकर गायका दही, घी में बनाई गई गाय के दूध की खीर खाना हितकारी है। ईख का सेवन चीनी का सेवन लपसी, फेनी, मालपुआ, लड्डू, सेमई, सेवन हितकारी है।

मानं विधाय परिहृत्य पराङ्मुखीभिः,
कादम्बिनी समयगर्जित कातराभिः।
आलिङ्गितोऽतिरभसातुर कामिनीभि-
र्धन्यः स्वहर्म्य समये विचिनोति निद्राम्॥

अर्थात्—मान करके विमुख माननी स्त्री अपने प्यारे पति से अलग होकर अर्थात रुठकर मुह फेर कर बैठ गई उसी समय मेघो के उमड घुमड़ कर गर्जने से और बिजली के भयानक शब्द से भयभीत होकर अर्थात् बिजली की कड़कड़ाहट से डरकर दौड़कर पति के लिपट गई इस प्रकार इस वर्षा मे जो पुरुष अपने घर में दाम्पत्यप्रेम का आनन्द लेते हैं वे धन्य हैं।

अये बाले भजेन्नारीं प्रौढां मेघे सुगर्जति।

वर्षा मे जिस समय बादल गर्ज रहा हो उस समय प्रौढा स्त्री जिसकी हो वह दाम्पत्य प्रेम का आनन्द भोग करे।

भजेच्छिवां गुडेन सैंधवं यथेष्ट भोजनम् ।
पटोलसौष्ठिदं जलं कपित्थ दाडिमीफले ॥
उपोदिकापलांडुनारिकेल तैल सट्टकान् ।
सितोपलाश्रये शरत्सरोजलोचने प्रिये ॥

वर्षा मे हर्डों का चूर्ण गुड़ में मिलाकर प्रति दिन सोते समय सेवन करे, सेंधानोन, हलका भोजन, औटाया हुआ पानी या कुए का ताजा पानी, कैथा, अनार, पोई का शाक, प्याज (जो खाते हो) नारियल का तेल और मिश्री का सेवन हितकारी है।

गरम किया हुआ गाय का दूध मिश्री मिला कर सेवन करना, अग्नि के पास बैठ कर अग्नि का सेवन करना, बथुए का शाक कमलगट्टा, खजूर, बिजौरा, नीबू, मरसा का शाक, तरोई, चूका का शाक, पके हुए करोंदा, सहतूत, अंजीर कच्चा आम व पका आम, नारियल, गाय के दूध की खीर, लपसी, पुआ, सांठी चावल, लाल चावल, जलेबी, पूरी, फेनी, लड्डू इन सब पदार्थों का सेवन करना वर्षा में हितकारी है।

वर्षा ऋतु में हानि कारक पदार्थ

नदी या तालाब का पानी पीना, दिन में सोना, गोभी, ढेढस, पकी ककड़ी, चिउरा, मोठ, फूट, धूप में बैठना, धूप में चलना, अधिक परिश्रम करना, रक्खा हुआ ठंढा भोजन करना, नाली

६—छठ को कमर में (सर्वाधिकार सुरक्षित)

का शाक, करेले, पालक, सिंघाड़े कसेरू का शाक और भैंस का दूध हानि कारक है।

कुसमय भोजन करना, दौड़कर चलना, आगके सामने बैठना, भारी बोजा उठाना, रात को जगना, डकार, छींक और मल, मूत्र, उलटी, आंसू आदि रोकना हानि कारक है, इन कारणों से वायु विकार को प्राप्त होता है जिससे अनेक रोग उत्पन्न होते है। इस-लिये हानिकर पदार्थों से वचना चाहिए।

इसलिये अरोग्यता चाहने वालों को वर्षा मे वड़ी सावधानी से रहना चाहिये।

शरद ऋतु का आहार विहार

(आश्विन और कार्तिक शरद ऋतु)

पित्तेन सान्द्रं रुधिरं शरत्सु,
वृद्धिं समागच्छति सूर्यरश्मिभिः।
तदाशु रक्तं परिमोचणीयं,
पानेजलं सारसमुद्दिशन्ति ॥

अर्थात्—पित्त से गाढ़ा हुआ रक्त, शरद मे सूर्य की किरणो से पिघलकर बढ़ता है इसलिये रुधिर को शान्त करने के लिये फस्त खोलाना चाहिये ऐसा वैद्यकशास्त्र मे ऋषियों का मत है। इस मे नदी या तालाब का पानी चाहिये।

भोज्याः सदा लोहितशालमुग्दा,
गव्यंघृतं चन्द्रकराश्च सेव्याः ।
इक्षोर्विकारा मरिचैश्च भक्ष्याः,
पथ्या सिताढ्या किल सेवनीया ॥

भोजन मे प्रति दिन लाल चावल का भात, मूंग, गायका घी, गुड़, मिश्री बतासे आदि और काली मिर्च मिले पदार्थों का सेवन करना चाहिये और हर्ड का चूर्ण मिश्री मिलाकर सेवन करना हितकारी है।

स्थितिः प्रवर्त्ते रजनीषु कार्या,
घर्मश्च नित्यं परिवर्जनीयः ।
छाया च सेव्या हरितद्रुमाणां,
श्रमं न कुर्यात्प्रयतो मनुष्यः ॥

चन्द्रमा की चांदनी का सेवन हितकारी है। छाये हुए स्थान में रहना, और धूप से बचते रहना चाहिये हरे हरे वृक्षों की छाया का सेवन करना चाहिये और इस ऋतु में परिश्रम नहीं करना चाहिये।

भूयान्नरः शरदि चन्दनलिप्तगात्रः,
स्त्री शर्कराकथित दुग्धयुता च सेव्या ।

कर्पूर पूगपरिपूर्ण मुखी च कान्ता-
माचुंब्यशीतल कुचां परिरभ्य शेते ॥

अर्थात्—शरद में चन्दन लगाकर मिश्री मिला हुआ औटाया दूध पीकर तथा कपूर सुपारी युक्त बीडा मुख में चबाकर जो अपनी प्यारी पत्नी का प्रेम सहित आलिंगन चुम्बन कर शयन करते हैं वे पुरुष धन्य हैं।

खांड के साथ हर्ड का चूर्ण अथवा आमलों का चूर्ण तथा गुड के साथ हर्ड का चूर्ण, धनिया सेंधा नमक आमले, गोभी कमलगट्टे, भसीड़े, मुनक्का, घी, नरियल ये पदार्थ शरद मे हितकारी हैं।

कैथा की चटनी, चौलाई का शाक, परवल, खांड, बकरी का दूध, बथुआ, पोई का शाक, नाड़ी का शाक, मरसा का शाक, दूध की खीर, शाली और साठी चावल, जलेबी, फेनी, जामुन, केला की गहर ये सब पदार्थ शरद् में हितकारी हैं। चूके का शाक, तोरई, सिंघाड़ा, अनार, बिजौरा नीबू, कसेरू, वर्षा का पानी, नदी का पानी हितकारी हैं।

गेहूं की रोटी, पूड़ी, नमकीन पकवानों का सेवन हितकारी है। शरद् के आरम्भ में जुलाब लेना हितकरी है।

शरद पित्त को बढाने वाली है इस कारण पित्तकर पदार्थों का सेवन न करे इसका ध्यान रक्खे। पीपल, मिरच, भांग,

लहसुन, हींग, मट्ठा, बैंगन, खिचड़ी, दही, कढ़ी, सरसों का तैल, सौंफ, खट्टा, चरपरा, कड़ुवा, गरम, धूप में फिरना, कसरत करना, गुड़ का सेवन, दिन में सोना, अनियम संभोग करना, उरद के पदार्थ, रात्रि में जागना, क्रोध और चिन्ता करना ये शरद में सेवन करने से अनेक रोगों को उत्पन्न करते हैं इसलिये आरोग्य रहने की इच्छा रखने वालो को ये पदार्थ शरद में अवश्य छोड़ देने चाहिये।

अवश्यक सूचना

हेमन्त, शिशिर, वर्षा

इन तीनों ऋतुओ मे मीठा, खट्टा और नमकीन इन तीनों प्रकार के रसो का प्रति दिन भोजन के साथ कुछ आहार अवश्य होना चाहिये।

वसन्त ऋतु

वसन्त ऋतु में चरपरे कड़ुए और कसैले रसों के पदार्थ प्रति दिन के भोजनों में अवश्य होने चाहिये।

ग्रीष्म ऋतु

ग्रीष्म मे मीठे और पतले पदार्थों का सेवन प्रति दिन के भोजनो मे अवश्य होना चाहिये। इन ऋतुओं मे ये पदार्थ जठराग्नि को ठीक रखते हैं।

७—सप्तमी को नाभि में

शरद् ऋतु

शरद् ऋतु मे चरपरे स्वादिष्ट और कसैले रसो के पदार्थ प्रति दिन के भोजनो मे अवश्य खाने चाहिये ।

ऋतुओं के अनुसार आहार विहार का संक्षिप्त वर्णन

जो मनुष्य सदैव आरोग्य रहना चाहे उनकी आरोग्यता के लिये हमारे प्राचीन ऋषियो ने आहार विहार के नियम बना दिये हैं। जब से इस बातका लोगो को ध्यान नही रहा तब से देश में अनेक रोगों ने डेरा जमालिया, लोग देश का आहार विहार छोडकर विदेशी आहार विहार का अभ्यास करने लगे। आहार विहार सदैव अपनी ही जन्म भूमि का आरोग्यता के लिये हितकर होता है उस के विरुद्ध चलने से अनेक रोगो की उत्पत्ति होती है यही ऋषियों ने बतलाया है ।

वात पित्त कफ का कोप और शान्ति

जब एक ऋतु समाप्त होकर दूसरी आरम्भ हो तब पहिली ऋतु के अहार विहार में धीरे धीरे हेर फेर करदेवे और पहला क्रमशः छोड़ता जावे फिर नई ऋतु का आहार विहार करने लगे। इस प्रकार नियम मे चलने से प्रति दिन के आहार विहार की भूल से जो रोग उत्पन्न होते हैं वे नही होने पाते ।

जब एक ऋतु समाप्त होकर दूसरी आरम्भ होती है तब वात पित्त कफ इन तीनों दोषों का क्रमशः धीरे धीरे कोप और शान्ति होती है इसलिये धीरे धीरे आहार विहार का पहिला नियम छोड कर दूसरे का आरम्भ करना चाहिये।

यदि ऋतुओं का आरम्भ देरी से हो तो देरी से ही आहार विहार का नियम बदलना चाहिये। मान लीजिये जाड़े की ऋतु व्यतीत हो जाने पर भी गरमी नहीं आई और जाड़ा ही है तो आहार विहार नहीं बदलना चाहिये।

नियमित ऋतु के अनुकूल आहार शास्त्र के सम्बन्ध में हमारा "पाकशास्त्र" मगाकर पढ़िये। हामारा पाकशास्त्र ५० हजार की तादाद में बिक चुका है कितने ही संस्करण हो चुके हैं। सब से पहले आयुर्वेद के अनुसार हमने ही आहार शास्त्र पाकशास्त्र लिखा था। हमारे देखा देखी अब कितने ही पाकशास्त्र निकले है पर हमारे पाकशास्त्र का मुकाबला नहीं कर सके हैं। और दूसरों का मूल्य भी अधिक है। प्रत्येक वस्तु के संबन्ध में स्वास्थ्यकर जितना जिस प्रकार का ज्ञान आवश्यक है, सब हमारे पाकशास्त्र मे दिया गया है। हमारे पाकशास्त्र में साधारणतया विहार पर भी अच्छा प्रकाश डाला गया है।

आनन्द मन्दिर
चौथा अध्याय
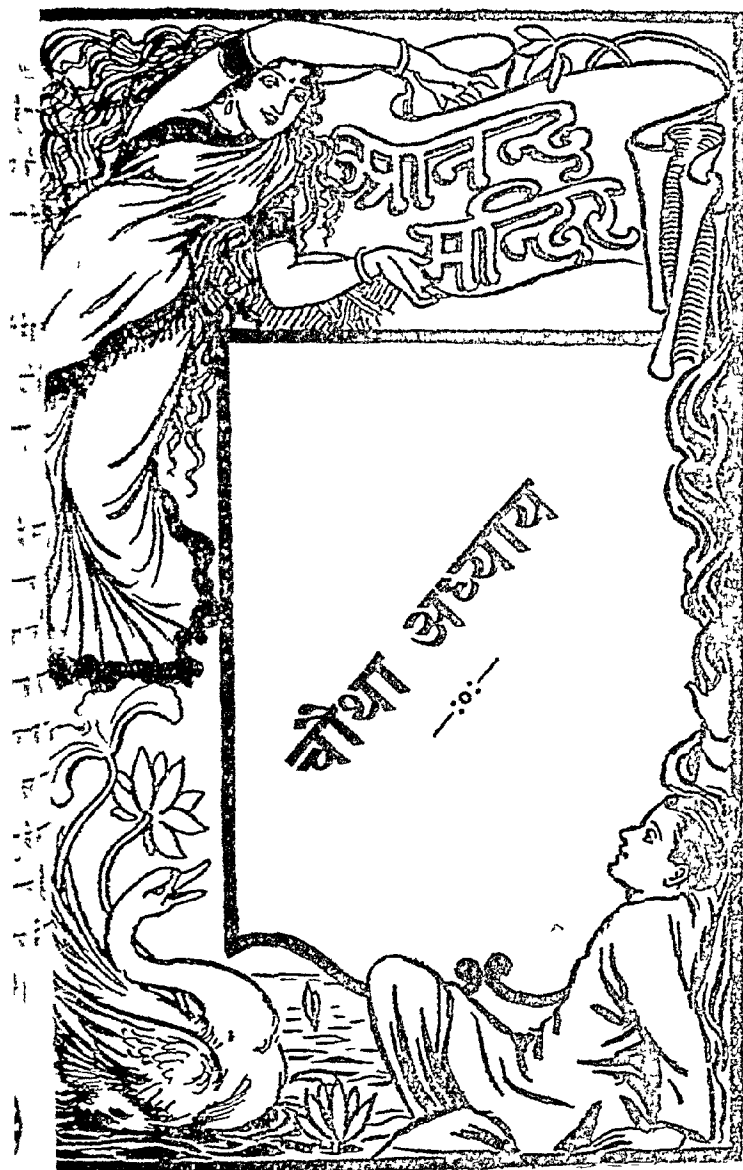
८—अष्टमी को हृदय में

दाम्पत्य कलह का कारण

दाम्पत्य कलह का मुख्य कारण पति पत्नी का सम्बन्ध उचित न होना ही है। जोड़ा ठीक मिलाने के लिये ही हमारे देश में जन्म पत्र आदि मिलाने की बहुत पुरानी प्रथा है क्योंकि जन्म पत्र से, किस नक्षत्र में उत्पन्न होने से स्त्री पुरुष की क्या प्रकृति होती है आदि का पता चलता है। यदि जन्म पत्र शुद्ध ठीक ठीक जन्म के समय से बनी हो तो ग्रह सूर्य चन्द्रमा लग्न राशि आदि के मिलान से सब बातों का पता लग जाता है।

वर और कन्या का योग्य जोड़ा मिलाने के लिये सब जातियों में कुछ न कुछ प्रथा अवश्य है, किसी में कम किसी में ज्यादह। पाश्चात्य देशों में जन्म पत्र की प्रथा नहीं है परन्तु वहां योग्य जोड़े के मिलान के लिए दूसरी प्रथा है वे सब प्रथाए इसीलिये हैं कि सम्बन्ध होकर दोनों पुरुष आनन्द पूर्वक जीवन पर्यन्त रहें। हमारे यहां जन्मपत्र के मिलाने मे भूल हो जाने अथवा जन्मपत्र ठीक न बनने से तथा जो माता पिता किसी कारण मे जन्मपत्र में हेर फेर करा कर मेल करा देते हैं या कभी कभी पंडित अपने स्वार्थ के लिये जन्म पत्र में हेर फेर करके विवाह को योग्य करार दे देते हैं उससे विवाह बेमेल होजाते हैं और उसका परिणाम यह होता है कि स्त्री पुरुष मे कलह रहती है। विवाह का उद्देश्य नष्ट होजाता है। दाम्पत्य जीवन कलह पूर्ण हो जाता है। मनुष्य जीवन का जो आनन्द मिलना चाहिये वह नहीं मिलता है।

योग्य जोड़े और योग्य सन्तान

परमात्मा की सृष्टि मे मनुष्य ही सर्व श्रेष्ट माना गया है यदि मनुष्य जाति न होती तो सृष्टि कुछ भी नही थी। ईश्वर ने मनुष्य को ही उत्तम सन्तान उत्पन्न करने की बुद्धि प्रदान की है। सभी मनुष्य इस बात के इच्छुक होते हैं कि हमारी सन्तान योग्य हो आरोग्य और दीर्घ जीवी हो। परन्तु सन्तान योग्य और आरोग्य उन्ही की होती है जो आरम्भ से ही उत्तम सन्तान की इच्छा रखते हैं, रतिक्रिया भी नियमपूर्वक करते हैं। यो तो रति-क्रिया सभी करते हैं पर सन्तान धोखे मे होजाती है क्योंकि यदि नियम पूर्वक गर्भाधान क्रिया करने वालो की सख्या अधिक होती तो हमारे देश के बालको की रोगी तथा मृत्यु सख्या अन्य देशो के बालको से अकिक न होती। बालको की रोगी तथा मृत्यु सख्या से ही पता चलता है कि उत्तम सन्तान उन्पन्न करने की इच्छा से बहुत कम दम्पति रतिक्रिया करते हैं।

जितने उत्तम पुरुष उत्पन्न होते है वे दैवयोग से उचित जोडा मिल जाने से ही होते हैं। हमारे देश मे जिनका जोड़ ठीक मिल गया उससे उत्तम सन्तान उत्पन्न हुई तथा होती रही। जैसे जैसे योग्य जोड़े का मेल मिलाना ढकोसला समझ कर लोगो ने उतनी परवाह करनी छोड़ दी जितनी ऋषियो ने बतलाई है तभी से स्त्री पुरुषो मे कलह का आरम्भ हुआ इस जमाने मे यदि पता लगाया जावे तो सैकड़ा पीछे पचानवे घर

ऐसे मिलेगे जिनमे पति पत्नी मे कलह रहती है और पति से अप्रसन्न रहने के कारण पत्नी घर के सब स्त्री पुरुषो सास ससुर आदि से झगड़ा मचाये रहती है। सासे भी ऐसा ही व्यवहार करती हैं।

विवाह के सम्बन्ध मे तो अब धीरे धीरे मेल मिलाने की प्रथा उठती ही जा रही है ऐसा प्रतीत होता है कि आगे चलकर पाश्चात्य देशो की समान कन्याए अपनी पसन्द के वर खोजकर विवाह स्वयं कर लेगी और जब पति से कुछ अनबन हो जायगी तब उसे छोड़कर दूसरा करलेगी अथवा पाश्चात्य देशो की भाति बिना दूसरा पति नियत किये ही अपना काम चलाती रहेगी।

जन्म पत्र आदि मिलाने का उद्देश्य

हमारे देश मे प्राचीन पुरुषो ने जन्म पत्र आदि से योग्य वर कन्या का विवाह सम्बन्ध नियत किया है। जन्मपत्र का उद्देश्य यही है कि किस कन्या का योग्य पति कौनसा पुरुष हो सकता है। सब जन्म पत्र से पता लग जाता है यदि जन्म के समय का ठीक निश्चय हो।

पाठको के समझाने के लिये यहां मैं कुछ उदाहरण राशि नक्षत्र और ग्रहो का देती हूं इससे पाठको को प्राचीन पुरुषो के उद्देश्य तथा जन्म पत्र मिलाने के उद्देश्य का पता चल जायगा।

कन्या का जन्म पत्र

कन्या के जन्म पत्र मे अष्टम स्थान मे विधवा योग्य तथा सौभाग्यवती रहने का पता चलता है। लग्न से स्त्री का शील स्वभाव और शरीर के गुण अर्थात प्रकृति मालूम होती है और स्वरूप अथवा कुरूप का पता चलता है। सप्तम स्थान से पति की प्रकृति का तथा पति से स्त्री को सुख अथवा त्याग का पता चलता है और पचम स्थान से सन्तान का पता चलता है कि कितने पुत्र कितनी कन्याएं होगी, पहिले क्या सन्तान होगी।

जो लग्न और चन्द्रमा इन दोनो की समराशि हो तो स्त्री स्वभाव से ही शीलवती और रूपवती होती है। जो लग्न चन्द्रमा इन दोनो को शुभ ग्रह देखते हो तो स्त्री गुणवती होती है।

विषम राशि मे जिस कन्या का जन्म हो वह स्त्री पुरुष के स्वरूप से शील वाली और खोटे स्वभाव वाली दुखिया होती है। जो क्रूर ग्रहो करके विषमराशि दृष्ट या युक्त हो तो स्त्री पापिनी शुभगुणो से हीन होती है।

लग्न वा चन्द्रमा जो भौमक्षेत्री हो और तात्कालिक भौम त्रिशांशक भी हो तो वह स्त्री कन्यावस्था से ही दुष्टा होती है इसी प्रकार भौमक्षेत्री लग्न वा चन्द्रमा होने मे शुक्र का त्रिशांश हो तो वह स्त्री खोटे आचरणवाली होती है। यदि बुध का त्रिशांश हो तो वह स्त्री मायायुक्त होती है।
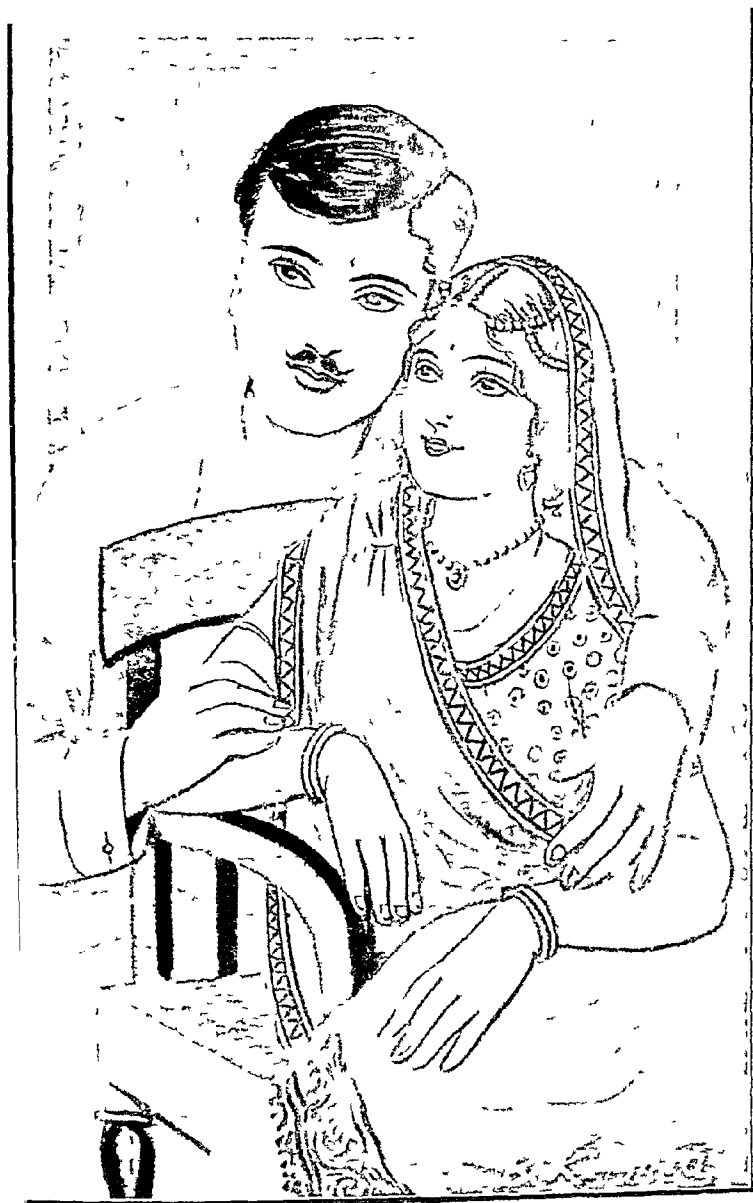
९—नवमी को स्तन में

बृहस्पति के त्रिशांशक से सुन्दर स्वभाव वाली और शनिश्चर के त्रिशांशक से दासी कर्म करनेवाली होती है। बुध राशि में लग्न अथवा चन्द्रमा के होने मे तात्कालिक भौमका त्रिशांश हो तो वह स्त्री कपटी होती है।

बृहस्पति के त्रिशांशक से सत्यधर्म वाली और शनिश्चर के त्रिशांश से हीजड़ी होती है अर्थात् उसके गर्भाशय नहीं होता।

इसी प्रकार से शुक्र के त्रिशांश मे बिखरे (फैले) मुख वाली और और बुध के त्रिशांश से गुणवती होती है।

जीव सम्बन्धी त्रिशांश हो तो गुणवाली होती है और शनिश्चर के त्रिशांश से पुनर्भू: अर्थात् एक बार जिस वर से विवाह सम्बन्ध नियत होगया हो परन्तु किसी कारण से उसके साथ विवाह न होकर दूसरे वर से विवाह हो, ऐसी होती है।

यदि लग्न अथवा चन्द्रमा कर्कराशि का हो और उसमें तात्कालिक मंगल का त्रिशांशक हो तो वह स्त्री दूसरे का कहना नहीं मानने वाली केवल अपनी ही हठ पर दृढ रहने वाली होती है। यदि शुक्र का त्रिशांश हो तो स्त्री कुल को पवित्र करने वाली और यशवती होती है।

बुध के त्रिशांश मे चित्रकारी जानने वाली और बृहस्पति के त्रिशांश से बहुत से गुणों वाली होती है। सूर्य के त्रिशांश मे पति को मारनेवाली होती है। सिंह राशि की लग्न अथवा चन्द्रमा में तात्कालिक भौम त्रिशांश होने से आचार भ्रष्ट और शुक्र के त्रिशांश से पतिव्रता सती होती है।

लग्न फल विचार

१-मेष लग्न में जिस स्त्री का जन्म होता है वह स्त्री झूठ बोलने वाली, निडर, क्रोधनी, कफ प्रकृति वाली, कर्कस वाणी वाली अर्थात् कड़ा बोलने वाली होती है।

२-वृष लग्न में जिसका जन्म होता है वह स्त्री सत्य बोलने वाली, बुद्धिमती, अच्छे विचार वाली, नीति पूर्वक कार्य करने वाली और पति की प्यारी होती है, स्त्रियों के कर्तव्यों में चतुर, कुटुंबियों में प्रेम रखने वाली और पतिव्रता होती है।

३-मिथुन लग्न में जिसका जन्म होता है वह कठोर वाणी वाली, विषय भोग में आसक्त रहने वाली मूर्खा, निडर रहने वाली, कफ वात की प्रकृति वाली खोटे स्वभाव वाली होती है।

४-कर्क लग्न में जिसका जन्म होता है वह रूपवती, धनवती, सुशीला, भाइयों की प्यारी, सुन्दर स्वभाव वाली, बुद्धिमती, कान्ति वाली और भाग्यवान पति की प्यारी होती है।

५-सिंह लग्न में जिसका जन्म होता है वह स्त्री अत्यन्त तेज स्वभाव वाली, कफ प्रकृति वाली, कलह करने वाली, कुरूपा और दुष्ट स्वभाव की होती है।

६-कन्या लग्न से उत्पन्न हुई स्त्री सौभाग्यवती धनवती, सुन्दर, रूपवती, धर्म परायणा, पतिव्रता, इन्द्रियों को जीतने वाली होती है।

७-तुला लग्न में जो उत्पन्न होती है वह सुस्त, देरी में कार्य करनेवाली, आलस्मिन, बुद्धिहीन, गर्वीली, घमंडिनी, लोभिन और दुष्ट स्वभाव वाली होती है।

८-वृश्चिक लग्न में जिसका जन्म होता है वह स्त्री सुन्दर, रूपवती, पुण्यात्मा, पतिव्रता, गुणवती, सत्य बोलने वाली, शरीर और नेत्र से अत्यन्त मनोहर तथा भाग्यवान होती है।

९-धन लग्न में जिसका जन्म होता है वह स्त्री बुद्धिमती, पुरुष कैसी आकार वाली, देखने में कठोर, क्रोधिन, स्नेह रहित, और कलह प्रिय होती है।

१०-मकर लग्न में जिसका जन्म होता है वह स्त्री सुन्दर चिन्ह वाली अर्थात् सुलक्षणी, सत्य बोलने वाली, सुशीला, धर्म्म परायणा, तीर्थ पूजन में प्रीति रखने वाली, सब की प्रिय, स्त्री कर्त्तव्यों में चतुर, गुणवाली, पुत्रवती और लोक में विख्यात यशस्विनी होती है।

११-कुम्भ लग्न में जिसका जन्म होता है वह स्त्री जन्म से ही चतुर और क्षयरोग से ग्रसित, दुःखी, क्रोधिन, दुष्ट स्वभाव वाली, बड़ो से कलह रखने वाली, अधिक खर्च करने वाली और पापिनी होती है।

१२-मीन लग्न में जिसका जन्म होता है वह स्त्री बहुत पुत्र पोत्रोवाली और अपने पति की प्यारी, माता पिता आदि भाई बन्धुओं की प्यारी, मान पाने वाली, सुन्दर नेत्र और मनोहर

केशो वाली, पतिव्रता, धर्म्म परायणा, नम्र स्वभाव वाली और बड़ो की सेवा करने वाली होती है।

इसी प्रकार जन्म पत्र से कन्या और वर के कुल लक्षण व प्रकृति विवाह के पहिले मिलाने की प्रथा भारत वर्ष में बहुत दिनों से चली आती है यह तो उदाहरण के लिये कुछ थोड़ा विषय नाम मात्र को यहां लिखा गया है। यह बड़ा भारी विषय है पाठक पाठिकाएं इसी से समझ ले कि हमारे देश मे ऋषियों ने कितने विचार कर विवाह की प्रथा योग्य जोड़ा मिलाने के उद्देश्य से रखी है।

कामशास्त्र आदि ग्रन्थों का मत

मृग जाति के पुरुष से यदि हस्तिनी स्त्री का सम्बन्ध हो तो उससे जो सन्तान होगी वह दुष्ट स्वभाव वाली होगी। पुत्र होगा तो वह पशुओं के समान मूर्ख दुराचारी होगा और यदि कन्या उत्पन्न होगी तो व्यभिचारिनी और पति की प्राण घातक होगी।

हस्तिनी स्त्री का सम्बन्ध यदि अश्व जाति के पुरुष से हो तो उसका पुत्र बलवान पराक्रमी और वीर पुरुष होगा। निर्भय किसी से न डरने वाला होगा। यदि कन्या होगी तो वह व्यभिचारिणी विषय भोग की अत्यन्त इच्छा रखने वाली और पर पुरुष गामिनी होगी।

शखिनी स्त्री का पति यदि अश्वजाति का पुरुष हो तो

१०—दुशमी को बगल में

उसकी सन्तान रोगी और अनेक दोषोंवाली होगी जैसे पुत्र हो तो अन्धा बहिरा रोगी निर्बल और दुर्बल होगा। कन्या होगी तो उसमे भी इसी प्रकार के दोष होंगे और व्यभिचारिनी होगी।

हस्तिनी जाति की स्त्री का पति वृषभ जाति का पुरुष हो तो उससे सन्तान अनेक गुण दोष युक्त होती है। पुत्र हो तो पराक्रमी, बलवान और दुष्ट स्वभाव का होगा और कन्या होगी तो महा व्यभिचारिणी होगी जिसमे उसके पति को महान कष्ट होगा, प्राणनाशक होगी।

चित्रणी जाति की स्त्री का विवाह यदि शशक जाति के पुरुष से हो तो इससे सन्तान अनेकों गुण दोष युक्त होती है। पुत्र हो तो रोगी निर्बल और कम आयुवाला परन्तु अच्छे स्वभाव वाला होगा कन्या रूपवती उत्तम स्वभाव वाली परन्तु सदैव कष्ट और दुःख मे जीवन व्यतीत करने वाली होगी क्योंकि वह बूढ़े पति की स्त्री होती है।

पद्मिनी जाति की स्त्री यदि अश्व जाति के पुरुष की पत्नी हो तो उससे अनेक दोषो वाला नपुंसक पुत्र होता है और रोगी रहता है। यदि कन्या हो तो माता की समान गुणवाली होती है क्योंकि पुत्र मे पिता के गुणदोष और कन्या मे माता के गुण दोष होते है।

चित्रणी स्त्री यदि मृग जाति के पुरुष की पत्नी हो तो उसकी सन्तान अनेक गुणोंवाली होती है पुत्र कन्या दोनो रूपवान गुणवान और धर्म्मात्मा होते हैं।

यदि शंखिनी जाति की स्त्री मृग जाति के पुरुष की पत्नी हो और सन्तान उत्पन्न करे तो उसकी सन्तति गुणवान रूपवान अच्छे आचरण वाली और सुन्दर कुटुम्ब की उन्नति करने वाली होती है।

चित्रणी जाति की स्त्री को यदि अश्व जाति का पति मिलता है तो सन्तान अल्पायु और दोषोंवाली होती है। पुत्र तो जीते ही नहीं कन्या यदि जीवित रही तो कुष्ट रोगी, नेत्र हीन होती है। पति पत्नी सन्तान से सदैव दुखी रहते हैं।

पद्मिनी स्त्री यदि शशक जाति के पुरुष की पत्नी हो तो उसकी सन्तान अनेक गुणवाली, धर्म्मात्मा, सुन्दर स्वभाव वाली, अच्छे आचरण वाली होगी। पुत्र कन्या जो हो सभी सन्तान गुणवान और सुशील धर्म्माचरण वाली होगी।

पद्मिनी स्त्री का विवाह यदि मृग जाति के पुरुष से हो जावे तो अनेक गुणदोष वाली सन्तान होती है। माता पिता दोनो के गुण दोष सन्तान मे आते हैं। सुख दुःख तो इनकी सन्तान भोगती ही है परन्तु अल्पायु भी होती है।

चित्रणी जाति की स्त्री का पति यदि वृषभ जाति का हो तो उसकी सन्तान बाल्यावस्था मे ही मर जाती है इसलिये इन पति पत्नी को सन्तान का दुःख जीवन पर्यन्त रहता है।

शंखिनी जाति की स्त्री यदि वृष पुरुष से विवाही जावे तो पुत्र अनेक गुणवाला और कन्या व्यभिचारिणी दुष्ट स्वभाव वाली कोपिन और मूर्खा होती है।

शखिनी जाति की स्त्री और शशक जाति के पुरुष से सन्तान उत्पन्न हो तो अनेक गुण दोष वाली होती है। पुत्र कन्या दोनो मे गुण दोष युक्त लक्षण होते हैं।

हस्तिनी स्त्री यदि शशक जाति के पुरुष से विवाही जावे और उससे सन्तान उत्पन्न हो तो वह रोगी निर्बल और कम आयुवाली होती है, दोनो पति पत्नी सन्तान मे दुखी रहते है।

इसीप्रकार ऊपर लिखे अनुसार यदि अनमेल सम्बन्ध हो तो दाम्पत्य प्रेम का आनन्द नही मिलता क्योंकि यदि हस्तिनी जाति की स्त्री से शशक जाति वाले पुरुष का सम्बन्ध हो जावे तो दिन रात कलह रहेगी क्योंकि हस्तिनी जाति की स्त्री सभोग प्रिय, रतिक्रीड़ा मे अत्यन्त इच्छा रखने वाली और शशक जाति का पुरुष ईश्वर भक्त, शान्ति प्रकृति वाला, धार्मिक, परोपकारी विषय भोग मे कम इच्छा रखने वाला होता है। इसलिये हस्तिनी स्त्री को रतिक्रिया से सन्तोष नही होगा इसलिये वह हर समय दुखी उदास और कलह कारिणी रहेगी। किसी काम मे मन न लगेगा। पति के ऊपर क्रोध कर घर भर से लड़ती रहेगी। यदि पति उसकी इच्छानुसार कार्य करेगा तो रोगी निर्बल और कम आयु वाला होगा इस वेमेल से जो सन्तान होगी वह भी कलहकारी क्रोधी और रोगी अल्पायु होगी। हस्तिनी स्त्री अश्व जाति के पुरुष से ही सन्तुष्ट रह सकती है।

ऊपर जैसा वतलाया गया है कि चार प्रकार की स्त्रियो के लिये चार प्रकार के पुरुष, जैसे पद्मिनी स्त्री का पति शशक जाति का

होना चाहिये। यदि इस जाति का पुरुष न होगा तो दाम्पत्य प्रेम का अभाव रहेगा और सन्तान भी ठीक न होगी इसी प्रकार चारों को समझिये। योग्य जोड़े से दाम्पत्य प्रेम का दोनों को आनन्द प्राप्त होगा और सन्तान भी उत्तम होगी।

दाम्पत्य कलह का दूसरा कारण

स्त्री और पुरुष दोनों की गुप्त इन्द्रियां अनेक प्रकार के आकार की होती है। जैसे पद्मिनी स्त्री की गुप्त इन्द्रिय की गहराई छै अंगुल और उसी हिसाब से शशक जाति के पुरुष की इन्द्री की लम्बाई होती है इस लिये रतिक्रिया और गर्भाधान क्रिया ठीक होती है। यदि दोनों की इन्द्रियों का ठीक मेल न मिला तो संभोग सुख की कमी कलह का कारण हो जाती है।

यदि स्त्री की गुप्त इन्द्री की गहराई अधिक है और पुरुष की कम है तो सभोग ठीक नही होगा और सन्तान भी न होगी क्योंकि गर्भाधान क्रिया के समय जब पुरुष की इन्द्री स्त्री के गर्भाशय के मुख से लगजाती है तब गर्भाशय के मुख में पुरुष का वीर्य जाता है। यदि गर्भाशय के मुख तक पुरुष की इन्द्री न पहुच सकी तो गर्भ नही रहता, न स्त्री की तृप्ति होती है।

गर्भाधान के लिये और दाम्पत्य प्रेम का सुख पाने के लिये ही ऊपर लिखे चार जाति के स्त्री पुरुषो का उचित मेल शास्त्रकारो ने बतलाया है क्योंकि जब रतिक्रिया के समय पुरुष की इन्द्री छोटी होने से स्त्री की इच्छा पूरी न होगी तो दाम्पत्य प्रेम

११—एकादशी को गले मे (सर्वाधिकार सुरक्षित

का आनन्द नही मिलेगा और न गर्भ ही रहेगा क्योकि उत्तम सन्तान के लिये गर्भाधान क्रिया के समय दोनों का प्रसन्न रहना और ठीक गर्भाधान होना आवश्यक है।

बाल्यावस्था का बेमेल सम्बन्ध

ऊपर लिखे कारण का बेमेल सम्बन्ध होने से पति पत्नी मे कलह बनी रहती है और मेल का सम्बन्ध होने से सन्तान उत्तम होती है इसी प्रकार बाल्यावस्था का विवाह बेमेल होता है जो सन्तान के लिये हानि कारक है।

मुझे २५ पच्चीस वर्ष स्त्रियों की चिकित्सा करते व्यतीत हुई इस बीच मे लाखो ही स्त्रियां मेरे पास अपने रोगो की परीक्षा और चिकित्सा कराने आईं इन मे मैंने बहुत कम ऐसी रोगी स्त्रियां देखीं जिनका विवाह योग्य अवस्था मे हुआ वरन बाल्यावस्था के विवाह वाली ही अधिक देखी।

किसी की स्त्री की अवस्था कम पुरुष की ज्यादह, किसी की बराबर और किसी की पति की स्त्री से दूनी किसी की लडका, लड़की दोनो कम अवस्था के, ऐसे ही सम्बन्ध देखने मे आये। लड़के ने कुसंगति मे पड़कर हस्त क्रिया करके अपने वीर्य का सत्यानाश मार लिया उससे सुस्ती प्रमेह स्वप्नदोष आदि अनेक प्रकार के रोग उत्पन्न होगये। जब पढ़ाई समाप्त करके गृहस्थी मे प्रवेश किया तब तक खजाना खाली हो गया अर्थात् वीर्य क्षीणता और शीघ्रपात के रोगो से ग्रसित होगया फिर स्त्री को किस प्रकार

प्रसन्न करे और सन्तान कैसे हो। यदि गर्भ रहा तो गर्भस्राव व गर्भपात की शिकायत होगई। सभोग शक्ति ठीक न रहने से स्त्री भी रोगी होगई।

कोई कोई कालेज में पढ़ भी रहे हैं और विवाह होजाने पर इधर भी पूरी शक्ति लगाकर अधिक विषय में लिप्त हो वीर्य का सत्यानाश मारने लगे और थोड़े ही दिनों में शक्ति हीन होगये इत्यादि कारणों से दाम्पत्य प्रेम का आनन्द नहीं मिलता। जो स्त्रियां मेरे पास इलाज के लिये आती हैं, प्राय. सभी की जबानी यह सब हाल मालूम होता है। जो स्त्रिया सकोच वश अपने पति का हाल ठीक ठीक नहीं बतलाती उनके पति की चिकित्सा करने से पूरा हाल मालूम होजाता है। इस प्रकार से बेमेल बाल्यावस्था के विवाह से भी दाम्पत्य सुख का आनन्द जैसा चाहिये नही मिलता। दाम्पत्य प्रेम के लिये आरोग्यता मुख्य है और आरोग्यता वीर्य रक्षा से ही मिलती है। यदि बाल्यावस्था में वीर्य रक्षा पूर्ण रूप से नहीं की जाती तो जीवन भर दाम्पत्य प्रेम का आनन्द मिलना कठिन होजाता है।

वीर्य शरीर का राजा है जो पुरुष उसकी कदर नहीं करता वह आयु पर्यन्त भाँति भाँति के रोगो में फसा रहता है, उसे कभी दाम्पत्य सुख जैसा चाहिये नहीं मिलता, इसलिये मनुष्य मात्र को वीर्य रक्षा करनी चाहिये। इस विषय में आगे आरोग्य शास्त्र प्रकरण मे विस्तार पूर्वक लिखा गया है।

आनन्द मन्दिर
पांचवां अध्याय
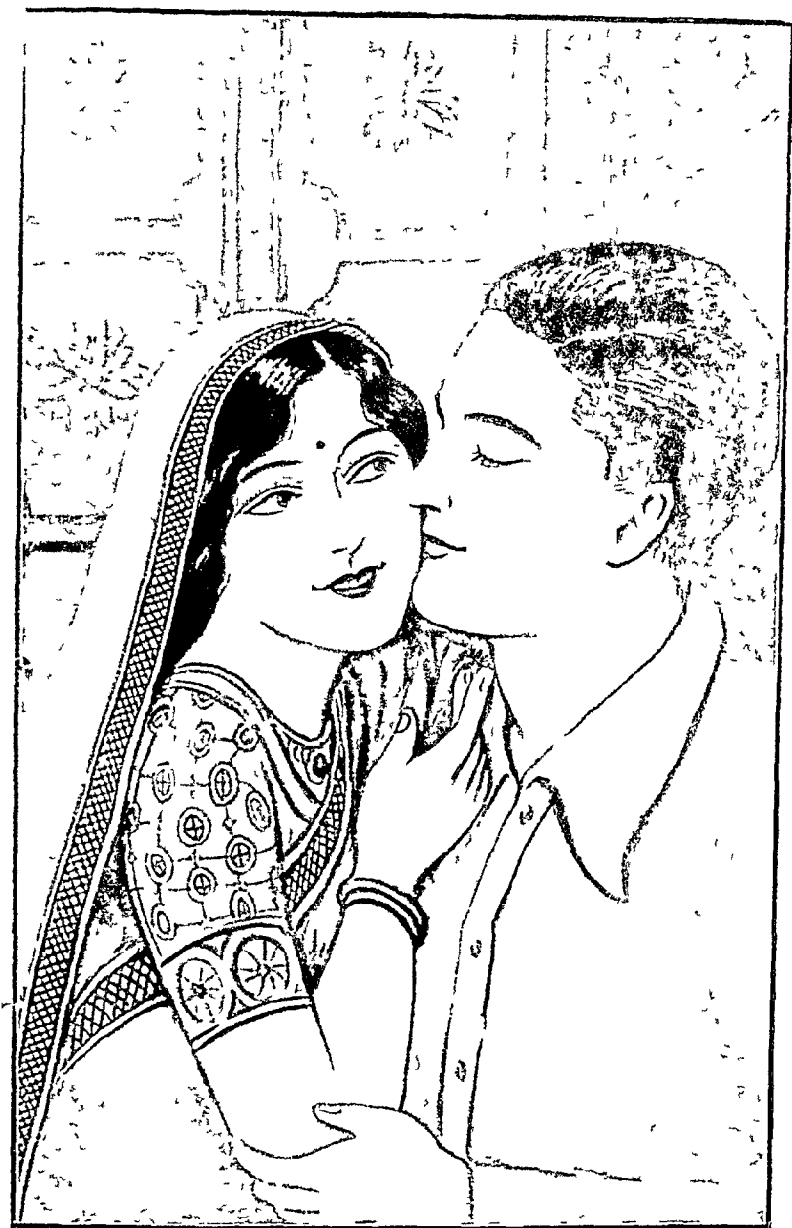
१२—द्वादशी को गालों में

आयुर्वेद और कामशास्त्र

आयुर्वेद मतानुसार स्त्री पुरुष के एकसाथ स्खलित होने से नपुसक सन्तान उत्पन्न होती है और कामशास्त्र का मत है जैसा कि आज कल इस विषय की अनेक प्रकाशित पुस्तको से ज्ञात होता है सब मे प्रायः अनेक उपाय करके स्त्री पुरुष को एक साथ ही स्खलित होने के साधन वतलाये गये हैं। अनेक ग्रन्थों का मत है कि:—

स्त्रियों के शरीर मे काम के चढाव उतार का हर महीने एक चक्कर लगता है। जिस तिथि को जिस स्थान पर कामदेव हो उस स्थान का आलिंगन चुम्बन करने और नाखूनो के गड़ाने से स्त्रियां स्खलित हो जाती है। इस प्रकार स्त्री पुरुष के साथ ही स्खलित होने से विशेष आनन्द प्राप्त होता है इत्यादि।

पाठको! विचारिये वैद्यकशास्त्र तो वतलाता है कि स्त्री पुरुष के साथ ही स्खलित होने मे गर्भ रहे तो नपुंसक सन्तान होती है और इधर विषयी लोग सन्तान की परवाह न करके विशेष आनन्द की इच्छा से अनेक उपायों से स्त्री पुरुष के साथ ही स्खलित होने के इच्छुक हो रहे है।

स्त्रीपुंसयोर्विसृष्टिश्चेदेकदैवभवेद्यदा।
षंडस्तदा प्रजायते इतिमेनिश्चितामतिः॥

अर्थात्-यदि स्त्री पुरुष दोनो एक ही साथ स्खलित होवे

तो नपुंसक सन्तान उत्पन्न होती है यह मेरी निश्चित मति (राय) है। ऐसा शास्त्रकारों का कहना है।

स्त्री सम्भोग का अर्थ

स्त्री सम्भोग का अर्थ यही है कि स्त्री पुरुष दोनों का भोग सम अर्थात् बराबर हो। यही दाम्पत्य प्रेम का आनन्द है, न कि स्त्री रोगों से ग्रसित, दुःखो से पीडित हो और पति अपनी कामाग्नि शान्ति के लिये उसपर अत्याचार करता रहे, उसके रोगों की कुछ भी परवाह न करे। इसका परिणाम यह होता है कि पत्नी कुछ दिनों में तपेदिक आदि भयकर रोगों में ग्रसित हो काल का कलेवा बनजाती है अथवा पतिदेव ही ऐसे भयंकर रोगों का शिकार बनजाते हैं और पत्नी का जीवन नष्ट कर डालते हैं।

ऐसे पुरुषों को सम्भोग का अर्थ समझ कर उसका पालन करना चाहिये। जो सज्जन पति शब्द का अर्थ समझते हैं वे पत्नी के साथ कभी इसके विरुद्ध आचरण नही करते। ऐसे ही पवि पत्नी दाम्पत्य प्रेम का आनन्द भोग करते हैं। उन्हीं की सन्तान आरोग्य और सुन्दर होती है। वे भी पति पत्नी आरोग्यता और दीर्वजीवन प्राप्त करते हैं परन्तु ऐसे पुरुष इस समय बहुत कम मिलेगे।

स्त्री संभोग का नियम

प्राय: मेरे पास इस विषय के अनेक पत्र स्त्रियो के आया करते हैं कि सम्भोग के नियम क्या हैं? यदि कोई पुस्तक इस प्रकार के

नियमों की हो तो भेज दीजिए अथवा पत्र द्वारा सूचित कीजिए ताकि हम अपने पति को वे नियम दिखला सकें।

इस प्रकार के पत्रों का यथार्थ उत्तर देने से उनके पतियो के पत्र आते हैं कि ये तो बड़े कठिन नियम हैं, इतने दिन तक ब्रह्मचर्य से आज कल के समय मे कौन रह सकता है, तब उनके पत्र का विवशतः उत्तर दिया जाता है कि जब तक रहा जावे रहो और एक दिन भी न रहा जावे तो अपनी इच्छानुसार करो। ऐसे अज्ञानी विषयी पुरुषों के लिये कोई नियम नहीं हैं।

यहां यह बात याद रखने की है कि प्रति दिन प्रसग करने वाला अथवा सप्ताह मे प्रसग करने वाला कुछ दिन बाद इस दशा को पहुंच जावेगा कि महीने में भी एक दिन न कर सकेगा और प्रति दिन करने वाला वर्ष भर मे भी एक दिन न कर सकेगा क्योंकि अधिक प्रसंग से अन्य अनेक रोग उत्पन्न होने के अतिरिक्त पुरुष नपुसक भी हो जाता है तब वह महीने तथा वर्ष भर में भी एक बार नही कर सकता। यही कारण है कि आजकल तमाम अखबारों में तिला आदि के विज्ञापनों की भरमार रहती है। मेरे पास भी नपुसक पुरुषो की स्त्रियों के पत्रों की संख्या कम नहीं रहती।

ऋतु विचार पूर्वक सम्भोग

यदि पुरुष ऋतुधर्म्म होने के बाद अपनी ही स्त्री से सभोग करे तो भी पन्द्रह दिन तक संभोग का समय रहता है। ऋतुस्नान

के चौथे दिन सभोग करने से यदि उस दिन गर्भ रहने के लक्षण न मालूम हो तो फिर पाचवे छठे या सातवे दिन संभोग करने मे कोई हानि नही, यदि फिर भी गर्भ न रहे तो आठवे नवे या दसवे दिन संभोग करे, इस प्रकार जब गर्भ रह जाने के लक्षण मालूम हो तब प्रसग बन्द कर देवे। इस नियम से चलते रहने से हर महीने कई बार सभोग का समय है। इसी नियम के अनुसार ऋषियो ने आज्ञा दी है। ऋतुधर्म्म का समय व्यतीत हो जाने पर रतिक्रिया करना व्यर्थ है और नियम के विरुद्ध है।

इस प्रकार रतिक्रिया करने से भी आरोग्यता को हानि न पहुँचे इसलिये हर ऋतु मे सभोग का नियम बतलाया गया है।

आयुर्वेद मे सभोग केवल सन्तान उत्पत्ति के ही लिये बतलाया है परन्तु किसी किसी ऋषि का यह भी मत है कि यदि पुरुष से इतने समय तक ब्रह्मचर्य से न रहा जाय तो ऋतु के अनुसार सम्भोग करे परन्तु वह भी सभोग नियमित उचित रीति से होने से मनुष्य के रोगी होने का भय नही रहता।

आयुर्वेद का प्रसिद्ध ग्रन्थ सुश्रुत बतलाता है:—

त्रिभिस्त्रिभिरहोरात्रैः समयात्प्रमदां नरः।
सर्वेष्वृतुषु धर्मे तु पक्षात्पक्षाद्व्रजेद्बुधः॥

यदि पुरुष से अधिक दिन तक ब्रह्मचर्य से न रहा जावे तो तीन तीन दिन के अन्तर से मैथुन करना और गरमी की ऋतु मे पन्द्रह पन्द्रह दिन के अन्तर से स्त्री सभोग करना चाहिये।

१३—नेत्रम को होठ मे

वर्जित समय

नोपेयात्पुरुषो नारीं सन्ध्यायोर्न च पर्वसु ।
गोसर्गेचार्धरात्रे च तथा मध्यं दिनेपि च ॥

दोनो समय की सन्ध्या अर्थात् सायंकाल और प्रात काल तथा पर्व अमावस, पूर्णिमासी, संक्रान्ति, चौदस, एकादशी इत्यादि इसी प्रकार के जितने पर्व हैं उनमे सम्भोग न करे और जिस समय गौ चरने को छोड़ी जाती हैं उस गोधूलि के समय, अर्ध-रात्रि के ससय तथा मध्यान्ह के समय पुरुष को स्त्री सभोग नही करना चाहिये ।

दाम्पत्य विहार का योग्य स्थान

विहारं भार्यया कुर्याद्दशेतिशयसावृते ।
रम्ये श्राव्याङ्गनागाने सुगन्धे सुखमारुते ॥

पुरुष को अपनी ही स्त्री के साथ विहार करना चाहिये। जो स्थान अन्य मनुष्यो के दृष्टिगोचर न हो अर्थात् एकान्त हो तथा रमणीक स्थान हो। जिस कमरे मे स्त्रीगान कर रही हो और सुगन्धित तथा सुखदायक पवन आती हो ऐसी जगह अपनी भार्या के साथ विहार करे। ऐसे स्थानो पर सम्भोग या विहार करने से चित्त प्रसन्न रहता है किसी प्रकार की चिन्ता भय या ग्लानि नहीं होती ।

विस्तीर्णे सजले सुधाधवलिते चित्रादिनालङ्कृते।
रम्यप्रोन्नतचत्वरेऽगरुमहाधूपादि पुष्पान्विते ॥

अर्थात्—लम्बा चौड़ा स्थान (मकान) हो तात्पर्य यह है कि जहा वायु भलीभांति आता जाता रहे। जहां जल भी हो और वह स्थान सफेदी से पुताया गया हो तथा भांतिभांति के चित्रों से सजाया गया हो, चित्त को प्रसन्न करने वाले शोभायमान पदार्थों से सुशोभित हो रहा हो, ऊंची छत और ऊंचा आंगन हो, अगर आदि धूनी से धूपित किया गया हो, जिसमें चित्त को प्रसन्न करने वाली मन्द मन्द सुगन्धि आ रही हो और भांति भांति के सुगन्धित फूलों की मालाएं रक्खी हो।

सङ्गीताङ्गविराजते स्वभवनेदीपप्रभाभासुरे।
निशङ्कं सुरतं यथाभिलषितं कुर्यात्समंकान्तया ॥

सगीत के अनेक बाजे रक्खे हो और दीपक से प्रकाशमान हो, ऐसे सुरमणीक स्थान में निःशक होकर अपने घर मे अपनी प्यारी भार्या से नियम पूर्वक दाम्पत्य प्रेम का आनन्द भोग करे।

तात्पर्य

इस प्रकार से संभोग करना इस कारण बतलाया है कि जो अधिक दिनो तक ब्रह्मचर्य से न रहसके वे इस नियम के अनुसार संभोग करें तो एकदम निर्बलता न होगी और कुछ हानि न होगी। इस कारण बतलाया है—

निदाघशरदोर्बालाहिता विषयिणो मता।
तरुणी शीत समये प्रौढा वर्षा वसन्तयोः ॥

इसका अर्थ यह है कि जो पुरुष ब्रह्मचर्य से अधिक दिन तक नहीं रह सकते वे या जिनकी स्त्री की अवस्था थोडी है अर्थात् १६ वर्ष की है, वे गरमी की ऋतु मे तीन तीन दिन पर संभोग करे और जिनकी स्त्री तरुणी है अर्थात् ३२ बत्तीस वर्ष के भीतर जिसकी अवस्था है वे जाडे की ऋतु मे सभोग करे और जिनकी स्त्री की प्रौढ़ा अवस्था है वे वर्षा और वसन्त ऋतु में संभोग करें। गरमी की ऋतु और शरद् ऋतु में बाला स्त्री हितकारी है। तरुणी स्त्री शीतकाल मे हितकारी है और प्रौढ़ा वर्षा तथा वसंत ऋतु मे हितकारी है ऐसा किसी किसी ऋषि का मत है।

बाला स्त्री से संभोग करने से बलकी हानि नहीं होती। तरुणी स्त्री से नित्य संभोग करने से शरीर की शक्ति क्षीण होती है और प्रौढ़ा स्त्री से सभोग करने से वृद्धावस्था आती है और वृद्धा स्त्री से संभोग करने से मृत्यु आती है। इसलिये वृद्धा स्त्री से जो अपने प्राणों की रक्षा चाहे वे सभोग न करे तथा नियम के विरुद्ध न करे। नियम के विरुद्ध सभोग करने अथवा प्रौढ़ा वृद्धा स्त्री से संभोग करने तथा तरुणी स्त्री से नित्य करने से शरीर की इन्द्रियां शिथिल हो जाती हैं इस लिये वृद्धावस्था शरीर पर अपना प्रभाव बहुत शीघ्र जमालेती है।

आरोग्यता और संभोग

हमारे यहां आयुर्वेद और धर्म्मशास्त्रो मे आरोग्यता तथा दीर्घजीवन का विचार करते हुए सम्भोग का आनन्द और उत्तम सन्तान उत्पन्न करने का विधान है उसे हम यहां सचित्र लिखती हैं। शास्त्र बतलाते हैं :—

वाजी करणमन्विच्छेत्सततं विषयी पुमान् ।
तुष्टिःपुष्टिरपत्यं च गुणवत्तत्र संश्रितम् ॥
अपत्य संतानकरं यत्सद्यः संप्रहर्षणम् ।

अर्थात्—पुरुषों को उचित है कि वाजीकरण औषधियों का निरतर सेवन करता रहे क्योंकि वाजीकरण मे तुष्टि पुष्टि तथा गुणवान सन्तान होती है। वाजीकरण मे ओषधियाँ आरोग्य दाता उत्तम सन्तान उत्पन्न करने वाली और आनन्द देने वाली होती हैं।

वाजीकरण क्या है

वाजीवाऽतिवलो येन यात्यप्रतिहतोंगनाः ।
भवत्यतिप्रियः स्त्रीणां येन येनोपचीयते ॥
तद्वाजिकरणं तद्धि देहस्योर्जस्करं परम् ।

इसका अर्थ यह है कि जिसके द्वारा अर्थात् जिसकी सहायता से पुरुष बलवान और अत्यन्त सामर्थवाला घोड़े की समान

संभोग शक्ति प्राप्त कर उत्तम आरोग्य सन्तान उत्पन्न करने वाला होकर स्त्रियों का प्रिय होजावे। उसी को वाजीकरण कहते हैं। वाजीकरण प्रयोगों की सहायता से पुरुष की सभोग शक्ति कम नहीं होती और पुरुष सुन्दर दीर्घजीवी सन्तान उत्पन्न करने की शक्ति प्राप्त करता है। ऐसा आयुर्वेद का मत है।

धर्म्मशास्त्र और

आयुर्वेद से ऋतुदान का समय

ऋतुकालाभिगामीस्यात्स्वदारनिरतस्सदा।
पर्व वर्जं व्रजेच्चैनां तद्व्रतो रतिकाम्यया॥

महर्षियों ने ऋतुदान के समय का निश्चय इस प्रकार से किया है कि सदा पुरुष ऋतुकाल मे ही स्त्री के साथ मे समागम करे। वह पुरुष जब ऋतुदान देना हो तो पर्व अर्थात् जो उस ऋतुदान के १६ दिनों मे पूर्णमासी अमावास्या चतुर्थी अष्टमी एकादशी आवे उसको छोड़ देवे इन तिथियों मे स्त्री पुरुष रतिक्रिया कभी न करें।

ऋतु स्वाभाविकः स्त्रीणां रात्रयः षोडश स्मृताः।
चतुर्भिरितरैः सार्द्धमहोभिः सद्विगर्हितैः॥

स्त्रियों का स्वाभाविक ऋतुकाल १६ रात्रि का है अर्थात रजोदर्शन के दिन से १६ सोलहवे दिन तक ऋतु समय है। इन

में प्रथम की चार रात्रि अर्थात् जिस दिन स्त्री रजस्वला हो उस दिन से चार दिन संभोग के लिए निन्दित हैं। प्रथम द्वितीय तृतीय और चतुर्थ रात्रि में पुरुष स्त्री का स्पर्श और स्त्री पुरुष का स्पर्श कभी न करे। रजस्वला के हाथ का छुआ पानी तक न पीवे वह स्त्री कुछ काम न करे, एकान्त में बैठी रहे, भूमि में शयन करे। जो पुरुष इन रातों में सभोग करते हैं उन्हें अनेक प्रकार के रोग घेर लेते हैं। मासिकधर्म के रक्त में स्त्री के शरीर से एक प्रकार का विकृत उष्ण रक्त जैसा कि फोड़े में से पीव व रक्त निकलता है वैसा ही निकलता है इस कारण इस समय संभोग करने से स्त्री पुरुष दोनों रोगी होजाते हैं।

तासामाद्याश्चतस्रस्तु निन्दितैकादशी च या।
त्रयोदशी च शेषास्तु प्रशस्ता दश रात्रयः॥

जैसे प्रथम की चार रात्रि रतिक्रिया करने के लिये वर्जित हैं वैसे ही ग्यारहवीं और तेरहवीं रात्रि भी निन्दित है और बाकी रहीं दश रात्रि सो रतिक्रिया के लिये उत्तम हैं।

युग्मासु पुत्रा जायन्ते स्त्रियोऽयुग्मासु रात्रिषु।
तस्माद्युग्मासु पुत्रार्थी संविशेदार्त्तवे स्त्रियम्॥

जिनको पुत्र की इच्छा हो वे छठी, आठवी, दशवीं, बारहवीं, चौदहवीं, और सोलहवीं रात्रि में सभोग करें। ये छैः रात्रि गर्भक्रिया अर्थात् रतिक्रिया करने के लिये उत्तम हैं।

जिनको कन्या की इच्छा हो वे पाँचवीं, सातवीं, नवीं, और पन्द्रहवीं ये चार रात्रि उत्तम समझें।

पुमान् पुंसोऽधिके शुक्रे स्त्री भवत्यधिके स्त्रियः।
समे पुमान पुंस्त्रियौ वा क्षीणोऽल्पे च विपर्ययः॥

पुरुष के अधिक वीर्य होने से पुत्र और स्त्री के आर्तव अधिक होने से कन्या और बराबर होने से नपुंसक सन्तान होती है। पुरुष व वन्ध्या स्त्री के क्षीण और अल्प वीर्य से गर्भ का न रहना व रहकर गिरजाना आदि होता है।

निन्द्यास्वष्टासु चान्यासु स्त्रियो रात्रिषु वर्जयन्।
ब्रह्मचर्य्यैव भवति यत्र तत्राश्रमे वसन्॥

जो पहिले वर्जित आठ रात्रि ऋषियों ने बताई हैं उनमें जो स्त्री प्रसंग नहीं करता वह गृहस्थाश्रम में रहता हुआ भी ब्रह्मचारी ही कहलाता है।

वह पुरुष कभी शक्तिहीन नहीं होता और आरोग्य तथा दीर्घजीवी होता है। पति पत्नी दोनों एक सौ वर्ष की आयु पाते हैं और उनकी सन्तान भी एक सौ वर्ष तक जीवित रहकर जीवन का आनन्द और सुख भोग करती है। अपनी आरोग्यता दीर्घजीवन और सन्तान की आरोग्यता तथा दीर्घजीवन माता पिता के ही हाथ मे है। इसलिये माता पिता को विचार कर उचित संभोग करना चाहिये।

ऋतु धर्म्म का समय

मासेनोपचितंकाले धमनी धमनीभ्यांतदार्त्तवम् ।
ईषद्रक्तं विवर्णंच वायुर्योनि मुखं नयेत् ॥

अर्थात्—आर्त्तव काल यानी मासिक धर्म्म का समय बारह वर्ष से लेकर साठ वर्ष पर्यन्त रहता है, वह महीने के महीने इकट्ठा होकर वायु के योग से नाड़ियों द्वारा कुछ लाल और विकृत वर्ण अथवा विना गन्ध का योनि के मुख से बाहर निकलता है। गर्भ रूप फल उत्पन्न करने से इस ऋतु को पुष्प कहते हैं इसी कारण ऋतुमती स्त्री को पुष्पवती कहा है।

ऋतु धर्म्म का बन्द होना

तद्वर्षाद्द्वादशात्काले वर्त्तमानमसृक्पुनः ।
जरापक्के शरीराणां याति पंचाशतः क्षयम् ॥

अर्थात—ऋतु धर्म्म का रक्त बारह वर्ष से प्रकट होकर तदनन्तर जैसे जैसे शरीर मे सप्तधातु बढ़कर शरीर बढ़ता है उसी प्रकार ऋतु का रक्त बढ़कर महीने के महीने निकलता है और पचास वर्ष की अवस्था होने के बाद बुढ़ापे से शरीर तथा धातु थकित होकर जिस भांति क्रमश. धीरे धीरे बढ़ा था उसी प्रकार क्रमसे क्षीण होकर साठ वर्ष की अवस्था होने तक बन्द होजाता है।

यह नियम आरोग्य स्त्री के ऋतु धर्म का है। जो अधिक प्रसग
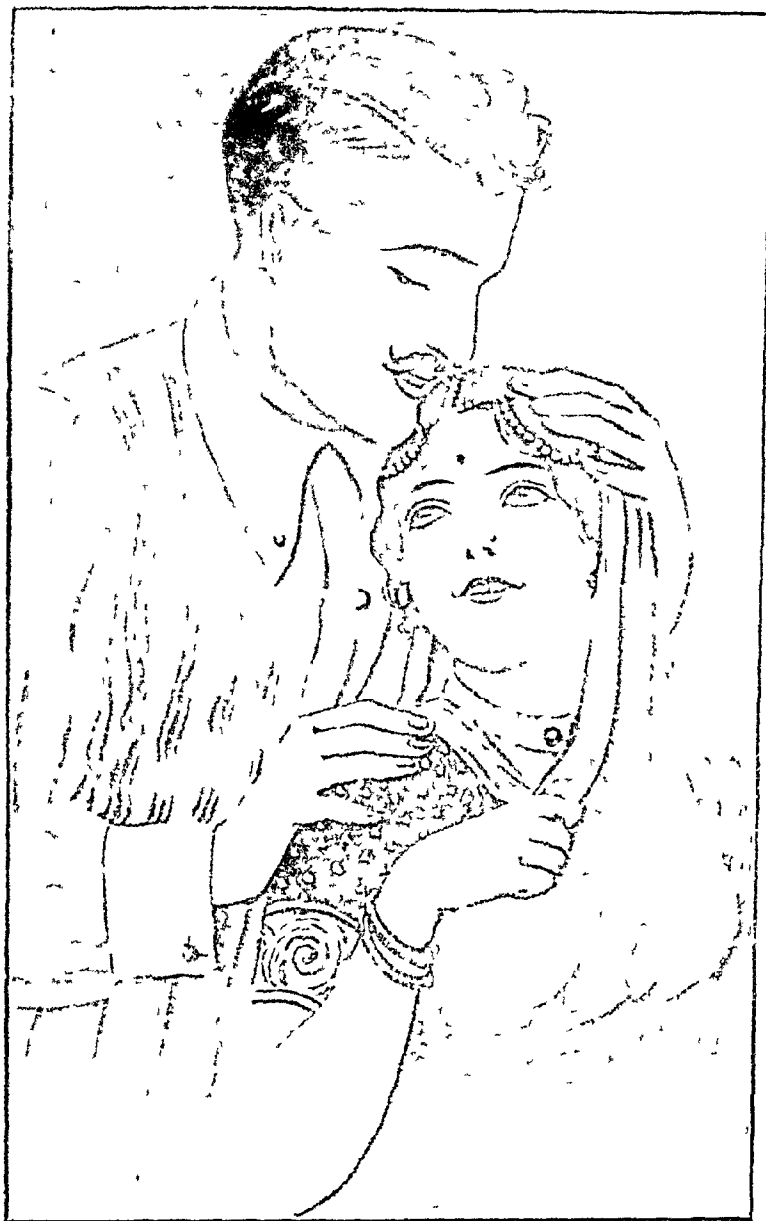
अमावस या पूर्णिमा को शिर मे

के कारण रोगी होजाती हैं उन स्त्रियों का मासिक धर्म समय के पहिले ही बन्द होजाता है और रोग के कारण अधिक तथा कम भी होजाता है और अधिक दिनों तक जारी रहता है तथा जवानी में ही बिलकुल बन्द होजाता है। इसी प्रकार जो लडकियां कुसंगति मे पड़ जाती हैं और कामोद्दीपन करने वाले गन्दे किस्सा कहानी उपन्यास पढ़ा तथा सुना करती हैं वे बारह वर्ष की अवस्था के पहिले ही ऋतुमती होने लगती हैं और उनकी इच्छा रतिक्रिया की ओर दौडती है। उनको कामोद्दीपन होने का कोई नियम नहीं है जो स्त्रियां इस प्रकार कुसंगति में पड़ जाती हैं वे अनियम ऋतुधर्म मे होने लगती हैं और उनके ऋतुधर्म बन्द होने का भी कोई नियम नहीं है। यदि विवाह होने पर उन्हें योग्य पति मिल जावे और वे उन्हे योग्य बना कर अच्छे अच्छे धार्मिक ग्रन्थों की शिक्षा देकर नियम पूर्वक रतिक्रिया करे तो वे सुधर सकती हैं और सन्तान भी अच्छी हो सकती है। क्योंकि कामोद्दीपन में मानसिक वृत्तियों का जबर्दस्त असर पड़ता है।

स्त्रियों को योग्य अथवा अयोग्य बनाने वाले पुरुष ही हैं बाल्यावस्था में माता पिता को इस बात का ध्यान रखना चाहिये कि लड़कियां गन्दी पुस्तकें न पढ़ने पावे। तथा दुष्ट लडकों लड़कियों के साथ न रहने पावे। आज कल तो लडकियां लड़कों के साथ ही पढ़ा करती हैं और स्वतन्त्र होती जाती हैं इन्ही कारणों से ऋतुधर्म्म का भी कुछ नियम नहीं रहा। जल्दी आरम्भ होता है और जल्दी बन्द होता है तथा ऋतुधर्म्म मे अनेक प्रकार

की शिकायतें उत्पन्न होजाती हैं इसी कारण सैकड़ा पीछे निन्नानवे स्त्रिया रोगी देखी जाती है। इनमे प्रायः विवाह होने के बाद अधिक प्रसग से रोगी होनेवालियो की सख्या अधिक पाई जाती है।

इसी प्रकार पुरुपों का हाल है जो वाल्यावस्था मे सुसगति मे रहने से वचगये तो विवाह होने पर अधिक प्रसग और अनियम प्रसंग करके शक्तिहीन निर्वल और दुर्वल होजाते हैं फिर कुछ दिनो मे प्रतिदिन कई कई वार मैथुन कर महीने मे एक वार भी ऋतुस्नाता स्त्री की इच्छा पूरी नही कर कसते।

यदि स्त्री के पास गये भी तो शीघ्रपात के कारण स्त्री का स्पर्श करते ही स्खलित होजाते है इस कारण उनके सन्तान नही होती। ऐसे पुरुषों की भी सख्या कम नही है।

मेरे पास अनेक स्त्रिया अपने पति के इलाज के लिये आया करती है और वे कहती है कि महीना होने के वाद जव हमारी इच्छा होती है तव तो हमारे पति हमसे वोलते नही और जव उनकी इच्छा होती है तव वोलते हैं तो शीघ्रही स्खलित होजाते हैं, हमारी इच्छा ही नही होती सन्तान कैसे हो। इससे मालूम होता है कि हमारे पति सुस्त है हमारे समय पर तो पास नही आते और जव कभी उनकी इच्छा होती है तो आते हैं। इस लिये ऐसी औषधि दीजिये जो हमारे पति की इच्छा ठीक समय पर हो और हमारे सन्तान हो। ऐसी स्त्रियों के पतियो से जब रोगी फार्म भराकर उनका पूरा हाल देखा जाता है तो उससे मालूम

उत्तम सन्तान उत्पन्न करने का उचित और उत्तम आसन । पृ० २५९

आनन्द मन्दिर
ग्यारहवां अध्याय

होता है कि उनकी इच्छा समय पर नहीं होती इसलिये वे ऋतु-स्नान के बाद स्त्री की इच्छा होने पर सभोग नही कर सकते। कुसमय उनकी इच्छा होती है, वह झूठी इच्छा है इसलिये स्त्री का स्पर्श करते ही स्खलित होजाते हैं।

पुरुषो के इस रोग का भी कारण अधिक संभोग ही है उनके रोगी फार्म देखने से मालूम होता है कि उन्होंने विवाह होते ही कुछ दिनो तक प्रति दिन अनेक प्रकार से विपरीत रति-क्रिया करके अपने शरीर का सत्यानाश मार लिया अब यह दशा होगई कि स्त्री की इच्छा होने पर महीने मे एक वार भी गर्भाधान क्रिया नहीं कर सकते।

इसके विषय में पीछे लिखा जा चुका है आयुर्वेद वतलाता है कि संभोग के समय पति पत्नी दोनों एक साथ स्खलित हो तो नपुंसक सन्तान उत्पन्न होती है अतएव आयुर्वेद का कथन मानने योग्य है और मनगढत कामशास्त्र सम्बन्धी पुस्तको का मत मानने के योग्य नही क्योंकि इससे अनेक प्रकार की हानि होती है।

स्त्रियां अधिक संभोग की इच्छुक नहीं सन्तान की इच्छुक होती हैं

जो मूर्ख पति अपनी स्त्रियो के स्वभाव को विषयी वतादेते हैं अथवा जो स्त्रिया दुष्ट पुरुषो अथवा दुष्ट स्त्रियो की कुसंगति से दुष्ट स्वभाव की होजाती हैं उनकी वात ही और है। वर्ना

वैद्यकशास्त्र बतलाता है कि स्त्रियां अधिक प्रसग की इच्छुक नहीं होतीं। नियम पूर्वक संभोग से गर्भवती होने की इच्छुक होती हैं और जो पति अपनी स्त्रियों को अधिक प्रसंग से तृप्त करना चाहते हैं उनकी स्त्रियां अधिक प्रसग से दुःखी होकर रोगी तो हो ही जाती हैं किन्तु पति से विरक्त भी होजाती हैं और सभोग से डरती रहती हैं। वे नियम पूर्वक संभोग की इच्छुक रहती हैं। विषयी पति से तंग आकर उदासीन रहती हैं, अधिक प्रसंग के कारण सन्तान हीन होजाती हैं उनके कभी गर्भ नहीं रहता, यदि रहा भी तो गर्भस्राव व गर्भपात हो जाता है। नियम पूर्वक सम्भोग करने वाला पति सम्भोग से पत्नी की तृप्ति कर सकता है और अधिक प्रसग करने वाला पति अपनी स्त्री के प्रति कलंकित होने का कारण बनता है।

स्त्रियों का कामोद्दीपन

स्त्रियो को कामोद्दीपन ऋतुस्नान के दिन से ही होता है यदि उस समय पति का सयोग न हो अर्थात् पति पास हो और सम्भोग न करे तो स्त्री उसे शक्तिहीन (नपुंसक) समझने लगती है और निराश होजाती है तथा रोगी होजाती है। क्योंकि वक्त पर पति उसे सन्तुष्ट नही कर पाता है।

स्त्रियों से कामोद्दीपन (सभोग की इच्छा) ऋतुस्नान के बाद ही गर्भधारण के लिये होता है इसके विषय में आयुर्वेद बतलाता है।
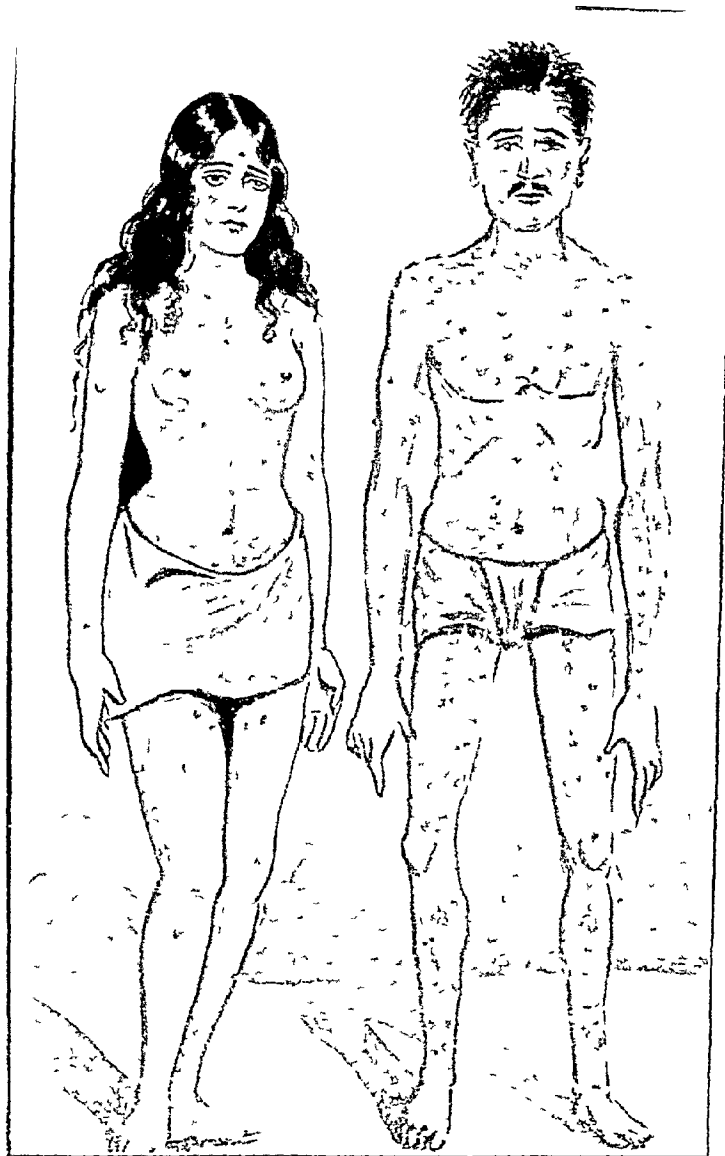
व्यभिचार अर्थात् परस्त्रीगमन का परिणाम । पृ० १०४

पीत प्रसन्न वदनां प्रक्लिन्नात्म मुखद्विजाम् ।
नरकामः प्रियकथांस्रस्त कुच्यक्षिमूर्द्धजाम् ॥

किसी किसी स्त्री को मासिकधर्म्म तो होता है परन्तु दिख-लाई नहीं देता उसे "अदृष्टार्तव" कहते हैं। शास्त्रकारों ने ऐसी ऋतुमती स्त्री के लक्षण ऊपर के श्लोक में इस प्रकार बतलाए हैं:-

अर्थात्—जिस स्त्री का मुख पीला मालूम हो और वह स्त्री प्रसन्न मुख दिखलाई दे, दांतो के मसूढ़े पसीजते हों और उसे पुरुष सम्बन्धी तथा विषय सम्बन्धी बातें अच्छी लगें ऐसी बातों से प्रसन्न और कुच नेत्र तथा केश शिथिल मालूम पड़ने लगें उसे ऋतुमती समझना।

स्फुरद्भुजस्तन श्रोणिनाभ्यूरुज घनस्फिजम् ।
हर्षौत्सुक्यपरांचापि विद्यादृतुमतींस्त्रियम् ॥

भुजा, स्तन, कमर, नाभि, ऊरू जंघाएं और कूले ये सब अंग कंपित होने लगें अर्थात् फड़कने लगें और मैथुन करने की अत्यन्त इच्छा हो, स्त्री के सब लक्षण अदृश्य जो दिखलाई न दे ऐसे ऋतुधर्म्म होने के हैं। जो इस प्रकार से ऋतुधर्म्म मे होती हैं उनके मासिकधर्म्म का रक्त दिखलाई नहीं देता परन्तु वे होती हर महीने हैं।

ऐसी अनेक स्त्रियां मेरे देखने में आई जिनको प्रकट में मासिकधर्म्म नहीं होता परन्तु उनमें हर महीने ऊपर लिखे लक्षण मालूम होते हैं।

इस विषय मे विस्तार पूर्वक लिखा जावे तो पुस्तक बहुत बढ़ जावेगी इसलिये यहां प्रसग वश इस विषय को सूक्ष्म करके इसलिये लिख दिया। स्त्री मे कामोद्दीपन केवल गर्भाधान के लिये ऋतु होने पर ही होता है। ऋतु स्नान के बाद जब तक गर्भाधान का समय रहता है तब तक स्त्री की इच्छा सभोग के लिये होती है। गर्भ रह जाने पर फिर इच्छा नही होती परन्तु जिन पुरुषो ने अधिक प्रसग करके अपनी स्त्रियो की आदत बिगाड दी है उनकी इच्छा का कहना ही क्या है। स्त्री की इच्छा हो या न हो पति जबर्दस्ती गर्भ रह जाने पर भी प्रसग करते ही है।

मैथुनेच्छा की शान्ति

ऋतु स्नान से शुद्ध हुई स्त्री मे यदि गर्भधारण होजावे तो फिर उसकी सम्भोग की इच्छा शान्त हो जाती है यदि गर्भ न रहे तो बारह दिन तक इच्छा होती है.—

आयुर्वेद बतलाता है —

नियतेदिवसेतीते संकुचत्यम्बुजं यथा।
ऋतौव्यतीतेनार्यास्तु योनिः संव्रियते तथा॥

अर्थात्—जैसे फूलने के पाच सात दिन पीछे कमल स्वय मुरझा जाता है तथा जैसे दिन मे फूला हुआ कमल सायकाल को अपने आप ही मुद जाता है उसी प्रकार ऋतु के व्यतीत हो जाने से अर्थात् बारह रात्रि व्यतीत होजाने पर स्त्री का गर्भा-

शय संकुचित होजाता है। इसी कारण फिर वह गर्भधारण नहीं कर सकती और संभोग की भी इच्छा नहीं करती। जब गर्भाशय का मुख बन्द होजाता है तब पुरुष का वीर्य गर्भाशय के भीतर नहीं जा सकता और स्त्री की इच्छा भी नही होती। बिना स्त्री की इच्छा हुए गर्भ रहता ही नहीं।

उचित प्रसंग के लक्षण

जिस भोग के पश्चात आनद आवे, शरीर मे स्फूर्ति और नूतन शक्ति प्रतीत हो. शरीर अधिक फुरतीला और काम करने के योग्य हो, व्यायाम या दिमागी मेहनत की अधिक रुचि हो। लिंगेंद्रिय मे थोडी देर पीछे शक्ति और उत्तेजना का अनुभव हो तो यह समझना चाहिये कि सहवास स्वास्थ्य के नियमानुसार हुआ है। यदि भोग क्रिया के पीछे थकान, शिर का भारी पन अनुभव हो तो जान लेना चाहिये कि उचित सीमा उलघन की गई है। क्यो साहब? छाती पर हाथ रखकर सच्चे पन से बताइये तो सही कि आपने इस नियम की पालना की है, फिर आपको सदा औषधियो की आवश्यकता न रहे तो क्या हो? दूसरा नियम अधिकता जानने का यह भी है कि जब तक सच्ची रुचि न हो सहवास न करे। सच्ची रुचि वह है जो बिना स्त्री के साथ हसे खेले, बिना किस्सा कहानियो के सुने, हृदय मे ऐसे विचारो को बिना लाए अपने आप रुचि उत्पन्न हो और वह रुचि पति को मैथुन की ओर प्रेरित करे।

स्मरण रहे कि थोड़ी सी थकावट और सुस्ती जो थोड़ी देर के वास्ते जान पड़ती है उस मे वेणनलाली (अधिकता) जाहिर नहीं होती। न यह अस्वास्थ्यकर होती है। दुग्धादि मे वह सुस्ती भी मिट जाती है। जब भोग के पीछे शिर में दर्द होने लगे तो यह अत्यन्त दुर्बलता का लक्षण है इन नियमों पर ध्यान करने से और सोचने विचारने से ज्ञात होगा कि प्रति सैकड़ा ९९ मनुष्य उचित सीमा से बढ़ कर सभोग करने के कारण कैसे २ रोगों में फंस रहे हैं। आज कल के दुर्बलों के लिये कुछ महीनों के पश्चात सीमा अत कहा जा सकता है। लाखों स्त्रियों के इलाज से उनकी जबानी मालूम हुआ है कि विषयी लोग नाना तरह के कष्ट उठाते हुए भी इतनी देर संतोष न कर सकें यह उनको इच्छा है। परन्तु चाहिए यह कि स्वास्थ्य और आनन्द की ओर पग धरें अथवा रोग और दु:ख की ओर दौड़ते जायँ। विषयी पुरुषों के वास्ते जो किसी की नहीं सुना करते हैं उनसे इतना ही निवेदन है कि महीने में एक दो बार सन्तान उत्पत्ति के लिये गर्भाधान करें जब कि स्त्री ऋतुवती होकर शुद्ध हो। अन्यथा शीघ्र ही हाथ मल कर रोना पड़ेगा और निश्चय जानिये वह दिन बहुत ही जल्द आजायगा जब आप वर्ष में एक बार भी सम्भोग नहीं कर सकेंगे और नपुंसक कहलाएगे या ऐसे कठिन शीघ्र पतनआदि रोगों में ग्रस्त होंगे कि बस लज्जा ही पल्ले पड़ा करेगी! उस समय आपका जीवन बोझसा प्रतीत होगा इस कारण पहिले से ही सावधान हो जाना अच्छा है। नियम से चलने की शपथ करना चाहिए नहीं तो

ईश्वर भजन । पृ० १११

स्मशान यात्रा की तैय्यारी करनी पड़ती है इसलिए मैं प्रार्थना करती हूँ कि बहुत मिर्चें, खटाई, बहुत नमक, अधिक उष्ण वस्तुओं का सेवन करते रहने से भी धातुक्षीणता रोग आदि हो जाते हैं इस कारण इन्हें अधिक न खाना चाहिये।

मानसिक—घृणा, भय, शोक आदि से चित्त की रुचि प्रतिकूल होकर बल और पुष्टी होने पर भी दुर्बलता मालूम होती है इसका इलाज औषधियों से नहीं होता है इस के अतिरिक्त इन्द्रियों में अनेक प्रकार के दोष, सुजाक, बादी फरंग इत्यादि भी धातु की दुर्बलता के कारण हो जाते हैं।

शुद्ध वीर्य की पहिचान

वीर्य क्षीणता से स्मरणशक्ति घट जाती है, नपुसकता आजाती है सर्व प्रकार के धर्म्म कार्य करने से वह व्यक्ति पराङ्-मुख रहता है उसकी सन्तानोत्पादक शक्ति का नाश हो जाता है। तात्पर्य यह है कि वह मनुष्य निकम्मा हो जाता है।
सुश्रुत शरीर स्थान अध्याय २ में लिखता है:—

स्फटिकाभंद्रवं स्निग्धं मधुरं मधुगन्धिच्च।
शुक्रमिच्छन्ति केचित्तु तैलं क्षौद्रनिभं तथा॥

अर्थात्— शुद्ध शुक्र स्वच्छ स्फटिक (बिलौर कांच) के समान द्रव (पिघला) चिकना, शहद के समान गन्धवाला होता है। कोई कोई आचार्य तैल और शहद के सदृश रंग वाले

को शुद्ध शुक्र कहते हैं और शुक्र का स्थान सम्पूर्ण शरीर कहा गया है। चरक सहिता मे लिखा है।

"रस इक्षौ यथा दध्नि सर्पिस्तैलं तिले यथा"

अर्थात् जैसे ईख मे रस, तिल मे तैल, दही मे घी, सर्वत्र विद्यमान् रहता है इसी प्रकार इस समस्त शरीर मे वीर्य रहा करता है—इसलिये इस विषय मे अधिक लिखकर व्यर्थ पुस्तक बढाना नही चाहती। अब इस बात को यही छोड़ कर अत्यन्त उपयोगी बातो को जो आप लोगो के लिये लाभकारी है उनका वर्णन करती हूं। इसे ध्यान से पढ़िये और समझकर फायदा उठाइये।

स्त्री पुरुषों के रोगों की अधिकता का कारण

बहुधा वर्तमान काल मे बालक से लेकर वृद्ध तक किसी न किसी रोग मे ग्रस्त पाये जाते है, कोई उसको प्रमेह, कोई जिरियान के नाम से उच्चारण करते है, और सर्वसाधारण जन इसी को धातु का पतलापन कहते है। वैद्यक मतानुसार यद्यपि इसका निदान कारण अधिक प्रसंग, दही, गुण, मांस रस नवीन अन्न जल आदि का खाना लिखा है परन्तु इसका मूल कारण स्वभाव विरुद्ध दुष्ट कर्मो मे वीर्य का नाश मारना है, बहुतेरे व्यभिचारी अनेक प्रकार के अनैसर्गिक कर्म्म किया करते है और रात दिन उसी के ध्यान मे मग्न रहते हैं एव चिन्ता सागर मे ऐसे डूबे रहते है कि उनसे दूसरा कोई

कार्य नहीं होता और दिन पर दिन उनका शरीर निर्बल दुर्बल हो संपूर्ण अच्छे कर्मों से घृणा हो जाती है, उपदंश, मूत्र-कृच्छ्र (सुजाक) बाघी (बद) आदि भयानक रोग उत्पन्न होते हैं जिससे लोक परलोक दोनों मे दुःख ही दुःख भोगना पडता है। इसलिये दुष्कर्मों से बचने के लिये सब से विनय पूर्वक निवेदन करने का मैंने साहस किया है। आशा है इससे रोगी निरोगी स्त्री पुरुष सब बड़ा भारी लाभ उठावेंगे।

उपरोक्त अस्वाभाविक कर्म्म लम्पट लोग तो करते ही हैं, परन्तु अनैसर्गिक उपाय तो अधिकतर सभ्य कहलाने वाले विद्यार्थियों, और नवयुवकों में पाया जाता है। संसर्ग दोष से इस की ऐसी अधिकता हो रही है कि शिशुकाल ही से इस दुष्कर्म की शिक्षा पाकर प्राय. ८, ९ वर्ष मे ही बालक बालिकाए बुरे कर्म प्रारम्भ कर देते हैं। इस निन्दित कर्म से जवान होने के पहिले ही शरीर बलहीन हो जाता है, अनेक रोग धर दबाते हैं चलते हैं तो पैर कांपते है। स्मरण शक्ति घटते घटते पुरुषत्व नाश हो जाता है, शारीरिक और मानसिक शक्ति विनष्ट हो जाती है तब उनको पृथ्वी पर जड़ पदार्थवत् होकर जीवन व्यतीत करना पड़ता है। विचार कर देखिये इसके बुरे अभ्यास से क्या क्या हानि नहीं होती। मुझे लाखों स्त्रियों की चिकित्सा कर उन्हीं की जबानी उनके जवान पतियों का हाल मालूम हुआ है।

पुरुषों की चिट्ठियों की संख्या भी कम नहीं है स्त्रियों की

चिट्ठियों से अधिक हैं। स्त्रियां स्वयं मेरे पास आती हैं और पत्र द्वारा औषधियां मंगाती हैं। पुरुष रोगी फार्म भेजते हैं। इस प्रकार रोगी पुरुषों की रोग सख्या की अधिकता का मुझे २५ पच्चीस वर्षों का अनुभव है। इसलिए सम्भोग समय पर नियमित ही करना चाहिए इधर उधर की लम्पटता और अनैसर्गिक व्यभिचार आदि में पडकर शरीर को नष्ट न करना चाहिए। विवाह के पश्चात् उचित समय पर अपनी स्त्री से ही प्रसग करना चाहिए।

सन्तान के लिये संभोग की तैय्यारी

स्नातश्चन्दनलिप्तांगः सुगन्ध सुमनोर्चितः।
भुक्तपुष्पः सुवसनः सुवेशः समलंकृतः॥
ताम्बूलवदनस्तस्यामनुरक्तोऽधिकस्मर।
पुत्रार्थी पुरुषोनारिमुपेयाच्छयने शुभे॥

इसका अर्थ यह है कि पुरुष स्नान करके चन्दन लगाकर इतर आदि सुगन्धित पदार्थों से अपने शरीर को सुगन्धित करके भोजन कर सुगन्धित फूलो की माला आदि धारण कर सफेद स्वच्छ कपडो को पहन कर और पुरुषो के योग्य आभूषणों को धारण कर पान खाकर अपनी प्यारी स्त्री में जिसके हृदय में प्रेम हो और सभोग की प्रबल इच्छा से कामोद्दीपन हो ऐसा पति पुत्र की इच्छा करके सुसज्जित सेजपर पत्नी के पास जावे।
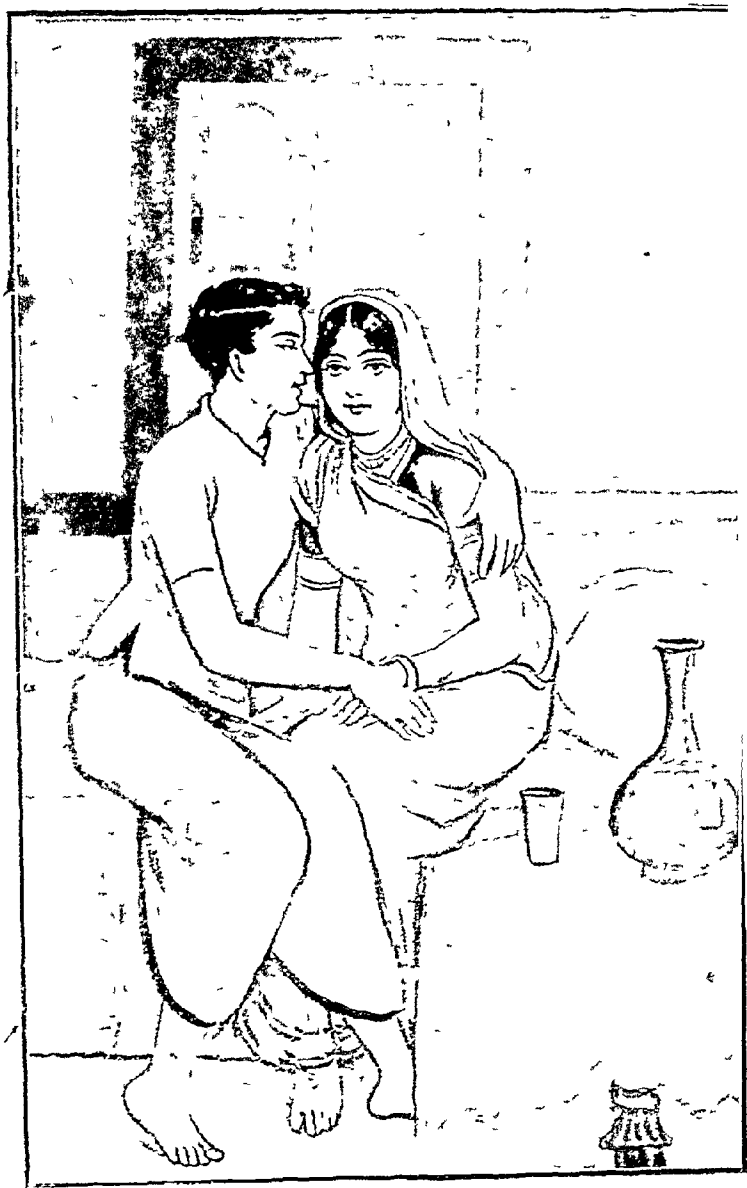
तस्याः स्तनौ यदि घनौ जघनं विहारि । पृ० ६६

आनन्द दायक स्त्री प्रसंग

सृष्टि के कर्त्ता ईश्वर ने पुरुष और स्त्री को इस लिये बनाया है कि उसकी बनाई हुई सृष्टि का क्रम बराबर इसी प्रकार चलता रहे और सृष्टि के नियमानुसार स्त्री पुरुष परस्पर संभोग द्वारा सन्तान उत्पन्न कर सृष्टि की उन्नति करें। मृत्यु तो निश्चत है ही जब मृत्यु निश्चित करदी गई है तो उत्पति भी निश्चित होनी चाहिये। यदि मृत्यु ही निश्चित होती, उत्पत्ति न होती तो काम नहीं चल सकता था इसलिये परमात्मा ने दोनों ही निश्चित किये हैं। इसी कारण संभोग द्वारा सन्तान उत्पन्न करने का नियम हर एक जीव मात्र के लिये एकसा बनाया गया है। इसकी शिक्षा किसी को देनी नहीं पडती। पशु पक्षी मनुष्य सबको ही इस विषय का ज्ञान प्रकृति ने ही करा दिया है। पशु पक्षी मनुष्य सब ही होश सम्भालते ही अर्थात् गर्भधारण की शक्ति उत्पन्न होते ही नर मादा से प्रेम करके संभोग कर सन्तान उत्पन्न करते हैं। इसी प्रकार मनुष्य भी होश संभालते ही अथवा कुसंगति में पडकर बाल्यावस्था में ही अनेक प्रकार से सम्भोग के आनन्द अनुभव करने लगते हैं।

जो बालक कुसंगति में नही पडते, सम्भोग का नाम भी नहीं जानते वे भी विवाह होने पर सम्भोग करना प्रकृति के नियमानुसार जानजाते हैं और जब तक उन्हें कुसंगति नहीं मिलती तबतक वे नियमानुसार ही सम्भोग करते हैं। उनको स्त्रियां

भी ऋतु स्नान के बाद ही गर्भाधान के लिये सम्भोग की इच्छा करती हैं।

ऐसी स्त्रियाँ भी मेरे पास अनेक आईं कि जिनके पति ऋतुमती होने पर ही महीने मे एक दो बार सम्भोग करते हैं उनकी सन्तान भी हृष्ट पुष्ट देखी गई। पुत्र ही पुत्र होने के कारण वे कन्या होने की इच्छा से मेरे पास उपाय व इलाज पूछने आईं। किसी के कन्याए ही कन्याए है वे पुत्र की इच्छा से उपाय पूछने आईं। अनेक स्त्रिया ऐसी भी आई जिनके पति वर्ष भर मे एक ही बार सम्भोग करते हैं। उनके एक ही दो सन्तान होकर वन्द होगई, परन्तु ऐसी पुरुषो की संख्या बहुत कम है। कई स्त्रियां भी आई जिनके पति ने केवल सन्तान न होने तक ही सम्भोग किया। एक पुत्र होजाने पर सम्भोग बन्द कर दिया। उनकी स्त्रियां भी दूसरे बालक के लिये उपाय पूछने आई। ससार मे सभी प्रकार के स्त्री पुरुष मौजूद है परन्तु अधिकता किसी काम की अच्छी नहीं होती सब काम सीमा मे ही अच्छे लगते हैं।

अति सर्वत्र वर्जयेत्

अति सब कामो की हानि कारक है इसलिये मनुष्य को नियम पूर्वक सब काम करने चाहिये।

स्त्री प्रसग अर्थात् सम्भोग करते समय ऐसा उपाय करना चाहिये जिससे पति पत्नी दोनो को सम अर्थात बराबर आनन्द प्राप्त हो।

वीर्यपात के समय पति पत्नी की चेष्टा

जिस समय पुरुष को यह मालूम हो कि स्त्री स्खलित होना चाहती है उस समय शीघ्रता से स्त्री के पहिले ही अपना वीर्य पात करे। यदि कन्या की इच्छा हो तो स्त्री को स्खलित होजाने दे पीछे आप स्खलित हो जैसा कि आयुर्वेद ग्रन्थो का मत है।

जिस समय पुरुष स्खलित होने को हो उस समय स्त्री के मुह पर मुह पर आंख पर आंख और इन्द्री को ठीक गर्भाशय के मुखकी सीध पर रखे। स्त्री को चाहिये उस समय पति के मुख की ओर बड़े प्रेम भाव से देखते हुए अपनी श्वास को ऊपर को खींचे जिससे पुरुष का वीर्य गर्भाशय मे आने मे सुविधा हो। नीचे को श्वास छोडने मे गर्भाशय मे वायु का सचार होने से वीर्य के बाहर निकल आने अथवा गर्भाशय मे जाने मे असुविधा होगी। पुरुष को चाहिये वीर्यपात के समय बिलकुल शान्त रहे किसी प्रकार शरीर को इधर उधर न होने दे।

वैद्यकशास्त्र बतलाता है इस प्रकार गर्भाधान होने से मनमानी सन्तान की प्राप्ति होती है।

घृतकुम्भोयथैवाग्निसाश्रितः प्रविलीयते।
विसर्पत्यार्तवंनार्यास्तथा पुंसांसमागमे॥

जैसे जमे हुए घृत का घड़ा आग के सयोग से गरम होकर घी पिघल जाता है उसी प्रकार दोनों स्त्री पुरुष की इन्द्रियो के आपस की रगड़ स्पर्श से जो गरमी उत्पन्न होती है उसी से स्त्रियो

का आर्तव पतला होकर पुरुष के वीर्य से मिलजाता है और यही गर्भ होने का कारण होता है।

इस लिये स्त्रियों को स्खलित करने के लिये इससे बढ़कर दूसरा कोई उपाय नही है कि पति स्त्री का सच्चे हृदय से प्यार और आलिगंन चुम्बन कर प्रसन्न करके संभोग करे, नोच खसोट कर नही।

गर्भधारण का समय

क्षामप्रसन्नवदनां स्फुरच्छ्रोणिपयोधराम्।
स्रस्ताक्षिकुक्षिं पुंस्कामां विद्यादृतुमती स्त्रियम्॥

अर्थात्—चेहरे पर दुर्बलता और प्रसन्नता, कमर के पीछे के हिस्से में और स्तनों मे फड़कन, आखों में और कोख मे शिथिलता हो और पुरुष के साथ रमण करने की इच्छा ये सब बातें जिस स्त्री मे होती हैं उसे ऋतुमती समझना चाहिये यही सम्भोग करने और गर्भाधान का समय है।

इसी समय स्त्रियो को सम्भोग की इच्छा गर्भाधान के लिये होती है जो पुरुष इस समय सम्भोग नहीं करते उन्हे एक प्रकार का गर्भाधान न करने का दोष लगता है।

पति का धर्म है कि ऋतु से शुद्ध हुई पत्नी से सम्भोग अवश्य करे यह धर्मशास्त्र कहता है और कामशास्त्र के अनुसार ऋतु के पश्चात स्त्रियो को सम्भोग से तृप्त करना पति का धर्म है इसी लिये शास्त्रकारो ने कहा है।

वसन्त बहार। पृ० ११६

अमीलितनयनानां यः,
सुरतरसोऽनुसंविदं कुरुते ।
मिथुनैर्मिथोवधारितमवितथ,
मिदमेव कामनिर्वहणम् ॥

अर्थात्—आलस्य भरी नेत्रों वाली स्त्रियों को संभोग से तृप्ति करना यही स्त्री पुरुष दोनों का परस्पर काम पूजन है। जो पति स्त्री से विरक्त रहता है ऋतु के बाद संभोग नहीं करता तो इस प्रकार पत्नी के हृदय से पति की ओर से विरक्तता और उदासीनता उत्पन्न होती है और स्त्री का हृदय दुखित रहता है।

जिस स्त्री का पति विदेश गया हो अथवा रोगी हो अथवा न हो तो स्त्री को पति का चिन्तन करना चाहिये। उस स्त्री के लिये शास्त्रकार आज्ञा देता है—

विवर्णा दीनवदना देह संस्काराद्विवर्जिता ।
पतिव्रता निराहारा शोचते प्रोषिते पतौ ॥

स्वामी के विदेश जाने पर पतिव्रता स्त्री देहसंस्कारादि (शृङ्गार) त्याग कर दीनभाव से रहे किसी प्रकार का शृंगार न करे। पति की भक्ति और उसकी चिन्ता करती रहे।

क्रीडां शरीरसंस्कारं समाजोत्सवदर्शनम् ।
हास्यं परगृहे यानं त्यजेत्प्रोषित भर्तृका ॥

क्रीड़ा कौतुक (हंसी खेल) न करे, विवाहादि उत्सव और सभा दर्शन न करे, हसे नही और पराये घर भी न जावे।

शास्त्रकारो ने इसी कारण स्त्रियो के लिये ऐसी आज्ञा दी है जिसका पति न हो अथवा विदेश गया हो तो ऊपर लिखे अनुसार रहना चाहिये जिससे चित्त मे किसी प्रकार का विकार उत्पन्न न हो। जिनके पति न हो उन्हे तो सदैव ही बहुत सादगी से रहना बतलाया है जिससे किसी प्रकार का दोष न उत्पन्न हो।

गर्भाधान क्रिया

ततः शुद्धस्नातां धौतवास समलंकृतां।
कृत मङ्गल स्वस्तिवाचनं भर्तारं दर्शयेत्॥

ऋतुधर्म्म से तीन दिन व्यतीत होने के बाद शुद्ध आर्तव इकट्ठा हुआ अर्थात् पुराना एक मास से इकट्ठा हुआ आर्त्तव निकल कर शुद्ध हुए नवीन आर्त्तव को प्राप्त हुई स्त्री शुद्ध कही जाती है जैसे कहा है:—

नवेऽऋतौच संजाते विगते जीर्ण शोणिते।
नारी भवतिसंशुद्धा पुंसा संसृज्यते तदा॥

अर्थात्—नवीन आर्तव प्राप्त होनेसे और इकट्ठा हुआ पुराना आर्तव का रक्त निकल जाने से स्त्री शुद्ध होती है। उस समय

मासिकधर्म के बाद गर्भाधान की तैय्यारी

पुरुष से सयोग करने योग्य होती है इस प्रकार ऋतुधर्म से शुद्ध हुई स्त्री चौथे दिन स्नान करके धुले हुए सफेद कपड़ो को पहिन कर रोरी हल्दी केशर सिंदूर आदि शृंगार कर सर्व आभूपणों को पहन सुगन्धित फूलो की माला आदि मे सुसज्जित हो गीतादि मंगल कार्यों से प्रसन्न हो जिसने स्वस्ति वचन कराया हो ऐसे पति का सब से प्रथम दर्शन करे तात्पर्य यह है कि ऋतु धर्म्म से स्नान करके स्त्री पहिले पति का ही दर्शन करे।

सहवास और गर्भाधान

विवाह होजाने पर पति पत्नी दोनो की इच्छा विषय वासना की ओर प्रबल होती है ससार मे विलासिता और विपय लोलुपता दिन प्रति दिन बढ़ती जा रही है जो विपय शक्ति केवल सन्तान उत्पत्ति के लिये ही उचित समझी जाती थी वही अब प्रतिदिन आनन्द वृद्धि के लिये काम मे लाई जाती है।

पुरुपो ने स्त्रियो को केवल विपय वासना का तृप्ति कारक यन्त्र समझ रक्खा है। पति पत्नी से केवल इसी लिये प्रेम करते सुने जाते हैं, यह झूठा प्रेम है। मेरे पास पचीस वर्षों मे अब तक लाखो ही स्त्रियां अपना इलाल कराने आई उनकी जवानी पति के इस झूठी प्रेम की कहानियां मालूम होती हैं। पति केवल विपय के लिये ही पत्नी से प्रेम करते हैं जब पत्नी बीमार होजाती है इच्छा पूरी नही कर सकती तब उतना प्रेम नही रहता और जब रोगो के अधिक बढ़ जाने के कारण शक्ति हीन हो मृत्यु के निकट

पहुँचने लगती हैं तब इलाज कराने की सूझती है। इलाज कराने से जहां कुछ आराम हुआ कि पति जी ने कृपा करनी शुरू करदी फिर प्रेम उत्पन्न हुआ कुछ दिनो बाद स्त्री फिर रोगी होगई। स्त्री ही नही, रोगी स्त्री से प्रसग करने से पति भी रोगी होजाते हैं अतएव पुरुषो की भी रोगी सख्या स्त्रियो से कुछ कम नहीं है क्योंकि पच्चीस वर्षों में लाखो स्त्रियो का तथा स्त्रियो द्वारा उनके पतियो का भी इलाज करने से इस बात का अनुभव हुआ है कि रोगी स्त्री से सहवास करने मे पुरुष और रोगी पुरुष के सहवास से स्त्रियां रोगी पाई जाती हैं। स्त्रियो के बहुत से रोग तो ऐसे हैं जो उनके व्यभिचारी पति से मिलते हैं। जैसे गर्मी सुजाक। जिनके पुरुष व्यभिचारी नही हैं परन्तु अधिक विषयी हैं और वे विषय की अधिकता से सुस्ती शीघ्रपात और नपुसकता के कारण अपनी स्त्री की इच्छा पूरी नही कर सकते इस लिये इच्छा पूरी न होने से स्त्रियो के अनेक रोग उत्पन्न होजाते हैं।

अनेक रोग स्त्री पुरुषो का ठीक जोडा न मिलने से स्त्रियो मे उत्पन्न होजाते है।

जोडा न मिलने से प्रकृति नही मिलती इस कारण पति पत्नी मे कलह रहती है इस कारण स्त्रियो के हर समय पति के बर्ताव से कुढ़ते रहने से भी रोग उत्पन्न होजाते हैं। वे रोग औषधियो से अच्छे नही होते क्योंकि कारण तो बने ही रहते है तब औषधि अपना प्रभाव कैसे डाले। चिकित्सा वास्तविक रोग की करनी चाहिये।

वसन्त ऋतु में विहार । पृ० ११८

कामशास्त्र सम्बन्धी पुस्तकों का प्रभाव

व्यर्थ की पुस्तकों को पढ़कर अनेक प्रकार से विपरीत रतिक्रिया करने से स्त्रियों में रोगों की उत्पत्ति—

कामशास्त्र, सम्बन्धी जितनी पुस्तके अब तक निकल चुकी हैं सबको देखने से मालूम हुआ है कि ये सब पुस्तकें अनेक मनगढंत विषयो से भरी गई है जिनका तात्पर्य ही स्त्री पुरुषो मे विषयवासना की अधिकता उत्पन्न करने का है जिन हानिकारक बातो का स्त्री पुरुष स्वप्न मे भी विचार नहीं सकते वे इन पुस्तको मे पढ़कर काम मे लाने लगते है।

इन हानिकारी पुस्तको मे स्त्रियो को बडी भारी हानि पहुँच रही है। मेरे पास सैकड़ो स्त्रिया ऐसी आती है कि जिनके पति इन पुस्तको के अनुसार विपरीत रतिक्रिया कर स्त्रियो को रोगी बना रहे है।

इस विषय की पुस्तको के लेखको ने केवल मनगढत विषयी, पुरुषो की लेखनी से लिखेगये कामशास्त्र को देखा और अपनी ओर से टीका टिप्पणी करके पुस्तको को बहुत हानिकारी बना डाला क्योकि जितनी पुस्तके इस विषय की देखने मे आती हैं वे सब मनगढ़ंत इधर उधर की बातो और प्रमाणो से भरी गई है एक भी पुस्तक किसी जानकार अनुभवी वैद्य की बनाई नही है।

इसी कारण कोई भी पुस्तक आरोग्यता के साथ में रखते हुये नहीं बनी। यद्यपि बीच बीच में किसी ने धर्म्म की, किसी ने आरोग्यता की दुहाई दी है परन्तु उस नाशकारी मनगढ़ंत विषय की खूब ही रचना की है, जिससे किसी प्रकार का भी लाभ नहीं हो सकता, हानि बहुत कुछ होरही है और होगी।

आजकल ऐसी पुस्तकों की रचना बहुत अधिक हो रही है। जहां किसी पुस्तक विक्रेता ने यह सुन पाया कि अमुक पुस्तक विक्रेता की अमुक पुस्तक खूब बिकती है बस उसने भी इधर उधर के मनगढ़ंत विषय लिखकर और भी अधिक विषयी लोगों के खुश करने के लिये नई पुस्तक बनाडाली।

इनमे से अनेक पुस्तके तो ऐसी घृणित हैं कि उनको पढ़ना सुनना भी पाप है इस विषय की पुस्तके यदि किसी अनुभवी चिकित्सक ने बनाई होती तो वे रतिक्रिया (गर्भाधान विधि) के सम्बन्ध मे आयुर्वेद ग्रन्थो से कुछ सहायता लेते और कदापि ऐसी मनगढत बाते लिखने का साहस न करते। ऐसी व्यर्थ की बातें लिखकर कामशास्त्र को भी बदनाम किया है, क्या कहा जाय, किसी किसी पुस्तक मे यहाँ तक लिख दिया है कि इसकी शिक्षा हर एक को मिलनी चाहिये।

जिन पुस्तकों मे पुस्तक-लेखको ने कामशास्त्र विषय मे अपनी ओर से पुस्तक की अधिक बिक्री की आशा से और विषयी व्यभिचारी पुरुषों के प्रसन्नार्थ अपनी ओर से टीका टिप्पणी लगा कर पुस्तक को विषयी पुरुषों के दिल पसन्द बना दिया है

वे पुस्तकें कदापि सज्जन स्त्री पुरुष के हाथों में जाने योग्य नहीं हैं। उनके प्रचार से स्त्री पुरुषों मे और भी अधिक रोगो की उत्पत्ति निर्बलता और दुर्बलता का प्रचार होगा। ऐसी पुस्तकों से विषयवासना और भी अधिक बढ़कर बालकों की भी रोगी संख्या बढ़ने की आशंका है। विषय की अधिकता से ही सैकड़ा पीछे निन्नानवे स्त्रियां रोगी पाई जाती हैं और पुरुषों की भी रोगी संख्या स्त्रियों से कम नही है।

ऋतुकाल का परिमाण

ऋतुस्तु द्वादशनिशाः पूर्वास्तिस्रश्च निंदिताः।
एकादशी च युग्मासुस्यात्पुत्रोऽन्यासुकन्यका॥

अर्थात्—रजो दर्शन के दिन से बारह दिन तक ऋतुकाल रहता है उनमे पहिली तीन रात्रि जिन में ऋतुधर्म्म का रक्त निकलता रहता है वे तीनों रात्रि वर्जित हैं। इनमें स्त्री के पास जाना उचित नहीं है और ग्यारहवीं रात्रि भी मना है तथा तेरहवीं रात्रि भी मना है। इनमें सम्भोग करने से यदि गर्भ रहे तो नपुंसक सन्तान की उत्पत्ति होती है। शेष दिनो मे अर्थात् चौथे, छठे, आठवें, दसवे और बारहवें दिन सम्भोग करने से पुत्र की उत्पत्ति होती है।

इन दिनों में स्त्री का आर्तव कम होजाता है इसलिये पुत्र होता है और पांचवीं, सातवी, नवीं आदि विसम रात्रियों में

सम्भोग करने से कन्या उत्पन्न होती है क्योंकि इन रात्रियों में आर्तव की अधिकता रहती है।

यदि आहार आदि के कारण स्त्री का आर्तव ऊपर लिखी सम विसम रात्रियों में अधिक हो जावे और पुरुष का कम हो जावे तो पुत्र हो तो स्त्री की आकृति और लक्षण वाला होता है और कन्या हो तो पुरुष की आकृति और लक्षण वाली होती है। पुत्र कन्या जो कुछ भी हो निर्बल दुर्बल और हीनाङ्ग होती है।

ऋतुकाल के पीछे संकोचन

पद्मं संकोचमायाति दिनेऽतीते यथा तथा।
ऋतावतीते योनिः साशुक्रं नातः प्रतीच्छति ॥

अर्थात—दिन के समय खिला हुआ कमल का फूल जैसे दिन के अन्त में अर्थात् सायकाल को सकुचित हो जाता है यानी सिकुड कर बन्द हो जाता है वैसे ही ऋतुकाल का समय व्यतीत हो जाने अर्थात् रजोदर्शन के बारह दिन व्यतीत हो जाने पर योनि अर्थात् गर्भाशय का मुख सिकुड़ जाता है बन्द हो जाता है फिर वह वीर्य ग्रहण नहीं करता अर्थात् गर्भधारण करने के योग्य नहीं रहता।

आनन्द मन्दिर
छठा अध्याय

स्त्रियों की संभोग इच्छा

स्त्रियो की संभोग इच्छा मासिकधर्म्म से शुद्ध होने के बाद प्रवल होती है उस समय नियम पूर्वक गर्भाधान क्रिया करके अपनी पत्नी को संभोग से तृप्त करने वाले पति को ही पत्नी बलवान और योग्य पुरुष समझती है तथा सन्तुष्ट रहती है, इसके विरुद्ध जो प्रतिदिन सभोग करके अधिक विषय से ही स्त्री तृप्ति करना बुद्धिमानी समझते हैं उनकी स्त्रियां पति से सन्तुष्ट नहीं रहतीं और प्रेम भी जैसा चाहिये वैसा नहीं रहता क्योंकि विषयी पुरुष केवल विषयावासना की तृप्ति से काम रखते हैं वे उसी समय पत्नी को पत्नी समझते हैं उसके रोगी होने पर रोगो की कुछ परवाह नहीं करते, देखने में आता है कि हजारो स्त्रियां वर्षो मे रोग की परीक्षा के लिये आने को लिखती हैं जब स्त्री के पत्र का उत्तर मैं देती हू और वह पति को मिलता है तो वह उत्तर देता है कि स्त्री का इलाज कराने के लिये भेजने से मुझे अनेक प्रकार का कष्ट हो जावेगा इसलिये अभी नहीं आ सकती, स्त्री तो रोगो के दुःख के कारण मर रही है और इलाज कराना चाहती है पर पति जी को अपने ऐश आराम मे काम है। लाचार हो स्त्री इलाज कराने से बाज आती है।

जो रोगी स्त्री के लिये पारसल से औषधियां मगाते हैं उनमें भी अनेक पुरुष ऐसे होते हैं जो ब्रह्मचर्य से रहकर स्त्री का इलाज कराना ही नहीं चाहते। औषधियां तो मंगालेते हैं पर जब

पारसल खोलकर औषधि के विधान पत्र मे पथ्यापथ्य और सेवन करने के समय तक ब्रह्मचर्य से रहना पढ़ते हैं तब वे औषधिया वापस कर देते हैं अथवा खिलाते हैं परन्तु ब्रह्मचर्य से रहना कठिन समझते हैं। जिस पति की स्त्री की आरोग्यता के विषय मे यह दशा है उस पति को स्त्री कहां तक अपना प्रेमी और श्रेष्ठ पति समझ सकती है।

पत्नी पर इस प्रकार के अत्याचार करने वाले पुरुषो की संख्या कम नही है जब से मैंने आयुर्वेदिक स्त्री औषधालय खोला है, २५ पचीस वर्षो मे ऐसे पतियो के अत्याचारो से दुःखी रोग ग्रसित स्त्रियो का इलाज करके उपरोक्त विषय मे करुणा जनक अनुभव पाया है।

स्त्रियो की सम्भोग इच्छा पति के प्यार से ही पूरी होती है अधिक विषय से नही। जो पुरुष अनेक बार विपरीत सम्भोग कर पत्नी की तृप्ति करना चाहता है वह महा मूर्ख है और जो एक ही बार नियम पूर्वक पत्नी को प्यार और प्रेम से सन्तुष्ट और प्रसन्न कर सम्भोग करता है वही अपनी पत्नी को तृप्त कर सकता है। प्रतिदिन सम्भाग करने वाले की अपेक्षा ऋतुस्नाता पत्नी से महीने मे एक बार सम्भोग करने वाला कहीं अच्छा है। उससे स्त्री की इच्छा भी पूरी होती है। पति भी सामर्थवान साबित होता है और ऐसा पुरुष शास्त्र के अनुसार ब्रह्मचारी ही कहलाता है, विषयी या कामी नहीं। साथ ही उसका शारीरिक नाश भी नही होता है।

स्त्रियों की संभोग इच्छा कब पूरी होती है

ऋतुस्नान के चौथे दिन गर्भाधान के लिये प्राकृतिक नियमानुसार स्त्रियों की सम्भोग करने की प्रबल इच्छा होती है उसी समय स्त्रियों की सम्भोग से इच्छा पूरी होती है। केश पकड़ कर खींचना नाखून गडाकर स्त्रियों के कामदेव को कुम्भकरण की समान जगाना महा मूर्खता है। क्योंकि यदि पति आरोग्य है तो उसे कुम्भकरणी उपायों की आवश्यकता नहीं है वह अपनी पत्नी को वैसे ही तृप्त कर सकता है यदि पति रोगी है, स्त्री का स्पर्श करते ही पतलून बिगड़ जाती है तो एक नहीं हजार कामशास्त्र और कोकशास्त्र के उपाय किये जावें रोगी पति की स्त्री की कभी तृप्ति नहीं होसकती।

ऐसे पुरुष जो कि स्वयं वीर्य दोष, प्रमेह, सुस्ती, स्वप्नदोष, शीघ्रपात आदि रोगों से ग्रसित हैं परन्तु सम्भोग करने की प्रति दिन इच्छा रखते हैं और साथ ही स्त्री को भी स्खलित करना चाहते हैं परन्तु स्त्री का स्पर्श करने ही पतलून या धोती बिगाड़ देते हैं। वे केवल अपनी पत्नी को यह दिखलाना चाहते हैं कि हम बड़े बहादुर हैं। स्त्री को स्खलित करने में ही पति अपनी वीरता समझता है परन्तु जब स्त्री के पास जाते ही पतलून या धोती बिगड़ जाती है उस समय नानी मरजाती है लज्जित होकर रह जाना पडता है।

ऐसे पुरुष न स्त्री को ही तृप्त कर सकते हैं न आपही तृप्त

होते हैं। मेरे इस लिखने पर कोई सज्जन बुरा न मानें क्योंकि मेरे पास ऐसे पुरुषों की पचासो चिट्ठियाँ और स्त्रियाँ आया करती है और लाखों आचुकी है उन चिट्ठियों और स्त्रियो से जैसा पता लगता है उसी अनुभव से मैंने यह सब हाल लिखने का साहस किया है।

संभोग योग्य स्त्री

वैद्यक शास्त्र बतलाता है —

भार्यां रूपगुणोपेतां तुल्यशीलकुलोद्भवाम् ।
अभिकामोऽभिकामां तु हृष्टोहृष्टामलंकृताम् ॥
सेवेत प्रमदां युक्त्या वाजी करण बृंहितः ।

अर्थात्-रूप और गुणयुक्त समान स्वभाव और कुल मे तुल्य दोनो के रमण की इच्छा वाली, पुरुष भी प्रसन्न चित्त हो और स्त्री भी प्रसन्न चित्त वाली हो तथा शृंगार किये हो उस समय पुरुष अपनी स्त्री से युक्ति के साथ अर्थात् नियमानुसार सभोग करे।

पाठक विचार कर देखे कि हजारो मे एक ही दो ऐसे मिलेगे जो इस प्रकार पत्नी की आरोग्यता का ध्यान रखकर सभोग करते हो वरना अधिक सख्या ऐसो ही की मिलेगी जो केवल विषय वासना की तृप्ति का ही ध्यान रखते है। आरोग्यता या उत्तम सन्तान का कुछ भी नही। जब पति अपनी ही आरोग्यता का ध्यान नही रखते तो पत्नी की आरोग्यता का कैसे हो।

तभी तो कहना पड़ता है कि विषयी पुरुषों ने अपनी पत्नियों को विषय वासना की तृप्ति करने की मशीन समझ रक्खा है इसी लिये वे उनकी आरोग्यता और उत्तम सन्तान उत्पन्न करने का कुछ भी ध्यान नही रखते।

पुरुषस्यगुणैर्युक्ता विहितान्यून भोजना।
नारीऋतुमती पुंसा संगच्छेत्सुतार्थिनी॥

अर्थात्—पुरुष की समान गुण युक्त यानी जिस प्रकार पति स्नानकर चन्दन सुगन्ध फूलों की माला वस्त्र आभूषणो से सज्जित हो स्त्री के पास जाने इच्छा करे उसी प्रकार स्त्री भी शृंगार कर थोड़ा भोजन करके पान खाकर ऋतु से शुद्ध हुई पति मे जिसका अत्यन्त प्रेम हो और सभोग की प्रबल इच्छा हो ऐसी स्त्री सन्तान की इच्छा से पति के पास जावे।

ऊपर के श्लोक से स्पष्ट होता है कि ऋतु मती होने पर ही स्त्री का कामोद्दीपन होता है और सन्तान की इच्छा से ही सभोग की इच्छा होती है। यह बात प्रकृति से भी स्पष्ट है क्योंकि पशु पक्षियो, सबको ही गर्भाधान के ही लिये सभोग की इच्छा होती है। गाय भैस बकरी इत्यादि सभी मादा पशु जब ऋतुमती होती हैं तभी नर की इच्छा करती है और सभोग होते ही गर्भ रह जाता है। फिर वह इच्छा नही करती यदि किसी कारण से गर्भ-स्राव होजावे तो वह फिर नर की इच्छा करती है और सभोग के बाद शांत होजाती है।

इसी प्रकार पशु नर जब गर्भ रह जाता है तब फिर उस मादा के पास नहीं जाता इसी तरह पक्षियों में भी है।

प्रकृति का तो यही नियम है परन्तु मनुष्य ने संभोग के महत्व को भुला दिया है। यही कारण है कि वर्षों संभोग करने पर भी गर्भ नहीं रहता। ऐसे कड़ोरों घर होंगे जो सन्तान के बिना, बिना दीपक वाले अंधेरे घर की समान होरहे हैं।

कामी और शक्तिहीन पुरुषों में जिनके सन्तान होती भी है वह रोगी और निर्बल दुर्बल कम आयुवाली होती हैं, ऐसे बहुत थोड़े घर होंगे जहां के पुरुष नियम पूर्वक चलकर उत्तम सन्तान उत्पन्न करते हैं।

पशु पक्षियों में प्रकृति के नियमानुसार सन्तान के ही लिये संभोग की इच्छा होती है इसी प्रकार मनुष्य में भी प्रकृति ने यही नियम बनाया है परन्तु मनुष्य ने अपने चित्त प्रसन्नार्थ और विषयाग्नि की शान्ति के लिये यह नियम तोड़ दिया है।

संभोग के अयोग्य स्त्री

रजस्वलाव्याधिमती विशेषाद्योनिरोगिणी।
वयोधिकाचनिष्कामा मलिनागर्भिणी तथा॥
एतासंगमनात्पुंसां वैगुण्यानिभवन्तिह।

इसका अर्थ यह है कि रजस्वला स्त्री, रोगी स्त्री, जिसे किसी प्रकार का भी रोग हो, और योनि रोग वाली, जो स्त्री पुरुष

की अवस्था से अधिक अवस्था वाली हो, जिसे सभोग की इच्छा न हो, मैली हो, गर्भवती हो, इन स्त्रियो से सभोग नही करना चाहिये। रोगवाली से तात्पर्य है "ऊपरी किसी प्रकार का रोग हो" और योनि रोग से तात्पर्य है योनि मे किसी प्रकार का रोग हो जैसे प्रदर, प्रसूत, गर्भाशय की खराबी, गरमी, सुजाक आदि। प्रदर प्रसूत रोग वाली स्त्री से सभोग करने से स्त्री का रोग अधिक बढ़ जाता है और गर्भ रह जाने पर सन्तान भी निर्बल दुर्बल और रोगी होती है।

गरमी सुजाक वाली स्त्री से सभोग करने से पुरुष के तुरंत ये रोग उत्पन्न हो जाते हैं और जल्दी दूर नहीं होते। सन्तान मे भी ये खराबियां उत्पन्न होती हैं जो सहज ही कभी दूर नहीं होतीं, कई पीढ़ियो तक रहती हैं। गरमी सुजाक का प्रभाव सन्तान पर बहुत बुरा पड़ता है।

तत्रात्यशिता क्षुधिता पिपासिता-
भीता विमनाः शोकार्त्ता क्रुद्धान्यश्च।
पुमांसमीच्छति मैथुने चातिकामा-
न गर्भधत्ते विगुणां वा प्रजा जनयति॥

जिसका पेट भोजन से भरा हो, जो भूखी हो, प्यासी हो, भयभीत हो, मनमलीन हो अर्थात् सभोग के लिये प्रसन्न चित्त न हो, जिसे किसी बात का शोक हो, क्रोध हो, जो पति से

अप्रसन्न रहती हो, ऐसी स्त्री से सभोग नही करना चाहिये। ऐसी स्त्री गर्भधारण नही कर सकती।

स्त्रियों का स्वप्न प्रसंग

ऋतुस्नाता तु या नारी स्वप्नेमैथुनमावहेत।
आर्तवंवायुरादाय स्वप्नेगर्भकरोतिच॥
मासि मासि विवर्द्धेत गर्भिण्यागर्भलक्षणम्।
कललंजायतेतस्या वर्जितंपितृकैर्गुणैः॥

आयुर्वेद और धर्म्मशास्त्र के मत से ऋतु से शुद्ध हुई स्त्री मे पति को अवश्य गर्भाधान क्रिया नियम पूर्वक करनी चाहिये क्योकि ऋतुस्नान से बारह रात्रि पर्यन्त स्त्री की प्रवल इच्छा गर्भाधान के लिये पति संभोग की होती है यह प्रकृति का नियम है। जो मूर्ख पति किसी कारण से इस नियत समय पर पत्नी का निरादर करते, पत्नी से अलग रहते हैं उनकी पत्नियो का क्या हाल होता है। यह ऊपर के श्लोक से पुष्ट होता है। अर्थात् ऋतुस्नाता स्त्री की चौथे दिन से लेकर बारह रात्रि पर्यन्त सभोग की इच्छा रहने के कारण यदि वह स्वप्न मे संभोग करे तो वायु उस समय स्त्री के शुद्ध आर्तव को ही लेकर गर्भाशय मे गर्भस्थापन करती है यह गर्भ भी महीने महीने असली गर्भ की समान बढ़ता रहता है। जैसे लक्षण गर्भवती मे असली गर्भ

के पाये जाते हैं उसी प्रकार के लक्षण इसमे भी पाये जाते हैं इस कारण किसी चिकित्सक को इस बात का पता नहीं लगता। नौ दस महीने तक तो उस स्त्री के घरवाले बालक होने का रास्ता देखते रहते हैं और दिन गिना करते हैं फिर दस महीने भी पूरे हो जाते हैं बल्कि बारह चौदह महीने हो जाते हैं। इस प्रकार की गर्भवती अनेक स्त्रियां मेरे पास गर्भ की परीक्षा कराने आई और आया करती हैं। मैंने देखा है कि बारह महीने तक घरवाले इसी आशा मे रहते हैं कि गर्भ है और बालक होगा।

जब सन्तान नहीं होती तब लेडी डाक्टरो और अन्य डाक्टरो के पास लेजाते हैं वे लोग भी गर्भ बतलाते हैं और कोई कोई तो कहदेते हैं कि पेट में बच्चा कमजोर है ठीक परवरिश नहीं पारहा है इस लिये इस गर्भवती को अच्छे अच्छे बलकारक पदार्थ खिलाओ तब बच्चा बढ़ेगा। इस प्रकार की गर्भवती अनेक स्त्रियां सैकड़ो रुपया गर्भ की परीक्षा में खर्च कर डालती हैं क्योंकि प्रायः स्वार्थी चिकित्सक गर्भ बढ़ने का इलाज भी करते हैं और कहते हैं बच्चे की परवरिश के लायक गर्भवती के शरीर मे रक्त नहीं बनता है इस लिये इलाज करो। यह कहकर इलाज शुरू करते हैं और उनसे रुपया वसूल करते हैं। इस गर्भ में गर्भवती के स्तनो मे दूध भी निकलने लगता है इन सब लक्षणो के होने से किसी को पता नहीं लगता कि गर्भ नहीं है।

इसकी परीक्षा लक्षणो से नहीं होसकती किन्तु स्त्री के

गर्भाशय और पेट देखने से ठीक ठीक होती है आयुर्वेद के अनुसार निदान से होती है। डाक्टरी चिकित्सा प्रणाली में निदान उस प्रकार नहीं है जैसा हमारे आयुर्वेद ग्रन्थों मे पाया जाता है। इस बात का मुझे २५ पच्चीस वर्ष का अनुभव है क्योंकि मेरे पास २५ वर्ष मे सभी प्रकार के रोगों की गर्भवती और अनेक प्रकार के साधारण और गुप्त रोग वाली लाखों स्त्रियां इस प्रकार की रोगी गर्भवाली भी हजारों स्त्रियाँ आई और मैंने चिकित्सा करके उन्हें आराम किया तब उन्हे निश्चय हुआ कि यह गर्भ नही था।

स्त्रियों में परस्पर रतिक्रिया का फल

यदानार्यावुपेयातांवृषस्यन्त्योकथञ्चन ।
सुञ्चतःशुक्रमन्योऽन्यमनस्थिस्तत्रजायते ॥

अर्थात्—दो स्त्रियां आपस मे एक दूसरे के साथ सभोग करे उससे जो गर्भ रह जावे तो विना हड्डी का गर्भ उत्पन्न होता है हड्डी का अश बहुत थोडा रहता है। जैसा कि पीछे बतलाया गया है पति पत्नी की अज्ञानता से नपुसक स्त्रिया पैदा होती हैं वे इसी प्रकार अन्य स्त्रियो को अपनी इच्छा पूर्ति के लिये फसा लेती है और इस प्रकार उनसे सभोग करती हैं इससे जो गर्भ रह जाता है वह बिना हड्डी का होता है। ऐसी स्त्रियो को उत्पन्न करने वाले मूर्ख कामान्ध माता पिता ही होते हैं। स्त्रियो का इसमें कोई दोष नही समझना चाहिये।

वर्षा बहार । पृ० १९१

दुर्गंधित योनि वाली स्त्रियां

ऐसी स्त्रियां लाखों मिलेंगी जिनकी योनि में दुर्गन्धि आती है क्योंकि एक तो दुर्गन्धि आने का रोग ही है दूसरा कारण योनि को प्रति दिन न धोने का भी है। तीसरे अधिक दिनो तक योनि को न धोने से दुर्गन्धि से रोग उत्पन्न होजाता है। चौथी बात यह है कि प्रदर रोग जब असाध्य होजाता है तब योनि में इतनी अधिक दुर्गन्धि आने लगती है कि उस स्त्री के पास बैठा नहीं जाता।

मेरे पास प्राय: ऐसी स्त्रियां योनि दुर्गन्धि का तथा प्रदर रोग का इलाज कराने आया करती हैं। इनमें अनेक स्त्रियां ऐसी होती हैं कि योनि रोग की परीक्षा करने के लिये जब मैं उनके पास जाती हूं तब कपड़ा हटाते ही इतनी दुर्गन्धि मालूम होती है कि उनके पास खड़ा रहना कठिन होता है, परन्तु मैं स्त्रियों की चिकित्सा करती हूँ इस कारण मुझे रोगी स्त्रियों से किसी प्रकार की घृणा नहीं है और देखना ही पड़ता है।

ऐसी दुर्गन्धित योनि वाली स्त्रियों का जब मैं इलाज करती हूं और उनसे जब तक रोग दूर न हो ब्रह्मचर्य से रहने के लिये कहती हूं तब वे कहती हैं कि यह बात तो शायद न हो सके क्योंकि हमारे पति जी तो दो चार दिन को भी नहीं मानते, इस बात पर मैं उनसे कहती हूं कि आपके पति आपके साथ बड़ा अत्याचार करते हैं, आप रोगी हैं और यह रोग इस प्रकार का

है कि इस दशा मे यदि आपके सन्तान होगी तो वह नपुंसक होगी तब वे कहती है यह बात तो हमारे पति और हमको मालूम ही नहीं है। सम्भव है यह बात बहुत कम स्त्री पुरुषों को मालूम हो और जिन्हे मालूम होगी वे अवश्य विचार से रहते होंगे इस लिये यह बात सब स्त्री पुरुषों को याद रखनी चाहिये कि जिस स्त्री की योनि मे किसी कारण से दुर्गन्धि आती हो, उन्हे संभोग नहीं करना चाहिये, इलाज करके रोग को दूर कर लेना चाहिये। औषधि सेवन तक ब्रह्मचर्य से रहना चाहिये। खराब दशा में गर्भाधान करके नपुसक पुत्र उत्पन्न करना लज्जा की बात है।

पति दर्शन का महत्व

पूर्वपश्येदृतुस्नाता यादृशंनरमङ्गना।
तादृशंजनयेत्पुत्रं भर्तारंदर्शयेत्ततः॥

इसका अर्थ यह है कि ऋतु स्नान करके स्त्री सबसे पहिले जिस पुरुष को देखेगी वैसी ही सन्तान उत्पन्न होगी इस लिये सबसे पहिले अपने पति को ही देखे। किसी किसी ऋषि का मत है कि यदि पति पास मे न हो तो अपने पुत्र को ही देखे, यदि पुत्र न हो तो पति को देखे। यदि कुछ भी न हो तो उस दिन एकान्त मे बैठकर पति का हृदय मे चिन्तन करे।

यदि पति घर पर न हो और कहीं निकट ही गया हो तो एकान्त में बिना किसी दूसरे को देखे हुए पति की प्रतीक्षा करती रहे। और जब पति आजावे तब श्रृंगार करके पति का दर्शन करे।

सातवाँ अध्याय

सृष्टि और मनुष्य जाति

संसार की स्थिति सृष्टि पर ही निर्भर है और सृष्टि स्त्री पुरुष (नर मादा) पर निर्भर है इसके अतिरिक्त दूसरा कोई उपाय परमात्मा ने सृष्टि उत्पत्ति का नही रक्खा। बहुत से जीव ऐसे भी हैं कि जो विना नर मादा के ही उत्पन्न हो जाते है परन्तु मनुष्य विना स्त्री पुरुष के उत्पन्न नही हो सकता। सृष्टि की उन्नति के मुख्य प्राणी मनुष्य ही है। मनुष्यो से ही सृष्टि की उन्नति और अवनति होती है इसी लिये मनुष्यो मे स्त्री पुरुष का जोड़ा बनाया है। उत्तम सन्तान व जाति उत्पन्न होने के लिये ऋषियो ने विवाह की प्रथा चलाई और चार आश्रमो का नियम रक्खा। ब्रह्मचर्य आश्रम विद्या प्राप्त करने के लिये है। मनुष्य का कर्त्तव्य है कि वह विद्या प्राप्त करने के बाद विवाह करके गृहस्थाश्रम मे प्रवेश कर दाम्पत्य जीवन का सच्चा आनन्द और सुख भोगते हुए उत्तम सन्तान उत्पन्न कर परमात्मा की सृष्टि मे सहायता दे।

यह अत्यन्त खेद की बात है कि ब्रह्मचर्य अवस्था (बाल्यावस्था) से ही कुसंगति मे पड़कर अनेक होनहार बच्चे अनियमता से वीर्य का सत्यानाश मार लेते है जिसके कारण आगे चलकर अनेक अनर्थ होते हैं, अधर्म की वृद्धि होती है, शक्ति क्षीण हो जाती है दीर्घजीवन की जगह अल्पायु होती है और समाज मे अनेक प्रकार के रोग दोष फैल जाते हैं।

मनुष्य की नित्य प्रति की इच्छाएं

शरीरे जायते नित्यं वाञ्छा नृणां चतुर्विधा।
बुभुक्षा च पिपासा च सुषुप्सा च रतिस्पृहा॥

आयुर्वेद बतलाता है और प्रकृति का नियम है कि मनुष्यों के शरीर मे भोजन करने की, पानी पीने की, सोने की और स्त्री संभोग करने की इच्छा नित्य प्रति बनी रहती है। इन इच्छाओं को रोकने से और नियम विरुद्ध अधिक उपभोग करने से शरीर मे अनेक प्रकार के रोग उत्पन्न होजाते हैं जिससे मनुष्य की आयु क्षीण होती जाती है और ऐसे मनुष्य अकाल मे ही काल के कलेवा हो जाते हैं।

भोजन की इच्छा रोकने से अर्थात् समय पर भोजन न करने से शरीर टूटने लगता है, निर्बलता और दुर्बलता आघेरती है, अरुचि उत्पन्न होती है थकान सी मालूम होती है सुस्ती आ आजाती है, आखे कमजोर होजाती है और बलका क्षय होता है। इसी प्रकार से शरीर कमजोर होजाता है।

प्यास लगने पर पानी न पीने से कंठ और मुख सूख जाता है, खुश्की होती है, कानो को हानि पहुँचती है, रक्त सूखने लगता है और हृदय मे पीडा होती है। आती हुई निद्रा को रोकने से जम्भाई आने लगती है। शिर तथा नेत्र भारी हो जाते है शरीर टूटने लगता है आलस्य उत्पन्न होता है और खाया हुआ अन्न

पचता नहीं है। जो मनुष्य भूख लगने पर नहीं खाते उनकी जठराग्नि मन्द होजाती है शरीर की अग्नि खाये हुए आहार को पचाती है, आहार नहीं रहने मे वात पित्त तथा कफ को पचाती है, उनके क्षय होने पर धातुओ को पचाती है और धातुओ के क्षय होने पर शरीर को पचाती है और फिर प्राणो को पचाती है अर्थात् प्राणों का नाश करती है।

रति (संभोग) के सम्बन्ध मे भी ऐसा ही समझना चाहिये। बहुतेरे मनुष्यों को अनेक प्रकार के शारीरिक और मानसिक रोग उनकी संभोग इच्छा पूर्ण न होने से हो जाते है परन्तु इसके यह अर्थ नही कि मनुष्य दिन रात संभोग मे जुटा रहे।

पुरुष रोगों का कारण

अब तक मेरे पास लाखों स्त्रियां अपने तथा अपने पति के लिये औषधियां लेने आई उनके पतियो की दशा सुनकर मुझे इस बात का अनुभव हुआ कि पुरुषो की अज्ञानता (वीर्यनाश) से ही अनेक रोग उत्पन्न होते हैं। श्रवण शक्ति का नाश होता है, नेत्रो की ज्योति कम हो जाती है, शुक्र ऐसा पतला होजाता है कि वस्त्र में लगने से जलवत किसी प्रकार का चिन्ह तक नही रहता। साधारण शक्ति ऐसी नष्ट हो जाती है कि स्त्री के दर्श स्पर्श से ही धातु बहने लगती है। एव सन्तानोत्पादक शक्ति नाश हो जाती है। मूत्र तो सदा जलन के साथ एव थोड़ा थोडा कई बार होता है और शुक्र मेह का प्रादुर्भाव भी हो जाता है। जिसमे शौच

(दिशा, पेशाब) करने के पहिले अथवा पीछे वीर्य स्खलित (पतन) होता है और अकारण ही सर्वदा चिन्ता लगी रहती है। जिसके कारण पुरुष स्वप्न मे भी उसी खोटे कर्म को करते हुए देखता है और उसका वीर्य अनायास ही स्खलित हो जाता है और जब तक स्वप्नदोष से यह स्खलित वीर्य किसी उपाय से अधोपतित नही होता है, तब तक मूत्र नाली मे जलन और पेशाब मे कड़क होती ही रहती है।

ऐसे हजारो पुरुषो की स्त्रियां मेरे पास आई और प्रतिदिन पचासो आती है कि उनके पति किसी काम के अर्थात् गर्भाधान करने लायक नही है, सन्तान कैसे हो।

बहुतेरे नवयुवक स्वप्नावस्था मे किसी नवीन वयस्का बालिका से सम्भाषण करते हुए क्षण मात्र मे ही स्खलित हो जाते है इसी को "स्वप्नदोष" कहते है। अनैसर्गिक उपाय से स्त्री संसर्ग की अपेक्षा स्वप्न मे अधिक वीर्य निकलता है, तथा शरीर अधिक तर दुर्बल और बलहीन हो जाता है। इसी से मेरुदण्ड (रीढ़) मे प्राय: दर्द हुआ करता है, अण्डकोषो का बढ़ जाना भी उन्ही कुचेष्टाओं का फल है, और थोडी अवस्था मे अस्वाभाविक कर्म हस्त-क्रिया आदि के करने से पुरुष इन्द्री छोटी और नसे खराब हो जाती हैं; इन्द्री का अग्रभाग कुछ टेढ़ा भी हो जाता है। स्वप्नदोष दिन हो या रात सोते हुए होता है और मानसिक चंचलता से जागृत अवस्था मे भी मूत्रेन्द्री मे सुरसुरी होकर धातु निकलता है।

इस प्रकार धातु निकलने से इन्द्री का अग्रभाग सदा भीगा

वर्षा ऋतु में विहार। पृ० १०३

और चिपचिपा रहता है, इससे जठराग्नि मन्द होकर पाचन शक्ति घटने से भूख कम हो जाती है, थोडा भी अधिक भोजन करने से अजीर्ण हो जाता है (ऐसी बीसों चिट्ठियां प्रतिदिन मेरे पास आया करती हैं) इसी कारण से कोष्ट भी परिष्कृत नहीं होता और उदर मे शूल होने लगती है। इसके निवारण के लिये किसी तीक्ष्ण पाचक अथवा विरेचन (दस्तावर) औषधि के सेवन से यद्यपि एक दो दिन के लिये कष्ट दूर हो जाता है परन्तु इससे कोष्ट परिष्कृत होने के बदले और भी कोष्टबद्ध होने लगता है और थोड़ी ही अवस्था मे बूढों की भाति मुंह पर झांई, खाल का लटक जाना तथा झुर्रियां पडने लगती हैं, स्वर भी बिगड़ जाता है। अर्थात सब तरह से जवानी मे ही बुढ़ापा आघेरता है।

बहुतेरे पुरुष उपरोक्त शारीरिक अवनति को अनान्य कारणों से होना समझ कर चिकित्सा करवाते हैं और जब किसी प्रकार की चिकित्सा से लाभ नहीं होता तो निराश होकर मृत्यु के दिन गिनने लगते हैं।

उन्हें यह ससार दुःखमय विदित होने लगता है तो भी उनको यह ज्ञान नहीं होता है कि हमारे ही दुष्कर्मों का हमें यह फल भुगतना पड़ता है। वे अनैसर्गिक उपाय की बाते तो ऐसी छिपाते हैं कि अनुसन्धान करने पर भी सत्य उत्तर नहीं देते इस लिये और भी चिकित्सा से लाभ नहीं होता। बहुतेरे वैद्य तो इसके उपस्थित लक्षणों को देखकर अन्यान्य रोग निश्चय कर लेते है,

जिसके कारण उनकी औषधि कुछ भी फायदा नहीं करती इसी कारण से रोग के मूल कारण को न जानकर उपस्थित उपद्रव के प्रतिकार करने की चेष्टा करते हैं; परन्तु उससे क्या हो सकता है, जब तक कारण का नाश न हो, कार्य का नाश होना असम्भव है। रोगी और भी हताश हो जाता है। इसी कारण मैं सबके समझने के लिये और सावधान करने के लिये इस विषय को यहां विस्तार से लिखती हूँ।

यदि वैद्य रोगी से इस अवस्था का कारण पूछता है तो रोगी लज्जित हो अपनी मूर्खता से लम्पटता की कथा न कहकर अत्यन्त दुःख और दीनता प्रकट करते है तथा प्रत्यक्ष भी कहते हैं कि इस "जिन्दगी से मर जाना ही अच्छा है"।

बुरे कर्मों से पुरुषेन्द्री की खराबियां

अण्डकोष लटक जाते हैं, कभी कभी उनमे पीड़ा होती है, इन्द्री मे सुरसुराहट प्रतीत होती है, उत्तेजना कम, वीर्यपात जल्दी, बिना आनन्द स्वप्नदोष, २१ प्रकार के प्रमेह, नामर्दी होती है, रुचि बिलकुल नही होती, यदि कुछ होती भी है तो स्पर्शास्पर्श करते ही वीर्य निकल कर लज्जायुक्त होना पड़ता है।

मेदे की खराबियां

कोष्ठबद्धता (कब्ज) सदैव रहती है, कभी पेचिश भी होजाती है। यह भी पूर्णतया याद रक्खो कि इस कब्ज का

बालक को स्कूल में मिरगी आरम्भ हो गई उसके माता पिता उसका कारण परिश्रम समझते थे। मैंने उसपर ध्यान रखना आरम्भ किया और उसे पकडा फिर उसे समझाया परन्तु वह मूर्ख इस दुष्क्रिया (अप्राकृतिक व्यभिचार) को त्याग न सका निदान पागलखाने भेजा गया और वहीं मरगया।

मस्तिष्क की खराबियां

दिमागी कमजोरी, चित्त का अप्रयुक्त होना, हर समय बुरी चिन्ताओं में रहना, चित्त का स्थिर न होना, मन को अपने वश में रखना, दृष्टि कमजोर, श्रवणशक्ति हीन, सर्व इन्द्रियां दुर्बल, आवाज भद्दी टूटी फूटी, कानों में शायशाय, स्वभाव चिड़चिड़ा, शारीरिक और मानसिक दुर्बलता बनी रहती है। पुरुष दुष्ट कामनाओं मे फंस कर रोगों के दास बन जाते हैं। विद्यार्थियों को जब अत्यन्त दुर्बल देखो तो उसका कारण बहुत परिश्रम न समझो। किसी २ को तो स्कूल ही छोड़ना पड़ता है। लोग कहते हैं कि इसने बड़ी मेहनत करके अमुक क्लास पास कर लिया है अब पढने का क्या काम है। मेरे पास बीसों चिट्ठियां प्रति दिन विद्यार्थियो की आया करती है उनसे भी यही मालूम होता है कि सौ में नव्वे विद्यार्थी इस दुष्ट व्यसन में पड़े हुये हैं हस्तक्रिया की इतनी बुराइयां हैं कि उसके सविस्तर वर्णन के लिये एक बड़े ग्रन्थ की आवश्यकता है हमारे पास इसके पूरे परिणाम के इतने पत्र आते हैं कि यदि उन सबका जिक्र किया

जाय तो एक भारी ग्रंथ बनेगा और हर एक पढ़ने वाला एक एक पत्र को पढ़ कर हैरान हो जायगा। एक नवयुवक की स्त्री मेरे पास आई और उसने अपने पति का हाल मुझ से कहा। उसके पति का रोगी फार्म देखकर मुझे मालूम हुआ कि वह २० कदम भी न चल सकता था, चलने में श्वांस चढ़ने लगती थी उसकी दुर्बलता इतनी बढ़ी हुई थी कि उसका जीना आश्चर्य मालूम होता था। उसने बताया कि आठ वर्ष की आयु में विवाह हुआ। १९ वर्ष की आयु में पक्षाघात हुआ। २२ साल की आयु में फिर अधरंग (पक्षाघात) का आक्रमण हुआ। २६ साल में फिर दौरा हुआ, पश्चात पेचिस आरम्भ हुई। २९ साल की आयु में दिलकी धड़कन आरम्भ हुई और इस वक्त उसको श्वासरोग, कलेजे की वृद्धि, मन्दाग्नि, पेट में भारीपन और दर्द जिगर, दर्द कमर, गुरदों की पिछली तरफ दर्द, पिंडलियों में दर्द, पेट में दर्द, याददाश्त कमजोर, दुर्बलता इत्यादि रोग हैं।

आज कल ऐसा समय आगया है कि सैकड़ा पीछे ९० इसी बुरी आदत के शिकार हैं फिर क्यों न प्रत्येक व्यक्ति धातु पुष्टि की औषधियां ढूंढता फिरे। पुरुषों की इस प्रकार दुर्दशा के ही कारण विज्ञापन बाजों की बन आई है। आजकल जिसे देखिए वही नया औषधालय खोल कर धातु पुष्टि की दवाओं के नोटिस देने लगते हैं और भोली भाली जनता को लूटते हैं। ऐसे नोटिस-बाजों से जिन्हें वैद्यक का कुछ भी ज्ञान नहीं है, कभी कभी बड़ा नुक्सान होता है।

बहु मैथुन

हमारे शास्त्रो मे लिखा है कि तरुण पुरुष और स्त्री का जब विवाह हो और स्त्री रजोधर्म से शुद्ध हो तो पुरुष केवल एक बार गर्भाधान करे और गर्भस्थित होने के पश्चात जब तक बालक उत्पन्न होकर माता का दूध पीना न छोडे तब तक दोनो प्रसग करने से बचे रहे। इस विधि से मानो ढाई वर्ष मे एक बार नौबत पहुँचती है। खैर यह तो हुई धर्म्मशास्त्र की आज्ञा। मुझे अपने पाठको को यह कर्णगोचर कराना है कि कितने दिनो के पीछे गर्भाधान किया जाय जिसमे स्वास्थ्य मे कोई फर्क न पड़े। उपरोक्त नियम बहुत उत्तम है परन्तु मनुष्यो की दशा आज कल बहुत गिरी हुई है।

बहु मैथुन का परिणाम

बहु मैथुन इस प्रकार बढ़ा हुआ है कि जिसका वर्णन करना असम्भव है। एक समय मैंने एक पुरुष रोगी के पत्र को पढ़ कर आश्चर्य किया उस पत्र मे लिखा था कि विवाह होते ही सात आठ साल तक मैं लगातार २ से ६ बार तक प्रति दिन प्रसंग करता रहा।

इस दुष्कर्म ने भारतवासियों का सत्यानाश कर दिया है। स्त्री के मासिक रजोधर्म के दिनो मे या बीमारी, प्रसूत के दिनो मे भी अज्ञानी मूर्ख लोग स्त्री को चैन नही लेने देते, मुह काला करते हैं और प्राय. रजस्वला की भी परवाह नही करते। इसका भी सोच नही करते हैं कि इतने अधिक प्रसंग से महा

व्याधी खड़ी होगी। वे स्त्रियों को रोगी बना देते हैं। धिक्कार है ऐसे मनुष्यत्व को, पशु पक्षी भी उचित समय पर रति सुख लेते हैं। शोक है कितनेही विवाहित जोड़े हैं जिनका, स्वास्थ्य भोग के नियमों की अज्ञानता से बरबाद हो चुका है बिना कुछ भी सोचे विचारे वे अपनी मूर्खता और अज्ञानता से अपनी रुचियों की बागडोर ढीली छोड़ देते हैं और पागलपन से दुःख तथा शोक की ओर दौड़े जाते हैं।

कोई कोई घमंडी लोग इस मूर्खता के कारण बहुमैथुन करते हैं कि कहीं स्त्री यह न खयाल करे कि इसमें बल नहीं है। वे मूर्ख यह नहीं जानते कि जब बहुमैथुन के कारण हम बेकाम हो जावेंगे तो उस समय बिलकुल ही इच्छा पूरी न कर सकेंगे! फिर क्या होगा!! यह लिखना जरूरी है कि स्त्री बहुमैथुन से कभी प्रसन्न नहीं होती है, किन्तु बहुमैथुन से वह घृणा करती है। नियम पूर्वक गर्भाधान होना ही स्त्री के लिये प्रसन्नता और आनन्द की बात है और इसी में अत्यन्त खुशी है। रोजाना कोई स्त्री स्खलित होती ही नहीं, अगर हो तो थोड़े काल में ही मुरदा होजाती है। इस विषय को विस्तार पूर्वक यहां लिखने की आवश्यकता नहीं है। दोनों ही स्त्री पुरुष क्षय व राजक्षमा के रोगी होजाते हैं। शरीर का सार वीर्य है। रुधिर की सौ बूंदों के समान वीर्य की एक बूंद होती है यह बूंद एक अनमोल मोती है इससे शरीर उत्पन्न होता है इसको बरबाद करना अत्यन्त मूर्खता का काम है।

इसमे रोगी की कमजोरी बराबर होते रहने से स्वास्थ्य को हानि पहुचने वाले फल पैदा होते है। मैथुन का प्रभाव अवश्य पट्ठो द्वारा दिमाग तक पहुँचता है और दुर्बल व्यक्ति प्राय इस आघात से मर भी जाते है। खरगोश स्खलित होने के पश्चात एक तरफ को गिर पडता है। मैथुन से बल नष्ट होता है और पट्ठो को आघात पहुचता है। बहु मैथुन से शारीरिक और आत्मिक बल ओज निकल जाते है इससे आप समझ सकते हैं कि बहु मैथुन से कैसी हानि होती है, जीवन दायक रस का अधिकता से निकलते रहना और प्रसग से पैदा हुये पट्ठो की कमजोरी शरीर का नाश करने वाली है। प्राय सयम से रहने वाले स्त्री पुरुष भी विवाह होते ही दैनिक मैथुन आरम्भ कर देते हैं और उस समय तक करते है जब तक बीमारी उन्हे विवश नही कर देती है। वे इलाज करवाते है। वैद्य उनके साधारण रोग का इलाज करता है बहुमैथुन के विषय मे एक प्रश्न भी नहीं पूछता और न रोकने के लिये सूचना देता है, रोग प्रतिदिन बढ़ता ही जाता है। मन्दाग्नि पट्ठो की दुर्बलता, इत्यादि रोग आराम नही होते है। यदि रोगी किसी ऐसे डाक्टर के पास जावे जो उसको बता दे कि यह समस्त रोग बहुमैथुन के द्वारा होगये है तो वह विस्मित होता है। मजबूत आदमी को पहले पहल बडी भारी खराबी नही होती इस लिये वे समझते हैं कि इसमे कोई हानि न होगी परन्तु शीघ्र नही तो कुछ दिनो मे उसको इसका फल जरूर भुगतना पडता है।

दुग्ध पान आदि । पृ० १२७

संभोग के लिये अयोग्य पुरुष

अत्याशितोऽधृतिः क्षुद्वान्सव्यथाङ्गः पिपासितः ।
बालो वृद्धोन्यरोगार्त्तस्त्यजेद्रोगी च मैथुनम् ॥

जिसने अत्यन्त भोजन किया हो, धैर्य रहित, भूखा, जिसके शरीर मे किसी प्रकार का रोग हो प्यासा हो, बालक, बुड्ढा या रोगी हो ऐसे पुरुष को मैथुन कदापि नही करना चाहिये ।

इसी सम्बन्ध मे दूसरे ऋषि की राय है —

क्षुधितः क्षुब्धचित्तश्च मध्यान्हे तृषितोऽबलः ।
स्थितश्च हानिं शुक्रस्य वायोः कोपं च विन्दति ॥
व्याधितस्यरुजा प्लीहा मूर्छा मृत्युश्च जायते ॥

अर्थात—जो पुरुष भूखा, क्षोभित चित्त वाला, प्यासा, बलहीन अर्थात् निर्बल दुर्बल हो उसे तथा मध्यान्ह के समय, सभोग नही करना चाहिये । यदि करे तो शुक्र की हानि अर्थात् वीर्य नाश हो, वायु का कोप हो और रोग बढ़े तथा रोग में कष्ट बढ़े, पीड़ा अधिक हो । तापतिल्ली तथा मूर्छा रोग हो और (मृत्युश्च जायते) मृत्यु भी हो ।

इससे पाठक समझ सकते हैं कि नियम विरुद्ध रतिक्रिया करने से स्त्री पुरुष दोनो को कितनी हानि पहुँचती है और सन्तान रोगी निर्बल होती है । महर्षियो के बताए हुए इन नियमों

पर न चलने से ही सैकडा पीछे निन्नानवे पुरुषो मे एक न एक थोड़ा या वहुत रोग अवश्य होता है ।

आवश्यक सूचना

शास्त्रकारो ने वतलाया है कि विवाह के समय स्त्री की अवस्था से पुरुष की अवस्था ड्योढी होनी चाहिये इसका उद्देश्य यह है कि पुरुष की अवस्था अधिक और स्त्री की कम होने से संभोग मे पुरुष की शक्ति क्षीण नही होती । पुरुष की शक्ति को पुरुष से कम अवस्था वाली स्त्री खींच नही सकती । यदि स्त्री की अवस्था पुरुष से अधिक हो तो अधिक अवस्था वाली स्त्री रति-क्रिया के समय पुरुष की शक्ति को खीच लेती है इसका परिणाम यह होता है कि पुरुष थोडे ही दिनो मे शक्तिहीन हो जाता है और स्त्री वलवान है इस कारण उसके कन्याए ही अधिक उत्पन्न होती हैं क्योंकि पुरुष वलवान होने से पुत्र, और स्त्री वलवान होने से कन्याएं उत्पन्न होती हैं ।

यदि कोई शका करे कि पुरुष की अवस्था अधिक और स्त्री की कम होते हुए भी कन्याए अधिक होती हैं ? उसका कारण यह है कि मासिकधर्म होने के वाद सम विसम दिनों मे गर्भाधान का विचार न रखने का यह कारण है । स्त्री पुरुषो के वलावल के साथ समविसम रात्रियो का भी प्रभाव पडता है ।

इसीलिये आयुर्वेद और वेदो तथा धर्म्मशास्त्रों मे सव मे ही स्त्री की अवस्था से पुरुष की ड्योढी अवस्था विवाह के समय होनी

बतलाई है और इसी लिये अधिक अवस्था वाली स्त्री से प्रसग करना हानिकारक बतलाया है।

पुरुषों को इन किन्हीं बातो का ध्यान नही है बाल विवाह और वृद्ध विवाह के कारण लाखो स्त्री पुरुष रोगी हो रहे हैं और सन्तान भी रोगी उत्पन्न होती है। १६ वर्ष से कम अवस्था मे सभोग करने से पुरुष निर्बल दुर्बल और रोगी तथा कम उम्र-वाला होता है।

इसी प्रकार वृद्धा पुरुष सभोग करे तो वह भी अनेक रोगो से ग्रसित होजाता है श्वास खासी दमा इत्यादि रोग घेर लेते हैं और वह शीघ्रही जीवन यात्रा पूरी कर जाता है।

पेट भर भोजन किये हो उस समय सभोग करे तो पाचन शक्ति को हानि पहुँच कर अजीर्ण रोग उत्पन्न होजाता है, यदि भूखा पुरुष सभोग करे तो निर्बलता और अनेक रोगो की उत्पत्ति तथा मन्दाग्नि रोग उत्पन्न होजाता है।

रोगी मनुष्य सभोग करे तो रोग अधिक बढ जाते हैं और क्षय आदि भयानक रोग उत्पन्न होजाते हैं तथा वह पुरुष शीघ्र ही शरीर से क्षीण होकर कुछ दिनों मे यमपुर की यात्रा करता है।

शीघ्रपात का कारण

शीघ्रपात के कारण की ओर किसी का भी ध्यान नहीं जाता। शीघ्रपात का कारण वीर्य की निर्बलता है और वीर्य की निर्बलता का कारण अनियम रतिक्रिया है। ऐसी दशा मे शीघ्रपात को रोकने

के लिये औषधिया खाना और वीर्य दोष का उपाय न करना यदि उपाय भी करना तो ब्रह्मचर्य से न रहना यह कितनी भारी अज्ञानता है। इससे कभी लाभ नही होता।

मेरे पास प्राय विद्यार्थियो के स्त्रियो की चिट्ठियाँ औषधियो के लिये आया करती है। औषधिया भेजकर जब मै उन्हे ब्रह्मचर्य से रहने को लिखती हू तब वे औषधिया लौटा देने को तैय्यार होती हैं और लिखती है कि महीने दो महीने मे जब कभी दो तीन दिन की कालेज की छुट्टी होती है तब हमारे पति घर आते है ऐसी दशा मे वे हमे ब्रह्मचर्य से कैसे रहने देगे। हाल मे ही दशहरा दिवाली इत्यादि जो छुट्टी का समय हो, लिखती है कि आने वाले हैं इस लिये आपकी औषधिया रक्खी रहेगी जब पति जी कालेज की छुट्टी मे घर हो जावेगे तब आपकी औषधियां सेवन करूंगी क्योंकि पतिजी दो चार दिन को घर आवेगे और मैं ब्रह्मचर्य लेकर बैठू तो वे क्या कहेगे और वे मानेगे भी नही।

इस प्रकार पुरुष रोगियो के भी पत्र आया करते हैं पुरुष लिखते हैं कि आपकी औषधि मगाकर ले तो ली है परन्तु हमे पहिले से यह बात मालूम न थी कि औषधिया सेवन करते समय तक ब्रह्मचर्य से रहना पड़ेगा यह बात तो बड़ी कठिन मालूम होती है।

पाठको! अब बतलाइये स्त्री पुरुष रोगी न हो यह असम्भव बात है। पति पत्नी दोनो रोगी हैं पत्नी को किसी को प्रदर, किसी को प्रसूत, किसी को रजदोष, किसी को रक्त प्रदर, किसी को हिस्टिरिया, किसी को जीर्ण ज्वर, इत्यादि रोग तो मौजूद हैं

और पति को प्रमेह शीघ्रपात सिथिलता और गरमी सुजाक आदि रोग है परन्तु वे औषधि सेवन करते समय तक ब्रह्मचर्य से नही रह सकते ।

कोई कोई पुरुष तो लिखते है कि यदि मै प्रतिदिन सभोग न करू तो स्वप्नदोष होजाता है इसलिये करना ही पड़ता है। स्त्रिया जो यहा आकर अपने पति का हाल कहकर औषधियां लेजाती हैं उनमे कुछ का यही कहना होता है कि यदि हमारे पति एक दिन को भी ब्रह्मचर्य मे रहे तो दूसरे दिन स्वप्नदोष होजाता है। स्वप्नदोष से अधिक कमजोरी होजाती है और व्यर्थ होता है इसलिये वे मानते नही, मना करने पर भी प्रतिदिन सभोग करते है ।

ऐसे अज्ञानी पुरुष शीघ्रही मनुष्य जीवन से हाथ धो बैठते हैं और अपनी निरपराध स्त्रियो को सदैव के लिये दु ख भोगने को छोड़ जाते है। यदि जीवित रहे तो पति पत्नी दोनो दु खमय जीवन व्यतीत करते हैं ।

जब से मैंने "स्त्री चिकित्सक" मासिक पत्र निकाला है उसमे प्रतिमास उपरोक्त खराबियो और उनके उत्पन्न होने के कारण प्रकाशित करना आरम्भ किये हैं तब से बीसो हजार स्त्री पुरुष अधिक प्रसग की खराबियो को समझकर इससे बचने लगे हैं ।

पुरुषों का भ्रम

बहुतेरे पुरुषो की मेरे पास ऐसी चिट्ठियां औषधियों के लिये आया करती है जिनमे वे लिखते है कि "ऐसी औषधि भेजिये कि

प्रतिदिन संभोग करने पर भी शक्ति कम न हो" उनकी स्त्रिया उसी पत्र मे लिखती हैं कि हमारे पति की इच्छा नही भरती वे कई बार प्रतिदिन संभोग करना चाहते हैं परन्तु शक्ति न रहने के कारण नही कर सकते, लिखते सकोच मालूम होता है परन्तु पति जी के अनेक बार आग्रह पर लिख रही हूँ कृपा करके कोई औषधि भेजिये।

मैं उन स्त्रियो और पुरुषो को साफ लिख देती हू कि आप क्यो अपने और अपनी स्त्री के मौत के सामान की खोज मे हैं। तारीफ यह है कि उनके पत्र मे प्रमेह सुस्ती शीघ्रपात की भी शिकायत लिखी होती है फिर भी ऐसी औषधि चाहते हैं यह कितनी भारी अज्ञानता है।

बहुतेरे पुरुष लिखते हैं कि आपकी औषधि मगाकर हमने रखली है परन्तु हम छुट्टी लेकर घर जाने वाले हैं एक महीने घर पर रहकर जब लौटकर नौकरी पर आवेगे तब औषधि का सेवन करेंगे क्योकि अभी से सेवन करने से आपके विधानपत्र मे ब्रह्मचर्य से रहना लिखा है ऐसी दशा मे हम ब्रह्मचर्य से नही रह सकते। कई महीने से स्त्री हमारे पास नही थी घर भेज दिया था। हम इतने दिन बाद स्त्री से मिलेगे अगर ब्रह्मचर्य धारण किये रहे तो हमारी स्त्री कही अपने मन मे यह न समझे कि मेरा पति शक्तिहीन होगया और यह विचार कर दु:खी हो।

पाठको! यह कितनी बड़ी अज्ञानता है कि कुछ लोग इस भ्रम के कारण भी ब्रह्मचर्य से थोड़े दिन नही रह सकते।

शरीर में वीर्यदोष सम्बन्धी अनेक रोग मौजूद हैं, शीघ्रपात के कारण सुस्ती आ गई है. औषधियां सेवन कर रहे है परन्तु ब्रह्मचर्य से दो चार महीने भी नहीं रह सकते। यही कारण है कि सैकड़ा पीछे निन्नानवे स्त्रियां और पुरुष रोगी हैं और इसी कारण हमारे देश के बालको की रोगी तथा मृत्यु सख्या अन्य देशो से अधिक है।

स्त्री की इच्छा न होते हुए भी पुरुष स्त्रियों पर अत्याचार करते हैं। अन्य देशो मे स्त्रियो की विना इच्छा के पुरुष कुछ भी नहीं कर सकते, यदि करे तो स्त्री पति का त्याग करदें। दूसरी बात यह है कि वहां के पुरुष भी इतना ज्ञान रखते हैं कि विना स्त्री की इच्छा के रतिक्रिया करने से दोनो रोगी हो जाते हैं।

पुरुषों की बड़ी भारी भूल

विषयी पुरुषों की यह बड़ी भारी भूल है कि स्त्री अनेक प्रकार से भांति भांति के उपायो से रतिक्रिया करने मे प्रसन्न होगी और हमे अधिक रतिसुख प्राप्त होगा। ऐसे विषयी पुरुषों की इस भूलभरी मूर्खता ने असंख्य स्त्री पुरुषों का सत्यानाश मारदिया। असंख्य स्त्रियां इन अनिष्टकारी भूलो की शिकार बनगईं और बनती जा रही हैं।

इसी कारण बीसो हजार स्त्रियां सन्तानहीन होने से रो रो कर जीवन व्यतीत कर रही हैं और सैकड़ों इसी तरह जीवन लीला समाप्त करगई। मेरे पास सन्तान हीन स्त्रियां भी बीसो हजार आईं

इन मे बहुत सी तो ऐसी थी कि जवानी मे तो अधिक विषय वासना मे लगे रहने के कारण स्त्री पुरुष किसी को भी सन्तान होने की इच्छा ही नही हुई और अधिक विषय से गर्भाशय मे खराबी आजाने मे हुई भी तब, जब शक्तिहीन होगयी और गर्भाशय का रोग भी पुराना होगया फिर वे मेरे पास सन्तान का इलाज कराने आई ।

बहुतो के रोग जो दूर हो सकते थे इलाज करके दूर कर दिये गये और पुरुषो को भी उनकी स्त्रियो द्वारा इलाज करके आराम करदिया गया, सन्तान होने लगी परन्तु जिनके रोग असाध्य हो गये तथा जिनकी अवस्था भी सन्तान उत्पन्न करने के योग्य नहीं रह गई थी वे स्त्रिया निराश गई ।

स्त्री अधिक रति सुख की इच्छुक नही होती। स्त्रियो को केवल गर्भाधान के लिये ही रति की इच्छा होती है परन्तु विषयी लोग स्त्रियो का स्वभाव अधिक विषय करके बदल लेते हैं इस लिये उनका स्वभाव भी विषय वासना की तृप्ति करने का होजाता है फिर वह स्वभाव आगे चलकर हानि पहुँचाता है ।

मेरे पास जितनी रोगी स्त्रियां आती हैं उनके रोगो की परीक्षा से रोगो का निदान करने से अनियम रतिक्रिया के कारण उत्पन्न होने वाले रोगो के विषय मे जब मै उनसे ब्रह्मचर्य से रहकर औषधि सेवन करने को कहती हू तब वे जवाब देती हैं कि हम क्या करें हमारे पति देव तो मानते ही नही हमारे मना करने पर भी नहीं मानते, हम बीमार होती हैं तब भी नही मानते ।

अनेक स्त्रियों का तो कहना है कि मासिक धर्म्म की दशा मे भी पति जी संभोग करते ही हैं।

स्त्रियो मे जो अधिक विषय का दुष्ट स्वभाव पड जाता है वह पति की मूर्खता से अथवा कुसंगति से और पूर्व जन्म के बुरे कर्म्मों के फल से। वरन स्त्रियो की इच्छा सिवाय गर्भाधान के अधिक विषय की इच्छा मे जाग्रत नही होती है।

बहुतेरे पुरुषों को थोड़े से कारण से भी इच्छा होती है। इच्छा ही नही पता लगाने से सैकडा पीछे पनचानवे पुरुष ऐसे मिलेगे कि जिन्हें स्त्री का स्पर्श करते ही और गन्दी पुस्तके पढ़ते ही वीर्य बहने लगता है। मेरे पास पुरुष रोगियो के जितने पत्र आते हैं अधिक मे ही यह शिकायत लिखी होती है कि स्त्री का स्पर्श करते ही तथा इश्कबाजी के उपन्यास पढ़ते ही वीर्य बहने लगना है और रात में स्वप्नदोष हो जाता है।

२५ पचीस वर्षो मे मेरे पास स्त्रियो की लाखो चिट्ठिया आई उनमें रोगी का पूरा हाल लिखा था तथा लिखा होता है आज तक मैंने लाखो मे दो ही चार चिट्ठिया ऐसी पाई जिनमे स्त्रियो मे भी यह शिकायत थी कि गन्दी पुस्तके पढ़ने से रजस्राव होने लगता है।

स्त्रियो के स्वभाव को बिगाड़ने वाले उनके पति ही होते हैं पति चाहे जैसा पत्नी को बना सकता है। शास्त्रकारो का भी यही कहना है कि जिस घरके पुरुष जिस आचरण के होंगे स्त्रिया और बालक भी वैसे ही होंगे।

बहुत से विषयी लोग यह समझते हैं कि अधिक संभोग करने से हमारी स्त्री हमे बड़ा बहादुर समझेगी। बहतेरों को अपनी स्त्री पर विश्वास नहीं होता इसलिये वे अधिक संभोग मे स्त्री को प्रसन्न रखने का उद्योग करते हैं कि इसकी इच्छा अन्य पुरुषों से न हो। ऐसे पुरुषों की यह बड़ी भारी मूर्खता है जो स्त्री का विश्वास नहीं करते।

बहुतेरे पुरुष स्तम्भन की औषधियां खाकर प्रसंग करते हैं कि अधिक देरी तक प्रसंग करने मे हमारी स्त्री हमें बड़ा भारी मर्द समझेगी। बहुतेरे पुरुष मादक वस्तुए शराब चरस भांग इत्यादि इसी कारण सेवन करने लगते है कि अधिक देरी तक स्तम्भन रहे।

मेरे पास अनेक रोगी स्त्रियों की ऐसी चिट्ठिया आया करती हैं कि जिनके पति इसी कारण नशो का सेवन करने लगे हैं और बहुतेरे पुरुष अपनी स्त्रियों को भी नशों का सेवन इसी कारण कराने लगे हैं। स्त्रियों के पत्रों से यह सब मालूम हुआ है। पुरुषों की चिट्ठियां भी स्तम्भन औषधियों के लिये आया करती हैं। स्तम्भन की औषधियों के विज्ञापन प्रायः पत्रों मे छपा करते हैं और उन औषधियों की बिक्री भी खूब होती है क्योंकि बीसों वर्ष मुझे बराबर ऐसे विज्ञापन छपते देखते व्यतीत हुए।

जितनी स्तम्भन की औषधियां बनती हैं उन सब मे नशीली वस्तुए पड़ती है वैद्यकशास्त्र मे भी ऐसी औषधियों का वर्णन है वे औषधियां रोगो के लिये ऋषियों ने बतलाई हैं परन्तु अज्ञानी विषयी लोग उनका सेवन अधिक प्रसंग के लिये करते हैं।

ऐसी औषधियों के बेचने वाले भी खूब प्रशंसा कर औषधियों का प्रचार करते हैं ऐसी औषधियों के प्रचार से भी स्त्री पुरुषों की आरोग्यता को बड़ी भारी हानि पहुंच रही है।

पुरुषों की समझ का उलटा परिणाम

जो मदान्ध पुरुष यह समझते हैं कि हमारी स्त्री प्रति दिन विषय से हम से अत्यन्त प्रसन्न रहेगी और हमें मर्दानगी का सार्टीफिकेट देगी तथा हमको अधिक चाहेगी वे महामूर्ख हैं उनकी इस समझ का परिणाम उलटा होता है। यह बात पुरुषों को ध्यान में रखना चाहिये कि स्त्री अधिक प्रसंग से प्रसन्न नहीं होती बल्कि दुखी होती है हालां कि पति के डर से चुप रहती है। प्रकृति ने स्त्री में कामेच्छा उत्पन्न होना केवल गर्भधारण के समय तक के लिये बनाया है इसलिये मासिक धर्म होने के बाद स्नान करने पर अर्थात् ऋतुधर्म से शुद्ध होने पर स्त्री की इच्छा होती है उस समय रतिक्रिया न हो तो जब तक गर्भधारण का समय रहता है तब तक ही गर्भवती होने की इच्छा से स्त्री को पुरुष संग की इच्छा होती है। समय व्यतीत होजाने पर इच्छा नहीं रहती।

जिन स्त्रियों का स्वभाव विषयी पति के अत्याचारों से विषयी होगया है उनकी बात दूसरी है। स्त्रियां दुष्ट पुरुषों के ही कारण व्यभिचारिणी होजाती हैं अथवा पूर्व जन्म के पापों के कारण। वरन स्त्रियों को जैसा समझकर पुरुष अपनी पत्नियों पर

अत्याचार करते हैं वे उलटी समझ वाले हैं और उसका परिणाम भी उलटा होता है।

मर्दानगी के बदले नामर्दी का सार्टीफिकेट

जो पुरुष अधिक विषय करके अपनी स्त्री से मर्दानगी का सार्टी-फिकेट लेना चाहते हैं वे थोडे ही दिनो में नामर्द हो जाते हैं और स्त्री उन्हे नामर्द समझने लगती है इस प्रकार उन मर्दानगी का सार्टीफिकेट चाहने वालो को नामर्दगी का सार्टीफिकेट मिलजाता है।

मेरे पास इस विषय की अनेकों चिट्ठियां प्रति दिन स्त्रियों की आया करती हैं और जो मेरे पास स्वयं आती हैं वे बेचारी बडी दु खी होती हैं, पतियों के इन अत्याचारो और मूर्खता पर रोती हैं।

बहुमैथुन से हानि

बहुमैथुन सब से अधिक हानि कारक है और इस से खराबियां पैदा होती हैं पट्ठों की कमजोरी, दृष्टि दुर्बलता, प्रमेह, स्वप्नदोष, शीघ्रपतन, पीठ मे दर्द, दिल में धड़कन, दिमागी कम-जोरी, दर्द जिगर, सख्त बदहमी, शरीर का दुर्बल होना, दहशत, सन्तान का न होना या दुर्बल होना, धातुका पानी सदृश पतला होना, कुरूपता, चेहरे के ऊपर मुर्दापन, नेत्रो मे अशोभा, और हर एक काम से जी उकताना, किसी से बात करने को जी न
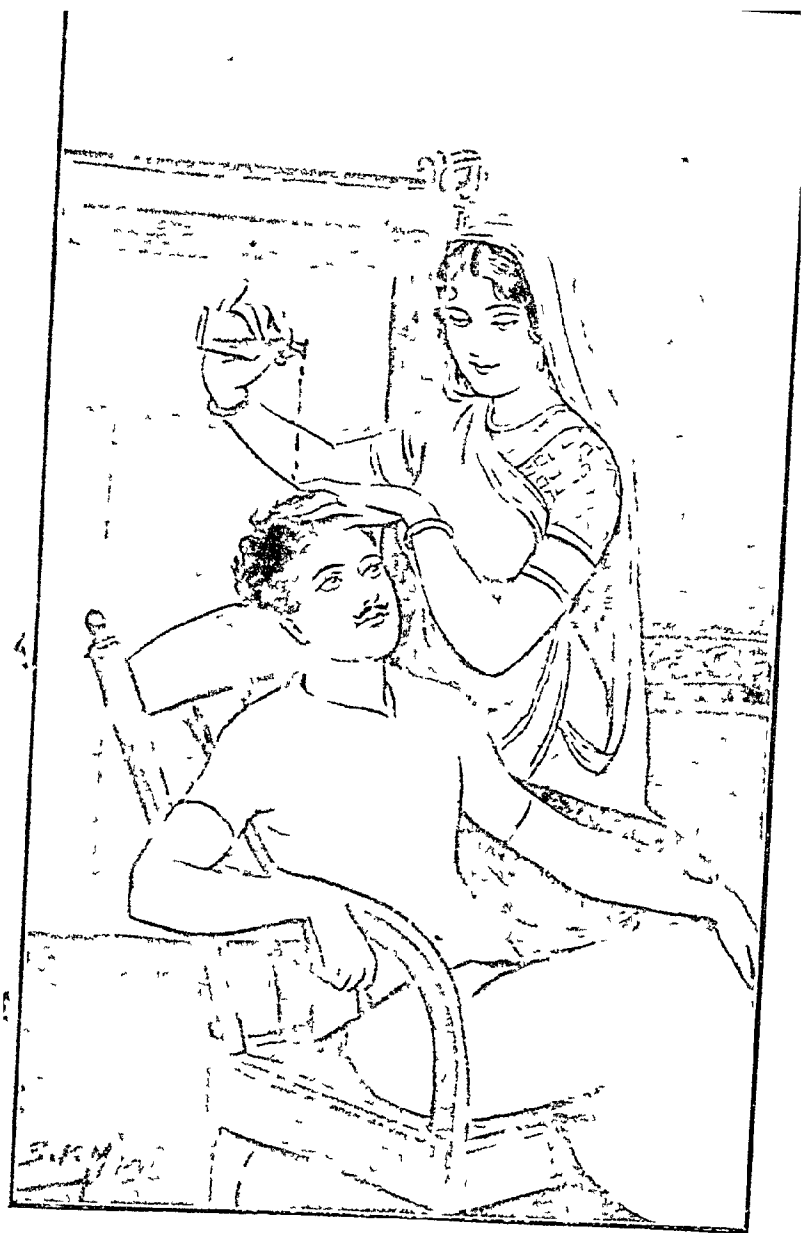
पति सेवा में लीन पतिव्रता । पृ० १४०

चाहना, आँखो से पानी जाना, शिर की पीड़ा, नजला जुकाम, मूत्राशय की दुर्वलता हृदय की दुर्वलता, और स्मरण शक्ति की दुर्वलता इत्यादि रोग पैदा होते हैं। किसी ने सत्य कहा है कि वीर्य ही शक्ति है, शक्ति ही जिन्दगी है, शक्तिही तरुणाई है, शक्ति की ही कमी बुढ़ापा है और शक्ति का ही नाश मृत्यु है।

वहुमैथुन स्त्री को कम और पुरुष को अधिक हानि पहुँचाता है क्योकि पुरुष के वहुमैथुन मे स्त्री हिस्सा नहीं लिया करती। वहुमैथुन से ऐसे बुरे फल पैदा होते हैं कि जिनसे स्त्री और पुरुष दोनों की जिन्दगी तवाह हो जाती है। स्त्री पुरुष दोनो वहुमैथुन से सांसारिक सुखों का उपभोग करके पूरी आयु को पहुँचने के पहिले ही अल्पायु मे ही ससार से चल देते हैं। यह विषय अधिक व्याख्या करने का नही है इस कारण इसे यही छोड़ देती हूं। अव इस स्थान पर आवश्यक प्रतीत होता है कि वहुमैथुन और उचित मैथुन के हानि लाभ वैद्यकशास्त्र के मतानुसार स्त्री पुरुषो को सूचित कराये जावे। जिससे मनुष्य उचित सीमा के अन्दर रह कर वहुमैथुन छोड़ कर अनेक रोगो व कष्टो से वच सके। वैद्यक चिकित्सा ग्रन्थो मे लिखा है कि सन्तान उत्पन्न करने के लिये ही प्रसंग करना चाहिये। जव वलवान नीरोग पुरुष के लिये ऐसी आज्ञा है तो निर्वल और वीमारो के वास्ते दैनिक हस्तक्रिया या वहुमैथुन करना वहुत ही हानिकारक है। ऐसे मनुष्यों को क्या कोई भी औषधि लाभदायक होती है? कदापि नही! चाहे वह कैसी ही उत्तमोत्तम औषधि खावे तो भी कोई लाभ न

होगा। हाय बड़ा शोक है! सामर्थ्य तो ऐसी हो कि बिना स्तम्भन वटिका खाये मनोरथ पूरा न कर सके परन्तु मैथुन प्रतिदिन एक बार से अधिक करने से भी बाज न आवे।

मुझे यह सुनकर बड़ा दुःख होता है कि हमारे देश के मूर्ख स्त्री पुरुषों में विषय लोलुपता इतनी अधिक बढी हुई है कि शरीर किसी दीन का न रहने पर भी, शरीर मे शक्ति न रहने पर भी, अनेक रोगों मे ग्रसित होने पर भी अत्यधिक विषय मे लीन रहते हैं. प्राय. रोगी स्त्रियां भी बहुधा लिखा करती हैं कि हमारे पति प्रति दिन प्रसंग एक बार तो किया करते हैं दूसरी बार इच्छा नहीं होती, कृपा करके कोई उत्तम बलवर्द्धक औषधि मेरी औषधि के साथ ही पति के लिये भेजिये जिससे यह शिकायत दूर हो।

प्यारी बहिनो! यह कैसी भारी मूर्खता है कि तुम पति को समझाती नहीं, तुम्हारे शरीर मे प्रदर, रक्त-विकार, कब्ज, भूख का कम हो जाना, शिर दर्द, कमर की पीड़ा, गर्भाशय की शिकायते आदि रोग तो मौजूद हैं परन्तु न पति को ही इसका विचार है न तुम को ही इसका ध्यान है।

वैद्यकशास्त्र बतलाता है कि योनि रोग वाली स्त्री से पुरुष भी रोगी होजाता है और रोगी पुरुष से स्त्री रोगी होजाती है। यही कारण है कि जो स्त्रियां मेरे पास रोगी आती हैं मै उनके पति का हाल पूछती हूं तो पति उससे भी अधिक रोगी पाये जाते हैं। जितनी स्त्रियाँ रोगी है उनमें से आधी से भी अधिक पुरुषों के रोगों से रोगी पाई जाती हैं। इसीप्रकार कुछ पुरुष

भी स्त्री के रोगों के कारण रोगी होते हैं, स्त्री के रोगों की पुरुष कुछ भी परवाह नहीं करते इसी कारण रोग बढ़ जाते हैं और रोगी स्त्री की दशा मरे तुल्य हो होती है।

गतवर्ष मेरे पास एक स्त्री प्रयाग की ही सन्तान के लिये अपना इजाल कराने आई। उस स्त्री का पति सन्तान के लिये अपना दूसरा विवाह करना चाहता था। वह मेरे पास आकर बड़ी दु:खी होकर कहने लगी—यदि मेरे पति ने दूसरा विवाह कर लिया तो मुझे बड़ा दु:ख होगा। मैंने उसके रोग की दशा देखी तो उसे सोमरोग (बहुमूत्र) था और रोग बहुत पुराना था। मैंने उससे कहा—तुम्हारा रोग तो मैं दूर कर दूंगी, तुम सन्तान उत्पन्न करने के लायक हो जाओगी परन्तु यह रोग ऐसा है कि तुम्हारे पति को भी तुम्हारे रोग के कारण प्रमेह मौजूद होगा, यदि मेरी यह बात ठीक हो तो उनका भी इलाज किसी से कराना। मैंने उस स्त्री को एक फार्म दिया कि तुम अपने पति से भराकर लाओ। वह दूसरे दिन भराकर लाई तो उस फार्म से मालूम हुआ कि उसके पति को भी बड़े जोर का असाध्य प्रमेह मौजूद है। दोनो की यह दशा देखकर मैंने उससे कहा कि तुम्हारे पति अपना दूसरा विवाह करके क्या करेंगे, वे भी तो रोगी हैं। यदि उन्होंने अपना इलाज न किया तो कुछ दिनों में वे विवाह के योग्य ही न रहेंगे इसलिये तुम अपना इलाज तो कराओगी ही अपने पति को भी किसी अच्छे वैद्य के पास भेजो। इस बात को सुनकर उसके पति ने भी अपना इलाज शुरू किया। कई विद्वान

वैद्यों से उसने सलाह ली उन सबने उसे रोगी बतलाया और कहा कि तुम अपनी स्त्री से बच कर रहना नही तो तुम्हे भी कुछ दिनो में बहुमूत्र रोग हो जावेगा। उसके पति ने स्त्री का इलाज तो कराया नही, उसे मा के यहा भेज दिया। अपना इलाज कराता रहा, कुछ आराम मालूम हुआ तभी उसने स्त्री को बुला लिया, बस कुपथ्य होने लगा। कुछ दिनों में पति को भी बहुमूत्र होगया और दिन दिन दशा बहुत ही खराब होती गई। इस प्रकार के सैकड़ों उदाहरण मौजूद हैं। गर्मी, सुजाक, प्रमेह आदि जो पुरुष को होते हैं उसकी स्त्री को अवश्य होते हैं। इस प्रकार की रोगी स्त्रियां तो प्रायः सदा मेरे पास आया करती हैं जिनके पति से ही स्त्री को रोग मिला है, सौ में पचीस ऐसी होती हैं कि जिनको अपने ही कारणों से रोग हुआ है।

मासिकधर्म के दिनों मे असावधानी, कुपथ्य से, बालक उत्पन्न होने के समय असावधानी से, और ऊंचा नीचा पैर पड़ने अथवा भारी बोझ उठाने आदि कारणो से जो रोग होते हैं वे स्त्री के ही कारण उसके शरीर मे उत्पन्न होते हैं।

जो पुरुष काम-वासनाओं मे फसे हुए हैं वे नियमों का पालन नही कर सकते और जो लोग नियमानुसार जीवन व्यतीत करते हैं, जिनका सिद्धान्त है कि "जीने के लिये खाओ न कि खाने के लिये जीओ" जो व्यायाम करते हैं, स्वास्थ्य सम्बन्धी नियमो का पालन करते हैं, जिन्हें शारीरिक स्वास्थ्य का ध्यान होता है, वे प्रायः विषय भी नियमानुसार करते हैं। जो दुर्बल होते

हैं, कोई काम नियमानुसार नही करते और स्वास्थ्य जिनकी दृष्टि में कुछ नही है, आहार, वस्त्र, नियमित व्यायाम, इत्यादि का जिन्हें बिलकुल ख्याल नही है, जो हमेशा बहुमैथुन किया करते हैं। उनकी खराबी का क्या पूछना, वे अपना नाश कर लेते हैं। जिनके वास्ते कोई नियम नही हैं जैसे राजाओ नवाबो आदि का कोई दिन खाली ही नहीं जाता है, मगर उनका ध्यान इसी तरफ होता है और वे हजारो रुपये बल लाभ करने के लिये खर्च भी करते हैं। फिर भी उनकी शारीरिक दशा खराब ही रहा करती है।

जो पुरुष मैथुन का कुछ भी नियम न समझ कर अज्ञानता वश अधिक विषय मे लवलीन रहते है उनका बल प्रति दिन घटता जाता है परन्तु वे वीर्य को बढाने और पुष्ट करने वाले पदार्थों का सेवन नही करते अथवा कम करते हैं इस प्रकार वीर्य का खर्च तो अधिक करते हैं परन्तु इसके बढाने का कोई उपाय नहीं करते। इस प्रकार वीर्य के क्षीण होने से वे कुछ दिनों में शक्तिहीन होकर नपुसक होजाते हैं उनकी इन्द्रियां शिथिल हो जाती है वे किसी कामके नही रहते।

लिंगवृद्धिकरान्योगान् सेवते यः प्रमादतः।
महता मेढ्योगेन चतुर्थी क्लीवतां व्रजेत् ॥

इसका अर्थ यह है कि जो अज्ञानी पुरुष मूर्खतावश नियम के विरुद्ध और प्रकृति के विरुद्ध अपनी इन्द्री को बढ़ाने के लिये औषधियों को काम में लाते हैं वे अज्ञानी पुरुष अपने हाथों

अपना सत्यानाश करते हैं औषधियो के प्रभाव से उनकी इन्द्री में कुछ सूजन सी आजाती है वे उसीको बढ़ा हुआ समझते हैं फिर पीछे वे नपुसक होजाते हैं उनकी नसो को बड़ी हानि पहुंचती है।

हस्त क्रिया से हानि

हस्त क्रिया करने वाले के शरीर का रग पीला, दुबला, कमजोर हो जाता है आखे अन्दर धस जाती हैं, पुतलिया फैल जाती हैं, ये सब फल अवश्य मिल जाते हैं। ऐसे पुरुष दूसरे मनुष्य के साथ आख तक नही मिला सकते। लज्जायमान और एकान्त प्रिय हो जाते हैं। अगर कोई बालक अच्छी स्मरण शक्ति रखता हो और पश्चात् भूलने का रोग हो जाय तो इसी से जान लो कि वह नियम विरुद्ध विषय मे फस गया। फिर यह भी ध्यान मे रखना कि इसी कुचाल से नवयुवक बुड्ढे, चेहरा पीला, सुस्त, मूर्ख, नामर्द, कमर झुकी हुई, अधरग और मन्दाग्नि वाले हो जाते हैं।

ऐसे पुरुष को स्वप्नदोष, शिर तथा कमर मे दर्द, दृष्टि व स्मरण शक्ति की दुर्बलता, आत्मिक शारीरिक और मानसिक दुर्बलता बुरे, डरावने स्वप्नो का आना, दिमागी चक्कर आदि रोग हो जाते हैं, किसी को गठिया हो जाता है, कितनो को आमाशय और छाती का दर्द पैदा हो जाता है, वीर्य स्वयं बहने लगता है, इन्द्री निकम्मी हो जाती है, शीघ्र पतन आदि से पुरुष अन्त में पूरा २ नपुसक (नामर्द) बन जाता है।

बहुत सी खराबियों के सिवाय यह एक बहुत बडी खराबी है कि मनुष्य स्त्री संभोग के योग्य नही रहता और किसी किसी को चैतन्यता भी नही होती अथवा हुई भी तो अपूर्ण होती है, या होकर शीघ्रही मिट जाती है। चैतन्यता होते ही या स्त्री के आलिगनादि करने से ही या केवल मानसिक विचारों के उत्पन्न होते ही धातु निकलनी आरम्भ हो जाती है।

क्षयरोग (तपेदिक) के एक हजार रोगियो में प्राय अधिक हिस्सा रोग का कारण बहुमैथुन ही है उनसे कुछ कम हस्तक्रिया वाले और कुछ रोगियों का स्वप्नदोष व शुक्र पतन है, अन्य और कारणों से रोगी होते हैं। पागलों में अधिक हिस्सा केवल हस्त-क्रिया करने वालो का समझो। यह अनुसन्धान से डाक्टरो ने पता लगाया है।

मेरे पास भी जितनी स्त्रियां आती हैं और अपने पतियों के रोग का हाल कहती हैं तो उनसे यही अनुभव होता है कि स्त्री पुरुषो के रोगों का विशेष कारण बहुधा हस्तक्रिया, बहुमैथुन, तथा अन्य प्रकार से वीर्यनाश गरमी सुजाक आदि ही है।

क्षयरोग का विशेष कारण

२५ पच्चीस वर्षों में मेरे पास जितनी क्षय रोग से ग्रसित स्त्रियां आई सबको देखने और उनकी जबानी रोग की उत्पति का कारण सुनने से अधिक विषय ही निश्चय हुआ क्योंकि ज्वर की हरारत और खांसी आदि हर समय रहने पर भी मूर्ख पुरुष

स्त्री का पीछा नहीं छोड़ते, विषय करते ही जाते हैं। इस प्रकार बेचारी निरपराध स्त्रियां कुसमय में ही मूर्ख पतियों की कामाग्नि की शान्ति में भस्म होजाती हैं अर्थात् जीवन लीला समाप्त कर जाती हैं।

आयुर्वेद के प्रसिद्ध ग्रन्थ चरक सुश्रुत आदिको में अधिक मैथुन के विषय मे लिखा है.—

श्रमक्लमोरुदौर्बल्यबल धात्विंद्रियक्षयः।
अपर्वमरणं च स्यादन्यथा गच्छतः स्त्रियम् ॥

अर्थ यह है कि जो नियम के विरुद्ध अधिक स्त्री प्रसग करते हैं उन्हे श्रम, क्लान्ति, हृदय की कमजोरी, धातुक्षय, इन्द्रिय क्षय और अकालमृत्यु आदि रोग उत्पन्न होजाते हैं।

अधिक वीर्यक्षय से पुरुष को जो जो रोग उत्पन्न होते है उनका पूरा वर्णन इसी पुस्तक मे दूसरी जगह मिलेगा इसलिये इन सब खराबियो को समझ कर इन बुराइयो से सदैव बचना चाहिये।

आनन्द मन्दिर
आठवाँ अध्याय
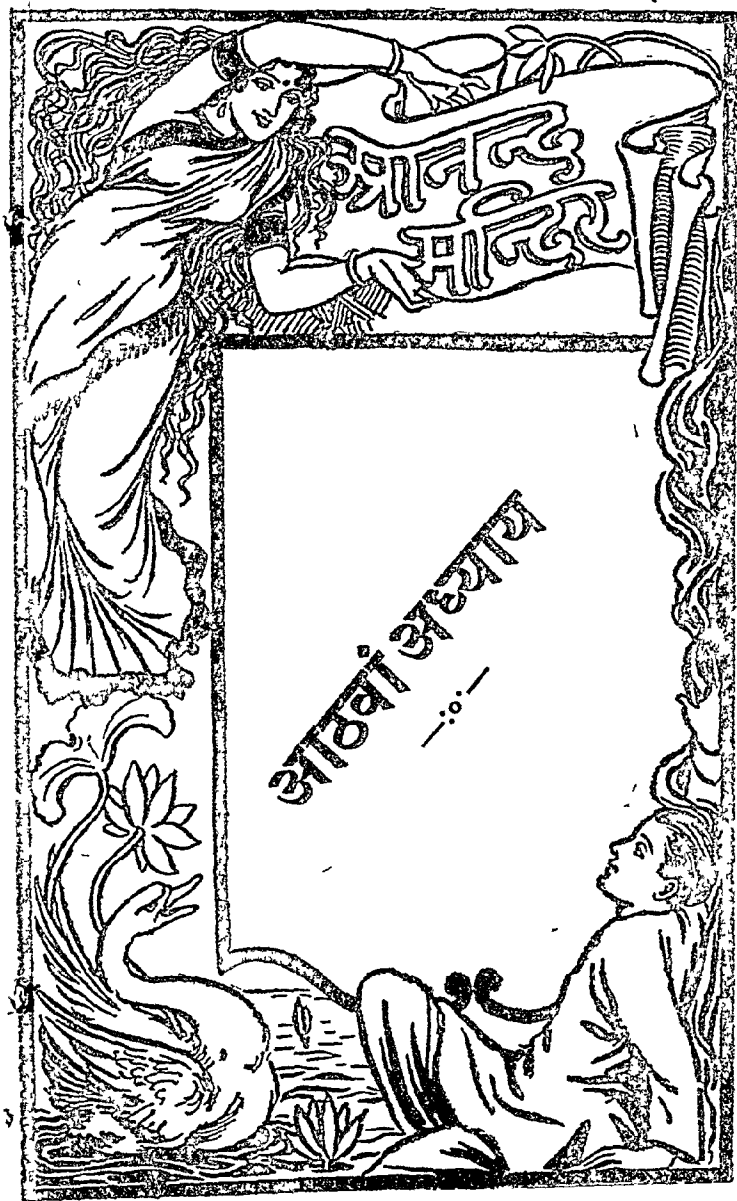
अधिक विषय का मुख्य कारण

पुरुषो की इस अज्ञानता भूल या मूर्खता का मुख्य कारण यह है कि इस विषय का कोई उत्तम ग्रन्थ आजतक नही बना। किसी सज्जन विद्वान ने इस विषय के ग्रन्थ की कोई आवश्यकता नहीं समझी क्योकि यह विषय विना शिक्षा के ही पशु पक्षी तक जानते हैं इस विषय की शिक्षा प्रकृति से ही मिलजाती है। यही समझ कर आजतक किसी का ध्यान इस ओर आकर्षित नही हुआ। यद्यपि गर्भाधान क्रिया के नियम वताने वाले अनेक ग्रन्थ बड़े वडे विद्वानो के वनाये हुये मौजूद है परन्तु उनमें केवल गर्भाधान विधि ही है रतिक्रिया का नियम विस्तार पूर्वक नहीं समझाया गया इस कारण उन पुस्तको का प्रचार भी बहुत कम है और केवल गर्भाधान विषय के लिये लोगो की रुचि भी ऐसी पुस्तको की ओर कम रहती है।

ऐसी पुस्तको की अत्यन्त आवश्यकता है जिनसे विवाह होते ही नव विवाहित वडे लड़के लड़कियो को उचित प्रसग के गुण और अधिक नियम विरुद्ध प्रसग के अवगुण तथा उससे होने वाले रोगो की उत्पत्ति तथा रोगो से कष्ट और शरीर की हानि इत्यादि विषय भली भांति समझाये जावे। फिर कोई कारण नही है कि इसका प्रभाव उनके कोमल हृदयो पर न पड़े और वे उन हानिकारक परिणामो से न वचे क्योकि मुझे इस वात का पूरा अनुभव है। मेरे पास वीसो चिट्ठिया ऐसे नवयुवक रोगी

पुरुषो की आया करती हैं। वे लिखते हैं मुझे स्त्री प्रसग की अधिकता के इन भयकर परिणामो का पता न था। आपकी बनाई दाम्पत्य जीवन शास्त्र से मुझे इस दुर्व्यसन के भयकर परिणाम मालूम हुए। इसके कारण मेरी स्त्री भी रोगों का घर बनगई है और मैं भी अब अपनी जिन्दगी से आरी आगया हू।

इस प्रकार की एक दो नही, सौ दो सौ नहीं मेरे पास पचीस वर्षों मे युवक पुरुप रोगियो के लाखो पत्र आचुके हैं और प्रतिदिन बराबर अनेक पत्र आया करते हैं। इसी कारण इस पुस्तक के प्रकाशित करने की आवश्यकता समझी गई।

आजकल इसके विरुद्ध अनेक पुस्तके कामशास्त्र कोकशास्त्र इत्यादि अनेक नामो से प्रकाशित होरही हैं जिनमे मनगढ़त इतनी अनर्थक बाते भरदी गई हैं कि जिनके पढ़ने से स्त्री पुरुषों को उनकी परीक्षा की उत्कण्ठा होती है और वे बाते महा हानिकारक हैं। उनमे उनकी हानि को छिपाकर लाभ दिखाया गया है और बीच बीच मे कही कही धर्म की दुहाई भी दी गई है जिससे सभी पुरुषो को अरुचि न हो। उपाय ऐसे हानिकारक बतलाये गये है कि जिनको पढ़ सुनकर उन उपायों पर चलने वाले महा भयकर रोगों में फंस जाते हैं।

कामशास्त्र का नाम लेकर ऐसे मनगढंत आसनो का प्रयोग बतलाया गया है कि उसके पढ़नेवाले मूर्ख विषयी पुरुष उस विधि से रतिक्रिया कर स्त्रियों को वन्ध्या बनादेते हैं उनके गर्भाशय मे ऐसी खराबियां उत्पन्न होजाती हैं कि गर्भ

नही रहता यदि रहा तो गर्भपात व गर्भस्राव होजाता है। ऐसी स्त्रियां मेरे पास अबतक बीसो हजार आचुकी हैं उनकी जवानी उन कोकशास्त्र कामशास्त्र नामक अनेक पुस्तको का हानिकारक परिणाम मालूम हुआ। अनेक स्त्रियो ने मुझसे कहा कि हमारे पति ने कई जगह से पुस्तके मगाई उनमे लिखी विधि से उलटी सुलटी रीति से सभोग किया तबसे गर्भाशय और पेडू में पीडा होती है और भी अनेक शिकायतें होगई हैं। किसी का गर्भाशय टेढ़ा देखा गया, किसी का गर्भाशय सूजा हुआ पाया गया, किसी का भीतर को धसा हुआ देखा गया, किसी का गर्भाशय बाहर निकला हुआ मिला। इसी प्रकार के अनेक रोग गर्भाशय सम्बन्धी देखे गये और देखे जाते हैं इन सबका विशेष कारण अनियम रतिक्रिया है। लोग ऐसी पुस्तको को पढकर विषय वासना की कामाग्नि बुझाने के लिये उसका बुरा परिणाम न विचार कर स्त्रियो पर अत्याचार करते हैं। अधिक आनन्द पाने की जगह कुछ रोज मे कष्ट भोगने लगते हैं और अपनी प्यारी निरपराध स्त्रियो को भी रोगी बनादेते हैं। इसीलिए ऐसी पुस्तके हर एक के लिए सदैव हानिकारक ही हैं, लाभकारी नही, उन्हे न पढ़ना चाहिए।

अज्ञानी अपढ़ ही नही यह दशा अच्छे अच्छे पढ़े लिखे सभ्य समाज के पुरुषो की भी है। अनेक डाक्टरों अन्य चिकित्सको की स्त्रियां भी इस दुर्व्यसन के कारण रोगी हो मेरे पास आई और आरही है।

शारीरिक और मानसिक निर्बलता की अधिकता

वीर्य की निर्बलता व वीर्य क्षीणता के कारण कमजोरी आजकल एक जगत व्यापी रोग है इसका कारण यह है कि नियम के विरुद्ध व बहुमैथुन आदि अत्याचार भी जगत व्यापी हो रहे हैं। समस्त देश मे यह रोग फैला हुआ है, यह पापो में सबसे बड़ा भारी पाप है और बुराइयो मे सबसे बड़ी बुराई है किसी ने इस तरह बीमारी और असभ्यता नहीं फैलाई जितनी इस दुष्ट आदत ने फैलगई है।

नियम विरुद्ध विषय करना स्त्री पुरुष का सबसे बढ़कर जबर्दस्त शत्रु (कुल्हाड़ा) है जिसे मनुष्य अपने ही हाथों से अपने पाओं पर मारते हैं, जिस किसी को जीते जी मुर्दा बनना हो, सुन्दरता, लावण्यता, और आरोग्यता को अपने भीतर से दूर करना हो और रोगी, कुरूप, सुस्त, तथा नपुसक बनना हो उन्ही का यह मित्र है। अपने हाथो से आप ही स्वयं सत्यानाश करने की मिसाल इस पर ठीक आती है। स्पष्ट कहना यह है कि अपनी ही गर्दन अपने हाथ की छुरी से काटनी है। इससे पट्ठो की कमजोरी, क्षयरोग, मिरगी (अपस्मार) अधरंग, मूर्छा, उन्माद, पागलपन, आदि दुष्ट रोग आकर उस मनुष्य का प्राणान्त करते हैं। आखो की कमजोरी, धातु का जाना, स्वप्नदोष शीघ्रपतन, दर्द कमर, दिल की धड़कन, दिल व दिमाग आदि

की कमजोरी, श्वास, दर्द गुरदा, दर्द जिगर, कब्ज (कोष्ट बद्धता) मन्दाग्नि, प्रमेह, दुर्बलता, चेहरे पर बेरौनकी, सुस्ती, उदासी, सन्तान का न होना, चित्त की भ्रान्ति, दर्द सिर और जुकाम, नजला, मूत्राशय, आमाशय, हृदय, सिर मस्तिष्क यकृत तथा प्लीहा की कमजोरी, गठिया, भ्रम इत्यादि रोग प्राय आ कर दबाते हैं। यह भी पूरे तौर से ध्यान मे रखना चाहिये कि पृथक पृथक प्रकृतियो पर विपरीत तथा अधिक मैथुन का अलग २ दुष्परिणाम होता है। यह ऊपर लिखे रोगो वाले हजारो रोगी पुरुषो की स्त्रियो का इलाज करने से मुझे अनुभव हुआ है। ऐसे बहुत से पुरुष हैं कि लगातार वर्षो विपरीत मैथुन अथवा बहु मैथुन करते हैं परन्तु उनको इतनी हानि नही पहुँचती कि जितनी दो चार मास नियम विरुद्ध करनेवाले को पहुँचती है। ऐसे पुरुष भी बहुत है कि जिन्होने दो चार बार नियम विरुद्ध विषय किया था उतने ही बिगाड़ से वे स्त्री प्रसग के योग्य न रहे। जिन लोगो के पट्ठे (स्नायु) कमजोर होते हैं उन्हीं के ऊपर जल्द और गहरा असर होता है और वह थोड़ी सी अनुचित क्रिया करके भी सारी आयु के लिये बरबाद हो जाता है। शोक की बात तो यह है कि स्त्री और पुरुष दोनो मे यह बुरी आदत पड़ रही है।

मेरे पास हजारो स्त्रियां ऐसी आई और आ रही हैं कि जिनके पति की अवस्था २०, २२ तथा २५ ही वर्ष की है परन्तु वे नपुंसक हो गये हैं उन्होने विवाह होते ही नियम विरुद्ध

प्रकृति विरुद्ध और अपनी शक्ति से बाहर विषय किया है और जिन बुरे कर्मों का फल उन्हें शीघ्रही मिल गया। आप तो जीवन के सन्तान सुख से हाथ धो ही बैठे और बेचारी निरपराध रूपवती प्यारी स्त्रियां अब रो रो कर दिन बिता रही हैं।

एक स्त्री जिसकी अवस्था १८ वर्ष की थी वह अपने पति के साथ मेरे पास अपना इलाज कराने आई, पति पत्नी दोनो की दशा बहुत खराब थी। उस स्त्री की दशा देख कर नाड़ी की परीक्षा की तो मालूम हुआ कि उसको प्रदर बहुत जोर पर है। मैंने उससे कुछ गुप्त बाते पूछीं। उसने मुझसे कुछ भी नहीं बतलाया शिर नीचा करके बैठी रही। तब मैंने उससे पूछा कि अभी तक तुम्हारा इलाज किस रोग का होता था, उसने कहा कि खांसी और ज्वर की हरारत का इलाज होता था। डाक्टर लोग फेफड़े की खराबी और वैद्य पुराना बुखार बतलाते थे इसी रोग का इलाज होता रहा। बुखार के लिये गरम गरम औषधियां दी गईं जिससे प्रदर और भी बढ़ गया। शरीर अधिक कमजोर हो गया। स्त्री को देखकर मैंने उसके पति के पास अपना बनाया एक रोगी फार्म भेजा और मैंने उस स्त्री को समझा दिया कि तुम्हारे शरीर में जो कुछ भी रोग है वह तुम्हारे पति के रोगों का असर है। यदि तुम्हारे पति इस फार्म में अपना पूरा हाल ठीक ठीक न लिखेंगे तो मैं इलाज न करूंगी। उस स्त्री ने पति से यही बात कही तब उसने फार्म भरकर भेजा उसके फार्म से मालूम हुआ कि उसका विवाह १६ वर्ष की अवस्था में

गर्भाधान की तयारी । पृ० १७२

हुआ था साथ ही गौना भी हुआ था। विवाह होते ही उसने प्रसंग का नियम प्रतिदिन का कर दिया और जब कभी स्त्री अपने माता पिता के यहां चली जाती थीं तब वह हस्तक्रिया किया करता था। कैसे दुःख की बात है कि एक दिन भी उससे बिना प्रसंग के नहीं रहा जाता था। इस प्रकार १६ से २४ वर्ष तक उसने अपने जीवन की जड़ को विषय रूपी कुल्हाड़ी से इस प्रकार काटा था कि अब जीवन रूपी वृक्ष गिरना ही चाहता था। जिस समय मेरे पास वे दोनों स्त्री पुरुष इलाज कराने आये थे उस समय भी उनकी यही दशा थी कि स्त्री पुरुष दोनों रोगी होने पर भी दस पन्द्रह दिन तक भी बिना संभोग किये नहीं रह सकते थे।

मैंने उस रोगी पुरुष का फार्म देखकर स्त्री से कहा कि अगर तुम्हारे पति ने यह आदत न छोड़ी तो वह आराम हो नहीं सकता और कुछ दिनों में इससे भी खराब दशा हो जावेगी क्योंकि अधिक विषय और हस्तक्रिया के कारण उनके शरीर में कुछ भी तत्व नहीं रहा था अब उन्हें कम से कम एक वर्ष तक ब्रह्मचर्य से रहना चाहिये। वह बेचारी रोने लगी और बोली—मैं उन्हें ऐसा मौका न दूंगी परन्तु हस्तक्रिया का मैं क्या उपाय करूंगी उनका स्वभाव तो ऐसा होगया है कि मासिकधर्म के दिनों में भी सन्तोष नहीं करते और बीमारी की दशा में भी नहीं मानते। यद्यपि शक्ति उनके शरीर में नहीं है परन्तु बिना इच्छा भी अपनी आदत नहीं छोड़ते। मैंने औषधि देकर बहुत सावधान कर दिया। वे दोनों

अपने घर चले गये। बीस पचीस दिन औषधि का सेवन करने से दोनों की तबियत बहुत कुछ सम्हल गई। दूसरी बार फिर औषधि मगाई, भेजदी गई। तबियत कुछ कुछ ठीक होते ही उस अज्ञानी ने फिर कुपथ्य किया जिससे फिर दशा उससे भी अधिक खराब होगई। स्त्री का पत्र आया कि मुझे लिखते दु:ख होता है मेरे पति ने पथ्य छोड दिया फिर अपनी पुरानी आदत पर आगये। मैंने जवाब दे दिया कि ऐसे मूर्ख को औषधि देना व्यर्थ है इसलिये नहीं किसी का इलाज करे।

उसकी स्त्री से मालूम हुआ कि उस पुरुष ने कभी भी वैद्य से अपनी इस मूर्खता का हाल नही कहा, कभी ज्वर की औषधि की, कभी खांसी की, कभी कमजोरी की, कभी तिला आदि का सेवन किया। प्राय. लोग बडी भारी मूर्खता यह किया करते हैं कि सुस्त, वीर्य से क्षीण, नसो से कमजोर, शरीर से दुर्बल होते हैं परन्तु इस बुरे कर्म से बाज नही आते। इच्छा न होने पर भी मुंह काला किया ही करते हैं, स्तम्भन वटी खाया ही करते है उनसे शरीर का और भी सत्यानाश हो जाता है फिर वे शीघ्रही काल का ग्रास बनजाते हैं। जितनी शारीरिक और मानसिक हानि स्त्री पुरुषो की इन झूठे नोटिसबाजो की स्तम्भन वटी और तिला आदि ने की है उतनी दूसरी प्रकार से नहीं हुई। मूर्ख व्यसनी लोग नही समझते कि हमारे शरीर मे वीर्य तो रहा ही नहीं, तिला और स्तम्भन वटी क्या करेगी। तिला और स्तम्भन वटी का सेवन करने वाले बहुत जल्द अपनी रही सही शक्ति से

भी हाथ धो बैठते हैं और मुर्दा बन जाते हैं। "मर्ज बढ़ता गया ज्यों ज्यों दवा की' की कहावत ठीक हो जाती है। यदि वे स्तम्भन वटी और तिला आदि का सेवन न करके साधारण औषधियां खाते हुए ब्रह्मचर्य से रहें तो यह निश्चय बात है कि ब्रह्मचर्य से रहने से ही उनकी शिकायतें दूर हो जावें। मेरे पास ऐसी स्त्रियों की बीसों चिट्ठियाँ प्रतिदिन आया करती हैं कि जिनके पतियों को तिला आदि की जरूरत है परन्तु मैं उन्हें इनकार लिख देती हूँ कि ऐसी औषधियों का बेचना महा मूर्खता है और लोगों को धोखे में डालकर उनकी रही सही शारीरिक दशा और भी बिगाड़ना है। क्योंकि सबको वे औषधियां फायदा नहीं करतीं। मेरी जो आजमूदा दवाइयां हैं जिनको उनसे फायदा हो सकता है वे आगे लिखूंगी।

लोग अपनी पूरी व्यवस्था न तो पत्र में लिखते हैं न वैद्य से कहते हैं फिर कैसे ठीक औषधि फायदा कर सके, जरा कमजोरी शरीर या नसों में देखी बस तिला और स्तम्भनवटी नोटिस में देखकर मंगाली, चाहे वह फायदा करे या नुक्सान, इस बात का विचार नहीं करते।

ऐसे पुरुषों की स्त्रियां जब मेरे पास आती हैं तो अपना हाल तो कह देती हैं परन्तु पति का हाल बहुत पूछने पर नीचा शिर करके मुझ से अपनी दुःख कथा कहती हैं तो भला वे पुरुष वैद्य से कैसे कह सकती हैं। पुरुषों का भी यही हाल होगा, वैद्य को पूरा हाल अपनी मूर्खता का न बता सके तो बड़ी मूर्खता

है। लोग वैद्य के पास जाकर असल रोग को कभी प्रकट नहीं करते और यह कहते हैं कि मुझे जोफ जिगर है, अथवा प्रमेह है, आंखे कमजोर है, दर्द शिर है, मैं दुर्बल होता जाता हूं। वैद्य या डाक्टर उनके कथनानुसार इन्ही रोगों का इलाज करने लगते हैं। मूल कारण हस्तक्रिया अथवा बहुमैथुन प्रकृति के विरुद्ध विषय अथवा अन्य बुराइया दूर नहीं की जाती हैं। सम्भव है रोगी इस महा हानिकारक व्यसन के प्रभाव को न जानता हो किन्तु यह सम्पूर्ण रोगों का घर है। अस्तु रोगी को चाहिये कि अपना पूरा हाल सकोच न करके वैद्य या हकीम से कह दे और चिकित्सक को चाहिये कि अच्छी तरह खोज कर (पूछ कर) रोगो के मूल कारण को दूर करे।

पुरुष रोगियों के विषय में मेरा अनुभव

मेरा २५ पचीस वर्ष का अनुभव है मैंने लाखों रोगी स्त्रियो की चिकित्सा करके और स्त्रियो द्वारा उनके पुरुषो की चिकित्सा करके तथा पुरुष रोगियों के पत्रों से पारसल द्वारा औषधियों से चिकित्सा करके अनुभव प्राप्त किया है कि पुरुष रोग-ग्रसित रहने पर भी ब्रह्मचर्य से नही रहते, औषधियां पथ्य से रहकर सेवन करना उन्हे बड़ा कठिन मालूम होता है। रोग चाहे बढ क्यो न जावे परन्तु ब्रह्मचर्य से दो चार महीने भी नही रह सक्ते।

स्त्रियों के प्रतिदिन मेरे पास इस विषय के पत्र आया करते

हैं कि "आपकी भेजी हुई औषधि आई, पति जी सेवन तो कर रहे हैं परन्तु ब्रह्मचर्य से रहना नही चाहते। एक सप्ताह भी ब्रह्मचर्य से रहना उन्हे कठिन होरहा है। मुझे भी पति के इस स्वभाव से बड़ा कष्ट होता है। मैं औषधि खारही हूं दस पांच दिन को रोग कम होजाता है फिर पति के कारण बढ़जाता है" इस प्रकार के अनेक पत्र स्त्रियो के आया करते हैं। जो पति पत्नी पथ्य से ब्रह्मचर्य से औषधियो का सेवन करते हैं उनके रोग दूर होजाते हैं। वे तन्दुरुस्त हो जाती हैं।

सैकड़ा पीछे निन्नानवे पुरुष रोगी हैं

जो शीघ्रपात, स्वप्नदोष, सिथिलता और नपुंसकता आदि रोगों से ग्रसित हैं। जो स्त्री का स्पर्श करते ही स्वय स्खलित होजाते हैं, इसका प्रमाण यह है कि वैद्यो और हकीमो के यहां जाकर पता लगाइये। इस प्रकार के कितने रोगी जाते हैं और धातुपुष्ट की औषधियां शीघ्रपात और नपुंसकता आदि की दवाइयां खाते हैं. तिला आदि बेचने वाले नोटिसबाजो के यहां जाकर पता लगाइये तो मालूम होगा कि सैकड़ा पीछे निन्नानवे पुरुष शीघ्रपात और स्वप्नदोष आदि वीर्य विकार की औषधियो के लिए पत्र भेजते हैं।

वीर्यदोष वाले रोगियों के पत्र

मेरे पास २५ पच्चीस वर्षों मे लाखों ही पुरुषों के पत्र वीर्य दोष की औषधियों के लिये आये और प्रतिदिन पचीसो आते हैं

तथा रोगी पुरुषो की रोगी स्त्रियां भी आई और आया करती हैं। वे भी पति के शीघ्रपात की शिकायत और सिथिलता नपुसकता का रोना रोती हैं और औषधियां लेजाती हैं। इस प्रकार पुरुषो की निर्बलता वीर्यक्षीणता और सभोग शक्ति का पता लगता है। जब कि पुरुषो की शक्ति की यह दशा है तो इस दशा मे आसनो का प्रयोग और अनेक निन्दनीय और हानिकारक उपायो से सम्भोग करना और स्त्रियो को स्खलित करने का उपाय काम मे लाना जीवन के लिए कितना हानि कारक और अनुचित है।

स्त्रियों की रोगी संख्या

पुरुषो की अज्ञानता और भूल से स्त्रियो की भी रोगी संख्या सैकड़ा पीछे निन्नानवे से कम नहीं है। २५ पच्चीस वर्षों में मेरे पास लाखों ही स्त्रिया अपने रोगो की परीक्षा और चिकित्सा कराने आईं। इन सबके देखने से और उन स्त्रियों की जबानी मालूम हुआ कि अधिक विषय और नियम विरुद्ध विपरीत रति के कारण स्त्रियों मे अनेक प्रकार के गुप्तरोग उत्पन्न होगये हैं। इस प्रकार रोगी स्त्रियों की संख्या देखते हुये यही निश्चय होता है कि स्त्री पुरुष दोनो की रोगी संख्या एक दूसरे से कम नहीं है। ऐसी दशा मे ऐसी पुस्तको का प्रचार करना जिनको पढ़सुन कर उनमें लिखे मनगढत प्रयोगों को काम में लाने से और भी अधिक हानि पति पत्नी दोनों को पहुँचने की

सम्भावना है इसीसे रोगी और भी अधिक बढ रहे हैं।

आयुर्वेद बतलाता है पति पत्नी दोनों आरोग्य हों तब सम्भोग करना चाहिये और यहां सैकड़ा पीछे निन्नानवे पति पत्नी दोनो रोगी देखे जाते हैं यह ठीक आयुर्वेद के नियम के विरुद्ध है अर्थात रोगी होते हुए भी प्रसंग बिना किये बाज नही आते।

शक्ति न रहते हुये भी स्तम्भन वटी खाकर तिला का सेवन करके बिना शक्ति के ही सम्भोग करके अपना और अपनी प्यारी स्त्री का जीवन नष्ट करना महा अज्ञानता है। स्तम्भन वटी आदि रोगो को हटानेवाली अवश्य हैं परन्तु औषधि खाते हुए यदि परहेज न किया जायगा. रोग उत्पत्ति का मूल नष्ट न होगा तो वटी क्या करेगी।

रोगों की उत्पत्ति

पुरुषो की विषयाग्नि मे स्त्रियों के प्राणो की किस प्रकार आहुती होरही है इसका मुझे पूरा अनुभव है क्योंकि अनेक रोगों वाली स्त्रियां प्रति दिन आया करती हैं। उनकी जबानी मालूम होता है कि जो जो कारण स्त्रियो के रोगो की उत्पति के आयुर्वेद में बतलाये गये है वे ही कारण पुरुषो के द्वारा प्रति दिन हुआ करते हैं।

जिससे स्त्रिया रोगी होजाती है और रोगी स्त्रियों से प्रसग करने से पुरुष भी रोगी होजाता है। इस प्रकार पति पत्नी दोनों रोगी होकर रोगी सन्तान उत्पन्न करते हैं।

"ब्रह्मचर्येण तपसा देवा मृत्युमुपाघ्नत" ।

अर्थात् ब्रह्मचर्य के बल से देवता मृत्यु को जीतते थे। इससे ब्रह्मचर्य का महत्व प्रकट होजाता है। आजकल भी सर्व साधारण मे देखा जाता है कि जो पुरुष वीर्य का नाश नहीं करते उनका स्वास्थ्य बहुत अच्छा रहता है। यदि ऐसे पुरुष अपने पैतृक असर के कारण दुबले पतले और कमजोर भी उत्पन्न हो तो भी उनका स्वास्थ्य अच्छा रहता है वे बीमार नहीं होते। जितेन्द्रिय ऐसे कितने ही पुरुष देखे गये हैं जिनके वर्षों सिर तक मे दर्द नहीं होता है पचास साठ वर्ष की आयु तक वे देखने मे नौजवान मालूम होते हैं। उनकी आयु लम्बी होती है। परन्तु जब ऐसा नहीं होता और कामी पुरुष विषयो मे आंख मूंद कर अपने को झोंक देते हैं तो शरीर के दुश्मन, असमय में ही शरीर को नाश कर देने वाले कितने ही रोग आघेरते है। थोड़े ही समय में शक्ति का नाश हो जाने से उनकी इन्द्रियां शिथिल हो जाती है। उनका तेज नष्ट हो जाता है और उनके सारे सुखो पर पानी फिर जाता है। वे किसी काम के नहीं रहते हैं। तब तो उनका तमाम समय और धन रोगो के दूर करने की चिन्ता और रोगो की औषधियों मे नष्ट होता है।

इससे साबित होता है कि रोगों की उत्पत्ति का मूल कारण वीर्यनाश, बहुमैथुन और हस्तक्रिया है।

—(•)—

प्रेमप्रदर्शन । पृ० १८८

नवां अध्याय

माता पिता के विचारों का सन्तान पर प्रभाव

माता पिता के विचारो का सन्तान पर बड़ा भारी प्रभाव पडता है उसी प्रकार की सन्तान उत्पन्न होती है।

आयुर्वेद बतलाता है:—

आहाराचारचेष्टाभिर्यादृशीभिः समन्वितः।
स्त्रीपुंसौसुपेयातां तयोः पुत्रोपितादृशः॥

अर्थात्—माता पिता जैसे आहार विहार आचार और चेष्टा ने संभोग करते हैं उससे जो गर्भ रहता है उसी प्रकार के गुण अवगुण सन्तान मे भी उत्पन्न होते है।

निर्लज्ज, लज्जावान्, हास्य प्रिय, आलसी सदाचारी, व्यभिचारी निर्बल रोगी दीर्घजीवी इत्यादि सब प्रकार के गुण अवगुण माता पिता के रजवीर्य स्वभाव चेष्टा आदि से ही सन्तान मे होते हैं।

योग्य सन्तान

योग्य सन्तान उत्पन्न करने के लिये पति पत्नी दोनो योग्य और आरोग्य तथा प्रसन्न चित्त, एक दूसरे से हृदयसे प्रेम रखने वाले हो इस प्रकार सभोग होने से सन्तान उत्तम होती है आयुर्वेद उत्तम सन्तान के लिये अनेकों साधन बतलाता है।

जितने नियम उत्तम सन्तान के लिये आयुर्वेद मे बतलाए गये है उसके अनुसार तो करना बड़ा ही कठिन है जब कि कामान्ध पुरुष साधारण नियमो का भी पालन नहीं करते और विषयाग्नि की शान्ति के लिये अनेक प्रकार के आसनो की खोज मे रहते हैं।

सभी पुरुष एक से नही होते सैकडा पीछे एक दो ऐसे भी अवश्य मिलेगे जो नियम पूर्वक सन्तान उत्पन्न करने की इच्छा रखते हैं और उत्तम सन्तान उत्पन्न करने के नियमो की खोज मे रहते है। जिस प्रकार विषयी लोग आसनो की खोज मे रहते हैं उसी प्रकार वे भी उत्तम और आरोग्य सन्तान उत्पन्न करने के लिये आयुर्वेद के नियमो की खोज मे रहते है। मेरे पास दोनो प्रकार की पुस्तको के लिये प्रतिदिन बीसो पत्र आया करते है इसलिये मै यहां उत्तम और आरोग्य सन्तान उत्पन्न करने के नियम आयुर्वेद के अनुसार लिखती हू और यह आशा रखती हू कि इन नियमो पर चलने से उन कामान्ध लोगो को भी आरोग्यता और उत्तम सन्तान की प्राप्ति होगी जो अनेक प्रकार की मनगढंत पुस्तके पढ़कर विषयाग्नि की शान्ति के लिये उलटे सुलटे अनेक प्रकार के आसनो से पति पत्नी दोनो रोगी होकर निर्बल दुर्बल सन्तान उत्पन्न करते है।

आरोग्यता और उत्तम सन्तान

दाम्पत्य प्रेम स्वर्ग का भी बहूमूल्य पदार्थ है। दाम्पत्य प्रेम केवल रतिसुख के ही लिये नही किन्तु मनुष्य जीवन का सच्चा

सुख और आनन्द भोगने के लिये, उत्तम सन्तान उत्पन्न करने के लिये उत्तम आदर्श स्वास्थ्य रखने के लिये है। जो अज्ञानी पुरुष केवल रतिसुख को ही जीवन का सुख मानते हैं वे संसार मे आकर इस जीवन मे कुछ नही करते। कुछ दिन मे रतिसुख से उन्हे इतने अधिक दुःख उठाने पडते है कि वे पछताते और स्वय कहते हैं कि जीवन व्यर्थ है क्योकि मेरे पास ऐसे रोगी पुरुषो की लाखो चिट्ठिया अब तक आ चुकी हैं और अनेक चिट्ठियां प्रतिदिन आया करती हैं। उन्होंने विवाह होते ही रतिसुख को ही जीवन का सर्वस्व समझकर अनियम रतिक्रिया करके अपनी निरपराध प्यारी पत्नी को अनेक रोगो का घर बना दिया और आप भी रोगी हो गये तथा सन्तान भी रोगी निर्बल और दुर्बल उत्पन्न हुई।

महात्मा भर्तृहरि जी ने ठीक कहा है—

> भोगा न भुक्ता वयमेव भुक्ता-
> स्तपो न तप्तं वयमेव तप्ताः।
> कालो न यातो वयमेव याता-
> स्तृष्णा न जीर्णा वयमेव जीर्णाः॥

अर्थात् हमने विषयो को नही भोगा परन्तु विषयो ने ही हमारा भुगतान कर दिया अर्थात् विषयवासना को हमने खतम नही किया उसने ही हमारा खातमा करदिया, हमने तप न तपा परन्तु

तप ने ही हमे तपा डाला, काल व्यतीत नही हुआ परन्तु काल ने हमे बिता दिया अर्थात हमारी उम्र बीत गई, तृष्णा पुरानी नहीं हुई परन्तु हम ही पुराने हो गये।

और भी शास्त्रकारो ने कहा है'—

न जातु कामः कामानामुपभोगेन शाम्यति ।
हविषा कृष्णवर्त्मेव भूप एवाभिवर्द्धते ॥

मनुष्य की विषय भोगो से शान्ति नही होती इसका ऐसा प्रभाव है कि इसमे जितनी ही मनुष्य तृप्ति की इच्छा करता है उतनी ही इच्छा और भी अधिक प्रबल होती जाती है।

मनुष्य की कामाग्नि उस अग्नि की समान है कि जिसमे चाहे जितना घी डालते जाओ परन्तु अग्नि और भी अधिक तेज होती है, कम नही होती। अग्नि की शान्ति नही होती और असख्य मन घी स्वाहा हो जाता है इसी प्रकार मनुष्य का यह असंख्य धन से भी कीमती जीवन कामाग्नि की तृप्ति मे ही भस्म हो जाता है।

मेरे पास ऐसी रोगी स्त्रियो के प्रति दिन बीसो पत्र आया करते है कि जिनके पतियो ने अनियम रतिक्रिया करके थोडी ही अवस्था मे अपने शरीर का सत्यानाश मार लिया है इसी के कारण क्षय आदि भयकर रोगो मे न जाने कितने नवयुवक दम्पति काल का कलेवा बनते जारहे हैं और बनेगे।

शूलकासज्वर श्वासकार्श्यपांडूवामयक्षया ।
अतिव्यवायाजायंते रोगश्चाक्षेपकादयः ॥

अर्थात् अधिक मैथुन करने से शूलरोग, खांसी, ज्वर, श्वास रोग, दुर्बलता, पांडुरोग और सब रोगो का दादा क्षय (तपेदिक) और अनेक प्रकार के वात सम्बन्धी रोग उत्पन्न होते हैं और इन रोगो के कारण और भी भयकर रोग उत्पन्न होजाते हैं। क्षय (तपेदिक) ही एक ऐसा रोग है कि बिना प्राणनाश किये पीछा नहीं छोड़ता। यही कारण है कि हमारे देश मे तपेदिक अधिक होता है यह असाध्य रोग है जो रोग युवको को ही अधिक होता है। क्षय रोग से ग्रसित अधिकतर स्त्रियां देखी जाती हैं क्योंकि क्षय रोग वाली स्त्रियां भी मेरे पास अधिक आती हैं और चिट्ठियां भी इस प्रकार के रोगी स्त्री पुरुषों की अधिक आती हैं परन्तु क्षयी रोगी के ठहराने के लिये मेरे पास कोई उत्तम स्थान नहीं है इसलिये ऐसी रोगी स्त्रिया ठहराई नहीं जाती।

रतिक्रिया विज्ञान और उत्तम सन्तान

वेद और धर्मशास्त्रों से दाम्पत्य प्रेम और सन्तान के लिये रतिक्रिया करने का नियम पीछे लिखा जा चुका है। दाम्पत्य प्रेम का इतिहास और महत्व मे शिवजी, श्रीकृष्ण और श्रीरामचन्द्र तथा महाराजा रामचन्द्र के बाबा (दशरथ के बाप) का दाम्पत्य प्रेम सचित्र लिखा जा चुका है। अब यहां आयुर्वेद से गर्भाधान क्रिया और उत्तम सन्तान उत्पन्न करने की विधि बतलाई जाती है।

जिस प्रकार उत्तम फल अन्न आदि की उत्पत्ति की उत्तमता के लिये उत्तम खेत और उत्तम बीज की आवश्यकता होती है इसी प्रकार बल्कि उससे भी अधिक उत्तम सन्तान उत्पन्न करने के लिये उत्तम खेत रूपी स्त्री का रज और बीज रूपी पुरुष को वीर्य की अत्यन्त आवश्यकता हुआ करती है।

जिस प्रकार खेत मे बीज बोने के कुछ दिन पहिले से ही किसान खेत को ठीक बनाता है और उसमें खाद आदि उत्तम अन्न उत्पन्न होने के लिये डालता है और जब खेत ठीक होजाता है तब उत्तम बीज जिसमें कीडे न लगे हों घुना सड़ा सूखा न हो अर्थात् किसी प्रकार की खराबी न हो ऐसा बीज बोता है। बीज बो देने पर भी उसका अनेक प्रकार से उत्तम होने का उपाय करता है और बीज बो देने पर तथा पौधा निकल आने पर भी अनेक प्रकार की बाधाएं होती हैं उनसे भी पौधे की रक्षा करता है।

जो किसान मूर्खता अथवा आलस्यवश खेत बोने के पूर्व ले इन बातों का ध्यान नही रखता वह सिवाय पछताने के और कुछ नही कर सकता इसी प्रकार जो पुरुष उत्तम सन्तान उत्पन्न करने का पहिले से ही ध्यान नही रखते वे रोगी और अल्पायु सन्तान होने पर पछताते हैं। इसी कारण हमारे देश के बालकों की रोगी तथा मृत्यु संख्या अधिक है।

सम्भव है इसका उपाय लोग जानते ही न हो क्योंकि और बातों की तरह गर्भाधान की उचित क्रिया जानना भी उत्तम सन्तान के लिये अत्यन्त आवश्यक है।
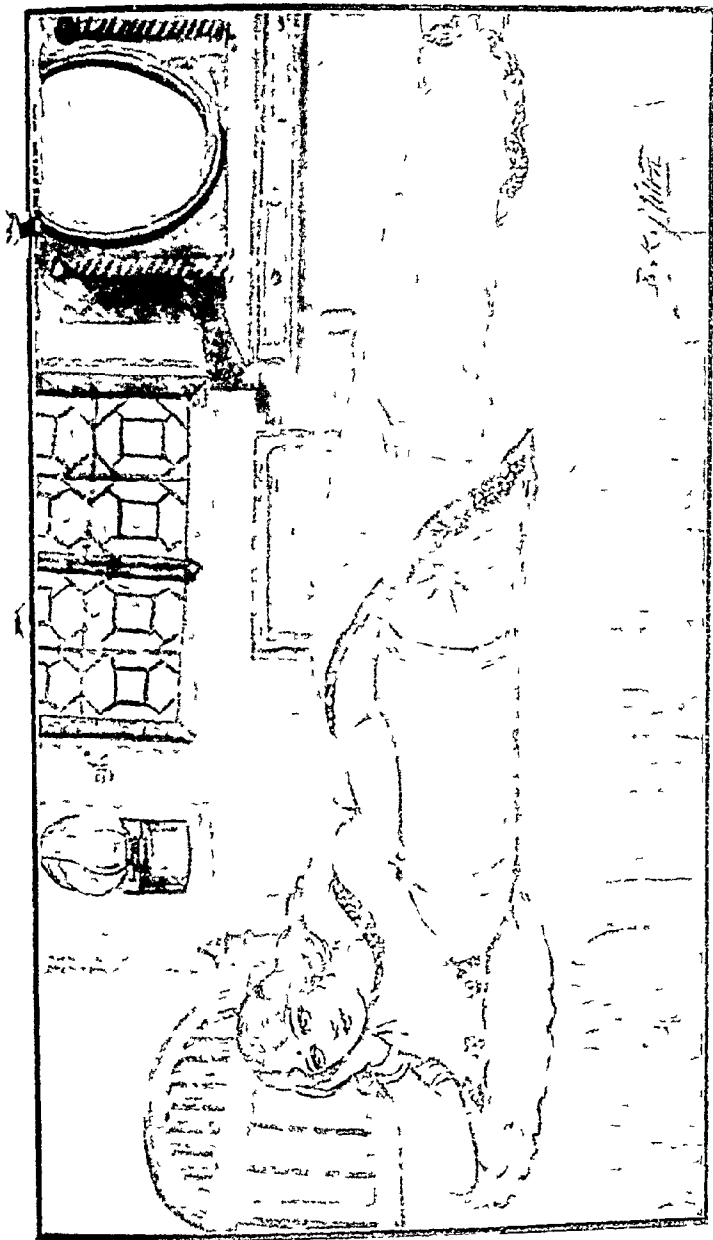
ऋतुस्नाता स्त्री पति की प्रतीक्षा में । पृ० १९८

कष्ट उ.। चुकी थी जब से मैंने उन्हे उपाय बतला दिये और चिकित्सा करके ठीक कर दिया तब से उनके बालक ठीक होने लगे और वे हृष्ट पुष्ट हैं।

रज वीर्य के दोषो के कारण जिनके कभी गर्भ रहा ही नही था, जो सन्तान हीन थी, सन्तान के दुःख से रो रोकर जीवन व्यतीत कर रही थी, मेरे बताए उपाय और चिकित्सा से उनके सन्तान होने लगी। ऐसी एक दो नही हजारो स्त्रियां मौजूद हैं।

जिनके नियम विरुद्ध अधिक संभोग के कारण सन्तान नही होती थी उनको ब्रह्मचर्य से रहकर औषधियो का सेवन कराया गया, सन्तान होने लगी। इस प्रकार हजारो स्त्रियों के जो वन्ध्या थी जिनके कभी गर्भ रहा ही न था, सन्तान होने लगी।

यह मेरे अनुभव की बात है। मैं आयुर्वेद की रीति से देशी चिकित्सा करती हू। आयुर्वेद के अनुसार ही रोगो का निदान करती हूं, स्त्रियां तो मेरे पास स्वय आकर अपने रोगो की परीक्षा ... चिकित्सा कराती हैं। जो नही आसकती वे अपने रोगो का पूरा हाल लिखती हैं। उनके रोगो का निदान और इलाज उसी हाल से घर बैठे ही औषधि भेजकर करती हू, इस प्रकार स्त्रियो की जो शिकायतें होती हैं दूर होजाती है।

पुरुषो के रोगो की परीक्षा और चिकित्सा के लिये मैंने आयुर्वेद के अनुसार रोगो का निदान जानने के लिये एक फार्म ४० चालीस प्रश्नो का तैय्यार किया है वही भेजती हूँ। उसे भरकर अर्थात् कुल प्रश्नो का उत्तर लिख देने से पुरुष रोगियो के रोगो की भी परीक्षा

ठीक ठीक होजाती है, औषधिया पारसल से भेज दी जाती है इस प्रकार पुरुष रोगी भी आराम होजाते हैं।

जिस प्रकार उत्तम खेती के लिये पहिले खेत का उत्तम बना-लेना अत्यन्त आवश्यक है उसी प्रकार उत्तम सन्तान उत्पन्न करने के लिये गर्भाधान क्रिया के पहिले स्त्री रूपी खेत को उत्तम (आरोग्य) बना लेने की आवश्यकता है अर्थात् रोगी स्त्री को आरोग्य कर शुद्ध आर्तव (रज) की आवश्यकता है।

पुरुष दोष तथा स्त्रियों के आहार विहार के अनियम से उत्पन्न होने वाले स्त्री रोग

पुरुषो की अज्ञानता असावधानी और विषय लोलुपता के कारण स्त्रियो के शरीर मे नाना प्रकार के रोग उत्पन्न होजाते हैं इनमे से अनियम और अधिक स्त्री प्रसंग से उत्पन्न होने वाले रोगो की सख्या अधिक है, स्त्री रोगो मे ऋतु का अनियम होना सबसे बड़ा रोग है क्योंकि इससे ही स्त्रियो मे अन्य अनेक प्रकार के भयकर रोग उत्पन्न होजाते हैं।

स्त्री पुरुष दोनो आरोग्य हो तो आयुर्वेद के अनुसार उत्तम सन्तान उत्पन्न करने के लिये नियम पूर्वक जैसा कि आयुर्वेद बतलाता है गर्भाधान क्रिया अर्थात् स्त्री सम्भोग करना चाहिये।

सन्तान

उत्तम सन्तान उत्पन्न करने के लिये सभोग करने की विधि पीछे बतलाई गई है उसी विधि से पुरुष स्त्री के पास जावे। अन्यत्र चित्र में देखो, स्त्री पलग पर लेटी है, पति सफेद वस्त्र धारण कर माला हाथ मे लिये स्त्री के पास खड़ा है। इस प्रकार पति स्त्री के पास शय्यापर जाकर अनेक प्रकार से प्यार कर आलिगन चुम्बन द्वारा स्त्री को प्रसन्न करके उसकी इच्छा उत्पन्न करे। पति के सच्चे प्यार से ही स्त्री की इच्छा पूरी होजाती है। यह प्यार ही ऐसा अमूल्य और सर्व श्रेष्ठ उपाय है कि केश पकड़ने नाखून से नोचने खसोटने की आवश्यकता नहीं है। जैसा कि आजकल की अनेक मनगढ़त पुस्तकों मे पाया जाता है।

चौरासी आसन मनगढ़ंत हैं

प्रकृति का बताया हुआ सर्वश्रेष्ठ आसन सब से उत्तम और उत्तम सन्तान उत्पन्न करने वाला आसन जिसे मनुष्य मात्र जानते हैं और जिससे स्त्री प्रसन्न होकर संभोग से तृप्त हो गर्भ-धारण करती है। वह आसन है स्त्री को सीधा लिटाकर पुरुष को भी ठीक सीध मे लेटना और सभोग करना।

आलिंगन चुम्बन और प्यारी बातों से जब स्त्री की इच्छा हो स्त्री के नेत्रों मे कुछ आलस्य सा प्रतीत हो तब पति को सभोग मे प्रवृत्त होना चाहिये, इस कार्य मे मूर्खतावश जल्दी नही करनी

चाहिये । पति पत्नी दोनो के विचार उत्तम सन्तान उत्पन्न करने के होने चाहिये । पति पत्नी के मुह को और पत्नी पति के मुह को ध्यान पूर्वक वडे स्नेह और प्यार से देखे ।

एक दूसरे को प्यार की दृष्टि से देखने मे मग्न होजावे संसार की अन्य सब बाते चिन्ता शोक इत्यादि भूल जावे । सम्भोग के समय कुछ मूर्खों का मत है जो आयुर्वेद के नियमों को न जानकर मनगढ़त बाते पुस्तको मे लिख डालते हैं और पाठको के धोखे मे डालते हैं । वे लिखते हैं—

"प्रसग के समय अपने मन को पुरुष कही जंगलो में लेजाकर भटकने दे अथवा बन्दर वडा चचल जीव है अपने मन मे सम्भोग करते वक्त किसी बन्दर का ध्यान करे कि एक बन्दर किसी वृक्ष पर बैठा इधर उधर वृक्ष की शाखाओ पर कूद रहा है अथवा इसी प्रकार के अन्य खिलाडी चंचल जीवो मे ध्यान लगादेवे या किसी ऐसी बात को विचारने लगजावे कि जिसमें चित्त उलझ जावे । इस प्रकार चित्त को स्त्री प्रसग से हटा कर कहीं दूसरी जगह फंसा देने से पुरुष जल्दी स्खलित नही होता"।

पाठको ! देखा आपने पुस्तक लेखको की बुद्धिमानी और मनगढ़ंत कामशास्त्र ! उन्हे अभी इस बात की कुछ भी खबर नही है कि संभोग के समय पुरुष के जैसे विचार होगे वैसे ही विचार और आकृति वाला बालक उत्पन्न होगा । भला विचार तो कीजिये ऐसी बुद्धिमानी की वलिहारी है । फिर भला सन्तान बन्दर प्रकृति की न हो तो क्या हो । सन्तान मूर्ख न हो तो क्या हो ! क्योंकि

सभोग के समय व्यर्थ की बातो का विचार करना सन्तान को उसी प्रकार का बनाना है ।

लिखा है "इस उपाय से पुरुष स्खलित न होगा । स्त्री पहिले हो जावेगी तब बड़ा आनन्द आवेगा इत्यादि।" वाहरी मूर्खता ! क्षणिक आनन्द के लिये और स्त्री को स्खलित करने के लिये कैसे कैसे उपाय वाली पुस्तके प्रकाशित होरही हैं !

और सुनिये एक और ऐसी ही पुस्तक मे लिखा है— "अनेक उपाय करने पर भी यदि वीर्य स्तम्भन न हो, स्खलित होने का समय आही जावे तो कुछ देरी के लिये प्रसंग करने से रुक जावे । थोड़ी देरी बाद फिर आरम्भ करे। इसी प्रकार जब वीर्य स्खलित होने का समय आवे तभी रुक जावे । इस अद्भुत उपाय से पुरुष जितनी देरी तक चाहे उतनी देरी तक स्तम्भन कर सकता है ।"

पाठको ! यह बुद्धिमानी देखिये । इसके लेखक महाशय को यह पता नही कि निकलते हुये वीर्य को रोकने से कितनी अधिक स्वास्थ्य को हानि होती है। मूत्रकृच्छ्र, पथरी आदि अनेक रोग होजाते है। यही नही और भी भयकर रोग उत्पन्न होते है। बलिहारी है इस बुद्धिमानी को कि स्त्री के स्खलित करने के लिये तथा क्षणिक आनन्द के लिये और स्त्री से अपनी वीरता का सार्टीफिकेट लेने के लिये अपने शरीर का सत्यानाश मारलेना और फिर पुस्तक लेखको के नाम को जीवन भर रोना। ऐसी पुस्तको और लेखकों से ईश्वर बचावे ।

जरा और एक ऊंचे दिमाग वाले महाशय का विचार सुनिये एक पुस्तक मे लिखते हैं.—

“जब पुरुष समझे कि वीर्य का स्तम्भन नही होता निकलना ही चाहता है तब अपने हाथ की दो अगुलियो से अपनी इन्द्री के नीचे और गुदा के ऊपर बीच के स्थान मे जो वीर्यपात करने वाली नस है उसे खूब जोर से दबा रक्खे इस प्रकार वीर्य स्खलित न होगा बाहर निकलता हुआ भी भीतर लौट जावेगा। और सभोग वाले की इच्छा पूरी होगी।”

इस प्रकार जब वीर्य स्खलित होने को हो तब लौटाल देवे इस उपाय से चाहे जितनी देरी तक वीर्य को स्तम्भन कर सकता है। यह भी न हो सके तो संभोग करने के शुरू से ही उस नस को पकड़े रहे इत्यादि। ये सब बाते कितनी भद्दी और अनुचित हैं। पुस्तको के लेखक या मूढ पुरुष समझते हैं कि इस प्रकार वीर्य स्खलन करने से तो बस बैकुण्ठ का दरवाजा ही खुल जायगा और स्त्री स्खलित होकर पति की वीरता और मर्दानगी के बड़े बडे सार्टीफिकेट पुरुष को देदेगी, तमाम पत्रो मे पति की वीरता का समाचार प्रकाशित करादेगी।

दुःख है ऐसे ऐसे घृणित और हानिकारक प्रयोगो के उपायो की पुस्तके प्रकाशित हो रही है। यदि मैं इस प्रकार के स्तम्भन की हानि से जो जो रोग पुरुषो को उत्पन्न होते हैं उनका पूरा हाल लिखू तो यह एक वैद्यक की बडी पुस्तक बन जायगी इसलिये अधिक लिखना नही चाहती। थोडे मे ही समझ लेना चाहिये।

सावधान

ऐसे हानिकारक उपाय कभी नही करना चाहिये। निकलते हुए वीर्य को भूलकर भी किसी अज्ञानी की बातो मे आकर रोकना नही चाहिये।

जो उपाय ऊपर बताया गया है उसी के अनुसार स्त्री को पूरी तरह से सच्चे स्नेह, हृदय से प्यार करके, स्त्री के प्रसन्न होने पर संभोग आरम्भ करना चाहिये और एक दूसरे मे ध्यान लगाकर चिन्ता रहित हो खूब प्रसन्नता से भली भांति संभोग करना चाहिये।

यहां एक बात और ध्यान देने योग्य है। यदि पति को किसी प्रकार का वीर्य दोष नहीं है, गरमी सुजाक प्रमेह कुछ नही है तो ऊपर के उपाय से संभोग करने से स्त्री की अवश्य तृप्ति होगी इस बात की भूलकर भी कोशिश नही करनी चाहिये कि स्त्री हमसे पहिले स्खलित हो परन्तु इस बात का अवश्य ध्यान रखना चाहिये कि दोनो साथ स्खलित न होने पावे यदि स्त्री पति के बाद स्खलित होगी तो गर्भ रहने पर कन्या उत्पन्न होगी और पति पहिले स्खलित होगा तो पुत्र उत्पन्न होगा।

ध्यान रखना चाहिये, यदि पति मे वीर्य क्षीणता प्रमेह गरमी सुजाक आदि रोग हैं तो जब तक रोग दूर न हो संभोग करना ही नहीं चाहिये, परन्तु इस बात के मानने वाले बहुत कम पुरुष हैं।

रोगी पुरुष स्त्री की तृप्ति कभी नही कर सकते और इन मूर्खता के उपायो से भी जो आज कल की कामशास्त्र सम्बन्धी पुस्तको मे वतलाये गये है नही कर सकते।

रोगी पुरुषो की स्त्रियां भी प्राय: रोगी रहती है और इस प्रकार मूर्खता से सभोग करने वाले पतियो की स्त्रियां भी रोगी रहती हैं। रोगी स्त्रियो के साथ सभोग करना स्त्रियो के साथ वड़ा भारी अत्याचार करना है और अपने पैरो मे आप कुल्हाडा मारना है।

इसलिये आरोग्य पति पत्नी ही सभोग के अधिकारी है और आरोग्य पति ही स्त्री की इच्छा पूरी कर सकता है।

संभोग के समय जल्दी करने से स्त्री पुरुष दोनो को हानि पहुचती है और यही कारण है जो पुरुपो को इस मूर्खता के कारण अनेक प्रकार के स्तम्भन उपाय ढूढने पड़ते है। मूर्ख विषयी पुरुष चाहते है कि हम घटो तक प्रसग करते रहे। परन्तु प्रकृति भी ऐसा करने से रोकती है। इसका नियम यही है कि जिस समय ऋतुस्नान के समय स्त्री की प्रबल इच्छा हो उस समय सभोग किया जावे तो स्त्री की इच्छा पूरी होगी। किसी उपाय की आवश्यकता नही है। वगैर स्त्री की इच्छा हुए गर्भ रहता ही नही, यह वात किसी पुस्तक लेखक को मालूम नही है। यदि मालूम होती तो इतने मनगढ़त उपाय लिखने की आवश्यकता न पड़ती और पाठक धोखे मे न पड़ते।

यह वात दूसरी है कि स्त्री पुरुष दोनो रोगी हो। गर्भाशय मे कुछ खरावी हो तो गर्भ न रहे। मासिक धर्म्म के दिनो के

दाम्पत्य प्रेम का सुखमय परिणाम। पृ० २५१

बाद गर्भाशय का मुख बन्द होजाने पर संभोग होने से भी गर्भ नहीं रहता।

वैद्यकशास्त्र बतलाता है:—

तत्र स्त्री पुंसयोः संयोगेतेजः शरीराद्वायुरुदीरयति। ततस्तेजोनिलसन्निपाताच्छुक्रंच्युतं योनिमभि-प्रतिपद्यते संसृज्यतेचार्त्तवेन ॥

अर्थात्—स्त्री पुरुष के संयोग में आपस के प्रेम सम्पादन करने और सच्चे प्रेम में मग्न हो आनन्दित होकर संभोग करने से स्त्री पुरुष दोनों की इन्द्री के आपस में संघर्षण के द्वारा उत्पन्न हुई ऊष्मा (गर्मी) से वायु शरीर से उठता है उस रगड़ की गरमी के तेज से पुरुष का वीर्य पतला होकर वायु की सहायता से अपने स्थान से चलकर गर्भाशय के मुख में गिरकर गर्भाशय में जाकर स्त्री के आर्तव में मिल जाता है। इस प्रकार पुरुष का वीर्य स्त्री के आर्तव में मिलने से गर्भरूप धारण करता है।

सन्तान पर दाम्पत्य प्रेम का प्रभाव

सुन्दर और हृष्ट पुष्ट सन्तान उत्पन्न करने के लिये पति पत्नी का प्रेम बड़ा भारी कारण है, जादू कैसा असर रखता है। परन्तु यह प्रेम सच्चा होना चाहिये। सच्चा प्रेम सुन्दर रूप रंग पर निर्भर नहीं है। सौन्दर्य कुछ और है प्रेम कुछ और। कुरूप पत्नी के भी सुन्दर सन्तान होती देखी जाती है। सब विचारों की बात है।

प्रेम मे एक बड़ी भारी विचित्रता है, प्रेम का बड़ा भारी महत्व है। यह बात नही है कि सुन्दर स्त्री हो तभी पति का उस पर प्रेम हो तथा सुन्दर पति हो तभी पत्नी प्रेम करे। जिस प्रेम मे रग रूप का भेद भाव रखकर प्रेम होता है वह प्रेम नही कहा जा सकता।

ऐसा स्वार्थी प्रेम, प्रेम नही है। वह स्वार्थ का ही प्रेम है। इसलिये ऐसे दम्पति जो केवल सुन्दरता का विचार करके प्रेम करते हैं वे महा मूर्ख हैं। उनकी सन्तान सुन्दर कदापि नही हो सकती। सच्चे प्रेम से पति पत्नी का हृदय एक हो जाता है। विचार एक हो जाते हैं। इस प्रकार परस्पर प्रेम करने वाले दम्पति सुन्दर सन्तान उत्पन्न करते हैं।

गर्भाधान के समय दाम्पत्य प्रेम का बड़ा ही सच्चा प्रभाव पड़ता है इसी से रूपवान गुणवान सन्तान उत्पन्न होती है। किसी की पत्नी यदि रूपवती न हो अथवा किसी का पति सुन्दर न हो तो उसे रूपवान, गुणवान, सन्तान उत्पन्न करने की निराशा नहीं होनी चाहिये। आपस मे सच्चा प्रेम होना चाहिये पति को अपनी कुरूप स्त्री को सुन्दर रूपवती समझ कर प्रेम करना चाहिये और उसी प्रकार पत्नी को भी अपने कुरूप पति को सर्व श्रेष्ठ रूपवान समझ कर प्रेम करना चाहिये।

प्रेम के प्रभाव से कुरूप पति पत्नियो के भी सुन्दर गुणवान सन्तान हो सकती है और प्रेम न होने से रूपवान गुणवान दम्पति के भी कुरूप और मूर्ख सन्तान उत्पन्न होती है। इस

प्रकार जो पति पत्नी सुन्दर न होने पर भी सुन्दर सन्तान उत्पन्न करने की इच्छा रखते हो उन्हे परस्पर सच्चे प्रेम से ही गर्भाधान क्रिया करनी चाहिये।

एकवार मेरे पास इलाज के लिये एक स्त्री आई उसके साथ मे एक लड़की थी और एक लड़का भी चार पांच वर्ष का था लड़की दो वर्ष की थी। वह स्त्री सुन्दर थी, पजाव की रहने वाली थी। मैंने उसकी लड़की को देख कर हसी मे कहा कि आप तो वड़ी सुन्दर हैं यह लड़की कैसी कुरूप पैदा की है ? तव वह हसकर कहने लगी। न जाने क्या वात है लड़का मेरे ही रग रूप का है यह लड़की वदसूरत हुई है। आपही वतलावे क्या कारण है ?

इस प्रकार वातचीत होरही थी इतने ही मे उसकी नौकरानी जो वाहर वैठी हुई थी उस स्त्री को वुलाने आई। उसके पति ने कुछ पूछने को वाहर वुलाया था। जव वह नौकरानी मेरे सामने आई तो मैंने देखा उस नौकरानी और उस लड़की की जिसके वावत मुझसे वातचीत होरही थी, सूरत विलकुल मिलती थी मैंने नौकरानी को देखकर कहा, देखिये आपकी लडकी नौकरानी की शक्ल की है। जव आपको यह लडकी गर्भ मे थी तव यह नौकरानी हर समय आपके पास रहती होगी। उस स्त्री ने हस कर कहा—हां देवी जी! यह वात तो वहुत ठीक आपने वतलाई। जव यह लडकी गर्भ मे थी तव मै बीमार होगई थी तभी यह नौकरानी रक्खी गई थी। कोई और स्त्री मेरे

पास रहने के लिये घर मे नही थी। मेरे पति दफ्तर चले जाते थे यह मेरे पास हर वक्त बैठी रहती थी।

मैंने उस स्त्री से कहा, अब गर्भ की दशा मे कभी इसे अपने पास मत रखना नही तो अब जो बालक होगा वह भी ऐसा ही काला कलूटा बदशक्ल इसी लडकी की तरह होगा, वह स्त्री हंसने लगी और बोली—देवी जी! मुझे यह बात मालूम न थी।

एक और दूसरी स्त्री मेरे पास इलाज के लिये आई। उसके लड़के का कान बहता था। लडके की अवस्था सात आठ महीने की थी। मैंने उससे पूछा, इसका कान कब से बहता है क्योंकि कान से मवाद आता है? उस स्त्री ने कहा, जब से यह पैदा हुआ है इसी तरह कान से मवाद आता है। मैंने उससे पूछा, जब यह गर्भ मे था तब आपके कान मे कोई शिकायत तो नही थी? उस स्त्री ने कहा, जब यह पैदा नही हुआ था तब मेरे कान मे फुड़िया निकली थी, कान बहने लगा था। यह शिकायत मुझे कई महीने तक रही। जब यह गर्भ मे था तब भी कई महीने तक कान मे तकलीफ रही, डाक्टरी इलाज होता रहा। गर्भावस्था मे भी पिच-कारी से कान धोया जाता था, फिर अच्छा होगया। अब मुझे जब से यह पैदा हुआ है कान की कोई शिकायत नही है।

मैंने उस स्त्री से कहा, बस यही बात है जब यह गर्भ मे था तब आपका कान बहता था बल्कि गर्भ रहने के पहिले ही आपके कान मे शिकायत थी इसीलिये वही असर लड़के मे आगया है। इस लड़के का कान बहना बडी कठिनाई से दूर तो होजावेगा

परन्तु उसकी जड़ नहीं जावेगी। कुछ न कुछ शिकायत कान की इसे उम्र भर रहेगी। मैंने दवा बतला दी और कह दिया कि अधिक दिन तक इलाज करने से फायदा होगा। वह स्त्री दवा लेकर अपने घर चलीगई।

एक स्त्री मेरे पास इलाज के लिये आई उसकी एक लड़की जिसकी अवस्था छै, साल की थी कुछ कुछ पागल होगई थी उसी लड़की के इलाज के लिये वह स्त्री मेरे पास आई थी, मैंने उस लडकी का हाल पूछा कि इसकी यह दशा कितने दिन से है ? उस स्त्री ने कहा कि यह कुछ सनक मिजाज की कई वर्ष से मालूम होती थी अब जिस प्रकार बडी होती जाती है वैसे ही इसका मिजाज सनकी होता जाता है। मैंने उस स्त्री से पूछा कि जब यह लडकी गर्भ मे थी उस समय आपके यहां कोई सनकी मिजाज का मनुष्य तो नही था ? उस स्त्री ने कहा, मेरी भौजाई पागल थी जब मै गर्भवती हुई तब मेरे पति ने मुझे मेरे पिता के यहां भेज-दिया। मै गर्भावस्था मे बराबर पिता के यहां रही और वही यह लड़की पैदा हुई।

मेरी भौजाई पागल थी मै उसे खाना खिलाती कपड़े पहिनाती। वह कपड़े उतार कर फेंक देती थी तो मैं बार बार कपड़े पहिनाती थी उसकी सेवा करती थी। वह दस पन्द्रह दिन को कभी कभी अच्छी भी होजाती थी।

मैंने कहा—यही कारण इस लडकी के सनकी होने का है इसका कोई इलाज नहीं है इसका आराम होना कठिन है। मैंने

पूछा-आपकी भौजाई अभी है या नहीं ? उसने कहा भौजाई अभी जिन्दा है और भौजाई का अब यह हाल है कि जब वह गर्भवती होजाती है तो जब तक बालक पैदा नही होता तब तक बिलकुल अच्छी रहती है। नाम मात्र को भी पागल पन नही रहता, मेरी भौजाई बड़ी चतुर और गृहस्थी के कामकाज मे परिश्रम करने वाली पढ़ी लिखी स्त्री है। गर्भावस्था मे सब काम ठीक करती है। बालक होते ही कुछ दिन बाद फिर पागल होजाती है। बच्चो की परवरिश के लिये गाय का दूध पिलाया जाता है उसके पास तक बच्चो को नही जाने दिया जाता।

मैंने कहा इसी प्रकार यह तुम्हारी लड़की भी होगी। इसका आराम होना तो कठिन है।

इसप्रकार के सैकड़ो उदाहरण मेरे देखने मे आये हैं क्योंकि सभी प्रकार की स्त्रियां रोगी निरोगी प्रतिदिन आया करती हैं। इस विषय को अधिक उदाहरण देकर बढ़ाने से पुस्तक बहुत बड़ी होजायगी। इस विषय मे कहना यही है कि माता पिता के शरीर मे किसी प्रकार का रोग न हो और दोनो प्रसन्न चित्त हो और सभोग के समय दोनो की प्रबल इच्छा सम्भोग करने की हो तभी सन्तान आरोग्य होती है। रोगी माता पिता की सन्तान भी रोगी होती है। गर्भ रह जाने पर भी गर्भवस्था मे गर्भवती को बडी सावधानी से रहना चाहिये। गर्भावस्था मे भी जैसे आचार व्यवहार किये जाते हैं उसका प्रभाव सन्तान पर पड़ता है। सन्तान के उत्पन्न होने तक माता के विचारो का असर सन्तान पर पड़ता है।

सन्तान पर माता पिता के रोगों का प्रभाव

जिस प्रकार गर्भावस्था में गर्भवती के आचार विचार तथा अन्य कामो का प्रभाव सन्तान पर पडता है उसी प्रकार माता पिता के रोगो का भी प्रभाव सन्तान पर पड़ता है। यह प्रभाव ऐसा भयंकर होता है कि माता पिता की अज्ञानता और मूर्खता से सन्तान का जीवन नष्ट होजाता है। सन्तान जीवन पर्यन्त कष्ट भोगती है और वहुतेरे वच्चे गर्भ मे ही तथा उत्पन्न होते ही काल का कलेवा वनजाते हैं।

शुद्ध रज वीर्य से उत्तम सन्तान

शुद्ध रज वीर्य से उत्तम और आरोग्य तथा दीर्घजीवी सन्तान उत्पन्न होती है और दूषित तथा रोगी रज वीर्य से अनेक दोषो वाली तथा रोगी सन्तान उत्पन्न होती है। इस कारण यहां मै शुद्ध रज वीर्य और रज क्या है, वीर्य क्या है, स्त्री और पुरुष के रजवीर्य तथा जननेन्द्रियो मे किस प्रकार रोग उत्पन्न होते है और उनका प्रभाव सन्तान पर कैसा पडता है इस विषय को प्रसगानुसार लिखूंगी।

सन्तान होने में वाधक रोग

वीर्य को अधिक व्यय करने से प्रमेह रोग उत्पन्न होता है। जो अज्ञानी पुरुष वाल्यावस्था मे कुसंगति मे पड़कर अपने वीर्य

को अपने हाथ से नष्ट करते हैं उसे हस्तमैथुन कहते हैं। आगे चलकर जवानी मे उन्हे २० बीस प्रकार के प्रमेहों में कोई सा प्रमेह उत्पन्न होता है। प्रमेह वीर्य सम्बन्धी बड़े भारी रोगो मे एक रोग है। वैद्यक शास्त्र बतलाता है कि प्रमेह रोग स्वभाव से ही महादुष्ट रोग है। इस कारण इसका इलाज बड़ी सावधानी से करना चाहिये। प्रमेह रोग मे पुरुष की जान से प्रकट रूप मे कोई विशेष कष्ट तो शुरू मे होता नही क्योंकि स्वप्न मे वीर्य निकल जाने से कोई तकलीफ मालूम नही होती, पाखाना फिरते समय जोर करने मे धातु निकलना कुछ भी दुखदाई नही प्रतीत होता, पेशाब के साथ धातु जाने मे भी कुछ दिक्कत नही होती। संभोग के समय शीघ्रपात होना इत्यादि किसी प्रकार के धातु विकार मे कुछ तकलीफ मालूम न होने से रोगी पुरुष कुछ भी परवाह नही करते और कुछ चिन्ता भी नही रहती। दुनियां के सभी काम रोते भींकते गिरते पडते चले ही जाते हैं।

रोग बढ़ते बढ़ते जब अधिक बढ जाता है और शरीर आलसी और असमर्थ होता मालूम होने लगता है तब कुछ २ चिन्ता होती है सो भी ऐसी नही कि लगाकर औषधि हो जिससे रोग दूर होजावे। प्रमेह मौजूद है और सहवास मे कमी न होने पावे यह विचार सदैव बना रहता है। औषधि मगाया करते हैं सो भी प्रमेह की नहीं, शीघ्रपात की। जिससे स्त्री प्रसन्न रहे। वे लोग महामूर्ख हैं जो प्रमेह रोगो को सरल समझ कर परवाह नही करते वे अपने पैरो मे आप कुल्हाड़ी मारते हैं। सन्तान भी वैसी ही होती है।

आनन्द मन्दिर
दसवां अध्याय
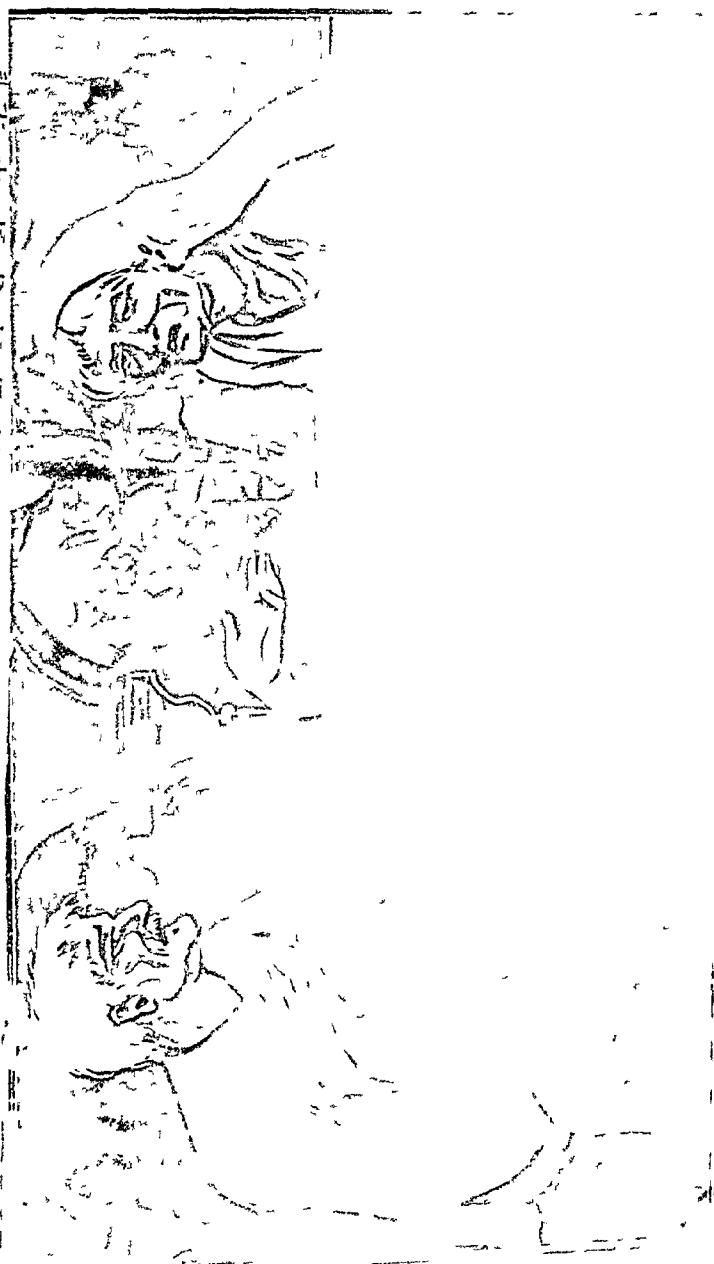
नपुंसकों की संभोग ~~~~~~~~~~

आसेक्यश्च सुगंधीच कुम्भीकश्चेर्ष्यकः ।
सरेतसस्त्वमीज्ञेया अशुक्रः पंडसंज्ञितः ॥

अर्थात्—आसेक्य, सुगन्धि, कुम्भिक, और ईर्ष्यक, इन चारों नपुंसकों में तो उत्तेजनात्मक वीर्य होता है परन्तु स्त्री की सी चेष्टा वाले नपुंसक में नहीं होता। इसका कारण यह है कि:—

अनयाविप्रकृत्यातु तेषांशुक्रवहाः शिराः ।
हर्षात्स्फुटत्वमायान्ति ध्वजोच्छ्रायस्ततो भवेत् ॥

अर्थात—पहिले कहे हुए चार नपुंसकों में वास्तव में तो वीर्य नहीं है परन्तु उनकी विरुद्ध चेष्टा (वीर्य भक्षण योनि और पुरुष इन्द्री का सूंघना, गुदा मैथुन और दूसरे को मैथुन करते देखना) इन कारणों से वीर्य न रहते हुए भी वीर्य वाली नाड़ियां हर्ष युक्त होकर फूल जाती हैं उसी से इन नपुंसकों की इन्द्री में चैतन्यता उत्पन्न होजाती है।

इसप्रकार की स्त्रियां नपुंसक भी देखी जाती हैं। मेरे पास इलाज के लिये सभी प्रकार की रोगी स्त्रियां आया करती हैं और २५ पचीस वर्षों में मैं लाखों स्त्रियों का इलाज कर चुकी हूं इनमें सभी प्रकार के रोगों वाली स्त्रियां देखी गईं। जो स्त्रियां मेरे पास इलाज के लिये आती हैं वे अपना सभी प्रकार का हाल खुलासा कह

...चिट्ठियां भी प्रतिदिन पचासों आया करती हैं। इन चिट्ठियों में भी अपने रोग का खुलासा हाल रोगी स्त्रियां लिख दिया करती हैं जो हाल रह जाता है मैं पत्र द्वारा पूछ लेती हूं। स्त्री पुरुषों की सब रोग सम्बन्धी चिट्ठियां गुप्त रक्खी जाती हैं मेरे सिवाय दूसरा कोई नहीं देख सकता इसलिये कोई रोगी स्त्री पुरुष मुझे अपने रोग का खुलासा हाल लिखने में सकोच नहीं करता।

रोगी स्त्रियों की जबानी हाल सुनने, उनके पत्रों से जानने तथा स्त्रियों की परीक्षा करने से आयुर्वेद में लिखे उपर्युक्त लक्षणों को मैंने बिलकुल सच पाया है इसीलिये अनुभव में आये हुये लक्षणों को सबको मालूम करने के लिये लिख रही हूं।

पुरुषार्थ हीनता या नपुंसकत्व

अब मैं यहां पर सब प्रकार के नपुसकों का वर्णन विस्तार से करती हूं क्योंकि जितने नपुंसक हैं सब माता पिता की मूर्खता से ही विपरीत रति करने से उत्पन्न होते हैं। इन्हीं सब नपुंसको से पाठक आसनो का फल समझ ले।

नपुंसक पुरुष के लक्षण

वैद्यक शास्त्र बतलता है कि:—

संकल्प प्रवणो नित्यं प्रियां वश्यामथापि वा।
न याति लिंग शैथिल्यात्कदाचिद्याति वा यदि॥

अर्थ यह है कि पुरुष स्त्री प्रसग करने की इच्छा तो मन में सदैव करे परन्तु अपनी स्त्री से भी प्रसग न कर सके इन्द्री की कमजोरी के कारण स्त्री के पास जाते भी डरे। यदि किसी प्रकार प्रसग करे भी तो शीघ्रही उस पुरुष का श्वास फूलने लगे और शरीर मे पसीना आने लगे। इन्द्री मे ठीक ठीक उत्तेजना न हो। इसप्रकार वह पुरुष लज्जित होकर बड़ा दुःखी हो और उस बिचारे के विचार मन के मन मे ही रह जावे। यह साधारण नपुसको के लक्षण हैं।

जिन पुरुषों मे ये लक्षण पाये जावे उन्हे नपुसक समझ लेना चाहिये चाहे वे जन्म से हों अथवा किन्ही कारणो से पैदा होगये हो।

नपुंसकता के विशेष कारण

ध्वजभंगस्य चोत्पत्तिं लक्षणं शृणु विस्तरात् ।
अत्यम्ललवणक्षार विरुद्धाजीर्ण भोजनात् ॥

जो पुरुष नियम पूर्वक आहार विहार नहीं करते, खटाई निमक तथा क्षार पदार्थों का अधिक सेवन करते हैं और विरुद्ध भोजन करते हैं वे कुछ दिनों मे नपुसक हो जाते हैं।

अत्यंबुपानाद्विषमपिष्टान्नगुरु भोजनात् ।
दधिक्षीरानूपमांससेवनादतिकर्षणात् ॥

जो पुरुष भली भांति विधि पूर्वक न पकाया गया अन्न भक्षण करते हैं, जो पानी अधिक पिया करते हैं और जो गरिष्ट (पिट्ठी आदि के) भारी पदार्थ तथा दही दूध और अनूप सचारी जीवो का मास सेवन करते हैं इन कारणों से वे भी कुछ दिनों मे नपुसक हो जाते हैं।

कन्यायां चैव गमनादयोनिगमनादपि ।
दीर्घरोम्णीं चिरोत्सृष्टां तथैव च रजस्वलाम् ॥

इसका अर्थ यह होता है कि जो पुरुष बारह वर्ष से कम आयु वाली स्त्री से प्रसंग करते हैं अथवा जो प्राकृतिक नियम के विरुद्ध अयोनि मैथुन (हस्त मैथुन, लड़कों के साथ दुष्ट कर्म आदि) करते हैं तथा जिस स्त्री के गुप्त स्थान में बहुत बड़े बड़े बाल हो

जिसका रज स्खलित होने मे वहुत देरी लगे और जो ऋतु से हुई हो ऐसी स्त्री से प्रसग करते हैं वे पुरुष कुछ दिनो मे नपुसक हो जाते हैं।

दुर्गंधां दुष्टयोनिं च तथैव च परिश्रुताम् ।
नरस्य प्रमदां मोहादतिहर्षात्प्रगच्छत ॥

वैद्यकशास्त्र वतलाता है कि जो पुरुष ऐसी स्त्री से प्रसंग करता है जिसकी योनि से दुर्गंधि आती हो। जिस स्त्री के गरमी, सुजाक रज विकार अथवा प्रदर सोमरोग हो ऐसी स्त्री से गमन करता है अथवा जिसकी योनि किसी भी रोग से दूपित हो गीली रहती हो या नियम के विरुद्ध कुआसन उलटे सीधे हो मूर्खता से नियम विरुद्ध मैथुन करता है वह पुरुष भी नपुसक हो जाता है।

चतुष्पदाभिगमनाच्छेफसश्चाभिघातत: !
अधावनाद्वा मेढ्रस्य शस्त्रादंत नख घातात् ॥

इसका अर्थ यह होता है कि जो अज्ञानी मूर्ख पुरुष पशुओं के साथ प्रसंग करता है वह शीघ्र ही कुछ दिनो मे नपुसक हो जाता है और जिसकी इन्द्री मे चोट लगी हो, जो इन्द्री को साफ नहीं करता, जिसकी इन्द्री मे किसी कारण से शस्त्र लगा हो, नाखून लगकर घाव हो जाने से और अत्यन्त प्रसग करने से वीर्य नष्ट होकर इन्द्री की नसें कमजोर होगई हो वह पुरुष नपुसक होजाता है ।

वृद्धावस्था की नपुंसकता

जघन्यमध्यप्रवरं वयस्त्रिविध मुच्यते ।
अथ च प्रवरे शुक्रं प्रायशः क्षीयते नृणाम् ॥

वृद्धावस्था मे मनुष्यों का वीर्य क्षीण हो जाता है। मनुष्य की अवस्था तीन प्रकार की है बुढ़ापे में वीर्य क्षीण होने से मनुष्य नपुसक हो जाता है।

रसादीनां संक्षयाच्च तथैवावृष्य सेवनात् ।
बलवर्णेन्द्रियाणां च क्रमेणैव परिक्षयात् ॥

बुढापे में पुरुष के शरीर मे रक्त मांस बल वीर्य बनाने वाले जो रसादि हैं उनके क्षय होने से तथा जो पुरुष रसादिको को अधिक बनाने वाले, जिनसे बल वीर्य की वृद्धि और पुष्टि होती है ऐसे पदार्थों का सेवन नही करता अथवा उसे ये पदार्थ खाने को मिलते ही नही परन्तु विषय वासना में लिप्त रहता है, प्रसग करने मे जिसने कमी नही की उसके क्रमशः बल वीर्य वर्ण और इन्द्रियों के क्षीण होने से तथा परिश्रम करते रहने और बलवर्द्धक पदार्थ खाने को न मिलने से वह मनुष्य बुढापा आते ही शीघ्र ही नपुँसक होजाता है। फिर बुढ़ापे मे वह अत्यन्त दुर्बल तनक्षीण बलहीन हो जाता है, शरीर की दशा पलट जाती है, उसे रोग शीघ्रही घेर लेते हैं। यह बुढ़ापे की नपुसकता है।

चिंता क्रोध और शोक से नपुंसकता

अतिप्रचिंतनाश्चैव शोकात्क्रोधाद्भयादपि ।
ईर्ष्योत्कठात्तथोद्वेगात्समा विंसतिको नरः ॥

जिनको अत्यन्त चिंता हर समय लगी रहती है, जिनको क्रोध अधिक आता है, जिनको भारी शोक मे पड़ना पड़ता है, जो किसी कारण से हृदय में भयभीत रहते हैं और जो पराई ईर्षा में ही लगे रहते हैं इन कारणो से वे पुरुप भी कुछ दिनो मे नपुसक होजाते हैं।

अन्य कारणों से नपुंसकता

वाल्यावस्था मे वीर्य के नष्ट करने से जवानी में वेश्यागमन से, हस्त मैथुन से, निर्वलता की दशा में अधिक उपवास करने से, कम खाने से और समय कुसमय खाने से, समय कुसमय प्रसंग से शरीर के वल वीर्य नष्ट होकर मनुष्य को कुछ दिनों मे नपुसक वना देते हैं।

ऊपर लिखे कारणो से तो अच्छे पुरुष जिनके शरीर मे पूर्व से नपुंसकता का कोई लक्षण नही होता है, अपनी ही अनियमित क्रियाओं से नपुंसक हो जाते हैं। दूसरे नपुंसक वे होते हैं जो माता पिता के दोप से जन्म से ही नपुसक पैदा होते हैं। ऐसे नपुंसकों के विषय में आगे लिखा जाता है जो कई प्रकार के

होते हैं। जिस प्रकार पुरुष नपुसक होते हैं इसी प्रकार स्त्री भी नपुसक होती हैं उनका वर्णन भी इस अध्याय मे आगे किया जायगा।

नपुंसक होने का कारण

अतएवचशुक्रस्य बाहुल्याज्जायते पुमान्।
रक्तस्यस्त्रीतयोः साम्ये क्लीवःस्यात्॥

अर्थात्—पीछे कहे हुए कारणो से अर्थात् पुरुष का वीर्य अधिक होने से पुत्र और स्त्री का रज अधिक होने से कन्या गर्भ में आती है और स्त्री पुरुष दोनो का रज वीर्य बराबर होने से नपुसक सन्तान उत्पन्न होती है।

आरोग्य और बलिष्ट सन्तान

स्त्रीपुंसयोस्तुसंयोगेयद्यादौविसृजेत्पुमान्।
शुक्रं ततः पुमान्वीरोजायते बलवान् दृढः॥
अथचेद्वनितापूर्वं विसृजेद्रक्तसंयुतम्।
ततोरूपान्विता कन्या जायते दृढसंहता॥

अर्थात्—स्त्री पुरुष के सयोग में यदि प्रथम पुरुष का वीर्य स्खलित होकर गर्भधारण हो तो हृष्ट पुष्ट बलिष्ट और सुन्दर पुत्र का गर्भ स्थापित होगा। यदि स्त्री पहिले स्खलित हो और उस

प्रेम-हार

समय गर्भ रहे तो हृष्ट पुष्ट और बलिष्ट रूपवती कन्या गर्भ में आवेगी।

यह बात मैं पीछे लिख चुकी हूं कि कामशास्त्र वैद्यकशास्त्र का ही एक अङ्ग है उसका तात्पर्य यह कदापि नहीं हो सकता कि निर्बल दुर्बल हीनाङ्ग और नपुसक सन्तान होने का साधन बतलावे। यह विषयी लोगो ने अपने आनन्द के लिये बना लिया है।

नपुंसकों की उत्पत्ति

पित्रो रत्यल्पवीर्यत्वादासेव्या:पुरुषो भवेत्।
सशुक्रंप्राश्यलभतेध्वजोच्छ्रायमसंशयम्॥

इसका अर्थ यह है जिन दम्पतियो का अधिक प्रसग के कारण रज वीर्य क्षीण होगया है ऐसे अत्यन्त क्षीण वीर्य वाले माता पिता के सयोग से जो गर्भ रहता है उससे आसेव्य नामक नपुसक उत्पन्न होता है।

आसेव्य नपुंसक

पुरुष सभोग करने की शक्ति नही रखता जब वह अपने मुख मे दूसरे के मैथुन करने से स्खलित वीर्य को भक्षण करे तब उसकी इच्छा सम्भोग करने की होती है अर्थात् उसे उत्तेजना उत्पन्न होती है ऐसा आयुर्वेद का मत है।

आसेव्य नपुंसक जब तक किसी बलवान पुरुष से अपने मुख में मैथुन न करावे और उसका स्खलित वीर्य भक्षण न करे

तब तक इस नपुसक पुरुष की इन्द्रि स्त्री प्रसग करने योग्य नही होती। इस नपुसक का इसी कारण दूसरा नाम मुख योनि कहा है।

पाठको ? देखा आपने, कैसी घृणा की बात है, कैसे दुःख की बात है। ऐसा कौन मूर्ख पुरुष होगा जो ऐसी सन्तान उत्पन्न करना चाहेगा इसलिये सबको ध्यान रखना चाहिये कि जब तक पति पत्नी का रज वीर्य ठीक न हो, किसी प्रकार की खराबी हो, तब तक गर्भाधान क्रिया अर्थात् स्त्री प्रसग नही करना चाहिये। जो स्त्री पुरुप नियम विरुद्ध सभोग करके रज वीर्य से क्षीण होगये हैं उन्हे ब्रह्मचर्य का पालन करके इस पुस्तक मे लिखे अनुसार औषधियो का सेवन करके रजवीर्य को शुद्ध करके तब सभोग करना चाहिये।

सौगंधिक नपुंसक

यः पूतियोनौजायेत स सौगंधिक संज्ञितः।
सयोनिशेफसोगन्धमाघ्रायलभते बलम् ॥

इसका अर्थ यह है कि जिस स्त्री की योनि मे दुर्गंधि आती हो उसके सभोग से जो गर्भ रहकर पुत्र उत्पन्न होता है वह सौगंधिक नपुसक कहलाता है, यह नपुसक पुरुप जब स्त्री की योनि और पुरुष की इन्द्री को सूंघे तब उसकी इन्द्री चैतन्य होती है उत्तेजित होती है। इस नपुसक का दूसरा नाम नाशा योनि कहा है।

कुम्भिक नपुंसक

अरजस्का यदानारी श्लेष्मरेताव्रजेद्दतौ ।
अन्यासक्ताभवेत्प्रीतिर्जायतेकुम्भिलस्तदा ॥

इसका अर्थ यह है कि अल्प रज वाली अर्थात् जिस स्त्री का रज अधिक प्रसग के कारण कम हो गया है, निर्बल हो गया है, अथवा रज क्षीण होगया है, ऐसी स्त्री का पति भी शिथिल वीर्य वाला हो और सम्भोग करे उस समय स्त्री की सम्भोग से इच्छा पूरी न हो (क्योंकि शिथिल वीर्य वाला पुरुष स्त्री की शान्ति नही कर सकता इसलिये उस स्त्री की इच्छा अन्य पुरुष से सभोग कराने की वनी रहती है) और गर्भ रहजावे तो कुम्भिक नपुसक उत्पन्न होता है।

दूसरा कारण

मातुर्व्यवायप्रति मेन वक्री-
स्याद्वीजदौर्बल्यतयापितुश्च ॥

स्त्री के विपरीत मैथुन करने से अर्थात् पुरुप स्त्री के नीचे होकर स्त्री को अपने ऊपर करके स्त्री से सभोग करावे यह विपरीत सभोग कहलाता है।

इस प्रकार विपरीत संभोग से पुरुष का वीर्य निर्बल होने पर जैसा आजकल सैकड़ा पीछे पचहत्तर पुरुषो को वीर्य विकार

से नाना प्रकार के प्रमेह स्वप्नदोष शीघ्रपात आदि रोग हैं। ऐसे निर्बल वीर्य के द्वारा विपरीत रति से गर्भ रहने पर भी कुम्भिक नपुसक उत्पन्न होता है।

स्वेगुदेऽब्रह्मचर्य्याद्यः स्त्रीपुपुंवत्प्रवर्तते,
कुम्भिकः सतुविज्ञेयः ॥

कुम्भिक नपुसक सम्भोग नहीं कर सकता जब वह पुरुष किसी पुरुष से अपनी गुदा मे मैथुन करावे तब उसकी इन्द्री में चैतन्यता आवे तब वह पुरुष के समान स्त्री के साथ प्रसग कर सकता है। ये कुम्भिक नपुसक के लक्षण हैं।

ईर्ष्यक नपुंसक

ईर्ष्याभितापावपिमन्दहर्षा-
दीर्ष्याह्वयस्यापिवदन्तिहेतुम् ॥

सम्भोग के समय पति पत्नी दोनों चित्त मे किसी से ईर्षा द्वेष का भाव रक्खे हो और चित्त मे इसी विषय की चिन्ता हो उस दशा मे जो गर्भ रह जावे उससे ईर्ष्यक नपुसक उत्पन्न होता है।

दृष्ट्वाव्यवायमन्येषांव्यवाये यः प्रवर्त्तते।
ईर्ष्यकः सतुविज्ञेयो दृग्योनिरयमीर्ष्यकः ॥

इसका अर्थ यह है कि जो पुरुष अन्य पुरुष को स्त्री प्रसंग

करते देखे तब उसकी इन्द्री में चैतन्यता हो और वह स्त्री प्रसग करने के योग्य हो अर्थात् जब तक दूसरे को मैथुन करते न देखे तब तक वह स्वयं मैथुन नहीं कर सकता। इसका कोई इलाज आयुर्वेद में नही बतलाया। इसका यही इलाज है कि वह पुरुष दूसरे पुरुष को स्त्री प्रसग करते देखे तब उसकी इन्द्री मे चैतन्यता उत्पन्न हो।

पाठक पाठिकाओ! देखिये किसी से ईर्ष्या द्वेष करना कितना बुरा है। थोड़ी ही सी भूल में इसका प्रभाव सन्तान पर कैसा बुरा पड़ता है। इसीलिये आयुर्वेदाचार्यों ने बतलाया है कि संभोग के समय स्त्री पुरुष दोनो प्रसन्न चित्त हो। पुरुष को चाहिये स्त्री को अनेक प्रकार से आलिंगन चुम्बन आदि प्यार करके प्रसन्न करे और आप भी प्रसन्न चित्त हो। सब चिंता शोक क्रोध आदि भुला देना चाहिये, ऐसी आयुर्वेद की आज्ञा है।

स्त्री के नपुंसक होने का कारण

जिस प्रकार पुरुष माता पिता की अज्ञानता से नपुंसक होता है उसी प्रकार स्त्री भी नपुसक होती है। स्त्रियों मे दो प्रकार की नपुंसक होती हैं, एक तो वह जिसकी इच्छा ही संभोग की न हो इस लिये उसके कभी गर्भ नहीं रहता। यह नपुंसक स्त्री मासिक धर्म्म से भी नही होती। यह नपुंसक स्त्री इस प्रकार उत्पन्न होती है कि संभोग के समय मूर्खता वश पुरुष स्त्री को अपने ऊपर करके जैसा कि आजकल के अनेक काम-

शास्त्र कोकशास्त्र सम्बन्धी पुस्तको में आसन बतलाये गये हैं, पुरुष मैथुन करता है उससे जो गर्भ रहे और कन्या उत्पन्न हो तो वह नपु सक होती है। पुरुष के समान चेष्टा वाली होती है। उसके गर्भाशय नही होता, यदि हो भी तो गर्भधारण करने योग्य नहीं होता। वह स्त्री प्रसग के योग्य नहीं होती। उसकी इच्छा तो होती है परन्तु प्रसंग का कुछ फल नही होता।

दूसरी प्रकार की नपुंसक

एक तो वह स्त्री नपुसक होती है जो पुरुष स्वयं स्त्री को ऊपर चढ़ा कर प्रसंग करे और उससे गर्भ रहकर कन्या उत्पन्न हो। दूसरी इसप्रकार होती है कि स्त्री की ही इच्छा पुरुष के ऊपर होकर सम्भोग करने की हो और अपनी इच्छा से पुरुष के ऊपर होकर स्वय प्रसग करे। पुरुष स्त्री की समान नीचे पड़ा हो। इस प्रकार जो गर्भ रह जावे उससे जो कन्या उत्पन्न हो वह कन्या इसप्रकार की नपुसक होती है कि पुरुष से प्रसंग मे कभी तृप्ति नही होती। वह स्वय पुरुष की समान पुरुष के ऊपर होकर प्रसग करने की इच्छा रखती है। इसप्रकार की इच्छा बनी रहने से उसके गर्भ नही रहता और प्रसग से उसकी इच्छा भी नही भरती। वह अन्य स्त्रियो के साथ भी ऐसा ही करती है। उसकी संगति से अन्य स्त्रियां भी उसी स्वभाव की होजाती हैं आपस मे इस प्रकार प्रसग करती हैं। इस प्रकार नपुंसको की वृद्धि होती जाती है।

बालकों के रोगों और मृत्यु की अधिकता का कारण

सैकड़ा पीछे निन्नानवे पुरुष बाल्यावस्था के दुर्व्यसनों हस्त-क्रिया आदि के कारण और विवाह होने पर अपनी स्त्री से रात दिन विषय भोग तथा तिसपर भी इच्छा की शान्ति न होने पर वेश्यागमन से गरमी सुजाक आदि भयंकर रोगों से जीवन भर के लिये रोगी बन जाते हैं और स्त्री को भी रोगी बना देते हैं इस प्रकार दोनों रोगी हो रोगी सन्तान उत्पन्न करते हैं पहिला कारण बालकों की अधिक रोगी तथा मृत्यु संख्या का यह है।

दूसरा कारण

सैकड़ा पीछे एक ही दो पुरुष गर्भाधान क्रिया नियम पूर्वक करते हैं वरन सैकड़ा पीछे निन्नानवे पुरुष ऐसे हैं जो केवल विषय वासना की तृप्ति के लिये सम्भोग करते हैं। सन्तान तो धोखेघड़ी में होजाती है। नियम विरुद्ध गर्भ रहने से बालक रोगी और अल्पायु होते हैं।

तीसरा कारण

पति पत्नी से जैसा चाहिये प्रेम नहीं करते। प्रेम न करने से और केवल विषय वासना की तृप्ति के समय ही ऊपरी दिखा-वटी प्रेम करके अपना मतलब गांठ लेते हैं फिर पति पत्नी से

प्राय: अनवन ही बनी रहती है इसलिये सन्तान निर्बल दुर्बल होती है और असावधानी से अल्पायु भी होती है।

चौथा कारण

गर्भाधान के समय स्त्री पुरुष में दिली प्रेम न होने से उसका प्रभाव गर्भाशय पर बुरा पडता है। उस समय गर्भ रहने से सन्तान भी मुर्दा दिल होती है और वह सदैव रोगी निर्बल और दुर्बल रहती है।

पांचवा कारण

गर्भाधान क्रिया करने में समय या दिन तथा किस प्रकार गर्भाधान क्रिया करनी चाहिये जिससे उत्तम हृष्ट पुष्ट सन्तान उत्पन्न हो इसका कोई पुरुष विचार नहीं करते, जब इच्छा हुई बेगार की भांति अपना काम किया अलग हुए। गर्भ रह गया तो बला से, न रहा तो बला से, सन्तान उत्पन्न करने की इच्छा से रतिक्रिया कदाचित ही कोई पुरुष करता हो। ऐसे पुरुष बड़ी खोज करने पर हजार मे दो ही एक मिलेगे। इसी कारण सन्तान निर्बल रोगी और दुर्बल उत्पन्न होती है।

छठा कारण

पुरुष की जिस समय रति की इच्छा हुई दिन हुआ तो, रात हुई तो, स्त्री मासिक धर्म्म से हुई तो, भूखी हुई तो, प्यासी हुई तो,

और प्रातःकाल दिशा जाने का समय हुआ तो, जब इच्छा चल गई पुरुष की इच्छा पूरी होनी चाहिये तभी स्त्री को छुट्टी दीजायगी इस प्रकार स्त्रियों पर अत्याचार होने पर जिस रतिक्रिया से गर्भ रहता है उसकी सन्तान रोगी निर्बल दुर्बल अवश्य होती है।

सातवां कारण

रतिक्रिया के समय पुरुष पशुओं से भी अधिक पशु बनजाता है। केवल अपनी इच्छा की पूर्ति करता है। पशु को देखिये जब बैल को यह मालूम होता है कि अमुक गाय गर्भाधान चाहती है तब वह उसके पास जाता है और बहुत देरी तक उसे चूमता चासता है और अनेक प्रकार से प्यार करता है। पशुओं का प्यार केवल चाटना और उसके कधे से कधे की रगड़ लगाना है। इस प्रकार माया के शरीर में अनेक बार जहां तहां चाटना सूंघना यही उनका प्यार है। इस प्रकार मादा को गर्भाधान क्रिया के लिये पूरी तरह से तैय्यार कर लेता है तब पशु रतिक्रिया करता है और गर्भाशय में वीर्य जाने के समय दोनो बिलकुल स्थिर चित्त और स्थिर शरीर होजाते हैं तब एक ही बार में गर्भ रहजाता है और ठीक समय पर बच्चा उत्पन्न होता है तथा हृष्ट पुष्ट होता है। इसीप्रकार हर एक पशु पत्नी को देख कर समझ में आजाता है।

कबूतर को देखिये जब मादा को गर्भाधान के योग्य देखता है तब उसके सामने घंटों अनेक प्रकार की प्यारी बोली बोलता

है चक्कर लगाता है। जब कबूतरी प्रसन्न होकर गर्भाधान क्रिया के लिये तैय्यार होती है तब सभोग करता है। इस प्रकार कभी खाली नही जाता उसकी गर्भाधान क्रिया व्यर्थ नही जाती। इसीप्रकार सब पशु पत्ती मादा की इच्छा उत्पन्न करके गर्भाधान क्रिया करते है। खरगोश घटों मादा के साथ किलोलें करता है तब वह गर्भाधान क्रिया के योग्य होती है फिर रतिक्रिया करता है।

ऊपर लिखा प्रकृति का नियम है इस नियम के विरुद्ध जो रतिक्रिया करता है वह पशु पत्तियो से भी कम बुद्धिवाला है। यही कारण है जो सन्तान जन्म से ही रोगी निर्वल और दुर्वल होती है क्योंकि स्त्री की इच्छा के विरुद्ध गर्भाधान क्रिया होती है।

आठवां कारण

पुरुष अपनी विषय वासना की पूर्ति के लिये नाना प्रकार से उलटे सुलटे टेढे तिरछे होकर रतिक्रिया करते है और समझते हैं कि इस प्रकार करने से और भी अधिक आनन्द मिलेगा, परन्तु यह उनकी मूर्खता है। इस प्रकार करने से स्त्री के गर्भाशय को वडी भारी हानि पहुँचती है, गर्भाशय मे सूजन टेढापन तिरछापन हो जाता है, गर्भाशय बाहर निकल आता है। गर्भाशय के बन्धन ढीले होकर अनेक प्रकार की खराबिया आजाती हैं। उनसे स्त्रियो को वडा कष्ट होता है। यदि इस दशा मे गर्भ रहगया तो वालक रोगी निर्वल दुर्वल और कम आयु वाला होता है। यही कारण हमारे देश के वालकों की रोगी तथा मृत्यु संख्या अधिक होने का है।

नवां कारण

सैकड़ा पीछे निन्नानवे पुरुषो को शीघ्रपात और सुस्ती की बीमारी है। पुरुष तो गर्भाधान क्रिया के समय शीघ्रही शक्तिहीन होजाते हैं। स्त्री की इच्छा रहजाती है वह तैय्यार तक नही होने पाती। पती जी की नानी मर जाती है, फिर भला सन्तान आरोग्य कैसे हो। ऐसी दशा में गर्भ रहता ही नहीं, यदि वर्षो गर्भाधान क्रिया करते रहने से कभी धोखे में स्त्री की इच्छा पूरी हुई और वह भी स्खलित हुई और रज तथा वीर्य मिलकर गर्भ रह गया तो ऐसी दशा मे सन्तान रोगी निर्बल दुर्बल और कम आयु वाली होती है।

दसवां कारण

पुरुषों को शीघ्रपात की शिकायत है और वे स्तम्भन वटी खाकर सिथिलता के लिये तिला आदि का सेवन कर किसी प्रकार गर्भाधान क्रिया के लिये तैय्यार हुए और बडे उद्योग से कुछ देरी तक ठहरे उसी समय स्त्री की भी इच्छा धोखे से होगई तो गर्भ रह गया। उस समय की गर्भाधान क्रिया से यदि गर्भ रहा तो गर्भस्राव व गर्भपात होजाता है,। यदि भाग्यवश बालक हुआ भी तो रोगी निर्बल और दुर्बल होता है। मेरे पास ऐसी स्त्रियों और पुरुषो की चिट्ठियां महीने मे सैकड़ो हजारों आया करती हैं। जिनके पति को शीघ्रपात की तथा सुस्ती

की शिकायत है ऐसे पतियों की स्त्रियों की भी सन्तान सदा रोगी निर्बल और दुर्बल होती है ।

ग्यारहवां कारण

गर्भ रहजाने पर भी पुरुष अपनी इच्छाओं को काबू मे नहीं करते । रात दिन सम्भोग करके स्त्री को निर्बल बनादेते हैं । गर्भ रहजाने पर प्रसग करने से गर्भस्राव व गर्भपात होजाता है यदि किसी को न भी हुआ तो सन्तान होने पर रोगी निर्बल और अल्पायु होती है । पशु पक्षियों को इस बात का ज्ञान है वे मादा को देखते ही समझ लेते हैं कि मादा गर्भवती है, परन्तु जानते हुये भी वे बाज नही आते ।

बारहवां कारण

मासिकधर्म्म के दिनो मे भी बहुधा पुरुष रतिक्रिया करते हैं मेरे पास ऐसी हजारो स्त्रियां आईं और आती हैं जो अपने पतियो के इस अत्याचार का हाल कहती हैं । मासिकधर्म्म के दिनो मे गर्भाधान क्रिया करने से गर्भ नही रहता । गर्भाशय में गया हुआ वीर्य ऋतु के रक्त के साथ बाहर निकल आता है । स्त्री के अनेक प्रकार के गर्भाशय के रोग होजाते हैं । मासिक-धर्म के दिनो मे रतिक्रिया करने से पुरुषो को भी अनेक प्रकार के रोग उत्पन्न हो जाते है । मासिकधर्म के रोग भी होजाते हैं । रज दूषित होजाता है उस स्त्री के जब गर्भ रहता है तो ऋतुदोष के
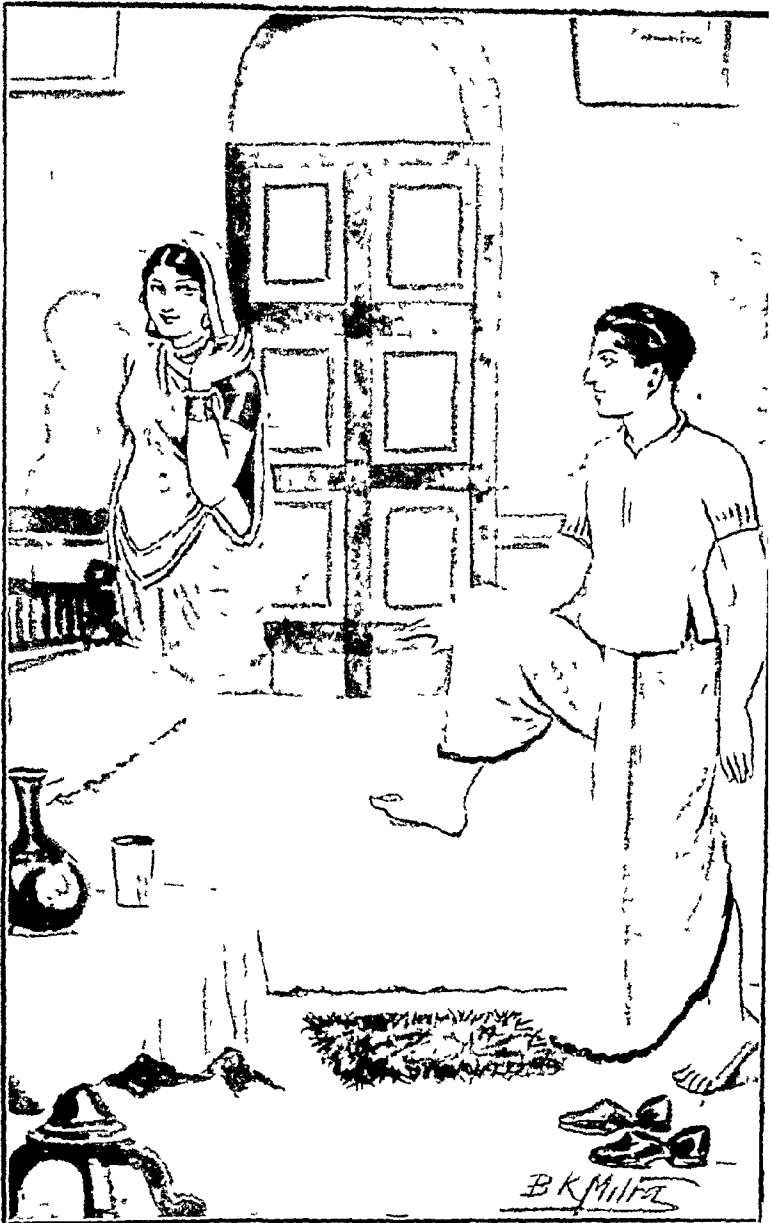
पति दाहिने पैर से पलग पर चढे । पृ० ३५२ (सर्वाधिकार सुरचित)

कारण बालक रोगी निर्बल और दुर्बल होता है। यह भी कारण हमारे देश के बालकों की रोगी तथा मृत्यु संख्या की अधिकता का है।

तेरहवां कारण

सैकड़ा पीछे निन्नानवे स्त्रियों के प्रदर प्रसूत और मासिकधर्म की खराबी है। मेरे पास २५ वर्षों में कई लाख स्त्रियां अपना इलाज कराने आई। सब की ही रोग परीक्षा से मालूम हुआ कि प्रदर प्रसूत और मासिकधर्म की ही खराबी अधिक है। इनमें से कुछ गर्मी और सुजाक रोग से भी ग्रसित पाई गई। इनमें जिनके सन्तान मौजूद थीं वह भी निर्बल दुर्बल और रोगी थीं बहुतों के गर्भस्राव व गर्भपात की शिकायत थी। ऊपर लिखे रोगों के कारण स्त्रियों के रोगी ही सन्तान उत्पन्न होती है और वह दुर्बल रहती है।

चौदहवां कारण

वेश्यागामी और अधिक विषयी पुरुष शराब अफीम भांग इत्यादि नशों का सेवन अधिक स्तम्भन के लिये किया करते हैं। नशैली वस्तुओं का अधिक सेवन करने से वीर्य दूषित होजाता है, उस वीर्य से जो सन्तान उत्पन्न होती है वह रोगी निर्बल दुर्बल और कम आयु वाली होती है तथा सुस्त और दुर्बुद्धि होती है।

पन्द्रहवां कारण

पुरुष विषय वासना की तृप्ति के लिये अधिक से अधिक आनन्द की इच्छा से रतिक्रिया की अनेक विधियों की खोज मे रहते हैं इसलिये इसी विषय की व्यर्थ की अनेक पुस्तकें भी तैय्यार हुई हैं और वे कुछ पाश्चात्य ढंग को लेकर लिखी गई हैं।

विलायती विषय-ढग के आधार पर ही अपनी समझ मे लेखको ने उन्हे अधिक उपयोगी बनाया है। मेरे सामने इस विषय की अनेक पुस्तके हैं, इनमें जो विषय लिखे गये हैं उनको पढ़ सुनकर स्त्री पुरुषों के मन मे और भी अधिक घृणित विचार उत्पन्न हो सकते हैं। किसी किसी पुस्तक मे वेश्यागमन तथा मादक वस्तुओ के सेवन और परस्त्रीगमन की भी शिक्षा दीगई है क्योंकि योरुप में इस विषय को बुरा नही समझते इसी आधार पर पुस्तको की रचना हुई है। ऐसी पुस्तकों से भारतवासियो को विशेष शारीरिक और आर्थिक हानि पहुँच रही है और पहुँचेगी।

स्त्रियो और बालिकाओ के विषय मे ऐसी घृणित बाते उदाहरण देकर लिखी गई है कि वे पुस्तके हमारे देश की स्त्रियों बालिकाओं तथा पुरुषो के हाथों मे जाने योग्य भी नही हैं ऐसी पुस्तको से जो हानि होरही है तथा होगी वह लिखकर नही समझाई जा सकती।

इस विषय मे मुझे इतना ही कहना है कि ऐसी पुस्तकों ने और भी अधिक विषय की ओर स्त्री पुरुषो का ध्यान आकर्षित किया है। अतएव हमारे देश के विषयी स्त्री पुरुषों की विषय वासना और भी अधिक बढ़ती जाती है यह कारण भी देश के बालको की रोगी तथा मृत्यु संख्या अन्य देशो के बालको की रोगी तथा मृत्यु संख्या से अधिक होने का है।

सोलहवां कारण

जब स्त्री की इच्छा रतिक्रिया की नही है तब रतिक्रिया करने से जो गर्भ रहता है उससे गर्भस्राव व गर्भपात होजाता है और यदि सन्तान हुई भी तो रोगी निर्बल दुर्बल होती है। अधिक रतिक्रिया से स्त्री का रज क्षीण तथा निर्बल पड़जाता है। तथा गर्भाशय के बधन ढीले पड़जाते हैं ऐसी दशा मे यदि गर्भ-स्राव व गर्भपात हो गया और यदि सन्तान हुई तो रोगी निर्बल तथा अल्पायु होती है। यह भी कारण हमारे देश की बालकों की रोगी तथा मृत्यु सख्या की अधिकता का है।

सत्तरहवां कारण

उत्तम सन्तान उत्पन्न होने की इच्छा से पुरुष रतिक्रिया करते ही नही, केवल इन्द्रियो की वासना की पूर्ति के लिये रति क्रिया करते हैं, इसी कारण विधि का विचार भी नही करते अतएव सन्तान रोगी और अल्पायु होती है।

अठारहवां कारण

गर्भ रहजाने पर गर्भवती नियम पूर्वक नहीं रहती। आहार विहार का नियम ठीक नही रखती इस कारण सन्तान होते समय कष्ट भी अधिक होता है और सन्तान भी रोगी होती है तथा कम अवस्था से ही मरजाती है।

उन्नीसवां कारण

बालक होते समय मूर्खा दाइयों की असावधानी से बालक की ठीक सम्हाल नहीं होती इस कारण बहुधा जच्चा और बच्चा दोनों के प्राण संकट मे पड जाते हैं। बहुतेरे बालक सोवर में ही काल का कलेवा बनजाते हैं और जच्चा को भी बडा कष्ट होता है दाई की असावधानी और मूर्खता से प्राय जच्चा को प्रसूत रोग होजाता है और भी अनेक प्रकार के गर्भाशय के रोग उत्पन्न होजाते हैं। प्रसूत रोगवाली स्त्री के सन्तान तो बराबर होती जाती है परन्तु वह रोगी और निर्बल दुर्बल होती है।

प्रसूत रोग अधिक दिन का होजाने से तपेदिक का रूपधारण करती है और ठीक इलाज न होने से वह स्त्री जीवन लीला समाप्त करजाती है। तपेदिक वाली रोगी स्त्री के भी सन्तान होती है परन्तु वह भी इसी प्रकार के रोगो से ग्रसित रहती है। और अन्त को तपेदिक के रोग से ही मरती है। विषयी पुरुष इस बातकी कुछ भी परवाह नही करते। स्त्री को कुछ भी रोग हो वे अपनी विषय वासना की तृप्ति करने में मस्त रहते हैं।

बीसवां कारण

पति पत्नी मे सच्चा प्रेम नही होता। मेरे पास जितनी स्त्रियां इलाज के लिये अब तक आईं और आया करती हैं सब की ही प्राय: यह शिकायत रहती है। सैकड़ा पीछे पांच ही ऐसी मिलेंगी जिनमे इस विषय की शिकायत न हो कि हमारे पति जैसा चाहिये मुझसे वैसा स्नेह रखते हैं। हमारी इच्छा हो या न हो इसकी कुछ परवाह नहीं। हमारी बीमारी की कुछ भी परवाह नही। केवल विषय ही करना जानते हैं, सो भी शीघ्रपात के कारण इच्छा पूरी नही हो पाती। पुरुषों के शीघ्रपात के कारण स्त्रियों को हिस्ट्रिया, रज विकार, प्रदर आदि अनेक रोग उत्पन्न होजाते हैं इसी कारण सैकड़ा पीछे निन्नानवे स्त्रियां रोगी पाई जाती हैं।

इसी प्रकार के और भी कारण बालकों की अधिक रोगी तथा मृत्यु संख्या के है क्योंकि माता पिता दोनो का रजवीर्य दूषित होने के कारण सन्तान रोगी होती है, जो स्त्री पुरुष अपनी आरोग्यता का नियम ठीक रखते हैं और अहार विहार का नियम ठीक तरह से पालन करते हैं उनकी सन्तान आरोग्य हृष्ट पुष्ट और दीर्घ जीवी होती है।

इक्कीसवां मुख्य कारण

स्त्री पुरुषों की अधिक रोगी सख्या तथा रोगी माता पिता से रोगी सन्तान उत्पन्न होने का विशेष और मुख्य कारण यह है कि

स्त्री पुरुषों को विषय की ओर अधिकता से लेजाने वाले अनेक उपन्यास और कामशास्त्र की पुस्तकें अनेक चटपटे नामों से बड़ी तेजी के साथ तैय्यार हो रही हैं उनमें विषय वासना की ओर स्त्री पुरुषों को ले जाने के अनेक मनगढत उपाय बतलाये गये हैं। शास्त्रों का उदाहरण देकर लोगों को विश्वास दिलाया गया है कि यह शास्त्रकारों ने आज्ञा दी है।

शास्त्रकार कभी इस प्रकार का उपदेश कर ही नहीं सकते कि जिससे व्यभिचार का प्रचार हो और स्त्री पुरुष अधिक विषय वासना में पड़कर रोगी हो रोगी सन्तान उत्पन्न करे। इसप्रकार के शास्त्रकारों के उपदेश परमात्मा की सृष्टि में बाधा पहुँचाते हैं। अतएव शास्त्रकारों का नाम लेकर ऐसी विषय की पुस्तकों को लिखने वाले केवल अपने स्वार्थ के लिये ऐसा कर रहे हैं, मनुष्यों का उनसे कुछ लाभ नही बल्कि हानि हो रही है। अज्ञानी विषयी लोग उन पुस्तको से उपदेश ग्रहण कर अपने पैरों मे आपही कुल्हाड़ा मार रहे हैं और अपने जीवन को मृत्यु के मुह में लिये जारहे हैं। मान लीजिये किसी विषयी पुरुष ने कोई ऐसा विषय लिख भी दिया तो बुद्धिमान विद्वान लोगो को उससे बचना ही चाहिये, प्रचार करके जीवन शक्ति को नष्ट न करना चाहिये।

पाश्चात्य देशों मे पर स्त्रीगमन मादक द्रव्यों का अधिक सेवन सब प्रकार के जीवो का मांस आदि खाना हितकारी और उचित समझा गया है। वहा तो चित्त को प्रसन्न रखना स्त्री पुरुष दोनों की स्वास्थ्य रक्षा का पहिला नियम है।

पाश्चात्य देशो मे कोई पुरुष बिना स्त्री की इच्छा के सभोग सम्बन्धी कोई बात तक नही कर सकता। यदि स्त्री की इच्छा के विरुद्ध कोई काम पति करता है तो वह पति को तलाक दे देती है। इसीप्रकार के केस योरुप मे प्रति दिन बीसों हुआ करते हैं। बीबी तलाक देकर दूसरी जगह चैन करती है। मियां मुंह ताकते रहजाते हैं। बहुत छोटी छोटी बातों मे योरुप की स्त्रियां पति को तलाक दे देती हैं। योरुप मे विवाह का कोई महत्व नही है, वहां स्त्रियो या पुरुषों को सन्तान होने की भी अधिक लालसा यहां की भांति नही रहती। वहां का विवाह बन्धन, बन्धन नही समझा जाता, जब चाहे स्त्री पति को छोड़ सकती है।

योरुप की स्त्रियो के विषय मे कुछ लिखना व्यर्थ है। सभी भारतवासी जानते हैं उनका उदाहरण यहां की स्त्रियों से नहीं दिया जासकता। रतिक्रिया के विषय मे योरुप की स्त्रियों का उदहारण देना तथा योरुप के विद्वानो के मत का उदाहरण देना बड़ी भारी भूल है। वहां के स्त्री पुरुषो का खान पान रहन सहन आचार विचार सामाजिक रीति व्यवहार वहां के जल वायु और प्रकृति तथा रीति रिवाज पर निर्भर है। अतएव जितनी पुस्तके रतिक्रिया विषय की अबतक बनी हैं, प्रायः योरुप की ही स्त्रियो और पुरुषो के ग्रन्थो के आधार पर लिखी गई हैं। इसीलिये ऐसी पुस्तको से हमारे देश के स्त्री पुरुषो को हानि के सिवाय लाभ कभी नही हो सकता।

इस विषय की पुस्तको मे जो विषय होना चाहिये जिसके

न जानने से रतिक्रिया सम्बन्धी बड़ा भारी अज्ञान फैला हुआ है सैकडा पीछे निन्नानवे स्त्रियां रोगी होरही हैं और पुरुषों की भी रोगी सख्या कम नहीं है। इसी कारण हमारे देशके बालकों की रोगी तथा मृत्यु सख्या अधिक है। इसलिये रतिक्रिया और गर्भाधानक्रिया की विधि धर्म्म शास्त्र और वैद्यक शास्त्र तथा काम शास्त्र के अनुसार विस्तार पूर्वक लिखी जाती है। आशा है पाठक इसी के अनुसार गर्भाधान क्रिया कर आरोग्य, और हृष्ट पुष्ट तथा मनमानी सुन्दर सन्तान उत्पन्न करेंगे और पति पत्नी स्वयं आरोग्यता प्राप्त करेंगे।

माता पिता के व्यभिचार और अधिक विषय तथा अनियम रतिक्रिया का प्रभाव जो सन्तान की आत्मा और शरीर पर पड़ता है और उसका जो भयंकर परिणाम समाज कोभी भोगना पडता है वह बड़ा दुखदाई होता है। वेचारे अनाथ वेकसूर बालक माता पित के अपराधों के शिकार होकर जन्म भर दुख भोगते हैं और माता पिता की अच्छी याद करते हैं। इसका विशेष वर्णन आगे किया जावेगा।

स्त्री बाये पैर से पलग पर चढ़े । पृ० ३५२

बारहवाँ अध्याय

—:o:—

आरोग्यता

शास्त्रकारों ने बतलाया है:—

शरीरे सर्वधातूनां सारं वीर्यं प्रकीर्तितम् ।
तदेव चौजस्तेजश्च बलं कांतिःपराक्रमः ॥
यस्मिञ्छुद्धे शरीरस्य गतिः शुद्धा भवेत्तदा ।
ब्रह्मचर्यदशायां हि क्षीणे क्षीण पराक्रमः ॥
धैर्य तेजो विरहितः रोगग्रस्त कलेवरः ।
सारहीनं यथा वस्तु तथैव स नरः स्मृतः ॥

ऊपर लिखे श्लोको का अर्थ यह है कि मनुष्य के शरीर में सब धातुओ का सार वीर्य ही माना जाता है। वही वीर्य तेज, वल, कान्ति, पराक्रम और पुरुषत्व रूप से शरीर में विराजमान रहता है, जिसके शुद्ध रहने से शरीर की सब प्रकार से शुद्धि रहती है, ब्रह्मचर्य अवस्था में वीर्य के क्षीण होने से मनुष्य का शरीर पराक्रम, तेज, वल, धैर्य और पुरुषार्थ से हीन होकर अनेक रोगों का घर वन जाता है, जैसे सारहीन पदार्थ रद्दी (वेकाम) हो जाता है वैसे ही वीर्य से हीन पुरुष का पुरुषार्थ है। इसीलिये महात्माओं ने मनुष्य के हित के लिये कहा है कि:—

आहारस्य परं धाम वीर्यं तद्रक्ष्यमात्मनः ।
क्षयोयस्य बहून् रोगान्मरणं च नियच्छति ॥

इसका अर्थ यह होता है कि संसार में इस लोक और पर-लोक का सुख चाहने वाले बुद्धिमान पुरुषों को आहार के उत्तम प्रभाव भूत अपने वीर्य की सब तरह से रक्षा करनी चाहिये क्योंकि वीर्य का क्षय होने से अनेक रोग पैदा होते हैं और अन्त मे कम अवस्था मे ही मृत्यु हो जाती है।

इसलिये मनुष्य मात्र को अपने जीवन सुधार और मनुष्य जीवन का सच्चा सुख प्राप्त करने के लिये ध्यान रखना चाहिये।

आरोग्यता के लक्षण

आरोग्यता के लक्षण आयुर्वेदाचार्य धन्वन्तरी के शिष्य सुश्रुत जी ने इस प्रकार लिखे हैं "जिस मनुष्य का दोष वात, पित्त, कफ, अग्नि, जठराग्नि, धातु, रस, मांस, मेद, अस्थि, मज्जा, शुक्र, मल विष्टा, मूत्र, पसीना आदि की क्रिया सम अर्थात यथार्थ भाव पर हो, और जिसकी आत्मा तथा मन प्रसन्न हो उसको आरोग्य कहते हैं। यदि उपरोक्त वात, पित्त आदि दोषो की असमानता और आत्मादि की अप्रसन्नता हो तो रोग कहते हैं। एक जगह लिखा है कि "रोगस्तु दोष्यम्" दोष यद्यपि ऋतुओ के परिवर्तन और हीन मिथ्या अति योग से जैसे कि वर्षा ऋतु मे जल का न पड़ना यह हीन योग कहा जाता है, उसी ऋतु मे शीत का होना यह मिथ्या योग और वर्षा का अधिक होना यह अतियोग कहा जाता है। ऐसे योग असमान होकर रोगोत्पत्ति करते हैं। तथापि जैसा बिगाड़ हम लोगो के मिथ्या आहार बिहार द्वारा

होता है, वैसा ऋतुओं के परिवर्तन से नहीं होता है और उपरोक्त दोष आदिको मे परस्पर ऐसा दृढ़ संबन्ध है कि दोष के विगड़ने से अग्नि आदि भी विगड़ जाती हैं और मनुष्य नाना प्रकार के रोगों से ग्रसित हो जाता है इसलिये इनको आरोग्य शास्त्र के अनुसार समभाव पर रखने का निरतर यत्न करना चाहिये, तभी मनुष्य आरोग्य रह सकता है।

मिथ्या आहार विहार

मिथ्या आहार विहार के विषय मे संक्षेप से वर्णन किया जाता है जिससे मनुष्य मात्र मे रोग फैले हुए हैं। वात यह है कि स्नान, कसरत, स्त्री संग आदि यावत् विहार लोग अपनी शक्ति से अधिक करते हैं अथवा शक्तिमान होकर भी जो नही करते उसी को मिथ्या विहार कहना चाहिये।

उदाहरणार्थ.—घण्टों तक स्नान करना या परिश्रम करने के पश्चात् तत्काल ही स्नान करना अथवा दिन मे कई वार स्नान करना, जैसा कि कोई कोई मल मूत्रोत्सर्ग के पश्चात् भी किया करते हैं। यह शक्ति से अधिक स्नान हुआ और स्नान करना ही नहीं यह शक्तिमान होकर भी न करना है। इसी प्रकार कसरत आदि में भी जानना चाहिये। सम्प्रति संपूर्ण प्रकार के मिथ्या विहारों से अनैसर्गिक उपायो से शुक्र (जो शरीर का राजा है। जैसे प्रान्तिक राजाओं के विनाश से अनेक शत्रु उस प्रान्त में अशान्ति फैला देते है उसी प्रकार वीर्य नाश से इस शरीर

में दुख रूपी शत्रु अशान्ति फैला देते हैं) का अपरिमित व्यय पाया जाता है।।

यह प्रथम ही लिखा गया है कि दोष अग्नि आदि मे दृढ संबन्ध होने के कारण एक के न्यूनाधिक होने मे प्रायः सब ही असमान हो जाते हैं और इनकी असमानता ही को रोग कहा जाता है। बहुत दुःख के साथ लिखना पडता है कि ऐसे अमूल्य पदार्थ का जो सम्पूर्ण पुरुषार्थों का देने वाला है, उसको चणिक सुख (जिसका परिणाम दुःख ही दुःख है) के लिये हमारी धर्म माता व बहिने व पुरुष आदि स्वभाव विरुद्ध कर्मों मे व्यय करते हैं। हाय, हाय वे लोग नही जानते कि किया हुआ आहार क्रिया विशेष द्वारा परिपक होकर रस से रक्त, रक्त से मास, मांस से मेद, मेद से अस्थि, अस्थि से मज्जा होता है और पुनः पचकर ४० दिनो मे शुक्र (वीर्य) रूप धारण करता है। इसलिये मनुष्य मात्र को वीर्य की रक्षा करनी चाहिये। देखो पशु पक्षी भी नियमित काल मे शुक्र का पतन करते हैं। क्या आप उन से भी अज्ञान हैं जो अपने आपही अपने पैर में कुल्हाड़ी मार कर जीवन नष्ट करते हैं।

यही शुक्र अन्य छहों धातुओं का अन्तिम परिणाम है और इसी के अधिक व्यय से शरीर नाना प्रकार के रोगो से रुग्ण रहता है और मनुष्य पुरुषार्थहीन हो जीवन पर्यन्त रोगी रह कर तथा रोगी निर्बल दुर्बल सन्तान उत्पन्न कर दुःखमय जीवन व्यतीत करता है।

शरीर रक्षा

इस जगत में अपने शरीर की रक्षा करना प्रत्येक मनुष्य का पहिला काम है क्योंकि शरीर की रक्षा से मनुष्य जो जो काम करना चाहता है वह कर सकता है। शरीर की रक्षा के लिये आयुर्वेद मे कहे हुए नियमो के ज्ञान की और उन नियमो के अनुसार वरतने की वहुत आवश्यकता है। कारण कि वैद्यक शास्त्रो में कहे हुए नियमों के जानने के सिवाय और उनके वरतने के सिवाय और किसी तरह से शरीर की रक्षा नही हो सकती।

आयुर्वेद में शरीर की रक्षा के निमित्त वहुत से नियम देखने में आते हैं परन्तु उन सव मे ब्रह्मचर्य ही मुख्य होने से उसका वर्णन इस पुस्तक मे भी कुछ किया गया है। ब्रह्मचर्य का ठीक ठीक पालन करने से वीर्य की रक्षा होती है और वीर्य की रक्षा से शरीर की रक्षा होती है इसलिये पहिले ब्रह्मचर्य के सामान्य स्वरूप और उसके प्रकार जानने की जरूरत है।

ब्रह्मचर्य का सामान्य स्वरूप

मन को स्त्री के ख्यालात से दूर रखना, स्त्रियों के साथ वातचीत न करना, काम विकार के नेत्रों से उनकी ओर न देखना, और शरीर से उनका स्पर्शमात्र भी न करना यह ब्रह्मचर्य का साधारण स्वरूप है।

यह ब्रह्मचर्य आठ तरह का है। जो पुराने समय में लगभग आठ वर्ष से चौवीस वर्ष की आयु तक विद्याभ्यास के साथ ही

साथ पालन किया जाता था। जब अच्छी तरह से आठों प्रकार का ब्रह्मचर्य पालने में आता था तब चौवीस वर्ष की उमर तक पुरुष अपने वीर्य को रोक लेते थे और किसी तरह की काम वासना के अभाव से उन दिनों पुरुषों का वीर्य उस बड़ी उमर में जाकर पकता था, परन्तु आज काल के समय में प्रथम कहे हुए ब्रह्मचर्य का यथार्थ पालन नहीं होने से पुरुष के वीर्य का नाश लगभग १०-१२ वर्ष की उमर से ही शुरू हो जाता है।

विना पके हुए कुछ वीर्य के निकलने से ही मनुष्य के बल बुद्धि, पराक्रम, उत्साह, तेज, स्मरण शक्ति (यादगाश्त) इत्यादि नाश होते हैं और दूसरे कितने ही भयंकर रोग लगजाते हैं। इसीलिये संसार सुख, आरोग्यता और बड़ी आयु चाहने वाले पुरुषों को ब्रह्मचर्य अवश्य ही पालन करना चाहिये।

ब्रह्मचर्य के आठ प्रकार

ब्रह्मचर्य के आठ भेद हैं जिसका वर्णन मैं नीचे लिखती हूं।

(१) स्त्रियों की याद न करना, (२) स्त्रियों के गुण का वर्णन न करना, (३) स्त्रियों के साथ रमण न करना, (४) स्त्रियों को काम की दृष्टि से न देखना, (५) स्त्रियों के साथ अकेले में चुप चाप बात न करना, (६) स्त्री सम्बन्धी कल्पना मन में न लाना, (७) स्त्रियों के सम्बन्ध में किसी प्रकार का मिलने वगैरह का निश्चय न करना और (८) स्त्रियों से शारीरिक संग न करना।

प्रेमालिङ्गन । पृ० ३५३ (सर्वाधिकार सुरक्षित)

ब्रह्मचर्य के अमूल्य गुण

ऊपर कहे हुए आठ प्रकार के ब्रह्मचर्य का यथार्थ पालन करने से पुरुष के पके हुए वीर्य का ठीक उमर से व्यय होता है केवल ऐसाही नहीं, परन्तु बहुत दिन तक रोका हुआ वीर्य पुरुष के बल, बुद्धि, वर्ण, कांति को बढ़ाकर शरीर के अंगों को मजबूत करता है और आत्मा को आनन्द का अनुभव कराते हुए दुनियादारी के कामों में उत्साह देकर लम्बी आयुष्य देता है। इससे उलटी रीति से यदि मनुष्य अपने वीर्य को विना पके हुए उसका खर्च करने लग जाता है तो उस दशा मे शरीर की नसे शिथिल होजाती हैं, मन बेचैनी मे रहता है, कामकाज मे नहीं लगता है और अन्त में जिन्दगी के बिगड़ने से मनुष्य मौत के पजे मे फस जाता है।

प्राचीन काल में ब्रह्मचर्य

प्राचीन काल मे ब्रह्मचर्य पालन के साथ विद्याभ्यास होता था और यह रिवाज जितना फैला हुआ था उतनी ही देश की स्थिति उन्नत थी परन्तु समय के फेर से जैसे जैसे ब्रह्मचर्य का लोप होता गया वैसे वैसे देश की बहुत ही हीन अवस्था होने लगी। प्राचीन काल मे स्त्रियां १६ वर्ष तक और पुरुष २४ वर्ष तक अष्ट-विध ब्रह्मचर्य का पालन करते थे और कितने ही के ४८ वर्ष तक ब्रह्मचर्य पालने के उदाहरण मिलते हैं। इसका इतिहास से पता चलता है। परन्तु दुःख है वह समय चला गया, अब तो आठ या दस वर्ष की उमर के बालक बालिकाओं का विवाह

देखने में आता है। प्रथम तो आठ वर्ष की उमर में अपनी जाति की रीति के अनुसार उपनयनादि संस्कार होता था फिर विद्याभ्यास आरम्भ होता था। भारत वर्ष के अधिकांश नर नारी इसप्रकार कम से कम १६ और २४ वर्ष ब्रह्मचर्य का पालन तो किया ही करते थे।

आदि कवि वाल्मीकि कृत रामायण तथा महात्मा व्यास कृत महाभारत को देखने से मालूम होता है कि हनुमान और भीष्म पितामह जीवन पर्यंत ब्रह्मचारी रहे थे। उन्होंने असाधारण और मनुष्य की कल्पना मे न आने योग्य जो २ पराक्रम किये थे सब केवल उनके ब्रह्मचर्य का ही प्रभाव था। श्री हनुमान जी का जीवन चरित्र तो सब जानते ही होंगे कि जो अपने स्वामी श्रीरामचन्द्र की आज्ञा मानकर ब्रह्मचर्य के प्रभाव से मनुष्यों को अचम्भे मे डालने वाले सौ योजन लम्बे समुद्र को पैर कर पार कर गये थे और जिन्होंने असख्य बलवान राक्षसो के बीच में अपनी अलौकिक शक्ति दिखाकर रावण जैसे महावीर योद्धाओ को जीतकर ऐसा काम कर दिखाया था कि जिससे सारी पृथ्वी में उनका नाम आज तक शूरवीरो की गणना मे पहिले आता है। और सब जिसके ब्रह्मचर्य की धाक मानते हैं।

उसी तरह भीष्म पितामह का वृत्तान्त भी सब लोगों को मालूम होगा कि जिन्होंने महाभारत के युद्ध मे कौरवो की रक्षा के लिये उनका पक्ष स्वीकार कर श्रीकृष्ण जैसे रणवीर योद्धा की प्रतिज्ञा भंग करवाकर अपनी प्रतिज्ञा अखंड कर दिखाई थी

इसी तरह महाराज युधिष्ठिर और अर्जुनादि जैसे महापराक्रमी पांडवों को भी पितामह ने कितना कंपायमान कर दिया था और अन्त मे कुरुक्षेत्र के युद्ध मे शरीर के रग २ से वांधे जाने पर भी उनको कुछ कष्ट नहीं हुआ था, भीष्म पितामह की इस असाधारण शक्ति का कारण यही था कि उन्होंने जीवन भर ब्रह्मचर्य का पालन किया था। उनकी मृत्यु उनकी इच्छा से हुई थी। यह सब ब्रह्मचर्य का ही प्रताप था।

प्राचीन काल मे केवल पुरुष ही ब्रह्मचर्य का पालन नही करते थे स्त्रियां भी ब्रह्मचर्य का पालन करती थी। अब तो ब्रह्मचर्य की ओर किसी का ध्यान ही नही है।

ब्रह्मचर्य के अभाव से हानि

आजकल के समय में पुरुष का वीर्य जल्दी पकता है इस के अनेक कारण हैं। इसीसे वहुत समय तक अर्थात् ऊपर कहे हुये समय तक पुरुष अपने वीर्य को नहीं रोक सकता है। इसका कारण केवल इतना ही है कि ब्रह्मचर्य का पालन ठीक २ नही हो सकता। यदि इन दिनो अष्टविधि ब्रह्मचर्य का यथार्थ पालन करने में आवे तो पुरुष के वीर्य की पुष्टि भी वड़ी उमर मे ही होगी यह वात हर कोई समझ सकता है।

ब्रह्मचर्य के नियमो पर चलने वाले मनुष्य अपनी शारीरिक सम्पत्ति की रक्षा कर सकते हैं। आरोग्यता और दीर्घ जीवन प्राप्त कर सकते हैं इतना ही नही वरन नियमों के अनुसार

चलने वाले अपनी भविष्य सन्तान को भी उन्नति पर पहुंचा सकते हैं क्योंकि ब्रह्मचर्य पालन करने वाले की सन्तान पूरे २ अंगवाली, निरोगी, हृष्ट पुष्ट, बलवान, बुद्धिमान, पराक्रमी, भाग्यशाली, और बड़ी उमरवाली होती है। इससे उलटी रीति मे ब्रह्मचर्य को व्यर्थ समझ विषय व्यापार मे लगजाने वाले की सन्तान अधूरे अङ्ग वाली, हीन वीर्य, मूर्ख, रोगी, कृश, निर्बल, पराक्रम रहित, और कम आयु वाली होती है।

ब्रह्मचर्य के न पालने के दो मुख्य कारण हैं एक तो आज कल के विद्याभ्यास के ढंग की अयोग्यता और दूसरा आजकल के विवाह आदि की बुरी प्रथा। आजकल यदि विद्याभ्यास तथा विवाहादिक क्रम उचित रीति पर हो तो ब्रह्मचर्य का पालन कुछ भी कठिन मालूम नही होगा। प्राचीन काल में विद्याभ्यास तथा विवाह आदि का ऐसा अच्छा क्रम था कि बालकों को कुछ भी कष्ट उठाये बिना विद्याभ्यास, ब्रह्मचर्य पालने तथा बहुत दिन तक वीर्य को रोक रखने का मौका सहज ही मिल जाता था।

इस जगह प्राचीन विद्याभ्यास का ढग और प्राचीन विवाह क्रम पद्धति की उत्तमता दिखलाये बिना हाल के विद्याभ्यास और विवाह क्रम की अहीनता अनुभव में कदापि नही आसकती। अतएव सत्तेप मे यहां पर इस विषय पर प्रकाश डालना अनुचित न होगा और पाठक भी प्राचीन तथा नवीन शिक्षा प्रणाली का ढंग समझ लेंगे।

प्राचीन विद्याभ्यास का ढंग

प्राचीन काल मे चौवीस वर्ष की आयु तक अच्छे २ शिक्षको की देख रेख तथा निगहवानी मे विद्याभ्यास कराया जाता था और दुनियादारी के व्यवहार की वासना वालको के ऊपर असर न करे इस निमित्त वालकों के पढ़ने के स्थान शहर या गाव से थोडी दूर साफ हवा और पानी की जगह मे वनाये जाते थे। जव वालक विद्याभ्यास कराने योग्य होता था तव उसके मां वाप अथवा अन्य रक्षक उस वालक को शिक्षक की रक्षा मे करदेते थे। उस समय मे वालक की शारीरिक सपत्ति का नाश न हो इस वात का ध्यान रख विद्याभ्यास शुरू कराया जाता था। विद्याभ्यास के लिये वालकों को शिक्षको के सुपुर्द कर देने पर वहुत जरूरी कारण होने पर भी उनके मा वाप से वालको की भेट नहीं होती थी कि जिनके समागम से उनके मन में ससार की वासनाओ का अकुर पैदा हो, ऐसे दुष्ट और दुराचारी मनुष्यों की सोहवत में वैठने का मौका उन वालको को कहां मिलता था। उन विद्यालयो मे केवल नीति और धर्म सम्वन्धी ही पुस्तके पढ़ाई जाती थी, नीति ज्ञान और धर्म सम्वधी उत्तमोत्तम पुस्तको के सिवाय जिससे अनीत और इश्कवाजी की तरफ उनका मन जाय अन्य पुस्तको की ओर उनकी दृष्टि भी नहीं जाती थी। इसतरह से वालक थोड़े समय मे वहुत कुछ अभ्यास कर लेते थे क्योकि दूसरी वातों मे वे अपना मन लगा

न पाते थे। ब्रह्मचर्य पूर्वक केवल विद्याभ्यास में ही लवलीन रहने वाला बालक बहुत दिन का काम थोड़े दिन में कर सकता है।

इस तरह से दी हुई शिक्षा का प्रभाव बहुत अच्छा होता था इतना ही नही किन्तु विद्यार्थी के अन्तःकरण से जन्म भर विद्या के संस्कार नहीं भूलते थे और विद्यार्थी की शारीरिक तथा मानसिक संपत्ति ऐसी अच्छी तरह से दृढ़ हो जाती थी कि विद्याभ्यास के पीछे वह जो २ काम करता था उसमे साधारणतः ही सफलता पाता था। कठिन से कठिन कार्य उसके मार्ग में रोड़े न अटका पाते थे।

आज कल का विद्याभ्यास

वर्त्तमान काल मे विद्याभ्यास का ढंग बड़ा ही उलटा देखने में आता है। आजकल एक तो बालकों की शारीरिक दशा पर बिलकुल ध्यान न देते हुये जल्दी पढ़ाने के लोभ से धैर्य न रखने वाले माता पिता अपने बालको को आवश्यकीय खेल कूद के आनन्द से या जिससे बालको की शारीरिक संपत्ति स्थिर होती है ऐसे कामों से अलग रख उन्हे छोटी ही उमर में पाठशाला में ढकेल देते हैं। ऐसा बहुधा देखा जाता है कि छोटे २ बालको को उनकी इच्छा के विरुद्ध पाठशाला मे भेजने के कारण पढ़ने के नाम से उनको डर लगने लगता है, और विद्या तथा गुरू की ओर वास्तविक मे जो बालकों को पूज्य दृष्टि से वर्ताव रखना चाहिये सो उसके बदले उनकी ओर अरुचि उत्पन्न होजाती

है, और ऐसी रीति से किया हुआ विद्याभ्यास कैसा फल देगा इसका ध्यान हमारे प्रिय पाठक पाठिकाएं ही सोच सकती हैं।

पढ़ाने वाला कैसा चाहिये

जिनके हाथो मे अपने वालको को सौंप रहे हैं उनके सम्बन्ध मे भी कुछ सोच लेना जरूरी है। जब बालक को विद्याभ्यास कराना हो तब कुलीन नीतिवान धार्मिक विचार वाले और विद्याभ्यास के उत्तम फल को अनुभव कर विद्यार्थी को अनुभव कराने वाले धर्मज्ञ शिक्षको के हाथ में पढ़ने के लिये बालको को सौंपना चाहिये। शिक्षक (पढ़ाने वाला) केवल अच्छा पढ़ा लिखा हो उसी पर बस नही परन्तु उसके साथ २ वह शिक्षक लोकप्रिय और सद्‌गुणी भी होना चाहिये क्योकि वालक मे शिक्षक के पास बहुत दिन तक बैठने से उसके गुण अथवा अवगुण का अनुभव बराबर देखते रहने से शिक्षक की अच्छी या बुरी बातो का असर उसके कोमल अन्तःकरण पर हुए बिना रहता ही नही, दुर्गुणी शिक्षक को सुपुर्द किये हुए बालक की जिन्दगी बिल्कुल बरबाद हो जाती है इसलिये विद्या देने वाले शिक्षक के गुण दोष की परीक्षा किये बिना बालको को उसके हाथ मे सौंपना न चाहिये।

आज कल विद्या पढ़ने वाले बालक की शारीरिक संपत्ति का नाश करना केवल दुराचारी गुरुओ से विद्या पढ़ाना आरंभ कर देना ही नही बल्कि छोटी उमर मे ब्याह देना भी है। इस कम

उमर के ब्याह से भविष्य में सन्तान को क्या नुकसान होता है इसका विचार न कर कितने ही अनसमझ माता पिता अपनी सन्तान को बहुत ही छोटी उम्र मे अर्थात् जो समय विद्याभ्यास का होता है उस समय उनको विवाह जंजाल मे फंसा देते हैं। कितनी ही जातियो मे तो यह बाल विवाह की चाल इतनी ज्यादा चलगई है कि बहुत ही छोटी अवस्था मे अर्थात् पांच सात वर्ष के भीतर अपने बच्चो का कि जिन्हे विवाह किसे कहते है यह भी नहीं मालूम ऐसे अज्ञान बालको का आप माता पिता विवाह के चाव के मारे बिवाह कर उनका भविष्य बिगाड़ते है। ऐसे बालको को दोनो तरह से नुकसान पहुँचता है उस अवस्था मे बिवाह के फंदे मे फसाया हुआ बालक केवल विद्या ही नही पढ़ सकता किन्तु उसकी शारीरिक संपत्ति को इतना धक्का लगता है कि जो एक योग्य वैद्य के इलाज से कही बडी मेहनत के साथ भी अपनी असली दशा मे नही आता। आज कल के समय को आप लोग यदि विचार करके देखे तो पहिले के समय को देखते हुए अब मनुष्यो की मृत्यु बहुत ही छोटी अवस्था मे होती है, इसका मुख्य कारण बाल विवाह है। इस प्रसग पर हर एक का ध्यान पहुँचे इसलिये मैं यहां अच्छी तरह खुलासा करके सब लिख रही हूं। ।आज कल सन्तान की शारीरिक तथा मानसिक संपत्ति का नाश होने का कारण खास करके बालविवाह है। इस बाल विवाह ने हिन्दू समाज का बहुत नुकसान किया है और उसे गढ्ढे मे गिराया है।

पतिध्यान मग्ना ऋतुस्नाता का पति-चित्र-दर्शन । पृ० ३९१

आजकल की सरकारी रिपोर्टों मे मृत्यु सख्या देखने मे बहुत से मनुष्यों की अकाल मृत्यु देखने में आती है उनके कारणों पर विचार करके देखने से बालकपन का विवाह ही पहला कारण मुख्य रूप से दृष्टि में आवेगा। जब से मैंने औषधालय खोला है इन २५ वर्षों मे लाखों चिट्ठियां कालेज में पढने वाले विद्यार्थियो की मेरे पास आई और प्रति दिन आया करती हैं जो वाल्यावस्था मे ही कुसगति मे पड़कर बालविवाह के कारण अनेक रोगों के रोगी बन बैठे हैं।

बालविवाह के कारण पुरुष केवल अपने तन की ही खराबी करते हैं ऐसा नहीं किन्तु उनकी सन्तान तक की बरबादी होती है। आजकल जो हीन वीर्य्य, निर्बल, पराक्रम रहित, शरीर से बालक पैदा होते हैं वे ऊपर बताये हुए कारणों के पंजे मे फंसे हुए मनुष्यों के वीर्य से उत्पन्न हुए हैं। यह २५ पचीस वर्ष तक लाखो स्त्री पुरुषों की चिकित्सा करने से मालूम हुआ है।

प्रचीन विवाह क्रम

पुराने समय मे वीर्य रोककर ब्रह्मचर्य पालने के साथ शुरू किया हुआ विद्याभ्यास चौबीस वर्ष की अवस्था तक समाप्त होता था इसके बाद पुरुष योग्य अवस्था की, अपने अनुकूल स्वभाव-वाली कन्या पसन्द कर मां बाप की सम्मति से विवाह करते थे और विवाह हुए पीछे भी अनुचित रीति से विषय कामना मे नहीं फंसते थे। विवाह पीछे भी नियत समय तक अपने वीर्य

को रोककर उत्तम रीति से शरीर-सम्पत्ति की जिस तरह से रक्षा करते थे, इस रीति से रक्षा किए हुए वीर्य से पक्की अवस्था मे पैदा हुई सन्तान सब अंगो से पूर्ण, निरोगी, बुद्धिमान पराक्रमी, और बड़ी आयुवाली होती थी।

कई एक ऐतिहासिक पुस्तकें देखने से मालूम होता है कि हमारे भारतवर्ष मे जो जो पराक्रमी और प्रसिद्ध नामांकित पुरुष हुए हैं वे सब तरुण अवस्था में विवाहे हुए वीर्य से उत्पन्न हुए है। पता लगाने से यह निश्चय मालूम होगा। इस विषय के प्रमाण देने से एक ऐतिहासिक बडा भारी ग्रन्थ बन जावेगा इसे इधर उधर की बाते न लिखकर जिस उपयोगी विषय को आरम्भ किया है उसी से पुस्तक पूरी करनी है। किसी ने ब्रह्मचर्य के विषय मे ठीक कहा है:—

सब आश्रमो मे परम पावन, ब्रह्मचर्य प्रधान है।
नर का कहो इस व्रत बिना, होता कहा कल्यान है॥
बल, बुद्धि, विद्या और वैभव, आदि का दाता यही।
इसके गुणों के गीत अब भी, गा रही सारी मही॥१॥
अब ब्रह्मचर्य विहीन भारत, दीन है इस काल में।
निर्वीर्य निर्बल हो फसा है, व्याधियो के जाल मे॥
चिर आयु अब होती नहीं, स्वल्पायु का ही राज है।
देखो जहां तहा सज रहा, अब बाल व्याह कुसाज है॥२॥
जो आज कहलाते युवा वे, वृद्ध से भी वृद्ध है।
हा, काम के किंकर रसीले, और रसिक प्रसिद्ध हैं॥

मदाग्नि और प्रमेह तरुणों, के सखे सच्चे बने।
श्रीहीन मुरझाए हुए जन, देख पड़ते हैं घने ॥३॥
जब नीव ही दृढ़ है नहीं, कैसे बनें मन्दिर भले।
जब खोखली जड़ हो गई, कैसे विटप फूलें फलें ॥
फैला हुआ चहुं ओर देखो, व्याधियों का जाल है।
जिसको लखो अब तो वही, चलता कटीली चाल है ॥४॥
हा! भीष्म से योधा भला, अब देश में होते कहां?
मजनूं बने लाखों पड़े है, देख लो अब तो यहां ॥
अब मार की मारें मिरोरा, दे रही इम काल हैं।
देखो हजारो छोकरे अब, प्रेम में बेहाल हैं ॥५॥
हा! ब्रह्मचर्याभाव से, इस देश का जो हाल है।
यदि आख है तो देख लो, कैसा गिरा इस काल है ॥
बल, बुद्धि, विद्या अर्थ मे, ससार से पीछे पड़ा।
हां, रूढ़ि भक्ती मूर्खता में, समझ लो सबसे बड़ा ॥६॥
आर्यत्व का अस्तित्व यदि, रखना चहो संसार मे।
फिर एक बार सुसभ्य हो, रहना चहो ससार में ॥
तो ब्रह्मचर्य पवित्र व्रत, धारण करो अति प्रेम से।
भोगो सुखों का सार जो, जीवन निबाहो नेम से ॥७॥

अब आप लोग समझ गये होगे कि ब्रह्मचर्य का प्रभाव कैसा अद्भुत है और ब्रह्मचर्य न रखकर वीर्य को व्यर्थ नष्ट करने से कितनी हानियां दुःख और अन्त मे जीवन नष्ट करना पड़ता है।

अब बाल्यावस्था से लेकर वृद्धावस्था तक किये हुये वीर्य नाश से उत्पन्न हुये रोगों के विषय के कुछ स्वानुभव लिखती हूं।

बाल्यावस्था में किये हुए आहार विहार के अनियमों तथा कुटेवों हस्तक्रिया आदि से उस समय तो कुछ समझ में नहीं आता क्योंकि बाल्यावस्था में तो कुछ ज्ञान नहीं होता न कुछ हानि ही मालूम होती है किन्तु कुछ दिनों बाद उसके बुरे फल मालूम होने लगते हैं। इसलिये उन रोगों का बुरा परिणाम समझकर स्त्री पुरुष सब को ही सदैव पूरी तरह से उससे सावधान रहना चाहिए।

मेरा तजुरबा

मुझे २५ पच्चीस वर्ष स्त्रियो की चिकित्सा करते व्यतीत हुईं। इस बीच मे मेरे पास लाखो ही स्त्रियां इलाज के लिये आईं और उनके पतियों की चिट्ठियां भी आईं। स्त्रियों की जवानी पतियो के शीघ्रपात सुस्ती प्रमेह सिथिलता और नपुंसकता का हाल मालूम हुआ तथा पुरुषो के पत्रो से मालूम हुआ और होरहा है कि बाल्यावस्था मे हस्तक्रिया अप्राकृतिक व्यभिचार आदि और अन्य प्रकार के कुकर्मो से प्रायः पुरुषों में अनेक खराबियां आगई हैं।

जो कुछ कमी रहगई वह विवाह होते ही अधिक विषय के कारण पूरी होगई और होजाती है। पुरुष इसप्रकार जब बिलकुल शक्तिहीन होजाते हैं तब इलाज करने की सूझती है परन्तु

डाक्टर वैद्य हकीम आदि कोई चिकित्सक पुरुष रोगियों को यह नहीं बतलाता कि तुम्हारे ही कुकर्मो का यह फल है। सम्भव है चिकित्सक उन रोगियो से पूरा हाल पूछने की परवाह ही न करता हो, उसे जरूरत ही क्या है, जो रोग समझ मे आया औषधि दे दी। रोग की जड़ खोजने की परवाह ही क्या है, रोगी भी नहीं समझता कि मुझे यह रोग किस कारण से है।

मेरे पास जब रोगी स्त्रियां आती हैं तब मैं सबसे पहिले उनके पति का हाल पूछती हूँ, वे सकोच न करके मुझसे अपने पति का कुल हाल उस समय का जब से वह स्त्री विवाह कर पति के घर आती है जितना हाल पति के शीघ्रपात प्रमेह सुस्ती नपुँसकता आदि का होता है कह देती है। तब मैं उसके पति से पत्र लिखकर सच्चा हाल पूछती हूं और अपने यहां का रोगी फार्म भेजकर लिख देती हूं कि "आप सकोच न कर अपनी कुल हालत लिखे जो जो आपने अज्ञानता अथवा वीर्य सम्बन्धी भूल की हो। अगर आप कुछ बात छिपावेंगे तो मेरी कुछ हानि न होगी आपकी स्त्री का रोग दूर न होगा आपही को फायदा न होगा"।

तब वे पुरुष अपना पूरा हाल बाल्यावस्था से हाल तक का सच्चा लिखदेते हैं। मैं सब हाल मालूम कर उनकी बाल्यावस्था की अज्ञानता से उत्पन्न हुई खराबियों का और पति की खराबियों से स्त्री के उत्पन्न हुये रोगो का इलाज करती हूं। इस प्रकार स्त्री पुरुष दोनो के रोग सदैव के लिये दूर होजाते हैं।

सन्तान हीन स्त्रियों का इलाज

स्त्री पुरुष दोनो का हाल ऊपर लिखे अनुसार स्त्री को देख-कर और पुरुष का हाल फार्म भराकर रोग का हाल, रोगो के उत्पन्न होने का कारण समझ कर जिसमे खराबी होती है उसका इलाज करदेती हू, उसकी सब शिकायते दूर होकर सन्तान होने लगती है। इस प्रकार हजारों सन्तान हीन स्त्रियो के सन्तान उत्पन्न हो चुकी है और लाखो शक्तिहीन पति पत्नियो के रोग दूर होगये हैं।

अब मैं इस विषय को अधिक न बढ़ाकर आयुर्वेद के अनु-सार स्त्रियो के गर्भाशय के सम्बन्ध मे लिखती हू जो रोगी निरोगी सबके लिये हितकारी है जिनको समझ कर स्त्री अपना जीवन सुखमय बना सकती है।

गर्भाशय के बिगड़ने से रोगो की उत्पत्ति होती है जिसके कारण सैकड़ा पीछे निन्नानवे स्त्री रोगी पायी जाती हैं और सन्तान भी निर्बल दुर्बल और कम आयुवाली उत्पन्न होती है। यदि गर्भाशय ठीक हो तो रोग उत्पन्न न हो।
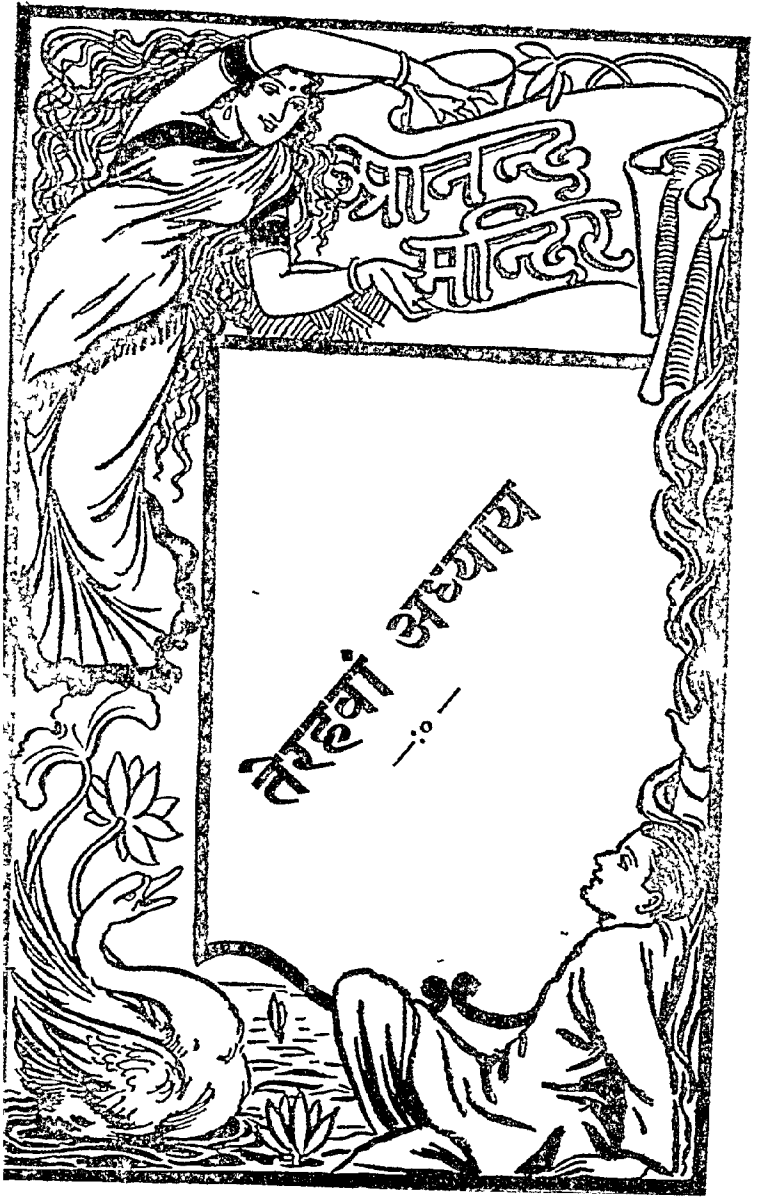
आनन्द मन्दिर
तेरहवाँ अध्याय

पिता के व्यभिचार का सन्तान पर दुखद परिणाम। पृ० ३९९

स्त्री की जनेन्द्री

चित्र नं० १ मे नं० १—२—३— गर्भाशय और ४—५—६ गर्भाशय का मुख इसके बाद नीचे को योनि मार्ग उसके नीचे प्रवेशद्वार अर्थात् योनि मुख और इसके इधर उधर गुदाद्वार और मूत्र मार्ग है ऊपर मलाशय और मूत्राशय है जैसा चित्र मे दिखलाया गया है।

इस बात को सभी स्त्री पुरुष जानते हैं कि योनि मार्ग से सभोग के समय पुरुष की जनेन्द्री स्त्री की जनेन्द्री मे प्रवेश करती है तब सभोग होता है। स्त्री की जनेन्द्री ऊपर से ढकी रहती है जिससे उसे किसी प्रकार की हानि न पहुंचे। ऊपर से देखने से केवल एक दरार सी मालूम देती है। उस दरार को हाथ की उगलियो से इधर उधर हटा देने से उसके भीतरी अवयव दिखलाई देते हैं।

स्त्री की जनेन्द्री को खोलकर देखने से योनि मार्ग दिखलाई देता है। योनि मुख से लेकर गर्भाशय के मुख के पास तक अर्थात् चित्र एक मे नं० ६ के पास तक योनि मार्ग कहलाता है। गर्भाशय की चौड़ाई आगे की ओर अर्थात् मुख के पास कम और पीछे की ओर अधिक है। गर्भाशय का मुख रोहू मछली की समान है गर्भाशय का मुख योनि मार्ग से लगा हुआ है। योनि मार्ग का विशेष काम है पुरुष की जनेन्द्री द्वारा निकला हुआ वीर्य गर्भाशय के मुख तक पहुँचा देना।

चित्र नं० १

आयुर्वेद बतलाता है:—
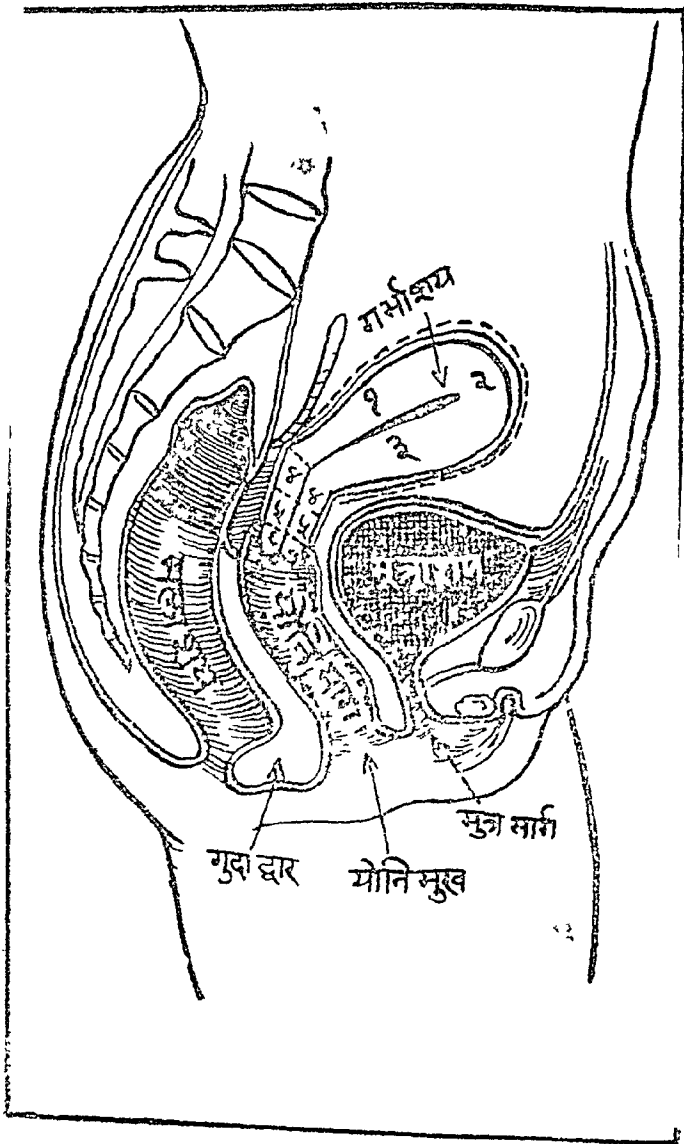
मनोभवागारमुखेऽबलानां,
तिस्रोभवन्ति प्रमुदा जनानाम् ।
समीरणा चन्द्रमुखी च गौरी,
विशेषमासामुपवर्णयामि ॥

अर्थात्—कामगृह यानी स्त्री के योनि मुख में तीन प्रकार की नाड़ियां होती हैं एक समीरण दूसरी चन्द्रमुखी और तीसरी गौरी। इनका वर्णन इस प्रकार है—

प्रधानभूता मदनातपत्रे,
समीरणानाम विशेषनाडी ।
तस्यामुखेयत्पतितं तुवीर्य,
तन्निष्फलंस्यादितिचन्द्रमौलिः ॥

अर्थात्—मदन रूपी छत्र मे सर्व प्रधान नाड़ी समीरण नाम की है उस नाडी के मुख मे सभोग के समय जब वीर्य गिरता है तो वह निष्फल जाता है ऐसा किसी किसी आचार्य का मत है।

याचापराचान्द्रमसी च नाडी,
कन्दर्पगेहेभवति प्रधाना ।

सासुन्दरीयोषितमेवसूते,
साध्या भवेदल्परतोत्सवेषु ॥

दूसरी चान्द्रमसी (चन्द्रमुखी) नामक नाड़ी कामगृह मे प्रधान होती है उस नाड़ी मे वीर्य पड़ने से वह स्त्री कन्या उत्पन्न करती है और थोड़े ही सभोग से शीघ्र तृप्त होजाती है ।

गौरीतिनाडीयदुपस्थगर्भे-
प्रधान भूताभवतिस्वभावात् ।
पुत्रं प्रसूते वरधाङ्गनासा,
कष्टोपभोग्यासुरतोपविष्टा ॥

अर्थात्—स्त्री की भग मे स्वभाव से प्रधान भूत ऐसी गौरी नामक नाड़ी है उसमे वीर्य पड़ने से वह स्त्री वहुधा करके पुत्र उत्पन्न करती है और संभोग के समय बड़ी कठिनाई से उत्पन्न होती है ।

इन तीनो नाड़ियो का मुख क्रमशः खुलता रहता है सम दिनो मे अर्थात् मासिक धर्म के चौथे छठे, आठवे, दसवे और बारहवे दिन गौरी नामक नाड़ी का मुख खुलता है यदि उससे वीर्य ग्रहण करके गर्भधारण हो गया तो उससे पुत्र उत्पन्न होता है ।

ऋतु के दिनों मे अर्थात् पांचवे सातवे नवे ग्यारहवे और तेरहवे दिन चान्द्रमसी नाड़ी का मुख खुलता है उसके मुख में वीर्य पड़ने से कन्या का गर्भधारण होता है और इसके बीच

में कई तिथियां संभोग के लिये वर्जित हैं। इनमें समीरणा नामक नाडी का मुख खुला रहता है इसमे वीर्य जाने से गर्भाशय मे नहीं ठहरता, थोड़ी देरी में अथवा एक दो दिन मे बाहर निकल आता है। इसी कारण ऋषियों ने गर्भाधान के लिये तिथियां नियत की हैं और जिनमे गर्भ नहीं रहता वीर्य व्यर्थ जाता है उन तिथियों मे सभोग करना मना किया है।

स्त्री की जनेन्द्री तथा अन्य अवयव

सभोग तथा गर्भाधान क्रिया करने के पहिले स्त्री पुरुष दोनों को जनेन्द्री तथा उसके अन्य अवयवों का हाल जान लेना परमोपयोगी है। इसके न जानने से अनेक प्रकार के रोग पति पत्नी मे उत्पन्न होजाते हैं और दाम्पत्य प्रेम का जैसा चाहिये आनन्द नहीं मिलता क्योंकि रोगों के कारण दाम्पत्य प्रेम का सुख नष्ट हो जाता है।

देखिये चित्र नं० २ मे न० १ कामाद्रि—यह योनि का ऊपरी हिस्सा है जब कन्या की युवावस्था आरम्भ होती है तब पहिले इस हिस्से मे बाल उत्पन्न होते हैं और जिस प्रकार युवावस्था बढ़ती जाती है उसी क्रम से बाल घने होते जाते हैं। बाल आना यह युवापन आरम्भ होने का चिन्ह है।

न० २ यह बडे भगोष्ठ हैं यह भग दर्वाजे के किवाड़ समझना चाहिये। प्रकृति ने इन्हें ऐसा बनाया है कि बिना हटाये हुए ये स्वय नही हटते। संभोग के समय इन दोनों भगोष्ठो को हटाने से योनि मार्ग सम्भोग के योग्य होता है। जो मूर्ख
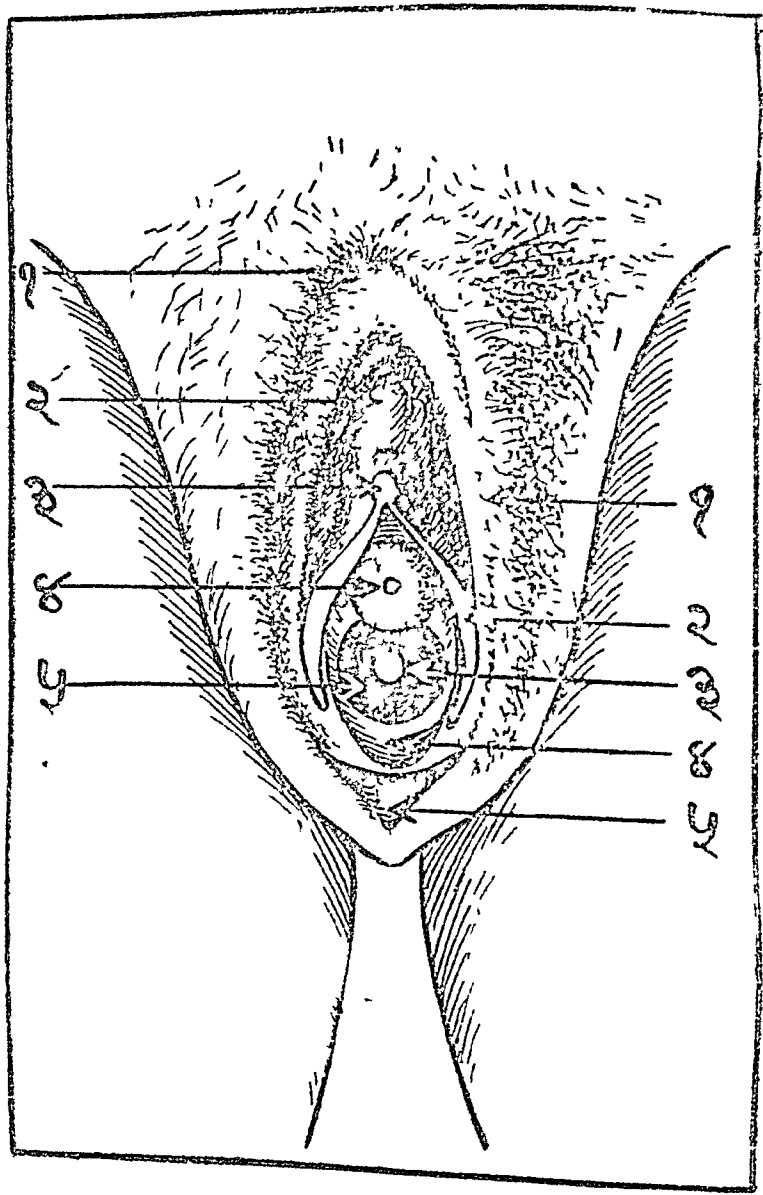
चित्र न० २

बेमेल विवाह, बाल विवाह पृ० ४९३

अपने गुप्त रोगों का खुलासा हाल संकोच न करके कह सकें या लिखकर ही अपने रोग का खुलासा हाल समझा सके।

विदेशी चिकित्सा प्रणाली के अनेक नगरों और कसबो तक में चिकित्सालय हैं परन्तु विदेशी चिकित्सा प्रणाली में स्त्री रोगों का इतना अधिक विस्तार से निदान नहीं है इस कारण हमारे देश की स्त्रियों का इलाज विदेशी चिकित्सा प्रणाली की चिकित्सा करने वाली लेडी डाक्टर स्त्रियां भी ठीक २ नहीं कर सकतीं।

जब से मैंने आयुर्वेद स्त्री औषधालय खोला है तब से कई लाख स्त्रियां मेरे पास इलाज के लिये आईं, इनमें बहुत सी स्त्रियां ऐसी थीं जो लेडी डाक्टरों तथा अन्य चिकित्सकों से वर्षों इलाज कराकर हजारों रुपया खर्चकर निराश होचुकी थीं। उनके गुप्त रोगों की परीक्षा ही ठीक न हो सकी। किसी की समझ में रोग रही आये। इसी कारण फायदा नहीं हुआ। जब वे रोगी स्त्रियां मेरे पास आईं तब मैंने उनके रोगों की परीक्षा कर थोड़े ही दिन मे कम खर्च में ही रोग दूर कर दिये।

दूसरा कारण यह है कि हमारे देश की स्त्रियों का शरीर इसी देश की आबोहवा (जल वायु) से बना है इसलिये हमारे ही देश की उत्पन्न हुई जगली औषधियां हमारे देश की स्त्रियों के रोगों को जड़ से दूर कर सकती हैं।

मेरे पास सैकड़ो स्त्रियां योनि सम्बन्धी ऐसे रोगों वाली भी आईं जो इस प्रकार की शिकायत से परेशान थीं।

तीन वर्ष के लगभग का समय व्यतीत हुआ एक रानी साहबा मेरे पास इसी रोग वाली आईं। उन्होंने मुझसे अपनी इस-शिकायत का हाल बतलाया। उन्होंने कहा—छै महीने से मेरी यह दशा है कि रात दिन सम्भोग के लिये चित्त चंचल रहता है मै संकोच और लज्जा के कारण इस बात को किसी से कह नहीं सकती, न जाने क्या कारण है। छै महीने से बड़ी व्याकुलता हो रही है। पति से मैने यह बात नहीं कही, कहते लज्जा मालूम होती है, न जाने वह क्या समझ जावे। किसी डाक्टर वैद्य से भी कह नही सकती। खुजली होती है और खुजली के साथ ही सम्भोग की इच्छा होती है। पति जी से योनि की पीड़ा का बहाना करके आपके पास इलाज कराने आई हू।

मै रानी साहबा से इतना हाल सुनते ही समझ गई और कमरे के भीतर लेजाकर मैंने उनकी जनेन्द्री की परीक्षा की तो उनके छोटे भगोष्ठों मे छाले पड़े हुये थे और सूजन भी आगई थी। मैंने उसी दिन औषधि का काढ़ा कराकर योनि मार्ग को धुलवाया और रानी साहबा से पूछा कि आप योनि कभी धोती नहीं हैं ऐसा मालूम होता है? उन्होंने कहा मै बाहर से तो प्रतिदिन धोया करती हू, भीतर नही धोती, क्या भीतर भी धोना चाहिये? मैंने उन्हे समझाया और न धोने की हानि बतलाई, मैंने एक सप्ताह उन्हे अपने यहां रोगी आश्रम मे ठहरा कर इलाज किया वे बिलकुल ठीक होगईं।

एक और स्त्री ने मुझे लिखा कि मेरे पति घर पर नही हैं

तीन महीने से बाहर गये हुए हैं, मेरे गुप्त स्थान में खुजली होकर संभोग की अत्यन्त इच्छा होती है, मैंने खाना भी छोड़ दिया है। एक वक्त केवल रूखी रोटी नमक से खाकर रहती हूँ मुझे कोई ऐसी औषधि भेजिये जिससे मेरी इच्छा न हो। मैं लगभग छै महीने से ब्रह्मचर्य से हूं। मेरे पति प्रायः बाहर रहा करते हैं, बीच बीच में दस बीस दिन को आते हैं। अभी हाल में आये थे एक सप्ताह रहकर चले गये।

कृपा करके मुझे ऐसी औषधि भेजिये जिससे यह शिकायत दूर हो। मैं बड़ी परेशान हूं आपको भी बड़े संकोच से लिखा है क्षमा करें।

मैंने उस स्त्री को औषधियां भेज दीं, केवल योनि धोने की औषधियों से ही उसकी शिकायत एक सप्ताह में दूर हो गई।

इस रोग वाली स्त्री के पति को भी अनेक रोग उत्पन्न हो जाते हैं, उसकी इन्द्री में भी यह रोग हो जाता है। अज्ञानतावश इस रोग के उत्पन्न होने का कारण न जानने से इस रोग वाली स्त्रियां अप्राकृतिक रूप से अपनी इच्छा पूरी करती हैं परन्तु इच्छा पूरी नहीं होती क्योंकि यह रोग के कारण इच्छा उत्पन्न होती है, जब तक रोग दूर न हो इच्छा बनी ही रहती है।

इस रोग वाली स्त्रियों के चरित्र भ्रष्ट हो जाने की भी शंका रहती है। मेरे पास इस विषय की भी स्त्रियों की अनेक चिट्ठियां आया करती हैं वे लिखती हैं कि जल्द इसका उपाय बताइये हम पति से अपनी इस इच्छा का हाल खुलासा नहीं कह सकतीं।

इस प्रकार इस रोग के कारण स्त्रियां परेशान हो जाती हैं और पति भी परेशान हो जाता है तथा रोगी होजाता है।

इस रोग को आज तक किसी ने नहीं समझा है क्योंकि स्त्रियां इस रोग का हाल सकोचवश किसी से नही कहती, पति से भी छिपाती हैं। इसलिये इस भयकर रोग से सब स्त्रियो को सावधान रहना चाहिये प्रतिदिन योनि को पानी से साफ करते रहना चहिये और आठवे दिनः—

हर्ड एक तोला बहेड़ा दो तोला

आंवला चार तोला

इन सबको कूटकर मोटा मोटा चूरन करले। आध सेर पानी मे धीमी धीमी आंच से पकावे जब एक पाव पानी रह जावे तब उतार ले और मोटे कपड़े से छान लेवे और गरम गरम पानी से ही योनि को भीतर तक धो डाले, छोटे भगोष्ठों को इसी काढ़े के पानी से खूब धोवे।

दूसरा उपाय

फिटकरी एक तोला, कपूर देशी आधा तोला

दोनो को एक साथ पीस कर बारीक तजेब के कपड़े मे पोटली बनाकर योनि मे रक्खे। चौबीस घंटे बराबर रहने दे फिर निकाल कर फेक दे। इस प्रकार करने से यह रोग तीन दिन मे दूर होजाता है और हर आठवे दसवे या पन्द्रहवे दिन इस उपाय को करती

रहे तो यह रोग कभी नही होता। योनि को प्रतिदिन अवश्य धोते रहना चाहिये।

किसी स्त्री की ऋतुस्नान के १५ पन्द्रह दिन बाद अत्यन्त प्रबल इच्छा संभोग की हो और योनि मे खुजली भी हो तो समझ लेना चाहिये कि यही रोग है क्योकि ऋतुस्नान के दिन से पन्द्रह दिन तक तो हर एक स्त्री की इच्छा गर्भधारण के लिये सभोग की होती है इसके बाद नही होती। जिनके पतियो ने अधिक प्रसंग से पत्नी की आदत बिगाड़ दी है उनकी बात ही और है। पतियों की मूर्खता से उस स्त्री की इच्छा बिना प्रयो-जन के भी हुआ ही करती होगी।

न० ३ भगनाशा का आगे का हिस्सा जिसे योनि लिंग भी कहते हैं, इसकी बनावट पुरुष की इन्द्री की रीति पर है। यह स्त्री की जनेन्द्री के ऊपर के हिस्से मे जैसा चित्र मे बतलाया गया है जिस स्थान पर रोग उत्पन्न होते हैं उसके नीचे और दोनो बड़े भगोष्टो के शुरू होने के बीच मे त्रिकोणाकार ऊ चा भाग नासाकृति से मिलता हुआ होता है।

इस योनि में लिंग के स्पर्श से ही स्त्री मे उत्तेजना उत्पन्न होती है इसको भूलकर भी स्पर्श नही करना चाहिये। जिसप्रकार पुरुष हस्तक्रिया आदि से नपुसक होजाते हैं इसीप्रकार इसका अधिक स्पर्श स्त्री को नपुंसक बना देने वाला है। जो स्त्रियां मूर्खतावश इसका स्पर्श कर उत्तेजना उत्पन्न करती हैं वे उत्तेजना शक्ति से कुछ दिनों में हीन होजाती हैं और फिर गर्भधारण के योग्य नही रहतीं।

जो मूर्खपति इसका स्पर्शकर पत्नी को उत्तेजित करते है वे महामूर्ख हैं। कुछ दिनो मे स्त्री नपुसक होजाती है। उसकी उत्तेजना शक्ति नष्ट होजाती है फिर वह पति उस स्त्री की इच्छा को भी पूरी नही कर सकता और वह स्त्री गर्भवती भी नहीं हो सकती। इस विषय मे प्रकृति का नियम यह है कि.—

संभोग के समय पुरुष की इन्द्री का स्पर्श स्त्री के इस योनि लिग से अकस्मात प्रकृति के नियम के अनुसार आप ही होता है तब स्त्री को उत्तेजना होती है।

जिनके पति अधिक प्रसग करके पत्नी का स्वभाव बिगाड़ देते हैं और फिर शक्तिहीन होजाने पर स्त्री को इच्छा पूरी नहीं कर सकते ऐसे दुष्ट पतियो की पत्निया स्वय अपने इस अग का स्पर्शकर उत्तेजना उत्पन्न करती हैं और कुछ दिनो मे शक्तिहीन होजाती हैं।

ऐसी भी अनेक स्त्रिया मेरे पास आई कि जिन्होने मुझसे यह शिकायत की कि "हमारी कभी इच्छा ही नहीं होती, पति जी अनेक उपाय करते है घटो उपाय करने पर भी हमारी इच्छा नहीं होती।" तब मै उनसे पूछती हू कि कभी तुम्हारे पति ने यह अज्ञानता तो नही की कि तुम्हारे इस स्थान को स्पर्श किया हो अथवा तुमने ही इस का स्पर्श कर अपने मे उत्तेजना की हो। तब मालूम होता है कि यह मूर्खता उनके पति ने वर्षों तक की इसी प्रकार इस अंग का स्पर्श करके स्त्री को उत्तेजित किया और अब स्त्री किसी काम की नही रही।

स्त्री की नपुंसकता

उत्तेजना शक्ति का नष्ट होजाना

इस अंग के स्पर्श से कुछ दिनो मे स्त्री की उत्तेजना शक्ति नष्ट होजाती है इसलिये गर्भ नही रहता क्योकि यह बात पहिले ही बतला दी गई हैं कि संभोग के समय पति पत्नी दोनो को पूर्ण उत्तेजना होनी चाहिये तभी सभोग ठीक और नियमानुसार होता है यदि दोनो को बराबर उत्तेजना न हुई तो सभोग व्यर्थ है। जिसके उत्तेजना न होगी वही निराश रह जावेगा और गर्भ-धारण भी न होगा।

प्रकृति ने जो नियम बना दिये हैं उनके विरुद्ध इन्द्रियो से काम लेने से अनेक प्रकार की हानि होती है अतएव भूलकर भी नियम के विरुद्ध काम नही करना चाहिये।

अभी एक मास व्यतीत हुआ एक कालेज के लड़के की चिट्ठी उसकी स्त्री मेरे पास लेकर आई उसमे लिखा था कि एक अंग्रेजी पुस्तक कामशास्त्र विषय की थी मैंने उसमे पढ़ा था कि स्त्री की गुप्त इन्द्री के ऊपर एक स्थान है उसे स्पर्श करने से स्त्री शीघ्र ही उत्तेजित होजाती है। मैंने परीक्षार्थ ऐसा किया इससे स्त्री में उत्तेजना हुई और जैसा लिखा था वैसा ही हुआ, इसलिये मैं बराबर छै सात मास तक ऐसा ही करता रहा।

अब दो महीने से इसमे कुछ खराबी होगई, स्त्री में उत्तेजना नाम मात्र को भी नहीं होती। मै अनेक उपाय करता हूँ

परन्तु सब व्यर्थ होता हैं कृपा करके कोई उपाय बतलाइये। क्या मेरी मूर्खता से तो कोई खराबी नही आगई है ?

एक और स्त्री मेरे पास अभी थोड़े दिन हुए इलाज के लिये आई उसे पेशाब बड़े कष्ट के साथ होता था। उसके गुप्त स्थान की मैंने परीक्षा की तो देखा कि वह स्थान बहुत सूज गया था और उसमे कठोरता आगई थी। अधिक स्पर्श के कारण वहां का मांस कड़ा होगया था। इस स्थान की यहां तक रक्षा करनी चाहिये कि भूलकर भी स्पर्श न करे मैं जब स्त्रियो के गुप्त स्थान की परीक्षा करती हूँ तब इस बात का बड़ा ध्यान रखती हूँ कि हाथ का अथवा पजों का स्पर्श इस स्थान से न होने पावे।

जब मैंने उस स्त्री की परीक्षा की और उस स्थान की यह दशा देखी तो मैंने उस स्त्री से कहा कि तुम ठीक ठीक बतलाओ यह रोग तुम्हे कब से है ? कभी तुमने किसी कारण से इसे उगली से स्पर्श तो नही किया ? उस स्त्री की अवस्था अट्ठारह उन्नीस वर्ष की थी, मुझे यह सन्देह हुआ कि इसने अपने हाथो से अपनी उत्तेजना करके अप्राकृतिक क्रिया की होगी। वह बड़ी लज्जित हुई और कहा—नही मैंने कभी ऐसा नही किया मेरे पति एक पुस्तक लाये थे उस पुस्तक में इसके विषय मे लिखा था।

तब से प्रतिदिन इस स्थान का उंगलियों से स्पर्श करने से मुझे उत्तेजना होने लगी। कई महीने तक ऐसा किया अब कुछ दिनो से मेरी यह दशा होगई है कि पेशाब मे बड़ा कष्ट होता है और मेरी कभी इच्छा नही होती, मन और शरीर मुर्दा सा हो गया है।

बेमेल विवाह, बाबा का विवाह । पृ० ४९७

मैंने उसका इलाज किया। पन्द्रह दिन में वह अच्छी होकर घर चली गई परन्तु उसकी चिट्ठी आई इससे मालूम हुआ कि उसकी इच्छा शक्ति नष्ट होगई है। मैंने उसको समझा दिया था कि एक वर्ष तक तुम ब्रह्मचर्य से रहो तब आराम होगा यदि फिर तुम्हारे पति ने ऐसी मूर्खता की तो तुम सदैव के लिये सम्भोग शक्ति नष्ट होने से वंध्या हो जाओगी. अपने पति को समझाती रहो। परन्तु उस मूर्ख पति ने अपनी आदत नहीं छोड़ी।

एक और स्त्री इसी प्रकार की मेरे पास बहुत दुखी होकर आई। उसकी अवस्था लगभग ३५ पैंतीस वर्ष की थी उसके कोई सन्तान नहीं थी. कभी गर्भ नहीं रहा। वह मेरे पास सन्तान का इलाज कराने के लिये आई थी. उसे कोई रोग प्रत्यक्ष में नहीं था। मैंने उसके गर्भाशय आदि की परीक्षा की, गर्भाशय में किसी प्रकार का रोग नहीं पाया। तब मैंने उसे अपने रोगी आश्रम में मासिक धर्म की परीक्षा करने के लिये ठहराया। वही समय उसका मासिक धर्म होने का निकट था वह तीन चार दिन बाद मासिकधर्म से हुई। मैंने तीन दिन तक प्रति दिन उसके आर्तव की भलीभांति परीक्षा की. कोई खराबी नहीं पाई गई, मैं भी बड़े विचार में पड़ा कि क्या बात है परन्तु यह सन्देह हुआ कि उसके पति में कुछ खराबी होगी उसका पति साथ नहीं आया था। वह अपनी सास और देवर के साथ आई थी इस लिये मैंने उसके पति के लिये अपना बनाया हुआ "पुरुष रोग प्रश्नावली का फार्म" उसे दिया कि इसे पति के पास भेजकर लिखो कि

इसके सब प्रश्नों का उत्तर लिख भेजे तब मैं तुम्हारे पति का हाल मालूम करके बतलाऊगी कि किस के दोष से सन्तान नहीं होती।

इसके तीन चार दिन बाद एक दिन वह मेरे पास मुझसे केवल मिलने के लिये आई, उस दिन उसने मुझसे कहा "देवी जी! न मालूम क्या बात है मेरी इच्छा कभी सम्भोग की नही होती, अपने आप तो कभी इच्छा होती ही नही। जब मेरा विवाह हुआ था तब इच्छा होती थी उसके बाद कभी भी स्वप्न मे भी इच्छा नही होती। पति जी जब मेरे पास आते हैं तब घटों वे अनेक उपाय करते हैं तब इच्छा होती है, सो भी भलीभांति नही होती। प्रसंग मे कुछ प्रसन्नता नही होती।

उस स्त्री के कहने से मैं समझ गई। इसके पहिले मुझे उससे यह बात पूछने का संकोच वश कुछ ध्यान ही नहीं रहा था क्योंकि ऐसी बाते स्त्रियो से बिना जरूरत के पूछने में मुझे भी कभी कभी संकोच मालूम होता है। मै जिस रोग की परीक्षा करती हू उसके विषय मे भली भाति देखकर ही मालूम करलेती हूँ और स्त्रियो के इस अग की खास कर बिना कारण के परीक्षा नही करती, क्योंकि इस अग का स्पर्श करते ही स्त्रियो को उत्तेजना उत्पन्न होती है इस लिये बहुत ध्यान रखना पड़ता है।

जब उस स्त्री ने मुझसे यह हाल कहा तब मैं उसे देखने को कमरे मे लेगई। क्योंकि मुझे यह सन्देह हुआ कि इसने कदाचित कुछ अप्राकृतिक क्रिया की अथवा इसके पति ने की होगी।

मैंने उस स्त्री के उस स्थान को देखा तो मालूम हुआ वह स्थान स्पर्श करते करते इतना कठोर होगया था कि उस स्त्री को उसके स्पर्श से कुछ मालूम ही नहीं होता था, उतनी जगह शून्य हो गई थी।

यह देखकर मैंने उससे पूछा—कभी तुम्हारे पति ने तुम्हारे इस स्थान को हाथ से तो नहीं रगड़ा ? उसने कहा कि कभी की क्या वात पूछती हो लगभग वीस वर्ष होगये जब से मेरा विवाह हुआ तभी से मेरे पति जी इसी प्रकार मेरी इच्छा करके तब सम्भोग करते हैं। जब तक वे हाथ से मेरी इच्छा न करें तब तक मेरी इच्छा स्वप्न में भी नहीं होती और मुझे कई वर्ष होगई जो प्रसन्नता पहिले विवाह के बाद कुछ दिन आरम्भ में होती थी वह अब नहीं होती।

मैंने उसका यह हाल सुनकर जवाब दे दिया कि तुम नपुंसक होगईं। तुम्हारे अब सन्तान नहीं हो सकती। वह स्त्री रोने लगी और पैरों पड़गई। मैंने कहा इसका कोई इलाज नहीं हो सकता तब वह रोकर अपने घर को चली गई। गर्भाशय की परीक्षा करने से मालूम हुआ कि उस स्त्री का गर्भाशय भी सूखगया था वह शक्तिहीन होगया था इसी कारण जवाब देदिया। गर्भाशय के सूखजाने और इच्छा शक्ति नष्ट होजाने से स्त्री वन्ध्या होजाती है।

जो पुरुष अथवा स्त्रियां स्वय इस अंग का हाथों से स्पर्शकर अर्थात् घर्षण क्रिया करके स्त्री को उत्तेजित करके उसकी इच्छा पूरी करते हैं अथवा स्त्रियां अपने हाथ से ऐसा करती हैं वे नपुंसक होजाती हैं। उनकी उत्तेजना शक्ति नष्ट होजाती है इसलिये

गर्भ नहीं रहता और उनको प्रसन्नता भी संभोग मे कभी नहीं होती। इसका कोई इलाज नही हो सकता क्योकि प्राकृतिक प्रसन्नता भी नष्ट हो जाती है और बिना स्पर्श के स्त्री की इच्छा होती नही, सो भी जब बहुत देरी तक पुरुष हाथ से स्पर्श करता रहे तब स्त्री की कुछ इच्छा होगी। तब तक पुरुष की इच्छा जाती रहेगी क्योंकि जिन मूर्ख पतियो ने हाथ से इस स्थान का स्पर्श करके स्त्री को उत्तेजित करके सभोग करने की आदत डाली है उनने ऐसा इसी कारण किया है कि उनमे संभोग करके स्त्री को उत्तेजित करने की सामर्थ नही होती।

जो मूर्ख पति ऐसा करते हैं उनकी स्त्रियो का जीवन तो नष्ट होता ही है किन्तु पुरुष भी कुछ दिनो मे रोया करते हैं और पछताते हैं। सम्भव है यह बात अभी तक किसी को कदाचित मालूम न हो क्योकि जिन्हो ने अपनी पुस्तको मे इस अग के विषय मे लिखा है उन्होने केवल इतना ही लिखा है कि इस स्थान के स्पर्श से स्त्री को बड़ा आनन्द आता है। यह बात उन्हे भी नही मालूम है कि इस स्थान को स्पर्श करने से कितनी बड़ी खराबिया उत्पन्न हो जाती है। उन्हे याद रखना चाहिये कि यह स्थान हाथ से स्पर्श करने योग्य नही है।

इस दुष्ट स्वभाव से पुरुषो को बचते रहना चाहिये और स्त्रियो को भी सावधान रहना चाहिये। जो इस पर ध्यान नही देंगे उन्हे जीवन भर रोना और पछताना पड़ेगा। उनका जीवन नीरस हो जायगा जैसे कि ऊपर के उदाहरणों मे बतलाया गया है।

चौदहवाँ अध्याय
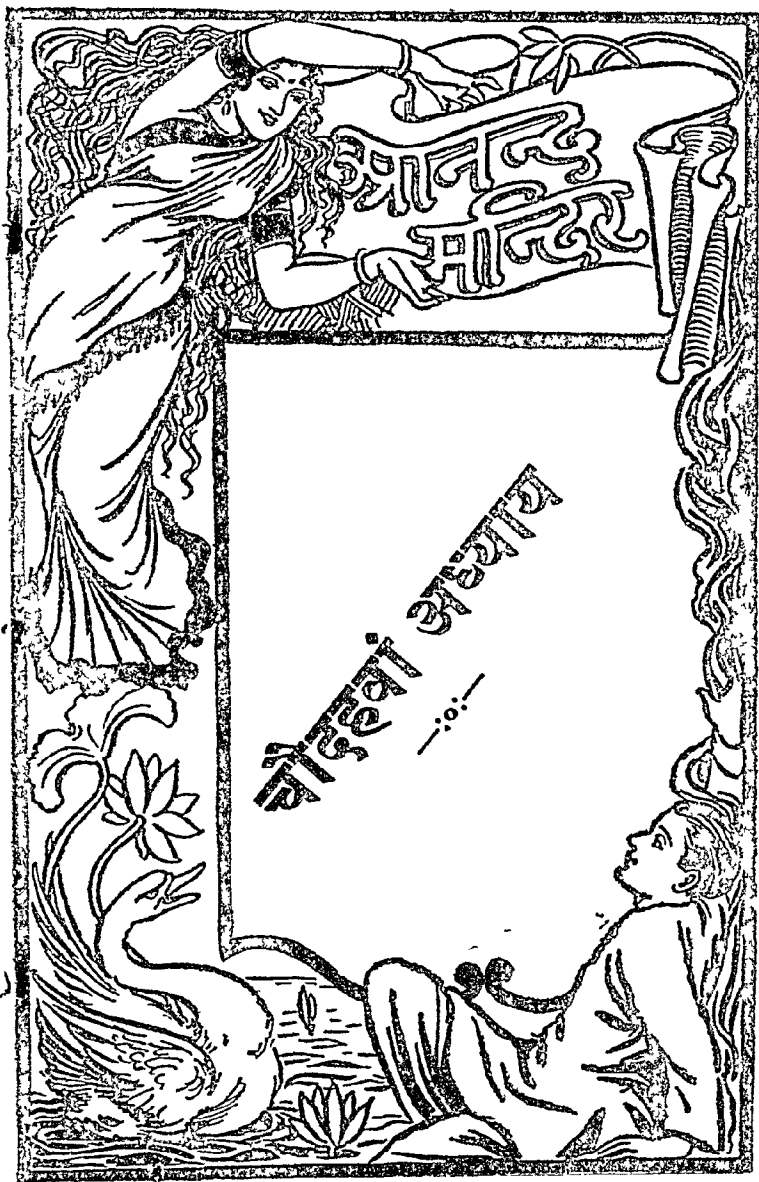
रतिक्रिया का प्राकृतिक नियम और उत्तम सन्तान

इच्छेतां यादृशं पुत्रं तद्रूपचरितांश्च तौ ।
चिंतयेतां जनपदांस्तदा चार परिच्छदौ ॥

इसका अर्थ यह है कि स्त्री पुरुष को जैसे पुत्र की इच्छा हो वैसे ही रूप (वर्ण संस्थान प्रमाण आकृति) और चरित्र (श्रद्धा श्रुत, ऋजुता, आनृशंस्य, दान, दया, दाक्षिण्यादि स्वभाव वाले) तथा आचार (कुल और देश के अनुरूप कर्त्तव्य कर्म) और परिच्छद (मनुष्य गौ, घोड़ा, धन, धान्य, वस्त्र, अलंकार, रत्न, रथ, वाले) मनुष्यो का ध्यान करे ।

कर्मांते च पुमान्सर्पिः क्षीरशाल्योदनाशितः ।
प्राग्दक्षिणेन पादेन शय्यां मौहूर्तिकाज्ञया ॥
आरोहेत् स्त्री तु वामेन तस्य दक्षिण पार्श्वतः ।
तैल माषोत्तराहारा तत्रमंत्रं प्रयोजयेत् ॥

अर्थात पुरुष घी और दूध मिलाकर शाली चावलो (भात) का भोजन करके शुभ मुहर्त का विचार कर उत्तम सन्तान की हृदय मे इच्छा करके सभोग के लिये स्त्री के पास जावे ।

पीछे लिखा जा चुका है कि शास्त्रकारो का मत है, पति

सफेद वस्त्र धारण कर सुगन्धित पदार्थों को शरीर में लगाकर सफेद फूलों की माला ले स्त्री के पास जावे। (देखिये चित्र फूलों का हार लिये पुरुष स्त्री के पास उत्तम सन्तान के लिये रतिक्रिया की इच्छा करके खडा है)।

इसी तरह पत्नी भी उत्तम पदार्थों का भोजन करके शृंगार कर उत्तम सन्तान की हृदय में इच्छा करके प्रसन्न चित्त हो सम्भोग के लिये शयनगृह में जावे। देखिये चित्र गर्भाधान की तैय्यारी। पत्नी शृंगार करके शयनगृह में जाकर पती की प्रतीक्षा कर रही है।

शास्त्रकारों ने यहां बतलाया है कि उत्तम सन्तान के लिये सम्भोग की इच्छा से प्रसन्नचित हो शयनगृह में जाकर पहिले स्त्री बांये पैर से पलग पर चढ़े (देखिये चित्र बांये पैर से स्त्री पलग पर चढ रही है) यदि स्त्री पहिले शयनगृह में जावे तो बांये पैर से पलग पर चढ़े और पति के आने की प्रतीक्षा करे। यदि पति स्त्री से पहिले ही शयनगृह में चलाजावे तो दाहिने पैर से पलग पर चढ़े और स्त्री की प्रतीक्षा करे अर्थात् स्त्री बांये पैर से पलग पर चढ़े और नीचे लिखे मंत्र को पढ़े —

अहिरसि आयुरसि सर्वतः प्रतिष्ठासिधातात्वम्। दधातु विधाता त्वां दधातु ब्रह्मवर्चसाभवति॥ ब्रह्मा बृहस्पति विष्णुः सोमः सूर्यस्तथाश्विनो-भगोऽथमित्रावरुणौ वीरं ददतु मे सुतम्॥

पति का प्यार संसार के बहुमूल्य आभूषणों से भी बढ़कर है। पृ० ५००

इस मंत्र का पाठ करे इसका अर्थ इस प्रकार है:—

शेष भी तू ही है। आयु भी तू ही है। धाता विधाता तुझे ब्रह्म तेज से धारण करे। ब्रह्मा, विष्णु, बृहस्पति, चन्द्रमा, सूर्य, अश्विनी कुमार, भगमित्र, वरुण ये सब मुझको वीर पुत्र दे।

सांत्वयित्वा ततोऽन्यं संविशेतां मुदान्वितौ।
उत्ताना तन्मना योषितिष्ठेदंगैः सुसंस्थितैः॥
तथाहि बीजं गृह्णाति दोषैः स्वस्थानमास्थितैः।

स्त्री पुरुष दोनो आपस मे एक दूसरे को प्रेम प्यार से और मीठी प्यार की बातो से अर्थात् आलिंगन चुम्बन से तृप्त करके अनेक प्रकार से प्रसन्न करे।

इसी तरह अनेक प्रकार के आलिंगन चुम्बन के अर्थ विषयी पुरुषो ने आसन समझ रक्खे हैं। सम्भव है कोका पंडित ने जिनके नाम को कोकशास्त्र ने बदनाम कर रक्खा है इसी आशय को लेकर अनेक प्रकार के आसन बना डाले हो अथवा अन्य किसी विषयी राजा को ठकुर सुहाती कहने वाले ने मनगढ़त विपरीत रतिक्रिया के उपाय बताये हो, उन्ही को लोग कामशास्त्र के आसन समझने लगे हो।

पीछे लिखा जा चुका है कि आयुर्वेद का एक अंग काम-शास्त्र है और उसमे यही विषय है। विषयी पुरुषों ने इसका कुछ और आशय समझ रक्खा है।

शास्त्रकार बतलाते हैं कि जब अनेक प्रकार से प्रेम प्यार से स्त्री प्रसन्न हो और उसकी इच्छा रतिक्रिया के लिये हो तब दोनों बड़े प्रेम से सभोग मे प्रवृत्त हो।

समागम के समय स्त्री को उचित है कि शान्त और प्रसन्न मन से अपने सब अङ्गो की स्थिति को यथावत करके सीधी लेटे जैसा कि अन्यत्र चित्र मे दिखलाया गया है। गर्भाधान के समय अर्थात् जिस समय रतिक्रिया समाप्त होने को हो तो स्त्री को बिलकुल सीधा रहना चाहिये, हाथ पैर आदि अगो को न हिलाना चाहिये।

इस तरह करने से वातादि सम्पूर्ण दोष अपने अपने स्थानो मे रहते हैं जिससे बीज के ग्रहण करने मे सुभीता होता है। आयुर्वेद बतलाता है कि नीची ऊ ची पड़ी हुई व करवट लिये हुये स्त्री से समागम न करे। कुबड़ेपन से, वात बलवान होने से योनि मे पीडा होती है। दाहिनी करवट मे कफ योनि के मुख को ढक लेता है। बाये करवट मे पित्त रक्त और शुक्र मे दाह पैदा करता है जिसमे गर्भ को हानि पहुचती है। यदि गर्भ न भी रहा तो स्त्री के गर्भाशय को हानि पहुचती है और अनेक प्रकार के रोग उत्पन्न होते हैं। पुरुष को भी वीर्य और इन्द्री सम्बन्धी रोग उत्पन्न होते हैं।

गर्भाधान के समय की स्थिति

जिस समय पुरुष का वीर्यपात होने का समय आवे उस समय स्त्री और पुरुष दोनो बिलकुल सीधे हो। स्त्री के मुह पर पति

शिशुरक्षा-विधान बालरोग-चिकित्सा

इस पुस्तक में बालकों के सब प्रकार के रोग होने के कारण रोगों की पहिचान और उनको दूर करने के सरल उपाय तथा सरल औषधियां नुस्खे लिखे गये हैं मूल्य ॥।) बारह आना।

सुखी कुटुम्ब दाम ॥।) बारह आना

बालिकाओं और स्त्रियों के लिये पुस्तक बड़ी ही उपयोगी और हर समय काम में आने वाली है।

स्त्री संगीत-सागर दाम ॥) आठ आना

पुस्तक आरम्भ करके छोड़ने की इच्छा नहीं होती स्त्रियों के हर समय गाने योग्य भजन, ग़ज़ल ठुमरी, दादरा, कजली, होली आदि सभी प्रकार के गाने हैं। मूल्य ॥) आठ आना।

सच्चा पतिप्रेम दाम ।-) पाँच आना

स्त्रियों के लिये यह अत्यन्त शिक्षाप्रद अपूर्व पुस्तक है।

पत्नी पत्र-दर्पण दाम ।-) पांच आना

कुटुम्ब के लिये सब प्रकार की चिट्ठी लिखने की सरल विधियां इसमें लिखी गई हैं।

चित्रमय बाला रामायण मूल्य १॥)

२२-२५ रंग बिरंगे सुन्दर चित्रों से युक्त स्त्रियों के लायक अत्यन्त उपयोगी, सरल और रोचक रामायण की कथा प्रत्येक हिन्दू नारी को स्त्री कर्त्तव्यों के ज्ञान और सीता तथा रामचन्द्रजी की पवित्र कथा को पढ़ने के लिये यह पुस्तक मंगाना चाहिये।

मैनेजर स्त्रीशिक्षा पुस्तकालय कर्नलगंज प्रयाग।

नारी नीति शिक्षा मूल्य ।–) आना

इस पुस्तक का गुण भी इसके नाम से ही समझ लीजिये उपयोगी शिक्षायें भरी पड़ी हैं।

पति प्रेम पत्रिका मूल्य ।।) आठ आने

इस पुस्तक में स्त्री की ओर से पति के लिये बड़ी ही मनो हारिणी चिट्ठियां लिखने की सरल रीति और पति की ओर से पत्नी के लिये शिक्षायुक्त चिट्ठियां लिखने की रीति बताई है।

सती भूषण मूल्य ।–) पांच आना

इस पुस्तक में स्त्रियों के सच्चे आभूषण बताये गये हैं।

पतिव्रता मूल्य ।।) आठ आना

कौन हिन्दू स्त्री पुरुष आदर्श कुल रमणी पतिव्रता दमयन्ती का नाम न जानती होगी स्त्री जाति के गौरव का जीता जागता नमूना है हर एक हिन्दू स्त्री के पास यह पुस्तक अवश्य रहनी चाहिये। मूल्य सचित्र पुस्तक का ।।) आठ आना।

कन्या भजन भंडार मूल्य ।) चार आना

कन्याओं के गाने योग्य अत्यन्त उपयोगी पुस्तक भजनों द्वारा कन्याओं के कर्त्तव्यों की शिक्षा दी गई है।

घर का वैद्य मूल्य ।–) पांच आना

यह प्रतिदिन के काम में आनेवाली स्त्रियों के लिये वैद्यक की बड़ी ही उपयोगी पुस्तक है, हर एक रोग के सैकड़ों नुस्खे हैं।

मैनेजर स्त्रीशिक्षा पुस्तकालय कर्नलगंज प्रयाग।

पति की मर्यादा दाम ।-) पांच आना

इस पुस्तक से स्त्रियों को पति मर्यादा का ज्ञान प्राप्त होता है वे नारी जीवन और परलोक का सुधार कर सकती हैं।

नई बहू दाम ।≈)पांच आना

नई बहू के लिये उसके कर्तव्य का अमूल्य शिक्षायें देने वाली यह पुस्तक अत्यन्त रोचक और उपयोगी है।

स्त्री भजन-वाटिका दाम ।) चार आना

स्त्रियों के भजनों की अत्यन्त उपयोगी अपूर्व पुस्तक है। ऐसी पुस्तक आज तक नहीं छपी।

घर की दर्जिन सचित्र दाम ॥) आना

इसमें सब प्रकार के कपड़े काटना, छाटना और सीने की सरल विधियां ऐसे सीधे ढंग से समझाई गई हैं कि थोड़ी पढ़ी लिखी स्त्री और बालिकाएं पढ़ने और सुनने मात्र से सब प्रकार के कपड़े जनाने, मर्दाने तथा बच्चों के सीना, नापना काटना, सीख जाती हैं दाम ॥) आठ आना।

कण्ठाग्रगणित मूल्य ।) चार आना

कन्याओं के लिये हिसाब की अपूर्व पुस्तक है।

पातिव्रत धर्म्म माला मूल्य ।-) पांच आना

इसमें पातिव्रत धर्म्म को सिखलाने वाली स्त्रियों के लिये धर्म्म शास्त्र की आज्ञाएं ऋषियों के उपदेशों का वर्णन है।

अन्य उपयोगी पुस्तकें

सच्ची सहेली मूल्य ।-) पांच आना

सच्ची सहेली को पढ़कर स्त्रियां अनेक प्रकार की शिक्षायें पाकर सर्वगुण सम्पन्ना बनती हैं ।

सन्तति सुधार मूल्य ।।) आठ आना

माता पिता सन्तान का सुधार किस प्रकार कर आदर्श सन्तान बना सकते हैं यह बात इस पुस्तक से मालूम होगी ।

सुघड़ रंगरेज ।) चार आना

हर प्रकार के सुन्दर देशी रंग बनाना और सब प्रकार के कपड़े रंगने की सरल विधियाँ इस पुस्तक में बताई गई है ।

नारी संगीत रत्नमाला दाम ।-) पांच आना

स्त्री-उपयोगी भजनों की अमूल्य पुस्तक है ।

चित्रमय सती सावित्री की कथा मूल्य ।।।)

चित्रमय दमयन्ती की कथा मूल्य ।≈)

चित्रमय रानी शैव्या की कथा मूल्य ।≈)

शास्त्रशिक्षा मूल्य ।-) पांच आना

इस पुस्तक में स्त्रियों के लिये अपने हिन्दू धर्मशास्त्र का मथन कर अत्यन्त उपयोगी शिक्षायें उद्धृत की गई हैं ।

मैनेजर स्त्रीशिक्षा पुस्तकालय कर्नलगंज प्रयाग ।

स्त्री पुरुषों के लिये नई चीज

प्रेम भाव को दृढ़ करने वाली

सचित्र

पत्नी की मनोहर चिट्ठियां

यह सचित्र पुस्तक अभी बिलकुल नई तैयार हुई है। इसमें पत्नी की ओर से पति को बहुत ही आकर्षक मोहक मनोहर पद्यमय अर्थ सहित मनभावनी चिट्ठियां लिखी गई हैं। जिन्हें पढ़कर हृदय में अतीव आनन्द और प्रेम भाव उमड़ पड़ता है साथ ही स्त्री की योग्यता, बुद्धिमानी और कोमलता का नक्शा खिंच जाता है। पुस्तक स्त्री मात्र के पढ़ने योग्य है। मूल्य केवल ॥) आठ आना।

सचित्र पति के पत्र

मजेदार "पति के पत्र" पढ़ते ही बनते हैं। इसमें ऐसे २ पत्र लिखे गये हैं जिनसे दुष्ट से दुष्ट स्त्रियां भी पति के अनुकूल हो जाती हैं। पति में उनकी दृढ़ श्रद्धा भक्ति हो जाती है। परदेश में भी रहकर पति अपनी पत्नी को हर प्रकार खुश रख सकता है। मूल्य केवल ॥) आठ आना।

मैनेजर स्त्रीशिक्षा पुस्तकालय कर्नलगंज प्रयाग।

२५ वर्षों का फल, जीवन के लिये अमृत

श्रीमती यशोदादेवी कृत

वैद्यक शिक्षा का सर्वोत्तम बृहद् ग्रन्थ

सचित्र देवी अनुभव प्रकाश

यह वैद्यक शिक्षा का अपूर्व और बहुत बड़ा अद्वितीय ग्रन्थ है। हिन्दी में वैद्यक शास्त्र का इतना बढ़िया और अच्छा ग्रन्थ दूसरा नहीं निकला। इसे श्रीमती यशोदादेवी ने अपने २५ पचीसों वर्षों के अनुभव से लाखों स्त्री पुरुषों का इलाज करके, वैद्यक शास्त्र के प्रमाणिक ग्रन्थो का मथन कर लिखा है।

इस ग्रन्थ में समस्त गुप्त प्रकट साध्यासाध्य स्त्री रोगों का खुलासा वर्णन, रोगों की पहचान, लक्षण आदि चित्र सहित दिये गये हैं। तथा प्रत्येक रोग पर कई २ परीक्षित बीसों वर्ष के आजमाये शर्तिया फायदा करने वाले नुसखे दिये गये हैं नुसखे सरल से सरल और अच्छे है जिन्हें कोई भी घर पर ही तयार करसकता है। ग्रन्थ बहुत सरल भाषा में लिखा गया है।

इस एक पुस्तक को लेकर फिर वैद्यक सीखने और अच्छे २ नुसखे जानने के लिये दूसरी पुस्तक पढ़ने की आवश्यकता नहीं रहती। प्रत्येक स्त्री को आरोग्यता प्राप्त करने रोगों से बचने और स्वस्थ सुन्दर सन्तान उत्पन्न करने के लिये यह अपूर्व पुस्तक मंगाकर जरूर पढ़ना चाहिये। कई भागों की सम्पूर्ण पुस्तक का मूल्य केवल ५ ॥=) पांचरुपया ग्यारह आना।

मैनेजर स्त्रीशिक्षा पुस्तकालय कर्नलगंज प्रयाग।

सचित्र गर्भ रक्षा विधान

स्त्रियों के लिये यह पुस्तक बड़ी उपयोगी है क्योंकि इस विषय के न जानने से गर्भवती स्त्रियां अनेक प्रकार के कष्ट भोगती हैं और सन्तान होते समय मूर्खा दाइयों के कारण उनके अनेक प्रकार के गर्भाशय के रोग उत्पन्न हो जाते हैं जिससे कुछ दिनों में ही वे मर जाती हैं। इस पुस्तक को पास रखकर सब हानियों से रक्षा होती है। मूल्य ॥।)

सन्तानोत्पत्ति विषय का अद्वितीय ग्रन्थ

सचित्र गर्भ विज्ञान

गर्भ विज्ञान सम्बन्धी बातों का अनुभव न होने से ही सन्तानोत्पत्ति सम्बन्धी अनेकों खराबियां पैदा होती हैं और पुरुष दम्पति हजारों रुपये बर्बाद करके रोते झींकते अपना जीवन बिताते हैं। इस एक ही पुस्तक से हजारों रुपयों का फायदा होता है। इसमें गर्भाशय क्या है, पुरुषों की अज्ञानता, आरोग्य सन्तान, स्त्रियों के गर्भ न रहने, गर्भस्राव गर्भपात और रोगी सन्तान होने के कारण, योनि सम्बन्धी रोग, गुप्त रोगों का वर्णन गर्भाशय रोग, योनिरोग, मासिकधर्म, गर्भ विधान, गर्भाधान के नियम, गर्भ रहने का समय, गर्भधारण के चिन्ह, मूढ़ गर्भ, सुन्दर स्वस्थ सन्तान आदि विषयों का बड़े विस्तार पूर्वक वर्णन कियागया है। प्रत्येक गृहस्थ को इसकी एक कापी अवश्य रखना चाहिये। मूल्य केवल ३।) सवातीन रुपये।

मैनेजर स्त्रीशिक्षा पुस्तकालय कर्नलगंज प्रयाग।

दम्पति आरोग्य-शास्त्र

जीवन शास्त्र-प्रथम भाग

श्रीमती यशोदा देवी ने इस ग्रन्थ को वैद्यक शास्त्र का मथन कर स्त्री पुरुषों की आरोग्यता के लिये बनाया है इस पुस्तक को पढ़ सुनकर स्त्रियां घर बैठे ही वैद्यक शास्त्र का ज्ञान प्राप्त कर रोगों से छुटकारा पाती हैं और अपने पतियों को भी रोगों से हमेशा बचाये रहती हैं।

इस पुस्तक में स्त्री और पुरुषों के अनेक रोगों को दूर करने वाले परीक्षा किये हुये २५० ढाई सौ से अधिक नुस्खे हैं और साथ ही उनके बनाने की सरल विधियां भी बतलाई गई हैं।

हर एक गृहस्थ इस पुस्तक से फायदा उठा सके इसलिये मूल्य बहुत कम १॥) डेढ़ रुपया ही रक्खा है।

सचित्र आरोग्यशास्त्र

दूसरा भाग

(वैद्यक रत्न संग्रह) चित्र संख्या लगभग १००

यह ऊपर की पुस्तक का दूसरा भाग है इसमें ३०० तीन सौ से अधिक अनेक रोगों पर नुस्खे हैं इस दूसरे भाग का मूल्य भी १॥) डेढ़ रुपया है इस एक ही ग्रन्थ के दोनों भागों को पढ़ सुनकर स्त्रियां वैद्यक में पूरा ज्ञान प्राप्त करलेती हैं।

मैनेजर स्त्रीशिक्षा पुस्तकालय कर्नलगंज प्रयाग।

फायदा उठावें इसी अभिप्राय से इतने बड़े ग्रन्थ का मूल्य १॥) डेढ़ रुपया कर दिया गया है। यदि पसन्द न हो तो पुस्तक लौटा दीजिये, और अपने दाम वापिस मगा लीजिये।

नारी धर्म्म शास्त्र

गृह-प्रबन्ध शिक्षा

पुस्तक में क्या है सो नाम से ही समझ लीजिये, ऐसा उपयोगी धार्मिक-शिक्षा और गृह प्रबन्ध शिक्षा-का ग्रन्थ स्त्रियों के लिये हिन्दी ही नहीं देश की किसी भाषा में भी नहीं छुपा।

कई रंगों में छपे हुए तथा सादे सुन्दर मनोहर चित्रों सहित बड़े सुन्दर सचित्र ग्रन्थ का मूल्य सिर्फ २=) दो रुपया दो आना।

स्त्रियां और लड़कियां इस सुन्दर ग्रन्थ को देखकर बड़ी प्रसन्न होंगी, वे इस ग्रन्थ को हाथ में लेकर पढना आरम्भ करके छोड़ने की इच्छा न करेंगी यह ग्रन्थ स्त्रियों को आदर्श गृहिणी बनाने के लिये, स्त्री जाति के उपकार के लिये प्राचीन ग्रन्थों का खोज करके तैयार किया गया है।

हर एक गृहस्थ को एक एक प्रति अवश्य घर में रखनी चाहिये इस पुस्तक को पढ, सुनकर स्त्रियां और पुत्रियां स्त्रियों के सब प्रकार के कर्तव्यों में सर्वगुण सम्पन्न बन जाती हैं। ऐसा उपयोगी ग्रन्थ पचास रुपया खर्च करने पर भी दूसरी जगह न मिलेगा। शीघ्र आर्डर दीजिए।

मैनेजर स्त्रीशिक्षा पुस्तकालय कर्नलगंज प्रयाग।

का मुह, आंख के सामने आंख हो और एक दूसरे को प्रेम और प्रसन्नता की दृष्टि से देखते रहें। स्त्री पति की मुखाकृति को अपने हृदय में धारण करे। जिस समय पुरुष का वीर्य पात होने लगे उस समय स्त्री अपनी श्वास ऊपर को खींचे और कुछ देरी तक श्वास ऊपर को ही खींचे रहे।

ऐसे समय की प्रसन्नता और स्थिति का प्रभाव गर्भपर पड़ता है। आयुर्वेद के लेखानुसार गर्भाधान क्रिया करने से उत्तम सन्तान की प्राप्ति होती है और स्त्री पुरुष दोनो स्वस्थ तथा प्रसन्न रहते हैं।

गर्भधारण के लक्षण

लिंगंतु सद्योगर्भाया योन्यां बीजस्य संग्रहः ।
तृप्तिर्गुरुत्वं स्फुरणं शुक्रास्रानुबंधनम् ॥
हृदय स्पंदनं तंद्रा तृड् ग्लानिर्लोमहर्षणम् ।

अर्थ.—तत्काल गर्भको धारण करने वाली स्त्री के ये लक्षण होते हैं। यथा योनि में बीज का सम्यक रीति से ग्रहण, तृप्ति, (आहार की अनिच्छा) कोख में भारीपन, फड़कन, संभोग के बाद योनि से वीर्य का बाहर न निकलना, हृदय में प्रसन्नता, आंखों मे आलस्य, तृषा, ग्लानि और रोमांच होना ये लक्षण तत्काल गर्भधारण के हैं। गर्भवती को ध्यान से देखने से ये लक्षण पहचान में आजाते हैं।

गर्भरक्षा

जब मालूम हो कि गर्भ रह गया तब स्त्री को बडी सावधानी से रहना चाहिये। ये बात पहिले ही समझाई गई है कि माता जैसा आहार विहार करती है उसका प्रभाव बालक पर पडता है नाड़ियो के द्वारा माता के आहार विहार का प्रभाव बच्चे पर पड़ता है।

जब मालूम हो जावे कि गर्भ रह गया तब से गर्भवती स्त्री को बड़ी सावधानी से रहना चाहिये। भारी आहार तथा कब्ज करने वाली वस्तुएं न खानी चाहिये। देर मे पचे अथवा बदहजमी करे ऐसे पदार्थों का सेवन छोड देना चाहिये। गर्भावस्था में भारी और अधिक ऋतु और प्रकृति के विरुद्ध भोजन से प्राय: अनेक रोग उत्पन्न हो जाते हैं। जो स्त्री गर्भावस्था मे आहार विहार का ठीक नियम रखती हैं उन्हे प्रसव के समय किसी प्रकार का कष्ट नही होता। गर्भवती को यदि दस्तो का रोग उत्पन्न हो जावे और अधिक बढ़जावे तो गर्भपात होने की सम्भावना रहती है बहुधा गर्भ गिर भी जाता है। इसलिये गर्भावस्था मे ऐसे भी पदार्थ न खाने चाहिये जो दस्त लावे या पेट मे किसी तरह की शिकायत पैदा करे। गर्भावस्था मे बड़ी सावधानी से रहना चाहिये, शरीर को आराम देना चाहिये।
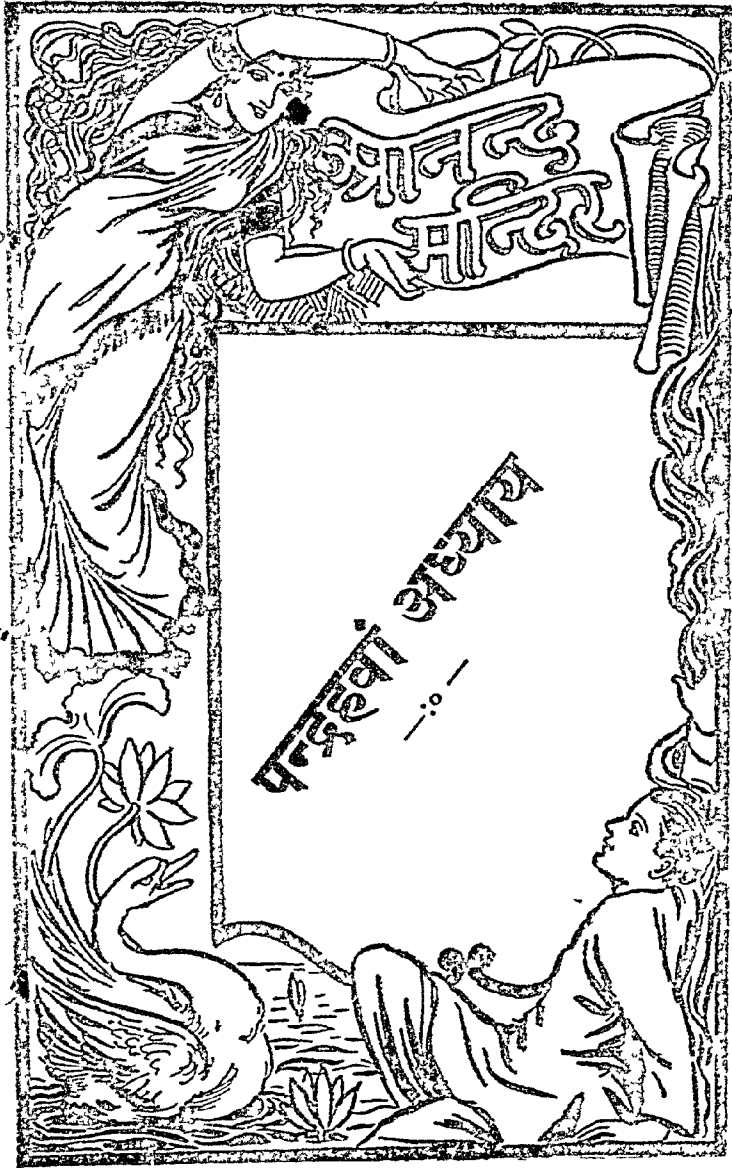
पन्द्रहवाँ अध्याय

गर्भधारण

पीछे बतलाया गया है कि शुद्ध रज वीर्य तथा आरोग्य जनेन्द्री वाले दम्पति ही उत्तम सन्तान उत्पन्न कर सकते हैं। यदि रज वीर्य पत्नी अथवा पति किसी की जनेन्द्री मे खरावी हुई हो तो गर्भधारण नही होता।

मेरे पास लाखो स्त्रियां अपना इलाज कराने आईं इनमे आधी से अधिक संख्या ऐसी स्त्रियो की पाई गई जो सन्तानहीन थी। रोग की परीक्षा करने से बहुतों मे गर्भाशय की खरावी न थी उनके पति का उन स्त्रियो की जवानी हाल मालूम हुआ कि पतियो मे इन्द्री की सिथिलता शीघ्रपात और नपुंसकता आदि रोग मौजूद हैं।

जब उनके पतियो से पत्र द्वारा पूछा गया तब मालूम हुआ कि उन्होंने अनियम वीर्य का सत्यानाश मारकर जनेन्द्री की शक्ति को नष्ट कर डाला इस कारण वे सन्तान उत्पन्न करने के योग्य नही रहे। उनके पत्र तथा स्त्रियों की जवानी मालूम हुआ कि वे उचित रीति से रतिक्रिया नही कर सकते क्योंकि वे शक्तिहीन होगये हैं। इसलिये गर्भधारण नही होता।

जिनकी स्त्रियों मे कुछ खरावी नही थी पति मे खरावी थी उनके पति का इलाज कर दिया गया सन्तान होने लगी और अब तक हो रही है। इन बातो से उत्तम गर्भ होने का अन्दाज लग सकता है।

स्त्रियों के जनेन्द्री दोष

लाखों स्त्रियो मे इलाज से उनके गुप्त रोगों की परीक्षा करके जो रोग देखे गये और उन रोगो के उत्पन्न होने के कारणो की खोज की गई तो स्त्रियो की जवानी तथा उनके पति के पत्रो से मालूम हुआ कि स्त्रियो के गर्भाशय मे जितने रोग उत्पन्न होते हैं वे सब प्राय: पतियो की अज्ञानता "अधिक विषय" और विपरीत आसन से रतिक्रिया करने से उत्पन्न होते हैं।

पीछे स्त्री की जनेन्द्री सम्बन्धी अगों का वर्णन किया गया है यहा जनेन्द्री (गर्भाशय) का वर्णन किया जाता है। पुरुषो की अज्ञानता से स्त्रियो के गर्भाशय मे नीचे लिखे रोग उत्पन्न होते है जिनसे गर्भ नही रहता और जब तक ये रोग दूर न हो स्त्रिया गर्भधारण नही कर सकती।

यदि गर्भ रहा भी तो निर्बल दुर्बल और कम आयु वाली सन्तान उत्पन्न होती है तथा गर्भस्राव व गर्भपात की शिकायत हो जाती है, इसी प्रकार के रोगो से स्त्रिया जीवन भर दु:खी रहा करती हैं। मैने लाखो स्त्रियो का इलाज करके इस बात का अनुभव प्राप्त किया है कि पतियो की अज्ञानता से ही स्त्रियो की रोगी सख्या अधिक देखी जाती है।

अधिक और अनियम रतिक्रिया करने से गर्भाशय के बन्धन ढीले होजाते हैं और नसो मे खराबी पहुँचने के कारण प्रदर, मासिकधर्म्म की खराबी, गुल्म रोग उत्पन्न हो जाते है।

पत्नी की प्रेमवार्त्ता

योनि और गर्भाशय

स्त्री की योनि शंख की नाभि की समान तीन पर्तवाली होती है उसके तीसरे पर्त मे गर्भाशय है और वह वहुत पतली और कोमल नसो से मिलकर वना हुआ है। जैसा रोहू मछली का मुंह होता है, उसी आकृति का गर्भाशय होता है, ऊपर से छोटा और भीतर से फैला हुआ होता है जैसा कि ऊपर चित्र मे दिखलाया गया है।

गर्भाशय सफेद रग का वहुत कोमल और सुन्न होता है जिससे वच्चे के वोझ से और खिचाव से (जो गर्भ के वढ़ने मे होता है) स्त्री को कष्ट न हो। गर्भाशय के दूसरे पर्त मे वहुत सी नसे और चुन्नटे हैं इन्ही चुन्नटो और नसो के कारण गर्भ रुकता है।

गर्भाधान क्रिया से अर्थात् सभोग से जव पुरुष का वीर्य गर्भाशय मे जाता है तव वही चुन्नटे प्राकृतिक नियम से खिच जाती है जिससे गर्भाशय मे वीर्य पहुचते ही गर्भाशय का मुख अपने आप ही वन्द होजाता है।

मासिक धर्म्म के समय रक्त निकलने के लिये प्रकृति गर्भाशय

के मुख की उन चुन्नटो को फैला देती है जिससे गर्भाशय का मुख फैल जाता और मासिक धर्म्म का रक्त निकल जाता है, कोई कष्ट नहीं होता। यदि गर्भाशय मे किसी प्रकार की खरावी न हुई तो मासिक धर्म्म के दिनो मे गर्भाशय की चुन्नटे ठीक ठीक खुल जाती है और रक्त भलीभांति निकल जाता है।

आरोग्यता की दशा में

जिस गर्भाशय मे किसी प्रकार की खरावी नही होती उसका मुख ठीक खुल जाता है।

आगे के चित्र मे गर्भाशय का चित्र जनेन्द्री के सव अंगो सहित दिखलाया गया है। यदि गर्भाशय मे किसी प्रकार का रोग न हो तो वह पुरुष के वीर्य को अपनी ओर आकर्षण करके अर्थात् खींच कर अपने मुख मे लेकर मुख वन्द कर लेता है वही पुरुष का वीर्य गर्भाशय के भीतर जाकर स्त्री के रज मे मिलकर गर्भधारण करता है।

जिस संभोग में स्त्री पति से पहिले हो स्खलित हो जाती है उसका रज गर्भाशय मे पहिले से ही मौजूद रहता है, उसी क्षण पुरुप का भी वीर्य गर्भाशय मे पहुचकर स्त्री के रज मे मिल जाता है। इस प्रकार स्त्री के पहिले स्खलित होने से कन्या उत्पन्न होती है।

यदि पुरुप का वीर्य गर्भाशय मे पहिले से पहुँच जावे और स्त्री पुरुष से पीछे स्खलित हो तो पुत्र के गर्भ की स्थिति होती है।

मासिकधर्म्म के समय गर्भाशय का खुला हुआ मुख
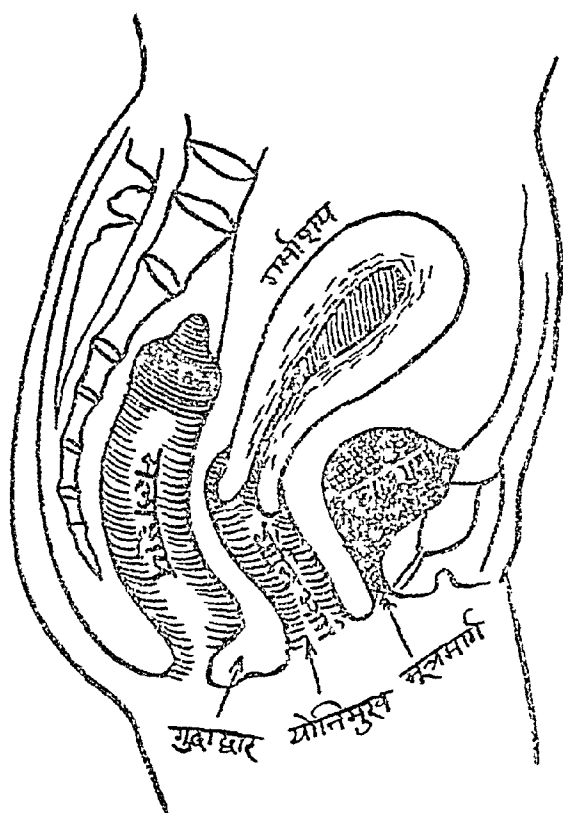
मासिक धर्म्म के समय गर्भाशय का मुख खुला रहता है ऐसी दशा मे रतिक्रिया करने से कभी २ स्त्री वन्ध्या हो जाती है।

पुत्र और कन्या की गर्भ स्थिति का कारण

आयुर्वेद मे गर्भाधान के लिये सम और विसम रात्रियो का जो नियम बतलाया है उसका यह कारण है कि ऋतुधर्म्म के बाद सम रात्रियों मे स्त्री रज कम होता है अर्थात् गर्भोत्पादक जीवो की सम रात्रियो मे कमी रहती है और विसम रात्रियो मे अधिकता रहती है। इसलिये विसम रात्रियो मे सभोग करने से जो गर्भ रहता है उससे कन्या का जन्म होता है।

समरात्रि मे रज की कमी रहती है अर्थात् स्त्री के गर्भोत्पादक जीव कम रहते हैं। पुरुप का वीर्य बलवान् पडता है अर्थात पुरुप के वीर्य के गर्भोत्पादक जीव अधिक रहने के कारण गर्भ मे पुत्र होता है। इसीलिये सम विसम रात्रियो का विचार रक्खा गया है। जैसा कि पृष्ठ ३६५ के चित्र से प्रकट होता है।

जो आयुर्वेद के नियमो से अज्ञान हैं वे अपनी पुस्तको मे लोगो को शिक्षा देते हैं और स्त्री को पुरुप से पहिले स्खलित होने के अनेक उपाय बतलाते हैं। कोई कोई मूर्ख लोग यहां तक उपाय बतलाते हैं कि सभोग के समय पति पत्नी एक साथ ही स्खलित हो तो बड़ा ही आनन्द आता है। मानो स्वर्ग का सीधा रास्ता बतलाते हैं। आयुर्वेद बतलाता है पति पत्नी दोनो एक साथ स्खलित हो और गर्भ रह जावे तो नपुंसक सन्तान उत्पन्न होती है। इस विपय मे पीछे खुलासा लिखा जा चुका है। इसलिये मूर्खों की पुस्तको पर विश्वास करके संभोग करने के ही कारण

गर्भाशय में कन्या व पुत्र का स्थान
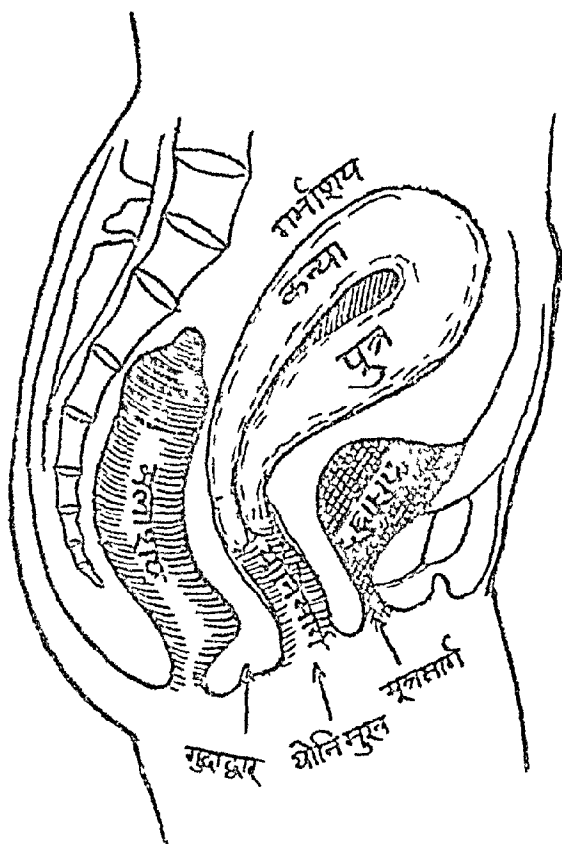
गर्भाशय में दो भाग होते हैं एक कन्या का एक पुत्र का।
वर्णन पढ़िये पृष्ठ ३६४ में—

देखने मे आता है कि नपुसको की सख्या कम नही है। मेरे पास नपुसक पुरुषो की स्त्रियां अपने पतियो की चिकित्सा के लिये आती हैं उनसे मुझे यह अनुभव हुआ।

गर्भ में दो बच्चे होने का कारण

गर्भाशय मे दो थैली होती हैं एक मे कन्या और एक मे पुत्र। सम रात्रियो मे पुत्र का गर्भस्थित होने के लिये पुत्र वाली थैली का मुख खुला रहता है और विसम रात्रियो मे कन्या के गर्भ की स्थिति के लिये कन्या वाली थैली का मुख खुला रहता है।

जैसा कि आगे चित्र मे दिया गया है। कभी कभी जब संभोग के समय वीर्यपात होते वक्त वायु से वीर्य के दो हिस्से हो जाते हैं और अनियम गर्भाधान क्रिया के कारण दोनो थैलियों का मुह खुल जाता है तब वीर्य के दो भाग होकर दोनो थैलियो मे गर्भ की स्थिति होती है और दो बालक एक साथ ही उत्पन्न होते हे। गर्भ मे दो बालक होने से माता को कष्ट होता है और कभी जच्चा और बच्चा दोनो के प्राण सकट मे पड़जाया करते हैं। यह कारण अनियम रतिक्रिया का ही है।

कभी कभी एक ही मे दो बालक एक जुडे हुए भी होते हैं दो बालक एक साथ उत्पन्न होने वाले तो सौ मे दस जीवित भी रहते हैं परन्तु एक साथ जुडे हुए मे एक भी जीवित नही रहता जो दो बालक एक साथ उत्पन्न होते है वे जो जीवित रहे तो एक साथ दोनो बीमार होते है और एक साथ दोनो रोगी होते है।

जवानी

पड़े और पीछे के हिस्से में जोरका झटका लगजावे तो गर्भ गिर जाता है। पीछे के हिस्से में कुछ खराबी उत्पन्न होजावे तो भी गर्भ नहीं रहता। इसलिये शास्त्रकारों ने गर्भवती को नियम पूर्वक बड़ी सावधानी से रहना बतलाया है।

विपरीत आसन से रतिक्रिया करने से स्त्री का पीछे का हिस्सा विपरीत स्थिति में होजाता है तो गर्भ नहीं रहता यदि रह भी जावे तो गर्भस्राव हो जाता है और मूढ़गर्भोंकी उत्पत्ति होती है।

गर्भाशय का पीछे का हिस्सा
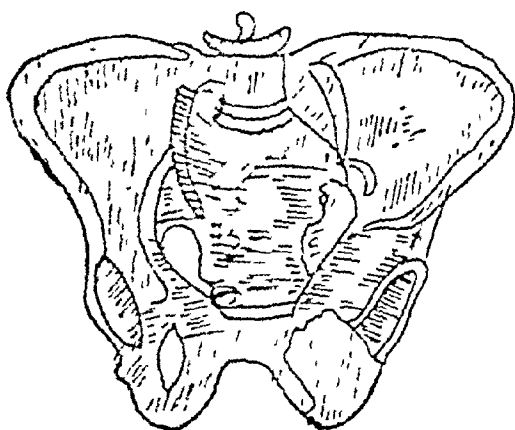
ऊपर का चित्र गर्भाशय का पीछे का हिस्सा है। पाठक पाठिकाओं की समझ में यह विषय भलीभांति आजावे इसलिये गर्भाशय के हिस्से अलग अलग और एक साथ भी दिखलाये गये हैं। पाठको को सब चित्र अच्छीतरह देखकर समझना चाहिये।

गर्भाशय के बन्धन
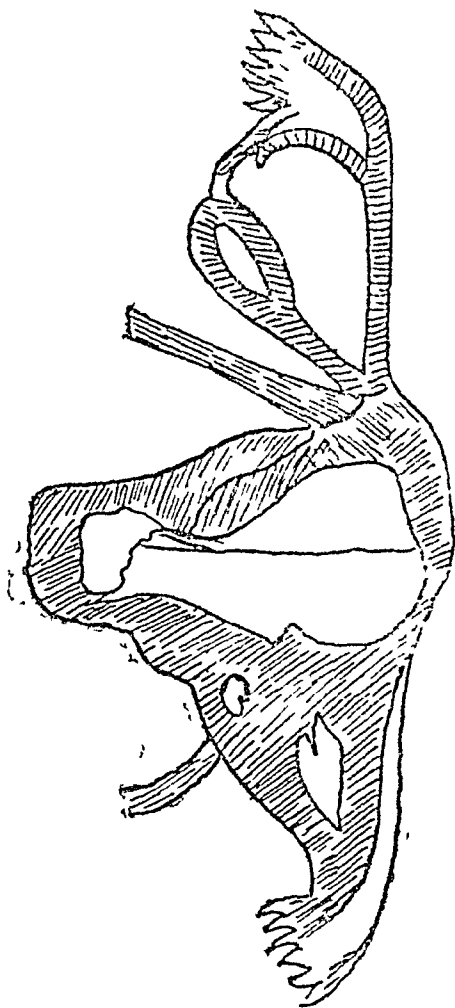
यह चित्र गर्भाशय के बन्धन (नसे जिनसे गर्भाशय बधा रहता है) का है। अनियम रतिक्रिया से तथा विपरीत आसन से सभोग करने से गर्भाशय के बन्धन ढीले हो जाते हैं अर्थात नसे कमजोर हो जाती हैं इस लिये स्त्री अनेक प्रकार के रोगो मे ग्रसित रहती है।

गर्भाशय के रोग

विपरीत आसन और अनियम संभोग से वन्ध्या दोष उत्पन्न हो जाते हैं। २५ पचीस वर्षों तक लाखो स्त्रियो की रोग परीक्षा तथा चिकित्सा से इस बात का मुझे अनुभव हुआ है। स्त्रियो के गर्भाशय के मुख पर तथा गर्भाशय के भीतर और योनि मुख पर तथा योनि के भीतर अनेक रोग उत्पन्न होते देखे गये हैं।

गर्भाशय के भीतर तथा मुख पर गांठ मस्सा होने और गर्भाशय के अनेक प्रकार से टेढ़ा हो जाने से रोग उत्पन्न हो जाते है।

गर्भाशय की गांठ
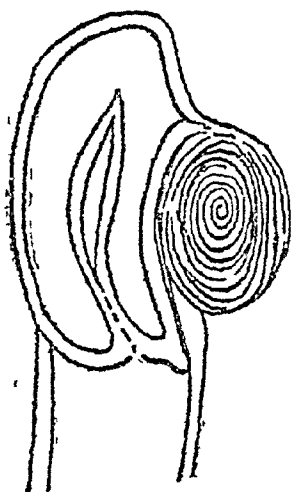
चित्र मे गर्भाशय के मुख पर गाठ दिखलाई गई है जो अनेक बार रोगी स्त्रियो की गुप्त रोग परीक्षा करने से देखी गई है। यह स्त्री के मासिकधर्म्म के समय अनियम आहार विहार तथा रतिक्रिया करने से प्रायः उत्पन्न हो जाती है। इस प्रकार की रोगी स्त्रियो की जबानी मालूम हुआ है कि मासिकधर्म के दिनो में भी उनके मूर्ख पति ने विपरीत आसन से सभोग किया तभी से मासिकधर्म्म की शिकायत भी होगई और संभोग के समय कष्ट भी होने लगा।

इस गांठ की उत्पत्ति का दूसरा कारण यह भी है कि मासिकधर्म्म के दिनों मे अपथ्य से रहने से आहार के अनियम से भी प्रायः यह गांठ पड़ जाती है। किसी कारण से भी मासिकधर्म्म के दिनो मे आहार अथवा संभोग सम्बन्धी अनियम होजाने से भी यह गांठ उत्पन्न होती है। यह गांठ गर्भाशय के बाहर मुख पर और भीतर भी होती हैं।

गर्भाशय की भीतरी गांठ
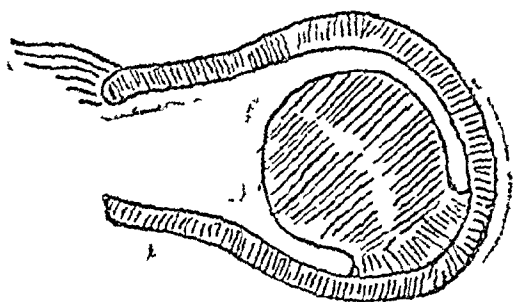
गर्भाशय के भीतर जो गांठ उत्पन्न हो जाती है। इसी को वैद्यक मे गुल्म रोग कहा है। इसके उत्पन्न होने से गर्भ नहीं रहता क्योंकि पुरुष का वीर्य गर्भाशय मे ठहरता नही। यह गांठ धीरे धीरे बड़ी होजाती है तब स्त्री की दशा दिन दिन बिगड़ती जाती है, ज्वर रहने लगता है, भूख कम होजाती है, प्रसग के समय पीड़ा होती है और स्त्री सदैव के लिये वन्ध्या हो जाती है। केवल वन्ध्या ही नही हो जाती बल्कि सदैव उसे एक न एक रोग घेरे रहता है।

गर्भाशय में गांठ (योनिकंद रोग)

गर्भाशय की इस गांठ के कारण गर्भ नही रहता है।
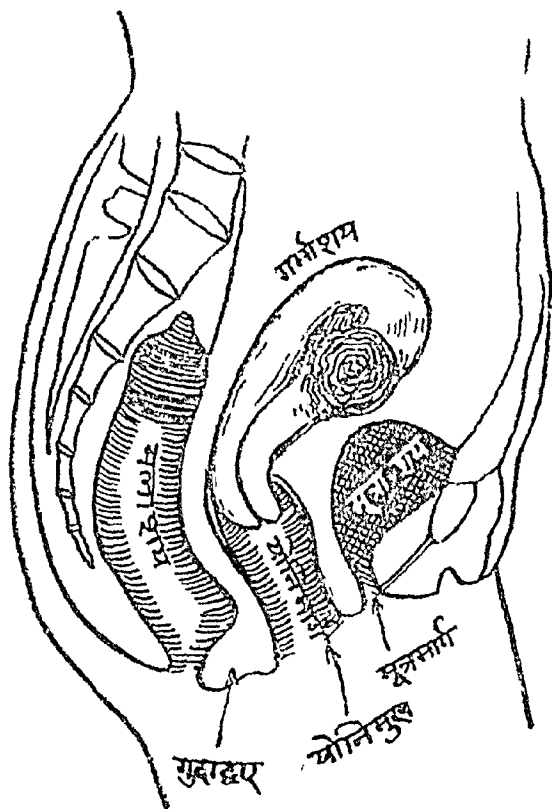
गर्भाशय के भीतर गांठ पड़ जाने से गर्भाशय में वीर्य नहं ठहर सकता इसी कारण से गर्भ नहीं रहता है।

गर्भाशय के मुंह पर गांठ
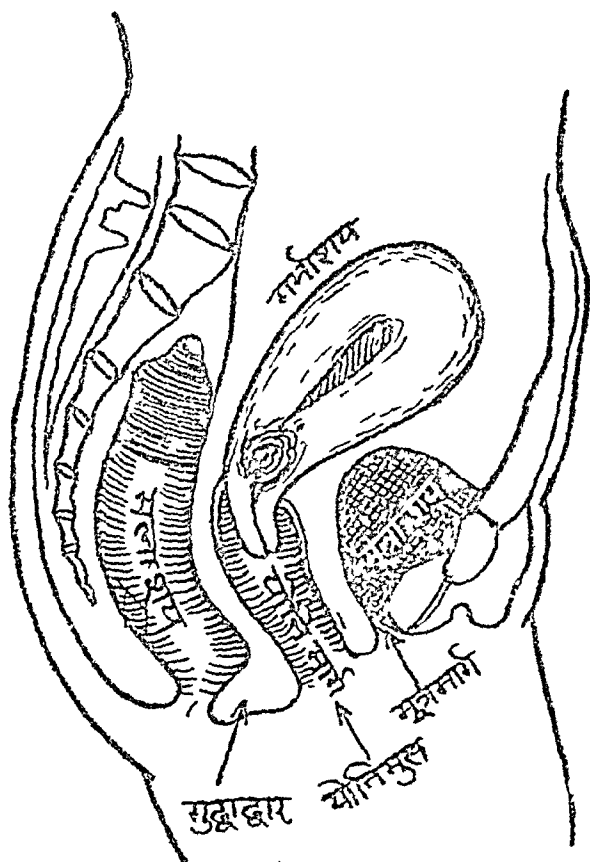
गांठ के कारण गर्भाशय का मुख भलीभांति नही खुलता और स्त्री को गर्भाधान क्रिया के समय कष्ट होता है इस कारण गर्भ नही रहता है।

पूर्व के दोनो चित्रो से भलीभांति मालूम होता है कि गर्भाशय का मुख वीर्य ग्रहण करने के लिये खुल नही सकता इसलिये पुरुष का वीर्य गर्भाशय मे नही जा सकता और भीतरी गांठ के कारण वीर्य गर्भाशय मे जाकर भी ठहर नहीं सकता।

दूसरा कारण यह है कि गर्भाशय के भीतर गाठ हो अथवा मुंह पर हो, कही भी हो, इस गांठ के कारण संभोग के समय गर्भाशय पर दवाव पड़ने से स्त्री को कष्ट होता है इसलिये उसे सभोग से प्रसन्नता नही होती और वह सभोग की इच्छा भी नही करती।

गर्भाशय का मस्सा

गर्भाशय के मुख पर अथवा भीतर अनियम आहार विहार से मस्सा उत्पन्न होता है इसके कारण स्त्री वन्ध्या होजाती है।
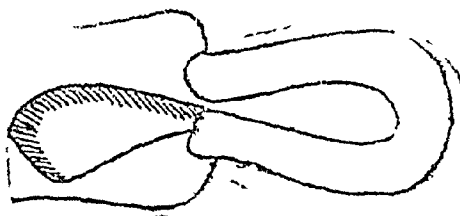
गर्भाशय के मुख पर मस्सा

गर्भाशय की परीक्षा करने से अनेक स्त्रियो के गर्भाशय के मुख पर इस प्रकार का मस्सा देखा गया है।

भीतरी मस्सा

उलटे सुलटे आसनों से रतिक्रिया करने, आहार विहार पर उचित ध्यान न देने, बद परहेजी करने, तथा कभी कभी अन्य कारणों से गर्भाशय के मुख पर मस्सा हो जाता है। इसका प्रभाव गर्भाशय पर बहुत बुरा पड़ता है।

जब गर्भाशय के मुख पर मस्सा होजाता है तब संभोग के समय मस्से पर दबाव पड़ने से स्त्री को कष्ट होता है और पुरुष का वीर्य गर्भाशय मे नही जा सकता। यह बात आगे के चित्र से भलीभांति समझ मे आजाती है।

प्रेम की प्रार्थना

गर्भाशय का भीतर का नक्शा
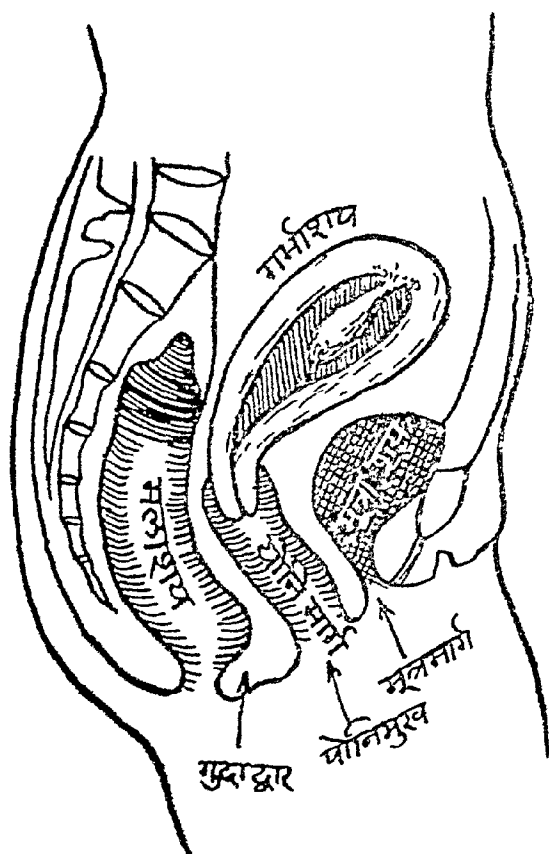
इस दशा में गर्भाशय में गया हुआ भी पुरुष का वीर्य बाहर निकल आता है इसलिये गर्भ नहीं रहता है।

भीतरी मस्सा के सम्बन्ध में

चित्रों को देखने से पाठकों की समझ में भलीभांति आजावेगा कि जहां पर योनि मार्ग लिखा है वहीं पुरुष की इन्द्री संभोग के समय योनिमार्ग से गर्भाशय के मुख के पास पहुँचती है और वीर्य स्खलित होने के समय गर्भाशय के मुख से लग जाती है तब पुरुष का वीर्य गर्भाशय के मुख मे जाता है। जब गर्भाशय के मुख पर मस्सा उत्पन्न हो गया तो गर्भाशय का मुख खुल ही नही सकता। यदि खुले भी तो मस्से के कारण पुरुष की इन्द्री का मुख गर्भाशय के मुख से मस्से के कारण मिल नही सकता।

इस रोग वाली स्त्री को भी सभोग के समय प्रसन्नता नही होती। इन्ही कारणों से स्त्री गर्भ धारण नही करती और जब तक यह मस्सा दूर न हो तब तक वन्ध्या रहती है।

गर्भाशय के भीतर उत्पन्न हुए मस्से का चित्र देखने से इस मस्से के कारण पुरुष का वीर्य गर्भाशय मे पहुँच तो जाता है परन्तु शीघ्र ही बाहर निकल आता है। जब यह मस्सा अधिक बढ जाता है तब स्त्री को समोग के समय कष्ट होता है और उसे संभोग मे प्रसन्नता भी नहीं होती।

अनेक स्त्रियो के गर्भाशय की परीक्षा करने से गर्भाशय के मुख पर मस्सा देखा गया और बवासीर के मस्से की समान गर्भाशय के मस्से से रक्त निकलते हुए देखा गया है।

ऐसी रोगी स्त्रियो का रक्त प्रदर समझ कर बड़े बड़े

चिकित्सकों ने वर्षों इलाज किया परन्तु कुछ भी फायदा नहीं हुआ, रक्त बन्द नही हुआ क्योंकि उन चिकित्सा करने वालों ने रोग समझा ही नही। मेरे पास ऐसी कई स्त्रियां आई जो कई लेडी डाक्टरो का वर्षों इलाज करा चुकी थी उन्होंने भी रक्त प्रदर ही समझकर इलाज किया, जब कुछ फायदा नही हुआ जब वे स्त्रियां इधर उधर की औषधि करके सब ओर से निराश होगई तो मेरे पास आईं। मैने अपने देशी इलाज से रोग दूर कर दिया। जिस प्रकार बवासीर के मस्से से रक्त कभी दस बीस दिन बाद निकला करता है इसी प्रकार गर्भाशय के मस्से से भी निकला करता है। इसलिये प्रायः चिकित्सक उसे मासिक-धर्म्म की ही खराबी समझते है। क्योकि मासिकधर्म्म हो जाने पर फिर दस पांच अथवा दस पन्द्रह दिन बाद मस्से से रक्त आने का समय आया तो यही समझा गया कि मासिकधर्म्म फिर हुआ। ऐसी स्त्रियां मेरे पास अनेक आई कि जिन्हे महीने मे दो दो तीन तीन बार मासिकधर्म्म होता था। यही समझकर उनका इलाज अनेक चिकित्सकों ने किया परन्तु वे रोग को समझ नही सके।

जब वे स्त्रियां मेरे पास आई और उनके गर्भाशय की परीक्षा की तो मस्से का पता लगा। गर्भाशय मे मस्सा होने से मासिकधर्म मे भी खराबी मालूम होती है क्योंकि मस्से के कारण रक्त रुक रुक कर धीरे धीरे निकलता है। इसी लिये मासिक धर्म का रक्त खूब तेज और साफ नही निकलता है।

स्त्रियों की रोग परीक्षा

हमारे देश की स्त्रियों के गुप्त रोगों की परीक्षा बड़े बड़े नामी चिकित्सक भी नहीं कर सकते क्योंकि हमारे देश की लज्जा-वती स्त्रियां पुरुष चिकित्सकों को लज्जा के कारण अपने गुप्त रोग दिखला नहीं सकतीं और लेडी डाक्टर इसकी विशेष पर-वाह नहीं करतीं। यदि परवाह की भी तो सिवाय आपरेशन के और कुछ इलाज नहीं। आपरेशन से कभी कभी गर्भाशय में अधिक खराबी आते देखी गई है। दूसरी बात यह भी है हमारे देश की स्त्रियों का शरीर इसी देश की जलवायु (आबोहवा) से बना है इस कारण इसी देश की चिकित्सा प्रणाली तथा यहीं की उत्पन्न हुई देशी औषधियां पूर्ण फायदा पहुंचा सकती हैं।

गर्भाशय का टेढ़ा हो जाना
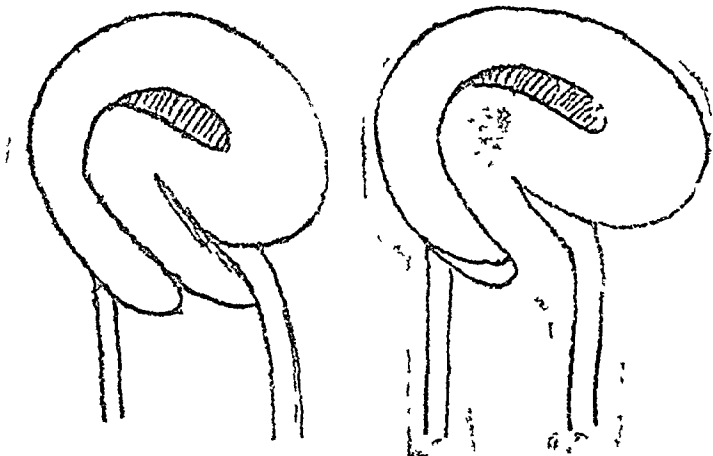
गर्भाशय का टेढ़ा होजाना
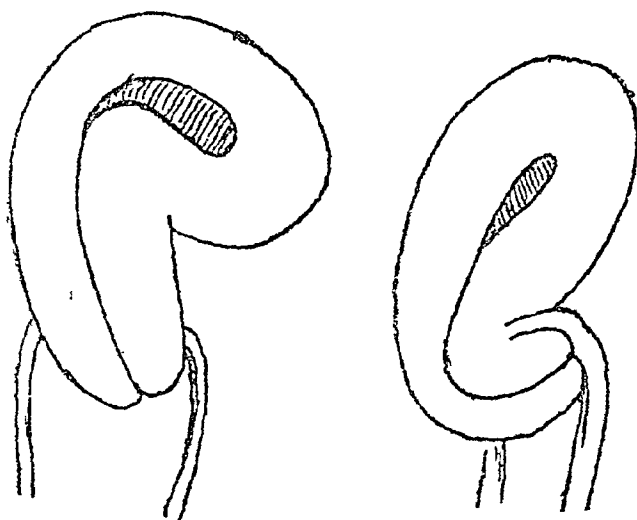
विपरीत रतिक्रिया करने से और अनियम रति करने से गर्भाशय कई प्रकार से टेढ़ा होजाता है जैसा कि चित्रो में दिखलाया गया है।

स्त्रियो के गर्भाशय की परीक्षा करने से देखा गया है कि गर्भाशय का मुख अनेक प्रकार से टेढ़ा होगया। आगे वाले चित्रो से यह भलीभांति समझ मे आजावेगा।

विपरीत रतिक्रिया अर्थात् विपरीत आसन से रति करने वाले और चौरासी आसनो की खोज मे रहने वाले अज्ञानी कामान्ध पतियो की अज्ञानता से गर्भाशय मे जो खराबियां देखी गई हैं उनसे बन्ध्या हुई स्त्रियो की संख्या कम नही है।

गर्भाशय का मुख टेढ़ा होना
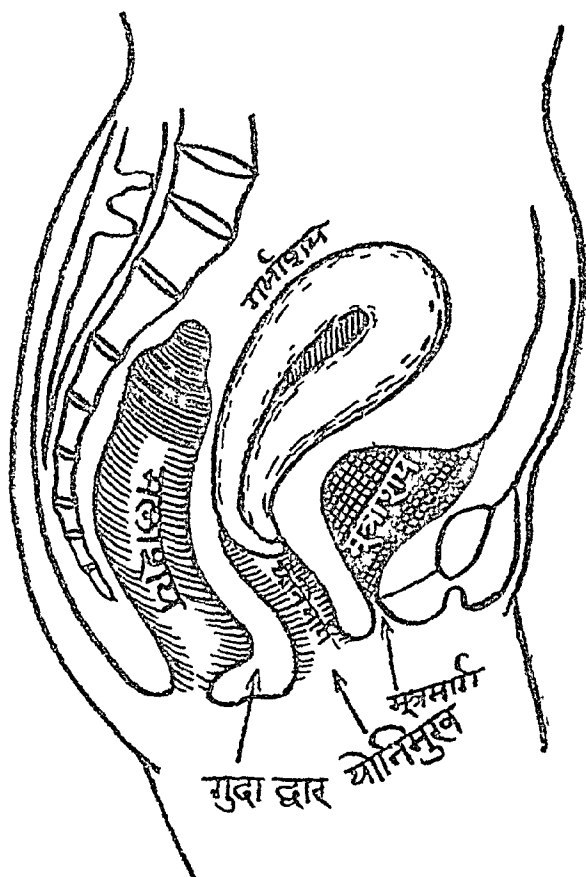
गर्भ न रहने की स्थिति। इस दशा मे सभोग के समय स्त्री को कष्ट होता है और गर्भ नही रहता। विपरीत आसन से यह रोग उत्पन्न होता है।

गर्भाशय का टेढ़ा मुख
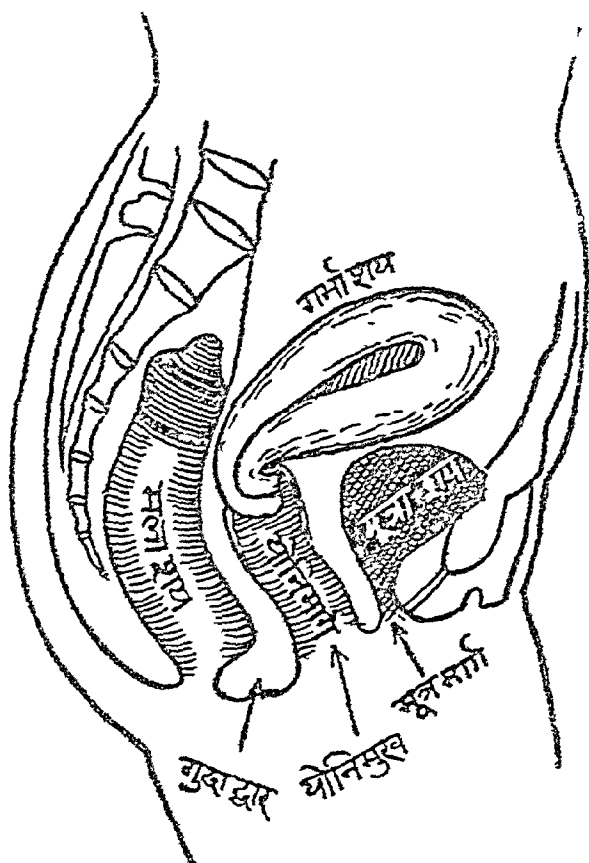
गर्भ न रहने की स्थिति। इस दशा में पुरुष का वीर्य गर्भाशय में नहीं जा सकता इसलिये गर्भ नहीं रहता। विपरीत रति के कारण यह रोग उत्पन्न होता है।

अनियम रतिक्रिया करने वालो सावधान!

मासिक धर्म के दिनों मे गर्भाशय निर्बल और अधिक कोमल होजाता है क्योंकि ऋतु का रक्त निकलने के लिये गर्भाशय का मुख भलीभांति खुल जाता है रक्त प्रवाह से गर्भाशय मे निर्बलता आजाती है। जो अज्ञानी कामान्ध पति ऐसी दशा मे संभोग करते हैं तथा जो मासिक धर्म्म के बाद विपरीत आसन से रति करते हैं उनकी स्त्रियों के गर्भाशय का मुख टेढ़ा होजाता है जैसा ऊपर के चित्रों से स्पष्ट है।

जो अज्ञानी विषयी पुरुष स्त्री को ऊपर बिठाकर संभोग करते है उनकी स्त्री का गर्भाशय चित्र के अनुसार टेढ़ा होकर योनि की दीवार से चिपक जाता है। अनेक स्त्रियों के गर्भाशय की परीक्षा करने से ऐसा गर्भाशय देखा गया तब उनसे यह बात पूछी गई। उन्होंने अपने पति की विपरीत आसन से लगातार बीसो दिन तक रतिक्रिया करते रहने की बात कही। इस अनुभव से मालूम हुआ है कि गर्भाशय का टेढ़ा होना विपरीत आसन से रति करने का कारण है।

जो अज्ञानी पति पशु की समान स्त्री की स्थिति करके सभोग करते हैं उनकी स्त्रियो का गर्भाशय चित्र के अनुसार योनि की दीवार मे पेडू की तरफ चिपक जाता है। यह भी परीक्षा करने से और अनेक ऐसी रोगी स्त्रियो से जबानी हाल पूछने से मालूम हुआ है। इस प्रकार टेढ़ा गर्भाशय मैंने स्वयं आंखो

र स्त्री और पर पुरुष के व्यभिचार का फल। पृ० [illegible]   सर्वाधिकार सुरक्षित।

गर्भाशय का योनि की दीवार में चिपटा मुख
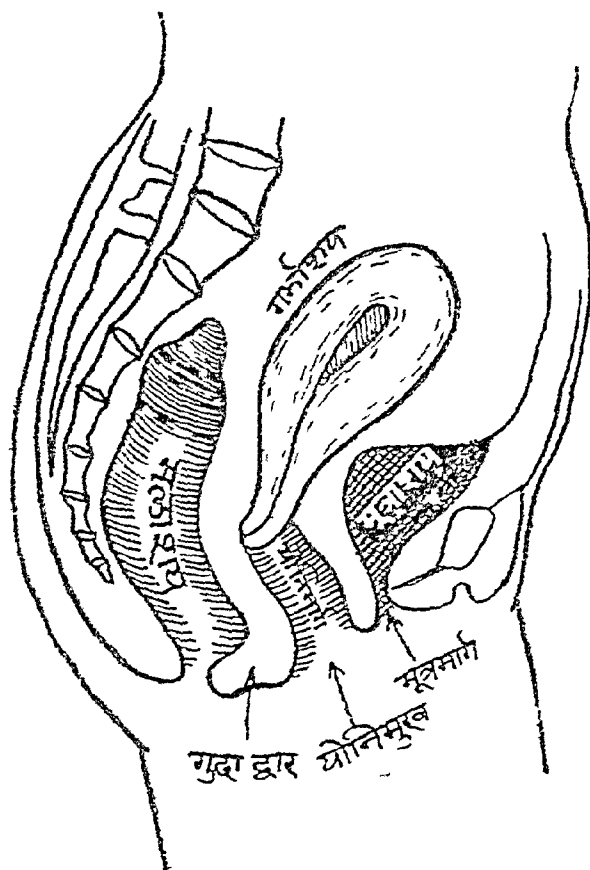
से देखा। मासिकधर्म के बाद गर्भाशय शुद्ध कोमल और निर्बल रहता है तब विपरीत रति करने से गर्भाशय का मुख टेढ़ा होकर योनि में चिपट जाता है इसलिये गर्भ नहीं रहता है।

दाम्पत्य जीवन को दुःखमय बनानेवाली मनगढ़ंत पुस्तकों से सचेत रहिये

आजकल ऐसी अनेक पुस्तको के बड़े बड़े विज्ञापन देखे जाते हैं और अनेक पुस्तकें भी रोगी स्त्रियां मेरे पास लाईं जिनके प्रयोगो और हानिकारी आसनों की विधियो से उनके कामान्ध पतियों ने रतिक्रिया करके स्त्री को जीवन भर के लिये कष्ट पहुँचाया।

कई स्त्रियां मेरे पास ऐसी पुस्तके लाईं जिनमे लिखी विपरीत आसनों की विधि से रतिक्रिया करते ही स्त्रियो को कष्ट हो गया। अनेक स्त्रियां ऐसी आईं जो विपरीत आसन से रतिक्रिया के के कारण अनेक भयंकर रोगो मे ग्रसित थी उन सब ने मुझ से कहा कि जबसे अमुक पुस्तक हमारे पति ने मंगाई है तब से इसी विधि से सभोग करते हैं, जिससे हमे बड़ा कष्ट होता है, बहुत समझाने पर भी नहीं मानते। अब हमे बहुत तकलीफ होगई है इससे बड़ा कष्ट होता है तब हमारे पति हमको आपके पास इलाज के लिये लाये हैं।

पाठक पाठिकाओ! कैसे दुःख का विषय है कि विषयी लोगो को इस बात का ध्यान नही है कि स्त्री रोगी हो जावेगी और सुखमय दाम्पत्य जीवन नष्ट हो जायगा। बहुतेरे तो रोगी स्त्री का भी पीछा नहीं छोड़ते।

गर्भाशय के मुख की सूजन
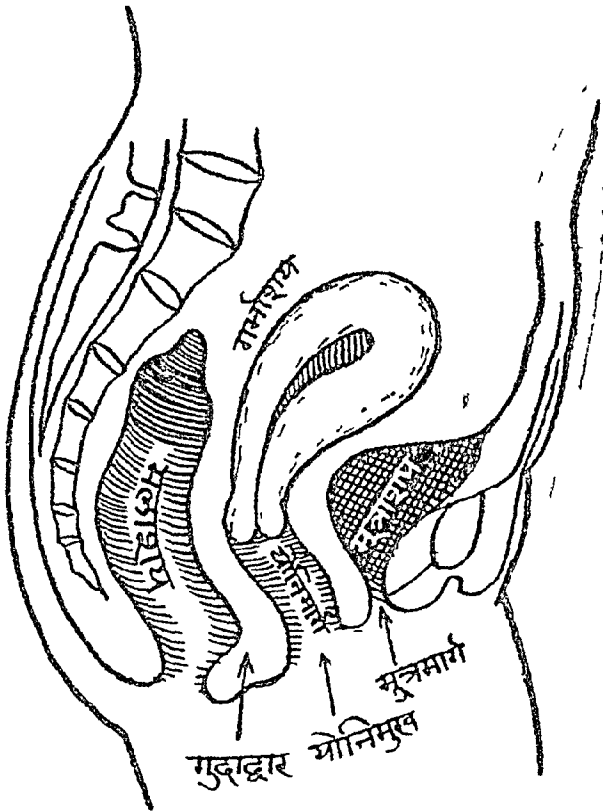
गर्भाशय के मुख पर सूजन होने से गर्भाशय का मुख रतिक्रिया।के समय वीर्य ग्रहण के लिये खुलता ही नहीं इसलिये गर्भ भी नहीं रहता है। पढ़िए पृष्ठ ३८८

विपरीत रति से
सैकड़ा पीछे निन्नानवे स्त्रियां रोगी हैं

जो विषयी पति स्तम्भन की औषधियां खाकर तथा मनगढ़त कामशास्त्र कोकशास्त्र तथा अन्य इसी विषय की पुस्तको मे अज्ञानियो की लिखी स्तम्भन की विधियां तथा औषधियों से काम लेते हैं और अपनी प्यारी पत्नियो पर अत्याचार करते हैं उनकी इस अनियम रति से प्राकृतिक नियम से अधिक समय तक रतिक्रिया होने से जनेन्द्री के बार बार दबाव पड़ने के कारण स्त्रियो के गर्भाशय मे सूजन आ जाती है। जैसा कि चित्र पृष्ठ ३८७ मे दिखाया गया है इस प्रकार अधिक बार प्रसंग होते रहने से वह सूजन बढ़ जाती है।

कुछ दिनो बाद उस स्त्री के गर्भाशय मे संभोग के समय कष्ट होता है और गर्भाशय को विश्राम न मिलने के कारण वह सूजन दूर नहीं होती। इस सूजन के कारण मासिक धर्म्म मे भी खराबी हो जाती है क्योकि मासिक धर्म्म के समय गर्भाशय का मुख सूजन के कारण भलीभांति नहीं खुलता इसलिये रक्त अच्छी तरह नही निकलता रुक रुक कर निकलता है। कुछ दिनों मे वह रक्त इकट्ठा होकर जम जाता है और गांठ पड़ जाती है।

मासिक धर्म्म के समय गर्भाशय का मुख इस प्रकार खुल जाता है। जैसा कि पृष्ठ ३९० के चित्र मे दिखलाया गया है। जो अज्ञानी पुरुष मासिक धर्म्म के दिनो मे रतिक्रिया

करते हैं उनकी स्त्रियों के गर्भाशय का मुख अधिक दवाव पड़ने से खुला ही रह जाता है यदि उस गर्भाशय को दो तीन महीने विश्राम देदिया जावे प्रसंग न किया जावे तो ठीक भी होजाता है। यदि ऐसी दशा में अनेक वार प्रसंग हुआ तो गर्भाशय का मुख इसी प्रकार खुला रह जाता है उस स्त्री के मासिकधर्म्म के समय रक्त अधिक और अधिक दिनों तक जाता रहता है।

इस रोग वाली स्त्री के गर्भ नहीं रहता। इस रोग वाली अनेक सन्तान हीन स्त्रियां मेरे पास इलाज के लिये आई उनकी जबानी मालूम हुआ कि उनके पति देव मासिक धर्म्म की दशा में भी अपनी कामाग्नि शान्ति करते रहे।

इसी कारण हमारे आयुर्वेद में ऋषियो ने ऋतुमती स्त्री को पति से अलग रहना लिखा है और ऋतुमती स्त्री को बड़े आचार विचार से ऋतु समय के दिनो को व्यतीत करना बतलाया है। ताकि स्त्री के गर्भाशय में किसी तरह की खराबी न हो।

बतालाया है कि रजस्वला स्त्री प्रथम दिन से तीन दिन पर्यन्त कुशा की शैया पर सोवे और हाथों में या मिट्टी के बरतन में अथवा पत्तल में सादा भोजन करे और तीन रात्रि पर्यन्त पति को भी न देखे तदनंतर चौथे दिन शुद्ध स्नान कर उत्तम वस्त्रों को पहिन तथा आभूषणों को पहिन शृंगार कर सुगन्धित द्रव्यों से देह, वस्त्र सुवासित करके प्रसन्न मुख होकर पति का दर्शन करे।

गर्भाशय का खुला मुंह
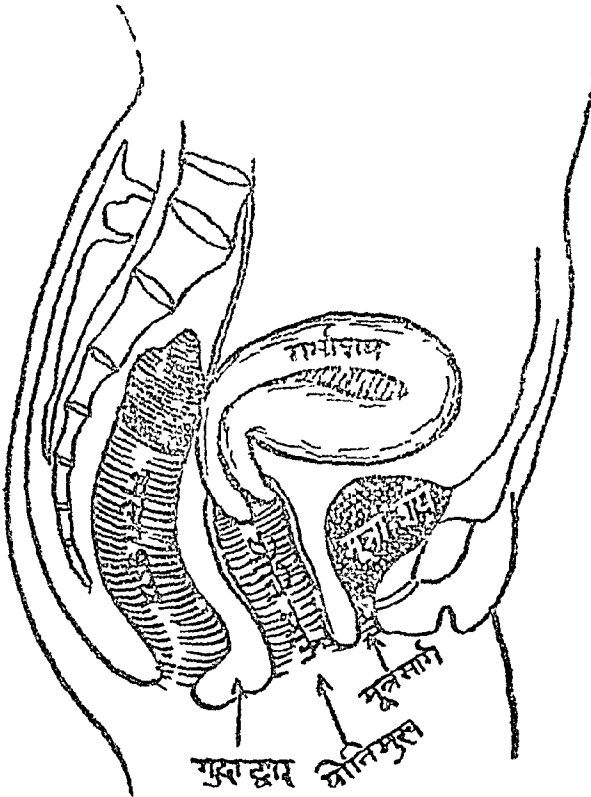
ऋतुस्नान से १६ रात्रि पर्यन्त गर्भाशय का मुख गर्भधारण के लिये खुला रहता है नियम पूर्वक रतिक्रिया करने से गर्भ रहता है।

ऋतुस्नाता स्त्री के पति दर्शन का कारण

पूर्वं पश्येदृतुस्नाता यादृशं नरमङ्गना ।
तादृशं जनयेत्पुत्रं भर्तारं दर्शयेदतः ॥

ऋतुस्नाता स्त्री के प्रथम पति का दर्शन करने का कारण यह है कि ऋतुस्नान के वाद स्त्री जैसे मनुष्य को देखेगी वैसा ही पुत्र उत्पन्न होगा इसलिये पहिले पति का ही दर्शन करे।

इस विषय मे आयुर्वेद मे यहां तक वताया गया है कि यदि पति उस समय न हो तो पति का चित्र देखे और पति का ध्यान करे।

देखिए अन्यत्र चित्र मे ऋतुस्नाता स्त्री पति का चित्र देख रही है। यदि पति उसी नगर में हो कार्य वश घर मे उस समय न हो, कचेहरी दफ्तर अथवा दूकान पर गया हो कहीं भी गया हो तो ऋतुस्नाता एकान्त में उसके आने तक पति का ध्यान करे। (देखिये अन्यत्र चित्र मे ऋतुस्नान के वाद पत्नी लेटी हुई अपने पति के ध्यान में पति के आने की राह देख रही है) जव पति वाहर से आजावे तव उसका प्रसन्न मुख से जैसा ऊपर वतलाया गया है दर्शन करे। देखिये इसी विषय का तीसरा चित्र जहां पति पत्नी खड़े हुए एक दूसरे को देख रहे हैं, किस प्रकार स्नेह की दृष्टि से देखते हैं इस चित्र में चित्रकार ने यही भाव दर्शाया है।

आज कल के पाश्चात्य शिक्षा के विद्वान इन वातों को ढोंग

बतलाते हैं। शहरो मे रहने वाली प्रायः पढ़ी लिखी स्त्रियां ऊपर लिखे नियमो को ढकोसला बतलाती हैं। बड़ी लड़कियां और अध्यापिकाए इसको बिल्कुल नही मानतीं मासिक धर्म के दिनो मे भी पाठशाला जाया ही करती हैं ऋतुस्नान के बाद प्रथम पति के दर्शनों की तो बात ही दूर है इक्केवाले, गाड़ीवाले, कोरी, चमार सईसो तथा मोटर ड्राइवरो के दर्शन करती हैं।

वे ऋतुधर्म के दिनो का कुछ भी विचार नही करती। यहां तक देखा गया है कि शहरो की स्त्रियां भोजन बनाने इत्यादि का भी कुछ विचार नही करती। धीरे धीरे इस विषय को लोग भूलते ही जाते है। दो चार नही पचासो ऐसी स्त्रियो से मुझसे इस विषय मे बातचीत हुई तो उन्होंने कहा कि अगर हम चार दिन मासिकधर्म के दिनो मे भोजन न बनावे तो घर वालो को रोटी का बड़ा कष्ट हो।

शहरो मे जिनके घरो मे रोटी बनाने वाली नौकरानियां हैं वे नौकरानियो को ऐसी दशा मे भी चार दिन की छुट्टी नही देती अतएव नौकरानी मासिकधर्म होने पर भी बाबू जी के यहां रोटी बनाने जाया करती है।

जब यह दशा है तो सन्तान और सन्तानवाली दोनो आरोग्य कैसे रह सकते हैं। इस प्रकार के विषयो पर बातचीत होने पर स्त्रिया प्रायः विलायत की स्त्रियो का उदाहरण देती हैं। परन्तु उनके आरोग्यता सम्बन्धी अन्य नियमो का उन्हे पता ही नहीं है। उनके यहां जिस विषय पर जो नियम हैं उनके विरुद्ध

वे कदापि नहीं चलतीं। उनके यहां के नियम यहां बतलाये जावे तो पुस्तक बहुत बढ़ जायगी और विषय भी दूसरा हो जायगा इस कारण इतना ही बतला देना बहुत है कि जिसके देश और कुल परम्परा के जो नियम हो उसे उसी नियम पर चलना चाहिये।

पाश्चात्य देशो की स्त्रियां अपने रहन सहन, खान पान आदि का अपने देश काल के अनुसार पूरा विचार रखती हैं। उन्हे अपनी आरोग्यता स्वस्थता और सुन्दरता का पूरा ध्यान रहता है। इसके विपरीत भारतवर्ष की स्त्रियो की दशा बहुत शोचनीय है। मुझे तो मालूम होता है कि यहाँ का पचानवे प्रतिशत नारीसमाज आरोग्यता और स्वस्थता की आवश्यकता ही नहीं समझता है। खान पान रहन सहन के नियमो के सम्बन्ध मे पुरुष समाज ही बिलकुल बेखबर है फिर भला स्त्रियो का क्या कहना मानो उनके लिये ईश्वर ने कोई नियम बनाए ही नही है।

हमारे देश की स्त्रियां और पुरुष अपने नियमों पर नही चलते इसी कारण सैकड़ा पीछे निन्नानवे स्त्रियां और इतने ही पुरुष रोगी होरहे हैं हमारे देश के बालको की भी रोगी संख्या अधिक है।

विपरीत आसन से गर्भाशय भ्रंश

स्त्री निर्बल हो अथवा विपरीत और अनियम रतिक्रिया से गर्भाशय निर्बल पड़गया हो तो उस निर्बलता की दशा मे विपरीत रति से स्त्री का गर्भाशय बाहर निकल आता है। कुछ दिनो तक

गर्भाशय का बाहर निकल आना
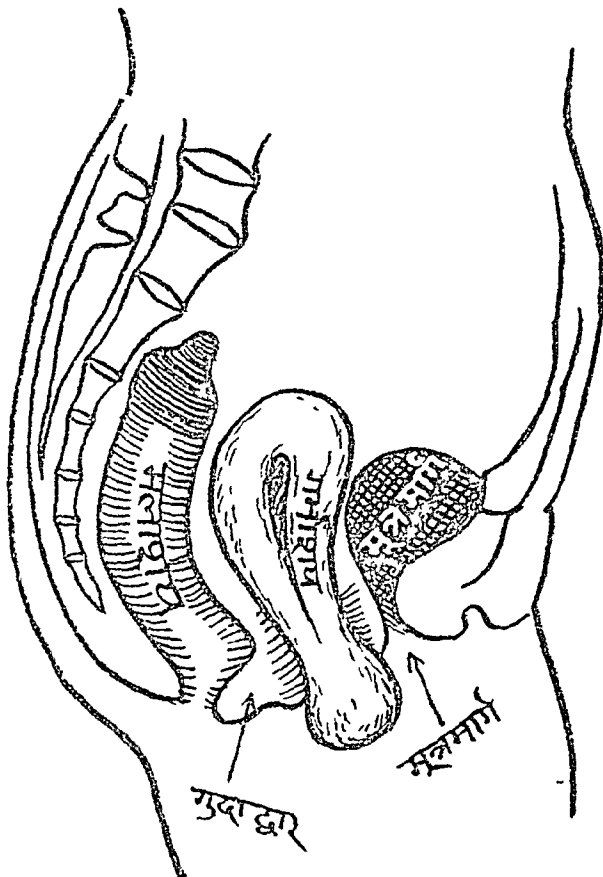
अनियम आहार विहार और विपरीत आसनो से रतिक्रिया करने से निर्बल स्त्री का गर्भाशय प्रायः बाहर निकलने लगता है, वह अपनी जगह से हट जाता है।
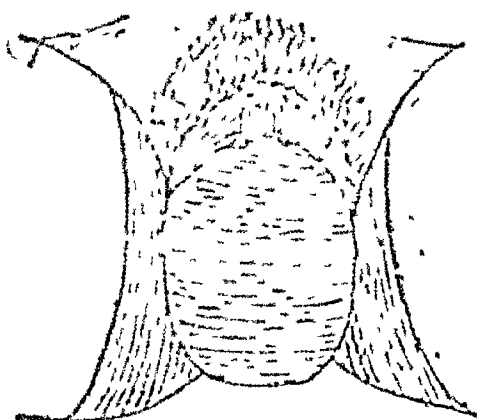
जब उनके गर्भाशय की मैंने परीक्षा की तो गर्भाशय बाहर निकला देखा गया और किसी किसी स्त्री के पृष्ठ ३९५ के चित्र की आकृति का निकला देखा गया।

गर्भाशय जब बाहर निकल आता है तब अंग्रेजी इलाज में रबड़ का छल्ला चढ़ा दिया जाता है जब छल्ला निकल जाता है तब फिर रोग वैसा ही होजाता है। मेरे पास अनेक स्त्रिया ऐसी आईं कि पांच पाँच दश दश वर्ष का गर्भाशय निकलने का रोग था, दूर नहीं हुआ था, छल्ला चढ़ा रहता था। जब छल्ला निकल गया तब फिर गर्भाशय बाहर आगया। हमारे देशी चिकित्सा प्रणाली में वैज्ञानिक विधि से तथा देशी औषधियो से इलाज करने से हमेशा के लिये यह रोग दूर होजाता है।

पति के व्यभिचारी होने से गर्भाशय रोग

जिन स्त्रियो के पति व्यभिचारी होते हैं उन निरपराध स्त्रियों को पति के कारण बड़े बडे भयकर रोग उत्पन्न होजाते हैं और उससे उन्हे बड़ा कष्ट होता है। पति के उन रोगो के कारण उन स्त्रियो की सन्तान भी रोगी होती है तथा गर्भ मे ही सड़ जाती और मर जाती है जिसके कारण स्त्री के भी प्राण जाते हैं।

पति के रोगी होने से पत्नी की जनेन्द्री मे छाले पड़जाते हैं। जैसा कि आगे के दिए हुए दो चित्रो से दिखलाया गया है गर्मी रोग बड़ा भयंकर रोग है यह रोग प्रायः पर स्त्री गामी, तथा वेश्यागामी पुरुषो के हुआ करता है। यह भयंकर रोग

योनि के छाले व फुंसियां
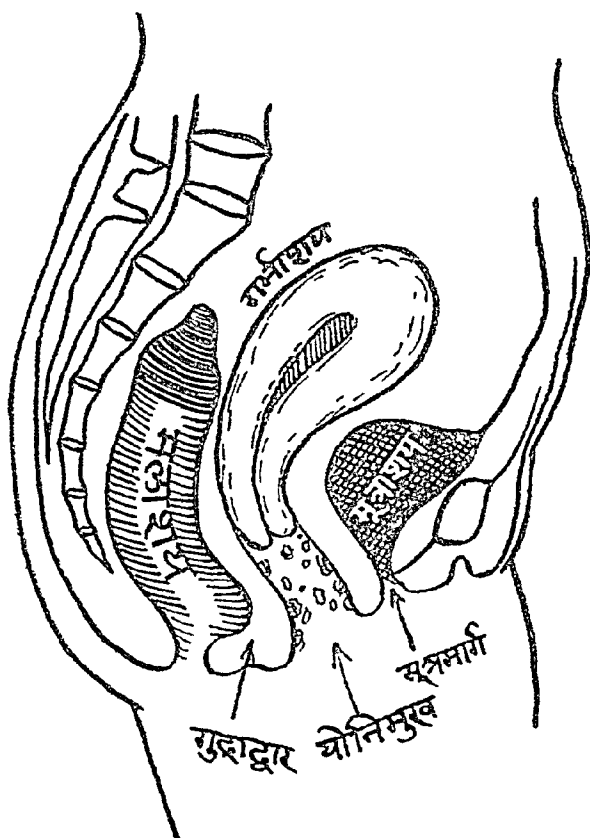
व्यभिचार और पर स्त्री गमन से योनि मे छाले । पढिये पृ० ३९६

गर्भाशय के मुखपर गर्मी रोग
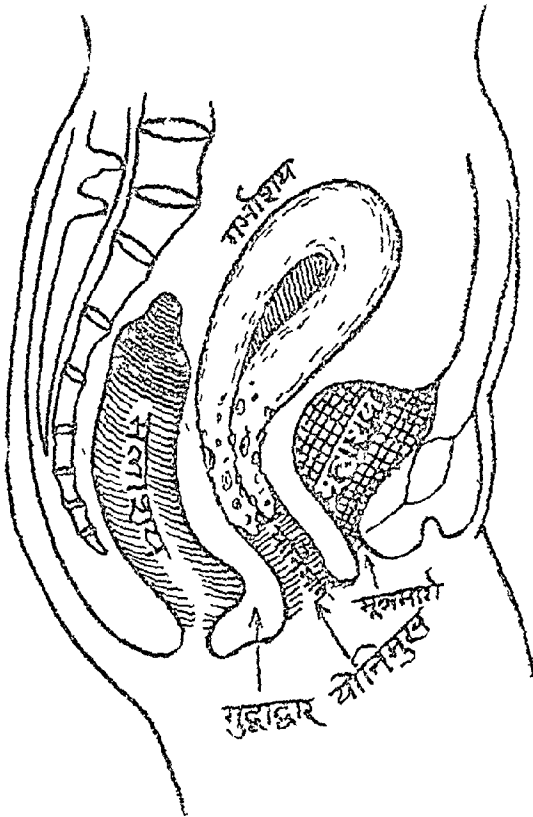
व्यभिचार और भांति भांति के कुकर्मों से उत्पन्न हुआ गर्मी रोग। पढिए पृ० ३९६।

प्राय: वेश्याओं से पुरुषों को होता है और पुरुषों से उनकी स्त्रियों को होता है। स्त्रियों से सन्तान को और सन्तान से सन्तान को इसप्रकार कई पीढ़ी तक यह रोग पीछा नहीं छोड़ता इसका पूरा हाल लिखा जावे तो एक बड़ी भारी पुस्तक बन जावेगी इसका पूरा हाल इस पुस्तक के दूसरे भाग में लिखा जावेगा यहां पर केवल इतना ही बतलाना है कि स्त्रियों को ऐसे गुप्त रोग उनके पति की कृपा से ही मिला करते हैं।

योनि में होकर यह रोग गर्भाशय तक पहुँचता है जिससे सन्तान अंग भंग होती है गर्भस्राव व गर्भपात होजाता है यदि सन्तान हुई भी तो रोगी होती है।

योनि की गांठ

पति की अज्ञानता और व्यभिचार से पत्नी की योनि में गांठ पड़जाती है इस गांठ के कारण गर्भाधान क्रिया के समय स्त्री को कष्ट होता है इस लिये रतिक्रिया ठीक नहीं हो सकती और गर्भ भी नहीं रहता। यदि इलाज ठीक और शीघ्र न हुआ तो यह गांठ बढ़ कर गर्भाशय के मुख तक पहुंचकर गर्भाशय को भी खराब करदेती है।

इस गांठ का भी अंग्रेजी चिकित्सा प्रणाली में आपरेशन होता है परन्तु हमारे देशी इलाज में विना आपरेशन के ही रोग दूर कर दिया जाता है। इस रोगवाली अनेक स्त्रियां मेरे पास आईं। यह रोग विपरीत आसन की रति से उत्पन्न हुआ देखा गया है।

योनि की गांठ
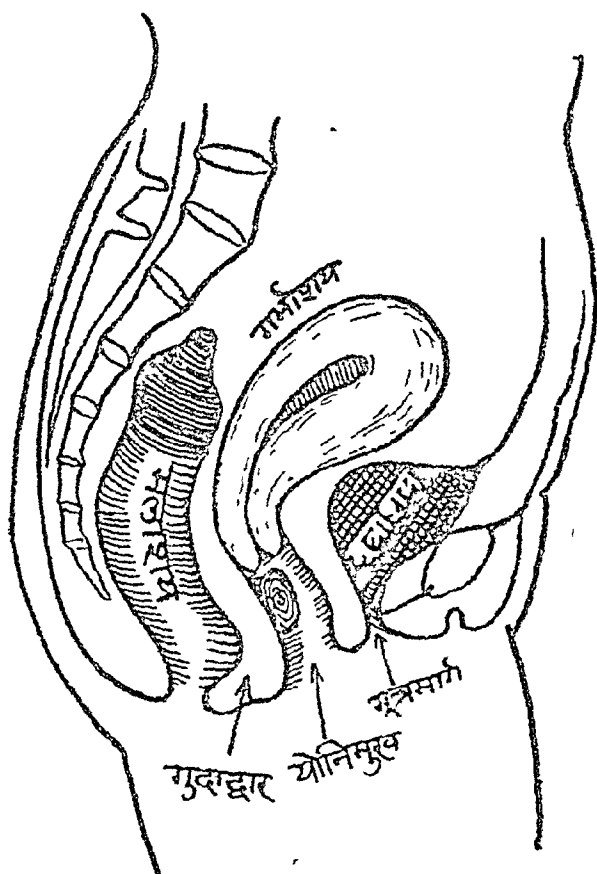
गर्भाशय के मुख के सामने योनि मार्ग मे गांठ निकल आने से रतिक्रिया के समय स्त्री को कष्ट होता है और गर्भ नहीं रहता।
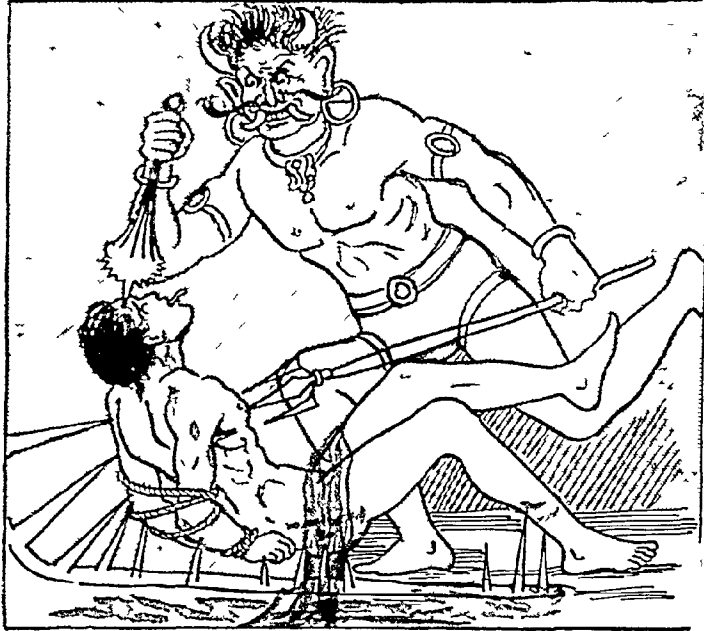
अत्याचारी पति को अत्याचार का फल। पृ० ५०८
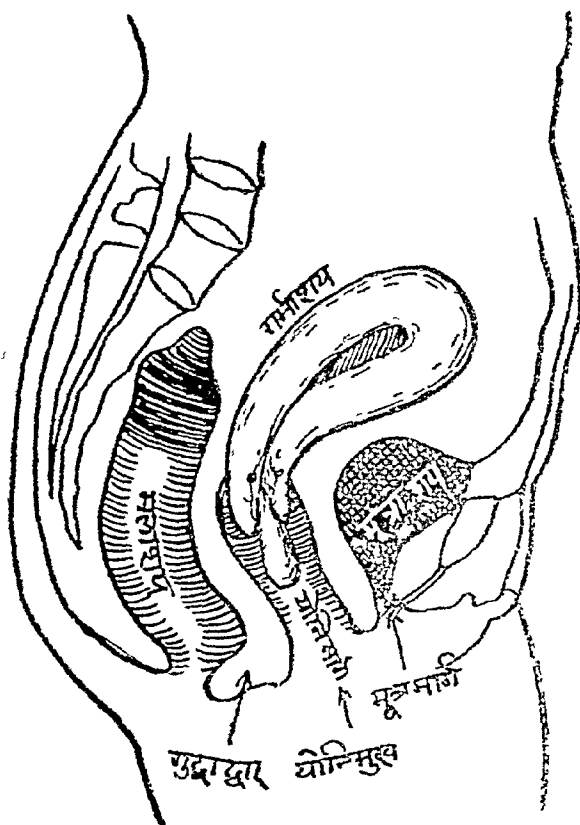
गर्भाशय के मुख पर मस्सा

अनियम रतिक्रिया तथा अनियम आहार विहार व ऋतु के दिनो मे कुपथ्य करने से गर्भाशय के मुख पर मस्सा उत्पन्न हो जाता है और स्त्री वन्ध्या हो जाती है ।

गर्भाशय के मुख पर खराबी
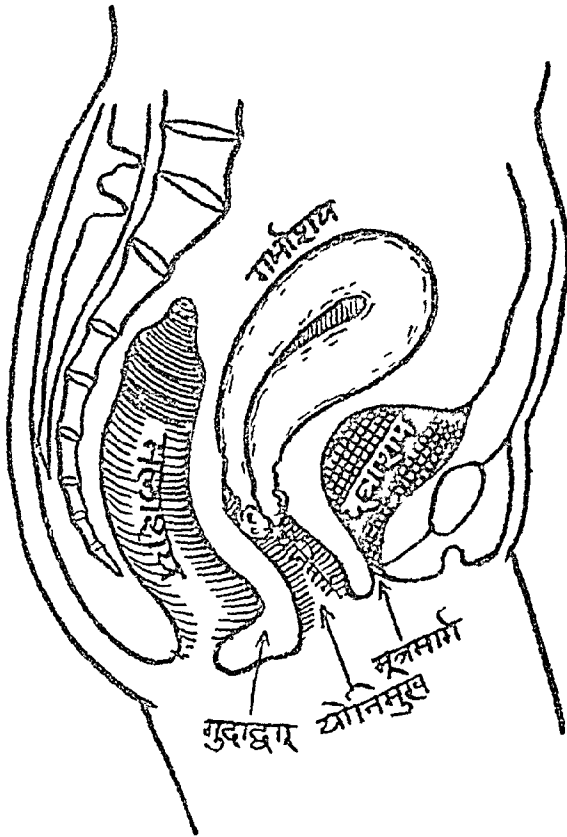
पति के गर्मी सुजाक आदि रोगो से रोगी होने से पत्नी के गर्भाशय मे खराबी आजाती है इससे गर्भाधान के समय। स्त्री को कष्ट होता है और गर्भ भी नही रहता ।

अनेको ऐसी स्त्रियां मेरे पास आया करती हैं जिनके गर्भाशय के मुख पर मस्सा पैदा हो जाता है और वे गर्भ धारण के अयोग्य हो जाती हैं जैसा कि चित्र पृ० ४०१ मे दिखाया गया है।

बहुतेरी स्त्रियो के चित्र पृ० ४०२ की भांति गर्भाशय के मुख पर खराबी आ जाती है और उससे संभोग के समय कष्ट होता है तथा गर्भ नही रहता।

मासिक धर्म्म के समय तथा गर्भधारण के लिये शुद्ध गर्भाशय का मुख

यह बात पहिले ही बतला दीगई है कि मासिक धर्म के दिनो मे गर्भाशय का मुख रक्त निकलने के लिये १६ दिन खुला रहता है।

जब गर्भधारण का समय व्यतीत हो जाता है तब गर्भाशय का मुख बन्द हो जाता है जैसा कि आगे के चित्र मे है।

जब गर्भाशय का मुह बन्द हो जाता है तब रतिक्रिया करना व्यर्थ होता है क्योकि पुरुष का वीर्य गर्भाशय मे नही जा सकता। जब गर्भाशय का मुंह बन्द हो जाता है तब स्त्री की इच्छा संभोग की नही रहती।

इसी प्रकार विपरीत रतिक्रिया से गर्भाशय का मुख उलट जाने से भी गर्भ नहीं रहता, सभोग के समय स्त्री को कष्ट होता है। किन्ही २ स्त्रियों को मेद रोग हो जाता है जिसमे योनि मार्ग चर्बी से ढक जाता है और तब ठीक संभोग न होने से गर्भ नहीं रहता। सबके चित्र आगे देखिए।

बन्द मुंह गर्भाशय
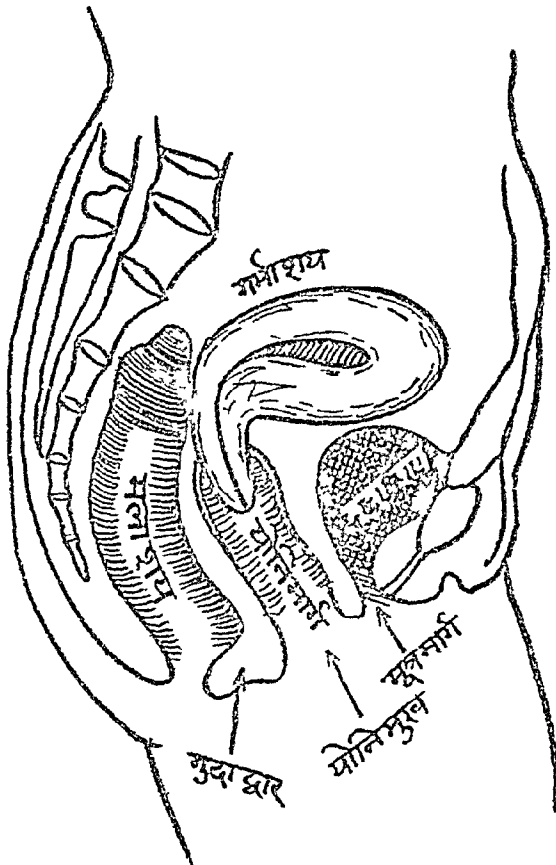
ऋतु धर्म से १६ सोलह रात्रि के वाद गर्भाशय का मुख बन्द होजाता है फिर स्त्री की इच्छा सभोग की नही रहती ।

गर्भाशय का भीतर को झुका हुआ मुख
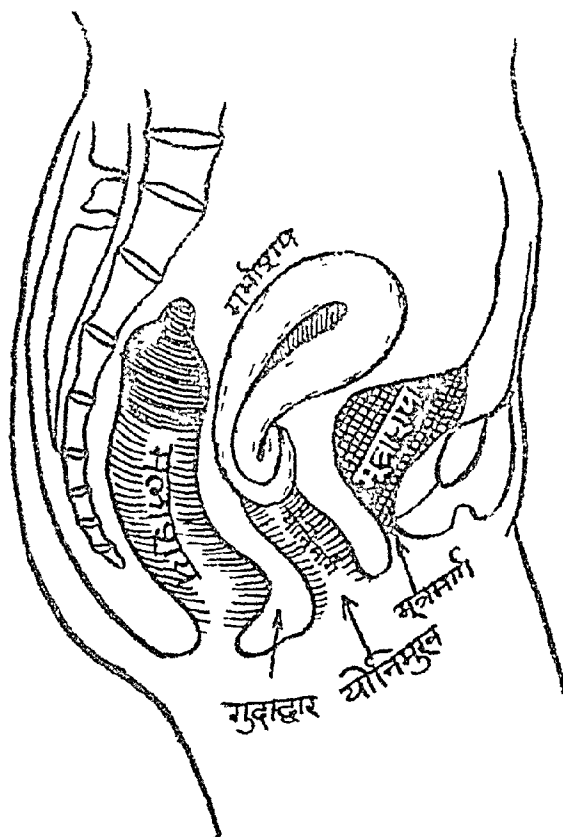
विपरीत आसन से रतिक्रिया करने से गर्भाशय का मुख उलट जाता है इससे स्त्री को रतिक्रिया के समय कष्ट होता है और गर्भ भी नहीं रहता ।

मेद रोग (चर्बी का बढ़ जाना)
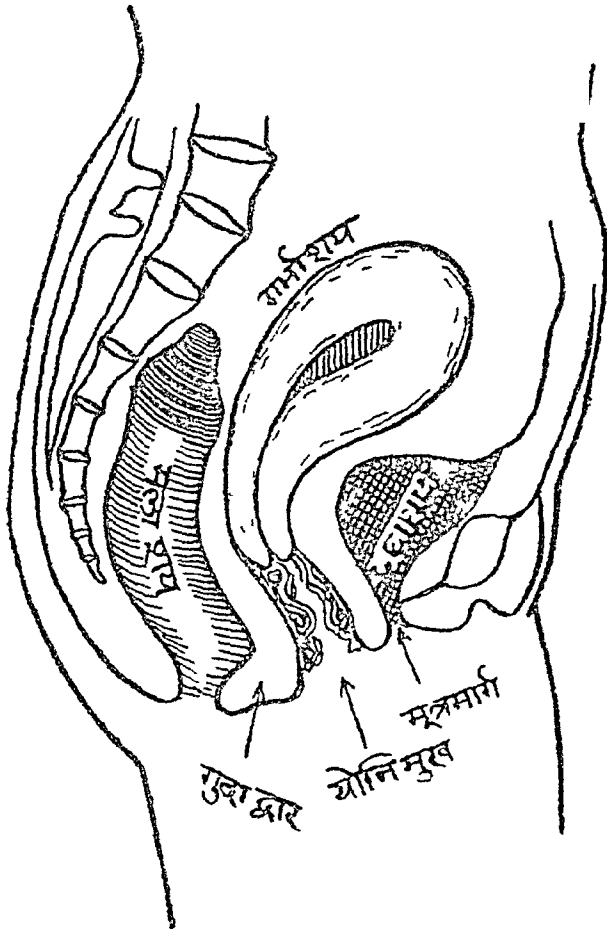
जब स्त्री के मेद रोग होजाता है तब गर्भाशय और योनि का मार्ग भी चर्बी से ढक जाता है इस लिये गर्भ नहीं रहता ।

अज्ञानतावश विषय वासना मे लिप्त जो रात दिन अनेक प्रकार के आसनों और स्तम्भन की औषधियों की खोज मे रहते हैं और नियम के विरुद्ध योनि संकोचन तथा इन्द्री वृद्धि कारक औषधि की खोज मे रहा करते हैं तथा ऐसे हानिकारक प्रयोगो के आनन्द में स्वर्ग का रास्ता ढूढते हैं ऐसे पुरुषो की स्त्रियां जो अज्ञानता से योनि संकोचन की औषधियां काम मे लाती हैं उन स्त्रियो के गर्भाशय मे अनेक प्रकार की खराबियां आजाती हैं। किसी का गर्भाशय तीक्ष्ण औषधियो के कारण खराब हो जाता है, किसी के गर्भाशय का मुख सूख जाता है। गर्भाशय के मुख का रक्त जल कर उसका मुख मुरझा जाता है। किसी के गर्भाशय का मुख भीतर को धस जाता है, किसी के गर्भाशय का मुख लटक कर बेकार हो जाता है और वे स्त्रियां सदैव के लिये वन्ध्या हो जाती हैं तथा रति सुख से आयु पर्यन्त वंचित रहती हैं।

प्रकृति के नियम के विरुद्ध गर्भाशय से काम लेने से उसमें अनेक प्रकार की खराबिया उत्पन्न होती हैं और स्त्रियो तथा पुरुषो दोनो को व्यर्थ के हानि कारक प्रयोगो से हानि पहुँचती है इसी कारण पुरुषो को अनेक रोग घेर लेते हैं।

अधिक प्रसंग से तथा संकोचन की औषधियो से स्त्रियो की योनि में सूजन उत्पन्न हो जाती है जैसा कि अन्यत्र चित्र मे दिखलाया गया है गर्भाशय के मुख के सामने योनि की दीवार दोनो तरफ सूजी हुई है। यदि इस सूजन का उपाय न किया जावे और अधिक दिन तक सूजन उत्पन्न होने पर भी बराबर संभोग किया जावे तो

यह सूजन बनी ही रहती है इससे पुरुष की इन्द्री भी प्रसंग के समय छिल जाती है और स्त्री की योनि भी छिल जाती है जिससे पति पत्नी दोनों को हानि पहुँचती है।

जैसे कुत्ता हड्डीका टुकडा पाकर उसे चबाता है। मुंह मे मसूडो मे हड्डी के गड़ने से रक्त निकलने लगता है उसी रक्त के स्वाद को वह अज्ञानी हड्डी के टुकड़े का स्वाद समझ कर बड़ा प्रसन्न होता है और उसे छोड़ता नही। कभी कभी जब वह हड्डी मुंह मे छिद जाती है तब चिल्लाता फिरता है व्याकुल हो जाता है। यही दशा उन अज्ञानी विषयी पतियो की है जो रोग के कारण योनि की सूजन को योनि सकोचन समझ कर भ्रम मे पड़कर कुछ दिनो मे रोते और पछताते हैं।

जरूरी बात

पुरुषो की अज्ञानता और विषय लोलुपता के कारण स्त्रियो के जितने प्रकार के गुप्त रोग देखने मे आये है और आते हैं उन सब का सचित्र विस्तार से हाल लिखा जावे तो एक बड़ा भारी ग्रन्थ बन जायगा इस लिये पुरुषो को सावधान करने के लिये और स्त्री जाति को रोगो से बचाने के लिये यहां कुछ रोग लिखे गये हैं

आशा है पाठक ऊपर लिखे विषय को भलीभांति समझ कर नियम से रहेंगे। जिन्हे यह बात मालूम न थी उन्होने अनजान में ऐसा किया है वे आगे को सावधान हो जायगे और सदैव इन हानिकारक अनियमो से बचते रहेंगे।
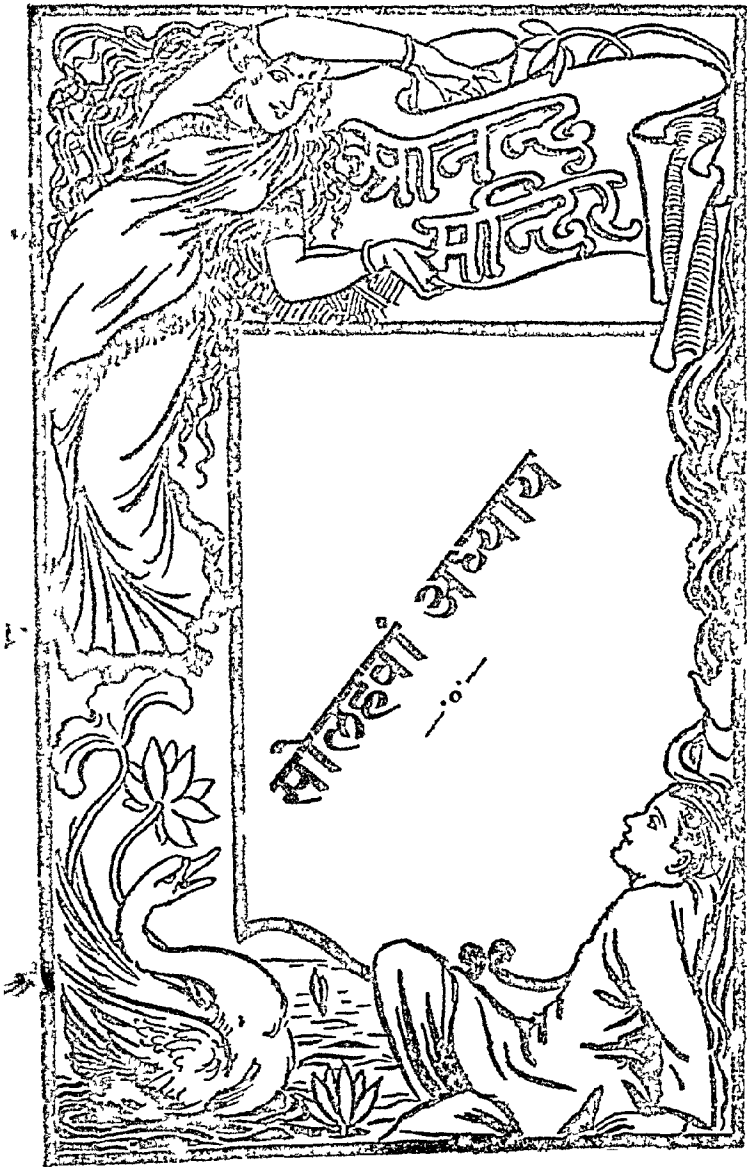
आनन्द मन्दिर
सोलहवाँ अध्याय

अनियम आहार विहार से स्त्रियों के अन्य रोग

भोग और संभोग अर्थात् आहार विहार और सभोग आदि के अनियम से स्त्री पुरुषो मे जो रोगो की उत्पत्ति होती है उन रोगो से सैकड़ा पीछे निन्नानवे स्त्रियां रोगी देखी जाती हैं इसी कारण पुरुषों की भी रोगी संख्या स्त्रियों की रोगी सख्या से कम नहीं है।

वातज योनि रोग

वातलाहार चेष्टाया वातलाया समीरणः।
विवृद्धो योनिमाश्रित्य योनेस्तोदं सवेदनम् ॥
स्तम्भ पिपीलकास्प्टतिमिव कर्कशतां तथा।
करोति सुप्तिमायासं वातजांश्चापरान् गदान् ॥
सा स्यात् सशब्दरुत्फेनं तनुरुक्षार्तवानिलात्।

अर्थात्—वात प्रकृति वाली स्त्री यदि वात को वढ़ाने वाले आहार विहार और चेष्टा करे तो वायु अत्यन्त कुपित होकर योनि का आश्रय लेकर योनि रोगों को उत्पन्न करती है। इस दशा मे योनि मे सुई चुभने की समान पीड़ा होती है और चीटी चलने कैसा अनुभव मालूम होता है तथा अनेक वात सम्वन्धी रोग

उत्पन्न होते है। वात के कारण उस स्त्री को योनि से पतला रूखा झागदार रक्त निकलता है रक्त निकलते समय कुछ शब्द भी होता है।

आहार—खाने पीने के पदार्थों को आहार कहते है। विहार आमोद प्रमोद स्नान चलना फिरना सोना घूमना और स्त्री प्रसंग करना इत्यादि सब विहार कहलाता है।

आहार और विहार मे मनुष्य के सभी कार्य समझने चाहिये इनको नियम पूर्वक न करने से अनियम आहार विहार कहे जाते है। अनियम आहार विहार से रोगो की उत्पत्ति होती है और नियम पूर्वक आहार विहार करने से शरीर आरोग्य और हृष्ट पुष्ट रहता है।

पित्तज योनि रोग

व्यायत्तथाम्ललवणक्षाराद्यैः पित्तजा भवेत्।
दाह पाकज्वरोष्णार्त्ता नीलपीतासितार्त्तवा॥
भृशोष्णाकुणपस्त्रावा योनिः स्यात् पित्तदूषिता।

अर्थात्—खट्टे पदार्थों का अधिक सेवन करने से तथा नमकीन और क्षारवाले पदार्थों के अधिक सेवन करने से पित्त कुपित होकर योनि रोगो को उत्पन्न करता है जिसे पित्तज योनि रोग कहा है। पित्त के कुपित होने से जो रोग उत्पन्न होते है उनमे स्त्री की योनि मे दाह जलन योनिपाक और योनि मे पीड़ा उत्पन्न होती है।

इस कारण योनि मे से नीला पीला और काला आर्तव (ऋतु का रक्त) निकला करता है। यह रक्त गरम गरम जलन के साथ निकलता है इसमे मुर्दे की सी गन्ध आती है।

कफज योनि रोग

कफोऽभिष्यन्दिभिर्वृद्धो योनिंचेद् दूषयते स्त्रियः।
सशीतां पिच्छिलां कुर्यात् कण्डुग्रस्तां सवेदनाम्॥
पाण्डुवर्णां तथा पाण्डुपिच्छिलार्त्तव वाहिनीम्।

अर्थात्—अभिष्यन्दी कफकारक अर्थात् कफ को बढ़ाने वाले पदार्थों के अधिक सेवन करने से कफ बढ़कर स्त्री की योनि मे कफज रोगो को उत्पन्न करता है, इन रोगो के कारण योनि मे शीतलता, लिबलिबापन और खुजली उत्पन्न होती है। योनि मे पीड़ा और पीलापन होता है इसलिये योनि से पीला गिलगिला आर्त्तव निकलता है।

सन्निपातक योनि रोग

समश्नत्या रसान् सर्वान् दूषयित्वा त्रयो मलाः।
योनिगर्भाशयस्थैः स्वैर्योनिं युंजन्ति लक्षणैः।
सा भवेद्दाहशूलार्त्ता श्वेत पिच्छिल वाहिनी।

अर्थात् त्रिदोष कारक आहार के सेवन करने से जो

पदार्थ वात पित्त कफ तीनों को बढ़ाने वाले हैं उनका अधिक सेवन करने से सब रस दूषित होकर योनि गर्भाशय का आश्रय लेकर अपने अपने लक्षणों को प्रकट करते हैं। तीनों दोषों के कारण जो योनि रोग उत्पन्न होते हैं उनसे योनि में जलन पीडा, आदि से कष्ट अधिक होता है तथा योनि मे सफेद और गिलगिला आर्तव निकलता है। इस प्रकार की दूषित योनि में कभी २ बडी खराबी हो जाती है।

रक्त पित्तज योनि रोग

रक्तपित्तकरैर्नार्या रक्त पित्तेन दूषितम्।
अति प्रवर्त्तते योन्या लब्धे बीजेऽपि साप्रजा॥

रक्त पित्तोत्पादक आहारादि सेवन करने से रक्त पित्त के कारण दूषित होकर योनि मे से रक्त निकलने लगता है इस दशा मे स्त्री गर्भधारण नही कर सकती इसे रक्त पित्तज कहते हैं।

अरजस्का योनि

योनिगर्भाशयस्थं चेत् पित्तं संदूषयेदसृक्।
सारजस्का मता कार्श्यवैवर्ण्य जननी भृशम्॥

अर्थात्—योनि और गर्भाशय मे रहने वाला पित्त जब रक्त को दूषित कर देता है तब रजोधर्म होना बन्द होजाता है और

स्त्री अत्यन्त दुर्बल और विवर्ण होजाती है ऐसी योनि को अरजस्का योनि कहते है।

अचरणा योनि

योन्यामधावनात् कण्डूं जाताः कुर्वन्ति जन्तवः।
सा स्यादचरणा कण्डवा तयातिनरकांक्षिणी॥

अर्थात्—योनि को न धोने से उसमे एक प्रकार के अदृश्य छोटे छोटे कीडे पड़कर योनि मे खुजली उत्पन्न करते हैं इस खुजली के कारण वह स्त्री पुरुष समागम की अत्यन्त इच्छा करती है ऐसी योनि को अचरणा कहते हैं।

इसके विषय मे पीछे भी लिखा जा चुका है और उपाय भी बतलाया गया है। जो स्त्रियाँ सफ़ाई से नही रहती योनि को कभी कभी धोती नही है उन्हीं मे यह रोग पैदा होता है तब वे दु.खी होती हैं।

अतिचरणा योनि

पवनोऽति व्यवायेन शोफसुप्तिरुजः स्त्रियाः।
करोति कुपितो योनौ सा चातिचरणा मता॥

अर्थात्—अत्यन्त मैथुन करने के कारण वायु कुपित होकर योनि मे सूजन सुप्ति और पीड़ा उत्पन्न कर देती है ऐसी यानि को अतिचरणा कहते हैं।

प्राक्चरणा योनि

मैथुनादति बालायाः पृष्ठजंघोरुवंक्षणाम् ।
रुजयन् दूषियेद्योनिं वायुः प्राक्चरणा तु सा ॥

अत्यन्त बाला स्त्री के साथ मैथुन करने से उसकी पीठ जांघ ऊरू और वक्षण मे वेदना उत्पन्न करके वायु योनि को दूषित कर देती है ऐसी योनि को प्राकचरणा कहते हैं। प्राकचरणा उसे कहते है जो स्त्री पुरुष सहवास के योग्य अवस्था वाली न होवे किन्तु छोटी आयु में मूर्खतावश कामान्ध पुरुष से सहवास करे तो ऊपर लिखा रोग उत्पन्न होता है उसे ही प्राक्चरणा कहते है। अतिबाला स्त्री उसे कहते है जिसकी अवस्था १६ वर्ष से कम हो, आयुर्वेद के सुश्रुत ग्रन्थ मे बतलाया है:—

ऊनषोडशवर्षायामप्राप्तः पंचविंशतिम् ।
यद्याधत्ते पुमान् गर्भं कुक्षिस्थः स विपद्यते ॥
जातो वा न चिरंजीवेज्जीवेद्वा दुर्बलेन्द्रियः ।
तस्मादत्यन्त बालायां गर्भाधानं न कारयेत् ॥

अर्थात्—सोलह वर्ष से कम अवस्था वाली स्त्री मे पच्चीस वर्ष से कम अवस्थावाला पुरुष जो गर्भ को स्थापन करे तो वह नष्ट होजाता है यदि नष्ट न भी हो तो निर्बल और रोगी रहकर शीघ्र ही यम का ग्रास बन जाता है।

पर स्त्री गमन का फल। पृ० ५०८

इस कारण सोलह वर्ष से कम अवस्थावाली स्त्री मे गर्भ-स्थापन करना वर्जित है इससे उस स्त्री के अनेक प्रकार के योनि रोग उत्पन्न होजाते हैं।

उपप्लुता योनि

गर्भिण्याः श्लेष्मलाभ्यासाच्छर्दिःश्वासविनिग्रहात्।
वायुः क्रुद्धःकफं योनिमुपनीय प्रदूपयेत् ॥
पाण्डुं सतोदमास्रावं श्वेतं स्रवति वा कफम्।
कफवाताभयव्याप्ता सा स्याद्योनिरुपप्लुता ॥

अर्थात्—कफ को बढाने वाले पदार्थों के अत्यन्त सेवन करने से तथा उलटी रोकने से और वायु सम्बन्धी वेगो को रोकने से, गर्भिणी स्त्री की वायु कुपित होकर कफ को योनि मे लाकर दूपित कर देती है तब योनि में सुई छिदने के समान पीड़ा होकर पीले रग का कफ के समान स्राव होता है अथवा सफेद सफेद कफ की समान निकलता है। कफ वात रोगो से युक्त ऐसी योनि को उपप्लुता कहते हैं।

परिप्लुता योनि

पित्तलाया नृसंवासे क्षपथूद्गार धारणात्।
पित्तं संमूर्च्छितो वायुर्योनिं दूषयति स्त्रियाः ॥

शूनास्पर्शाक्षमा सार्तिर्नीलपीतमसृक् स्रवेत् ।
श्रोणी वंक्षणपृष्ठार्ति ज्वरार्तायाः परिप्लुता ॥

अर्थ— पित्त प्रकृति वाली स्त्री के मैथुन के समय छींक व डकार आवे और यदि वह उसको रोक लेवे तो पित्त युक्त वायु कुपित होकर स्त्री की योनि में अनेक रोग उत्पन्न करदेती है । उस समय योनि ऐसी सूज जाती है कि स्पर्श नही किया जाता । यहां तक कि कपड़ा तक छू जाने से वड़ा कष्ट होता है और योनि मे से नीला पीला पानी की समान वहने लगता है। स्त्री की कमर व कोख तथा पीठ मे पीडा होने लगती है और ज्वर आने लगता है । इसको परिप्लुता कहते हैं। इसलिये सभोग के समय उकलाहट से छींक या डकार आदि रोकना न चाहिये, आसानी से उससे निवृत्त हो जाना चाहिये ।

उदावृत्ता योनि

वेगोदावर्तनाद्योनिमुदावर्तयतेऽनिलः ।
साहगर्ता रजःकृच्छ्रेणोदावृत्ता विमुञ्चति ॥

अर्थात्—अधोवेगो को रोकने से वायु के कारण योनि का वेग ऊपर को होता है, इस कारण वड़े कष्ट के साथ रजो दर्शन होता है । इससे मासिक धर्म्म के समय स्त्री को वड़ा कष्ट होता है । इसे उदावृत्ता योनि कहते है ।

उदावर्तिनी योनि

आर्तवे या विमुक्ते तु तत्क्षणं लभते सुखम् ।
रजोसो गमनादूर्ध्वज्ञेयोदावर्तिनी बुधैः ॥

अर्थात्—आर्त्तव के निकलने से जिसमे तत्काल चैन पड़ जाता है जब तक ऋतु आरम्भ होता है तब तक बड़ा कष्ट होता है। ऋतुधर्म होजाने पर कष्ट दूर होजाता है। रज के ऊपर जाने के कारण इसको उदावर्तिनी कहते हैं।

कर्णिनी योनि

अकाले वाहमानाया गर्भेणापिहितोऽनिलः ।
कर्णिकां जनयेद्योनौ श्लेष्मरक्तेन मूर्छितः ॥
रक्तमार्गावरोधिन्या सातया कर्णिनी मता ।

अर्थात्—छोटी अवस्थावाली स्त्री में गर्भधारण करने से गर्भ के कारण आच्छादित वायु कफ और रक्त से मिली हुई एक प्रकार की गांठ योनि के मुख पर उत्पन्न कर देती है। यह गांठ रक्त के मार्ग को रोकदेती है इसलिये इसे कर्णिनी कहते हैं।

पुत्रघ्नी योनि

रौक्ष्याद्वायुर्यदा गर्भं जातं जातं विनाशयेत् ।
दुष्ट शोणितजं नार्या पुत्रघ्नी नाम सा मता ॥

अर्थात्—जो गर्भ स्त्री के दूषित रक्त से उत्पन्न होता है ऐसी स्त्री को जब जब गर्भ उत्पन्न होता है तब तब ही वायु रूक्षता के कारण उसे नष्ट करदेती है। ऐसी योनि को पुत्रघ्नी कहते हैं।

अन्तर्मुखी योनि

व्यवायमतितृप्ताया भजन्त्यास्त्वन्न पीडितः।
वायुर्मिथ्यास्थिताङ्गाया योनिस्रोतसि संस्थितः॥
वक्रयत्याननं योन्यामस्थिमांसानिलार्तिभिः।
भृशार्तिं मैथुनासक्ता योनिरन्तर्मुखी मता॥

अर्थात्— स्त्री को भोजन करके थोड़ा ही समय व्यतीत हुआ हो अर्थात् पेट भरा हो उस समय विपरीत आसन से रति क्रिया करे तो वायु उस स्त्री की योनि के स्रोत में रुक कर अर्थात् टकरा कर गर्भाशय के मुख को टेढ़ा कर देती है। उसकी हड्डियो और मांस मे अत्यन्त पीड़ा होती है और फिर वह स्त्री सम्भोग के समय सदैव कष्ट पाती है। इसलिये पति पत्नी किसी को भी सम्भोग सुख नही मिलता और उस स्त्री के गर्भ भी नहीं रहता, क्योकि गर्भाशय का मुख टेढा होने से पुरुष की इन्द्री संभोग के समय गर्भाशय की गर्दन से जाकर टकराती है और तब गर्भाशय की गर्दन पर दबाव पड़कर स्त्री की योनि मे पीड़ा होती है इस लिये सभोग ठीक नही होता बल्कि दुखदाई होता है।

यो तो विपरीत आसन से सभोग करने से गर्भाशय को

अनेक प्रकार से हानि पहुँचती है परन्तु भोजन कर थोड़ी ही देर मे अर्थात् पेट भरे रहने पर विपरीत आसन से रति करने से ऊपर लिखे अनुसार गर्भाशय को अधिक हानि पहुंचती है, जिससे फिर वह स्त्री सभोग का सुख नही पाती।

मेरे पास इस रोगवाली महीने मे पचासो स्त्रियां आया करती है।

सूचीमुखी योनि

गर्भस्थायाः स्त्रियारौद्याद्वायुर्योनि प्रदूषयन्।
मातृ दोषादणुद्वारात कुर्यात् सूचीमुखीतुसा॥

अर्थात्—गर्भ मे कन्या हो उस समय यदि गर्भवती रतिक्रिया करे तो वायु रुक्ष होकर गर्भवाली कन्या की योनि को दूषित करके उसके योनि द्वार को छोटा करदेती है ऐसी योनि को सूचीमुखी कहते हैं। पाठक पाठिकाओ! विचार कीजिये, कितना वड़ा अनर्थ है। गर्भवती के साथ रतिक्रिया करने से सन्तान पर कैसा बुरा प्रभाव पड़ता है, वह जन्म भर के लिये कष्ट भोगती है।

इस रोग वाली अनेक स्त्रियां मेरे देखने मे आई। किसी किसी की योनि इतनी छोटी देखी गई जो पुरुष समागम के योग्य ही नही। कोई कोई ऐसी देखी गई कि सम्भोग के समय उन स्त्रियो को बड़ा कष्ट होता है, यदि गर्भ रहगया तो ऐसी स्त्रियों का गर्भ प्रसव के समय योनि के बाहर नहीं

निकल सकता तब काटकर निकाला जाता है। यदि काटकर निकालने का मौका न मिला या उस समय कोई योग्य चिकित्सक न मिला तो वह स्त्री मरजाती है। बालक योनि से आकर फंस जाता है।

इसी कारण गर्भवती के साथ मैथुन करना ऋषियों ने मना किया है। इससे गर्भ और गर्भवती दोनो को शारीरिक हानि पहुँचती है। अनेक स्त्रियो की यह दशा होते लोगो ने देखी होगी परन्तु फिर भी बाज नही आते।

मेरे पास गर्भस्राव व गर्भपात और अन्य शिकायतों वाली सैकड़ों स्त्रियां आया करती हैं। इन सबका कारण गर्भवती के साथ रतिक्रिया करना पाया गया और अधिक प्रसंग करना तथा विपरीत आसन से सभोग करना यह तो बहुत अधिक स्त्रियो मे पाया जाता है, क्योकि जितनी स्त्रिया मेरे पास इलाज के लिये आया करती हैं वे अपने पति का कुल हाल, अधिक विषय तथा अनियम और विपरीत विषय का ही कहा करती हैं।

पुरुषों की इस अज्ञानता और कामान्धता ने स्त्रियो का जीवन दुःखमय बना दिया है। पुरुष रोगी पत्नी पर भी दया नही करते यह कितनी बड़ी अज्ञानता है।

शुष्का योनि

व्यवायकाले रुन्धन्त्या वेगात् प्रकुपितोऽनिलः।
कुर्याद्विरामूत्रसङ्गार्तिं शोषं योनि मुखस्यतु॥

अर्थात्—मैथुन के समय जब स्त्री मल मूत्रो के वेगो को रोक लेती है तब वायु कुपित होकर विष्टा और मूत्र को रोक कर योनि को खुश्क कर देती है अर्थात् दिशा और पेशाव की गरमी जो रोकने से पैदा होती है उस गरमी से योनि मे खुश्की पैदा होती है, इसलिये ऐसी योनि को शुष्का कहते हैं।

यह रोग एक ही बार ऐसी मूर्खता करने से उत्पन्न होजाता है, जिसके कारण उस स्त्री की योनि में अनेक प्रकार की व्याधियां उत्पन्न होजाती है। ऐसी रोगो वाली जितनी स्त्रियां मेरे पास आई उन सब से जब मैंने पूछा कि कभी ऐसा तो नही हुआ कि तुम को दिशा पेशाव लगी हो, ऐसी दशा मे प्रसग किया हो, तब उन सब ने यह स्वीकार किया और अपने पति की कामान्धता की कहानी सुनाई। किसी ने कहा कि प्रात.काल जब दिशा जाने का समय होता है, प्राय: अनेक बार ऐसा हुआ और होता है कि पति जाने नही देते और प्रसग करते है। जिसके कारण कभी कभी पेड़ू मे पीड़ा होती है और दिशा पेशाव का रोकना कठिन होता है। इस प्रकार का हाल ऐसे रोग वाली सभी स्त्रियां बतलाया करती हैं।

इस कारण शास्त्रकारों ने प्रात: काल का मैथुन अत्यन्त हानिकारक बतलाया है। स्त्री को ही नही, पुरुष भी यदि दिशा पेशाव के वेगो को रोक कर प्रसंग करे तो उन्हे भी अनेक प्रकार के रोग उत्पन्न होते हैं, जिनका वर्णन इस पुस्तक के दूसरे भाग में विस्तार पूर्वक लिखूंगी।

वामिनी योनि

षट्रात्रात् सप्तरात्राद्वा शुक्रं गर्भाशयं गतम् ।
सरुजं नीरुजं वापि या स्रवेत् साच वामिनी ॥

अर्थात्—जिस स्त्री की योनि से गर्भाशय में पहुंचा हुआ वीर्य पीडा करके अथवा विना पीड़ा के ही छे सात दिन के भीतर ही गर्भाशय से निकल पडता है, उसे वामिनी योनि कहते है। इस मे कभी गर्भ नही ठहरता। यह रोग भी विवाह होते ही अधिक प्रसंग से तथा विपरीत आसन से प्रसंग करने से गर्भाशय खराव होजाने के कारण होता है।

बन्ध्या योनि

वीज दोषात्तु गर्भस्था मारुतोपहताशयः ।
नृद्वेषिण्यस्तनी चैव षण्ढी स्यादनुपक्रमा ॥

अर्थात्—माता पिता के वीज दोष के कारण जिस कन्या का गर्भाशय नष्ट हो जाता है। वह पुरुष समागम की कभी इच्छा नही करती है और उसके स्तन भी नहीं होते। ऐसी स्त्री षण्ढी या हिजड़ी कहलाती है। इसका इलाज धन्वन्तरी भी नहीं कर सकते।

क्योंकि जिसके गर्भाशय ही न होगा उसके गर्भ ठहरेगा कहा ? इसीलिये बन्ध्या का इलाज भी नही हो सकता।

महायोनि

विषमं दुःख शय्यायां मैथुनात् कुपितोऽनिलः ।
गर्भाशयस्य योन्यश्च मुखं विष्टम्भयेत् स्त्रियः ॥
असंवृतमुखा सार्तिरुक्षफेनास्रवाहिनी ।
मांसोत्सन्ना महायोनिः पर्ववंक्षण शूलिनी ॥
इत्येतै लक्षणैः प्रोक्ता विंशतिर्योनिजा गदाः ॥

अर्थात्—विपरीत दुखदाई शय्या पर, विपरीत आसन से जो स्त्री प्रसग किया जाता है उस से उस स्त्री की वायु कुपित होकर गर्भाशय और योनि मुख को विगाड़ देती है दूषित करके फैला देती है। उसके गर्भाशय तथा योनि का मुख अधिक खुल जाता है इसलिये योनि बड़ी हो जाती है, उससे झागदार रूखा पीड़ा करता हुआ आर्तव निकला करता है। इस स्त्री के हड्डियो की सन्धि अर्थात् जोड़ों मे और गर्भाशय तथा योनि मे प्राय. पीड़ा हुआ करती है। यह महायोनि अर्थात् बड़ी योनि कहलाती है। जो स्त्री के लिए अतिशय दुखदाई होती है।

ये ऊपर लिखे, अनेक प्रकार के योनि रोग स्त्रियो की अज्ञानता और उनके पति की मदान्धता के कारण, अनियम आहार विहार स्त्री प्रसंग आदि से उत्पन्न होते हैं, ऐसा आयुर्वेद मे ऋषियो ने बतलाया है।

स्त्रियों की योनि के ये रोग सुश्रुत मे वतलाये हैं। सुश्रुत आयुर्वेद का वड़ा भारी प्राचीन ग्रन्थ है। स्त्रियो के इन योनि रोगो से और भी अनेक प्रकार के भयकर रोग उत्पन्न होजाते हैं जिससे स्त्रियो का जीवन दु खमय वनजाता है और वे रोरोकर जीवन व्यतीत कर कुसमय मे ही काल का कलेवा वनजाती हैं। यदि स्त्रियो के पति अपनी पत्नियो पर दया दृष्टि दिखावे और अधिक प्रसग से उन्हे वचाते रहे तथा स्वय वचते रहे तो स्त्रियों की रोगी सख्या सैकड़ा पीछे निन्नानवे की जगह जो इस समय देखी जाती है वहुत कम होजावे और भारत के वालक जो कुसमय मे ही काल का कलेवा वनजाते हैं जिसके कारण हमारे देश के वालको की रोगी तथा मृत्यु सख्या अधिक सुनी जाती है वहुत कम हो जावे।

योनि संकोचन

आयुर्वेद मे योनि संकोचन की अनेक औषधियां वतलाई हैं वे औषधियां केवल ऊपर कहे गये महायोनि नामक रोग के लिये हैं परन्तु मूर्ख अज्ञानी विषयी लोग प्राय उन औषधियो को विना रोग के ही आरोग्य स्त्री की योनि सकोचन के काम मे केवल इस लिये लाते हैं कि उन्होंने यह समझ रक्खा है कि जितनी ही सकुचित योनि हो उतना ही आनन्द मिलेगा। इसलिये मूर्ख विषयी पुरुष ऐसी औषधियो वाली पुस्तको की खोज मे रहा करते हैं, यह देखकर पुस्तक वनाने वाले भी अपनी मूर्खता, पुस्तक

वनाने में खर्च कर डालते हैं और इधर उधर से मनगढ़त प्रयोग योनि संकोचन के अपनी पुस्तकों में लिखदेते हैं जिससे ऐसे प्रयोगो से पुस्तक की बिक्री अधिक हो।

वे पुस्तक वनाने वाले यह तो समझते ही नहीं कि किस लिये यह प्रयोग काम में लाया जाना चाहिये। पुस्तक वनाने वालों को स्वयं इस बात का ज्ञान नहीं है क्योंकि वे तो वैद्यक विषय में बिल्कुल अज्ञान हैं। वे तो संग्रह करना जानते हैं, हानि लाभ का उन्हे कुछ ज्ञान नहीं होता। किसी प्रकार पुस्तक बिके, यहीं ध्यान रहता है।

उन पुस्तक वनाने वालो से अधिक अज्ञान वे हैं जो विना सोचे समझे ऐसे प्रयोगों को क्षणिक आनन्द के लिये काम में लाकर अपना तथा अपनी प्यारी पत्नी का जीवन नष्ट करते हैं क्योंकि विना रोग के औषधियां काम मे लाने से वे हानिकारक होती हैं।

योनि संकोचन और पुरुष इन्द्री को वढ़ाने तथा स्थूल करने वाली औषधियां वड़ी हानिकारक होती हैं। विना रोग के भूल कर भी काम में नहीं लानी चाहिये। जो पुरुष मूर्खता वश विना रोग के ही इन्द्री को वढ़ाने तथा स्थूल करने की औषधिया काम में लाते हैं उनकी इन्द्री कुछ दिनों में वेकाम हो जाती है और वे नपुंसक होजाते हैं।

जो पुरुष विना जरुरत के ही स्तम्भन की औषधियों का सेवन करते हैं उन्हें भी कुछ दिन वाद नपुंसकता आघेरती है फिर

वे रोया करते हैं और बिना सम्मान के जो कुछ आनन्द प्राप्त करते थे वह भी हाथ से जाता रहता है फिर उनकी उसी कुत्ते की सी दशा हो जाती है कि.—

आधी छोड़ एक को धावै, ऐसा डूबे थाह न पावै

इसलिये ऐसी पुस्तकों के प्रयोगों को जो बिना वैद्यक के ज्ञान के बनाई गई हों काम में नहीं लाना चाहिये। मेरे पास प्रतिदिन बीसों ऐसे स्त्री पुरुषों के पत्र आया करते हैं जो ऐसी पुस्तकों के प्रयोगों से हानि उठा चुके हैं और उठा रहे हैं।

अनियम संभोग और पुरुष रोगों की उत्पत्ति

अनियम और अधिक स्त्री प्रसंग से स्त्रियों को हानि पहुँचती है। यही नहीं पुरुषों को अनियम स्त्री प्रसंग से बहुत अधिक हानि पहुँचती है क्योंकि अनियम प्रसंग में स्त्री हिस्सा नहीं लिया करती। इसका कारण यह है कि पुरुषों में अधिक संख्या ऐसे पुरुषों की है जो शीघ्रपात व शिथिलता के कारण शीघ्रही स्खलित होजाते हैं। मेरे पास २५ पचीस वर्षों में लाखों रोगी पुरुषों की चिट्ठियां और उनकी स्त्रियां पुरुषों की चिकित्सा के लिये आई चिट्ठियां देखने से और स्त्रियों के द्वारा मालूम हुआ है कि सैकड़ा पीछे निन्नानवे पुरुष शीघ्रपात स्वप्नदोष शिथिलता और नपुंसकता से ग्रसित हैं इस कारण वे शीघ्रही स्खलित होते हैं।

हजारों स्त्रियो की जवानी यह बात सुनी गई कि पति जी तो दो दो तीन तीन बार संभोग करते हैं परन्तु हमारी इच्छा एक बार भी नही होती क्योंकि पति जी का हमारे पास आते ही बातचीत करते ही करते वीर्य बहने लगता है, दो तीन घटे मे फिर प्रसग के लिये तैयार होते हैं फिर ऐसा ही होजाता है। हमारी कभी इच्छा ही नही होती, हम महीनों तक पति के सग से कुछ लाभ नहीं उठाती गर्भ कैसे रहे। इससे मालूम होता है जो पुरुष अनियम प्रसंग करते हैं उनको बड़ी हानि पहुंचती है। स्त्रियो को प्रसग से तो उतनी नही पहुँचती परन्तु प्रसग ठीक न होने से उन्हें और भी अनेक रोग उत्पन्न होजाते हैं जिनका वर्णन आगे करूंगी। यहां इतना वर्णन करने से यह पता चल जायगा कि अनेक कारणो से योनि मे भिन्न २ प्रकार की खराबियां होती हैं। यहां केवल वीर्य सम्बन्धी पुरुष रोगों का-जो अनियम प्रसंग से उत्पन्न होते हैं उनका वर्णन करती हूँ।

तथा बीजमकालाम्बुकृमिकीटाग्नि दूषितम्।
न विरोहति सन्दुष्टं तथा शुक्रं शरीरिणाम्॥

अर्थात्—जैसे कुसमय वर्षा होने से कीड़े मकोड़े वा अग्नि दग्ध के कारण बिगड़ा हुआ बीज अकुरित नही होता अर्थात् सड़ा गला घुना बीज बोने से पौधा नही जमता इसी प्रकार मनुष्य का बिगड़ा हुआ वीर्य भी सन्तान उत्पन्न करने के योग्य नही रहता।

वीर्य के दूषित होने का कारण

आयुर्वेद बतलाता है—

अतिव्यवायाद्व्यायामादसात्म्यानां च सेवनात् ।
अकाले चाप्ययोनौ वा मैथुनं न च गच्छतः ॥

अर्थात्—अति शारीरिक परिश्रम और प्रकृति के विरुद्ध पदार्थों का सेवन करना, कुसमय मैथुन करना व अयोनि में मैथुन करना तथा अगम्या योनि से मैथुन करना। रूखे, कसैले, तीक्ष्ण, खट्टे, चरपरे, राई, मिर्चा, सिरका आदि पदार्थों का अत्यन्त सेवन करना अत्यन्त गरम नमकीन पदार्थों का सेवन अत्यन्त मीठे, भारी, चिकने अन्न का सेवन करना। हानिकारी पदार्थों का सेवन करना। वृद्धावस्था, चिन्ता शोक और प्रकाश स्थान में स्त्री गमन करना और शिश्नेन्द्रिय तथा उसके समीप वाली नसों पर शस्त्र कर्म, अग्नि दाह और क्षार कर्म का अनुचित विधि से होना, भय क्रोध व्यभिचार, मल मूत्र वेगों का रोकना, धातु की क्षीणता तथा सप्त धातुओं का दूषित होना इन कारणों से सम्पूर्ण दोष अलग अलग अथवा सब एक साथ मिलकर वीर्य वाली नलियों में पहुंच कर वीर्य को शीघ्र ही दूषित कर देते हैं। जिसके कारण पुरुषों को अनेक प्रकार के रोग उत्पन्न हो जाते हैं और वीर्य क्षीणता तथा नपुंसकता उत्पन्न होती है और अनेक भयंकर रोग उत्पन्न होकर जीवन लीला दुःखमय

वना देते हैं। ऊपर लिखे कारणों से पुरुष के जितने रोग हैं सभी उत्पन्न होते हैं।

चेतसोवातिहर्षेण व्यवायं सेवते तु यः।
शुक्रं तु क्षीयते तस्य ततः प्राप्नोति संक्षयम्॥
घोरां व्याधिमवाप्नोति मरणं वा स ऋच्छति।
शुक्रं तस्माद्विशेषेण रक्ष्यमारोग्यमिच्छता॥
एतन्निदानलिङ्गाभ्यामुक्तं क्लैव्यं चतुर्विधम्।

अर्थात्—जो मनुष्य चित्तकी हर्षता से अत्यन्त मैथुन मे प्रवृत्त होता है अर्थात् अधिक स्त्री प्रसग करता है उसका वीर्य अधिकता से क्षीण होजाता है और क्षयरोग उत्पन्न होजाता है अथवा और भी घोर व्याधियो के होने के कारण वह पुरुष मृत्यु के मुख मे प्रवेश करता है। इसलिये जो पुरुष वा स्त्री आरोग्यता की इच्छा रखते हों उनको अपने वीर्य की सावधानी से रक्षा करनी योग्य है। प्रमाण से अधिक मौज मे आकर क्षणिक आनन्द के लिये विषय वासना के वशीभूत होकर वीर्य का सत्यानाश न करे। वीर्य के ही आश्रय मनुष्य का वल है और वलके आश्रय शरीर का जीवन है।

याद रखने की बात

पुरुषो के सब रोगो का निदान व चिकित्सा रोग दूर होने

के उपाय व औषधियां जो पुरुष अपने रोगों को आपही समझ कर घर पर ही सरलता से बहुत कम मूल्य में अपने हाथों तैय्यार कर रोगों को दूर कर सकते हैं वे दूसरे भाग में विस्तार पूर्वक लिखी जायगी, जो मेरी लाखो बार परीक्षा की हुई हैं। लाखों पुरुष जिनमे आराम हो चुके है।

अनुचित मैथुन से हानि

बहु मैथुन के सम्बन्ध मे शास्त्रों में लिखा है कि तरुण पुरुष और स्त्री का जब विवाह हो तथा स्त्री रजोधर्म मे शुद्ध हो तो पुरुष केवल गर्भाधान के लिये सम्भोग करे। जब गर्भ रहजाने के चिन्ह मालूम हों तब प्रसंग करना बन्द करदे। जब तक बालक उत्पन्न होकर माता का दूध पीना न छोड़ देवे तब तक पुन. प्रसग नही करना चाहिये।

बहु मैथुन इस प्रकार बढ़ा हुआ है कि जिसका वर्णन करना असम्भव है। मेरे पास प्रति दिन रोगी पुरुषो की अनेक चिट्ठियां आया करती हैं। प्राय चिट्ठियों मे यह लिखा होता है कि विवाह होने के समय से कई वर्ष तक मैंने बिलानागा एक बार से भी अधिक कभी दो कभी तीन बार मैथुन किया। अब न जाने क्या कारण है स्त्री का स्पर्श करते ही वीर्य पानी की समान बहने लगता है, यदि दो चार दिन प्रसग न करू तो स्वप्नदोष होजाता है, और अब इच्छा शक्ति भी कम होगई है, कृपाकर कोई औषधि भेज दीजिये।

परपुरुषरता स्त्री को दण्ड । पृ० ५०१ (सर्वाधिकार सुरक्षित)

पुरुष के साथ उसकी स्त्री की भी चिट्ठी आती है। स्त्री भी प्रदर रोग तथा मासिकधर्म की खराबी से दु.खी है। पाठक पाठिकाओ विचारिये तो सही लोग कैसी अज्ञानता करते हैं, अपने तथा स्त्री के शरीर का किस प्रकार सत्यानाश कर रहे हैं। धिक्कार है इस आनन्द को जिससे पति पत्नी दोनो रोगी और निर्बल हो जाते हैं और फिर उसी आनन्द के लिये रोया और पछताया करते हैं।

स्त्रियों के पत्रों से मालूम होता है कि युवा पुरुष मासिक धर्म्म के दिनों में तथा प्रसूतावस्था में भी मूर्खतावश प्रसग करते हैं, और स्त्री की आरोग्यता का कुछ भी ध्यान नही रखते। यह कैसी अज्ञानता है और पत्नी के साथ कैसा अत्याचार है।

कितनी ही युवती स्त्रियां मेरे देखने मे आई हैं और प्रति दिन आया करती हैं। वे अपने पति के रोगों की भी दु.खद कहानी सुनाया करती हैं, जिसे सुनकर शोक होता है कि विषय की अज्ञानता से कितने ही विवाहित जोड़ो का जीवन तबाह और बरबाद हो गया है और हो रहा है।

कोई कोई घमंडी लोग इस मूर्खता के कारण बहुमैथुन करते हैं कि कही हमारी स्त्री यह खयाल न कर बैठे कि हमारे पति मे बल नहीं है। वे बड़े मूर्ख हैं, यह नही जानते कि स्त्री को केवल गर्भाधान के लिये ही, ऋतु-स्नान के बाद उचित सम्भोग की प्रबल इच्छा होती है; यह प्राकृतिक नियम है। जो पति अपनी पत्नी से ऐसा समझ कर कि अधिक प्रसंग न करने से, कही स्त्री सुस्त न समझ ले, यह समझ कर शक्ति न

रहते हुए भी अधिक प्रसग करते हैं, महामूर्ख हैं। वे यह नही जानते कि जब बहुमैथुन के कारण हम बेकार हो जावेंगे, तो उस समय बिलकुल ही इच्छा पूरी न कर सकेंगे।

इसलिये नियमपूर्वक सभोग करना ही स्त्री पुरुष दोनों के लिये प्रसन्नता और आनन्द की बात है, क्योंकि नियमपूर्वक सम्भोग करने से दाम्पत्य-प्रेम और विवाह का आनन्द भी मिलता है और सन्तान भी उत्तम और आरोग्य होती है। अधिक विषय से स्त्री पुरुष दोनो ही क्षय तपेदिक आदि भयंकर रोगों मे ग्रसित होजाते हैं। शरीर का सार वीर्य है। रुधिर की सौ बूंदों के समान वीर्य की एक बूंद होती है। यह ऐसा अनमोल रत्न है जिससे बहुमूल्य शरीर उत्पन्न होता है। इसे बरबाद करके शरीर का सत्यानाश मारना कैसी मूर्खता है।

आनन्द-वर्द्धक प्रसंग

जिस प्रसग के पश्चात आनन्द आवे, शरीर मे स्फूर्ति हो, स्त्री पुरुष दोनो का चित्त प्रसन्न हो, और शरीर मे नूतन शक्ति ज्ञात हो, शरीर अधिक फुरतीला और परिश्रम करने योग्य मालूम हो, प्रसग के बाद सुस्ती और उदासी न मालूम हो, बल्कि थोड़ी देरी मे शक्ति और इन्द्री मे उत्तेजना मालूम हो, तो यह समझना चाहिये कि सम्भोग स्वास्थ्य के नियमानुसार हुआ है। स्त्री पुरुष दोनो मे यह बाते मालूम होनी चाहिये।

यदि सम्भोग के पीछे थकान और शिर का भारीपन अनुभव

हो तो जान लेना चाहिये कि विना जरूरत के ही प्रसग किया गया है। पाठक विचार कर देखे कि कितने पुरुष ऐसे हैं जो इस नियम का पालन करते हैं ? बहुत कम होंगे। इसी कारण सैकड़ा पीछे निन्नानवे स्त्री-पुरुषों को औपधिया सेवन करने की आवश्यकता होती है।

उचित प्रसंग का दूसरा लक्षण यह भी है कि जब तक सच्ची रुचि न हो, तब तक प्रसग न करे। सच्ची रुचि वह है जो विना स्त्री के साथ हंसे बोले और चित्त को बिगाड़ने वाले अन्य साधनों के बिना ही हृदय मे उत्साह और सम्भोग की इच्छा उत्पन्न हो और सम्भोग करने के लिये व्याकुल कर दे।

शास्त्र बतलाता है कि उत्तेजना कई कारणों से—प्राय. कमजोरी से भी हुआ करती है। अज्ञानी पुरुष उस झूठी उत्तेजना को ही सच्ची उत्तेजना समझकर वीर्य का सत्यानाश कर अपने चित्त की शान्ति करते हैं। वह झूठी उत्तेजना कमजोरी, ज्याद: सुस्ती और अधिक उदासी प्रकट करती है।

जब कि सम्भोग के पीछे सुस्ती और कमजोरी मालूम हो, शिर में कुछ दर्द मालूम हो, तब वह निर्वलता का कारण है और उसे बेजा विपयभोग समझना चाहिये। ऊपर लिखे विषय पर विचार करने और ध्यान देने से पाठको को मालूम होगा कि सैकड़ा पीछे निन्नानवे पुरुष विना सच्ची इच्छा के ही सम्भोग करके अनेक प्रकार के रोगो मे ग्रसित हो रहे हैं।

मेरे पास प्रति दिन बीसो चिट्ठियां और ऐसे रोगी पुरुषो की

स्त्रियां स्वयं अपनी और पति की चिकित्सा के लिये आया करती हैं इससे इस बात का मुझे पच्चीस वर्ष का अनुभव है कि अनियम विषय से ही सैकड़ा पीछे निन्नानवे स्त्रियां और इतने ही पुरुष रोगी हो रहे हैं और इसी कारण हमारे देश के बालकों की रोगी तथा मृत्यु-संख्या अन्य सब देशों से अधिक है।

बाल-विवाह

बाल-विवाह के कारण पति पत्नी का रोगी होना ; रोगी माता पिता से रोगी और अल्पायु सन्तान उत्पन्न होना।

हमारे देश मे बाल-विवाह और बेमेल विवाह भी स्त्री-पुरुषों में रोगों की उत्पत्ति और सन्तान के रोगी होने का दूसरा कारण है।

अनेक उपाय और उद्योग करने पर भी यह अज्ञानता देश से दूर नहीं होती। मुझे इस विषय मे २५ पच्चीस वर्ष का अनुभव है, क्योंकि मेरे पास अब तक लाखो स्त्रिया इलाज के लिये आईं। पता लगाने से मालूम हुआ है कि इनमे बहुत से स्त्री-पुरुष बाल विवाह के कारण कम अवस्था मे ही रतिक्रिया का आरम्भ करके रोगी होगये हैं, इसी कारण सन्तान भी रोगी और निर्बल तथा कम आयुवाली हो रही हैं।

जिनका विवाह बाल्यावस्था में हुआ है या होगा वे सदैव रोगी और निर्बल ही रहेंगे और सन्तान भी रोगी और अल्पायु होगी। इसका कोई इलाज नहीं, केवल एक उपाय है कि इस प्रथा को एकदम बन्द करना चाहिये।

जो माता-पिता अपने किसी सुख अथवा खुशी के लिये सन्तान का कम अवस्था मे विवाह करते हैं, वे सन्तान के साथ बडी भारी शत्रुता करते हैं और अपने कुलका आगे के लिये सत्यानाश मारते हैं।

बेमेल विवाह

बेमेल विवाह कई प्रकार के होते हैं। एक तो वह बेमेल विवाह हैं जिनका हाल पीछे लिखा गया है, जिनमे पति पत्नी की प्रकृति न मिले अर्थात् पद्मिनी, चित्रणी, शंखिनी, हस्तिनी जाति की स्त्रियों का विवाह उनके मेल के मृग, शशक, वृषभ, अश्व आदि पुरुष के साथ न हो।

इस प्रकार के मेल से स्त्री-पुरुषों के विवाह होना कठिन है, क्योंकि कामशास्त्र ने तो इन सब स्त्री पुरुषों के लक्षण बतलाये हैं और आयुर्वेद मे सबकी प्रकृति बतलाई है तथा और भी लक्षण बतलाये हैं; परन्तु यह सब लक्षण मिलाकर विवाह करने मे बड़ी भारी कठिनाइयाँ हैं। इस प्रकार से मेल मिलाकर विवाह करने की लोग परवाह न करेंगे, क्योंकि जितना हो सकता है और सरल है उसी को बहुतेरे लोग नहीं मान रहे हैं।

स्त्री-पुरुष की ठीक ठीक पहिचान बड़ी कठिन है, क्योंकि लडके वाले को इतना मौका कहां मिलता है कि वह पद्मिनी चित्रणी शंखिनी आदि के लक्षण ठीक ठीक मिलाकर विवाह करें। न लडकी वाले को ही पुरुष की पहिचान करने का मौका मिलता है, इसी कारण जितना हो सकता है मिलाया जाता है। अब इसकी भी प्रथा उठती जाती है। इसी कारण ठीक मेल नही मिलता।

बाल विवाह रोकने के लिये शारदा एक्ट बन गया है परन्तु उसका भी कितना विरोध हुआ और उसके पास होजाने पर भी लोग परवाह नहीं कर रहे हैं। जैसा चाहिये वैसा प्रभाव शारदा एक्ट का जनता पर नही पडा। जितना असर हुआ भी, वह नहीं के बराबर है। फिर भला वैद्यकशास्त्र को कौन मानने लगा।

दूसरा बेमेल विवाह वह है जिसमे लडका छोटा और लडकी बड़ी होती है। यह विवाह बडा ही हानिकारक और भयंकर परिणाम वाला होता है।

बेमेल विवाहका भयंकर परिणाम

पचीस वर्ष से मैं बराबर देख रही हूँ; मेरे पास अनेक स्त्रियां इलाज के लिये ऐसी आई और आया करती हैं कि जिनके पति की अवस्था चौदह पन्द्रह वर्ष की है और पत्नी की पचीस तीस वर्ष की है। उनका विवाह जब पति की अवस्था दस ग्यारह वर्ष की थी तभी होगया था। इसी प्रकार के अनेक बेमेल विवाह

होते हैं। ऐसी रोगी स्त्रियों की माताएं जब मेरे पास रोगी को लेकर आती हैं तो मैं उन स्त्रियों से पति का भी हाल पूछती हूं। मैंने स्त्रियो और पुरुषो दोनो के रोगों की परीक्षा का आयुर्वेद के अनुसार एक फार्म तैय्यार किया है। वह फार्म हर एक स्त्री के पति से भराया करती हू क्योंकि जो रोग पति के कारण स्त्री को होते हैं उनका, बिना पति का पूरा हाल मालूम किये, ठीक इलाज नही होसकता।

सन्तानहीन स्त्रियों का शर्तिया इलाज

सन्तानहीन स्त्रियों का शर्तिया इलाज बिना पति का पूरा हाल मालूम किये नहीं होसकता क्योंकि:—मान लीजिये किसी के पति को गरमी या सुजाक है। उसी से स्त्री को भी गरमी सुजाक होगया है, तो स्त्री का इलाज करके मै स्त्री को आराम कर दूंगी परन्तु यह रोग स्त्री को पति से मिला है और पति के वह रोग मौजूद है। उस के समागम से स्त्री को फिर रोग होजावेगा और रोगी के घर वाले और रोगी स्त्री कहेगी कि कैसा इलाज किया कि रोग फिर से होगया।

अथवा किसी का पति नपुंसक है। जिससे वह प्रसंग ठीक नहीं कर सकता। पति तो किसी योग्य नहीं है, गर्भ कैसे रहेगा ? पति की नपुसकता के कारण स्त्री को अनेक रोग उपत्न्न होजाते हैं, स्त्री के उन रोगो को मैं दूर तो कर दूंगी परन्तु वह थोड़े ही दिनों मे फिर से होजावेगे। कई रोग ऐसे भी

हैं, जो बिना पति के भली भांति प्रसग किये हुए स्त्री के शरीर से दूर हो ही नही सकते।

स्त्रियो के कई रोग ऐसे हैं जो नियमानुसार रति क्रिया होने से ही दूर होते हैं। स्त्रियो के बहुत से रोग ऐसे भी हैं जो पुरुष के शीघ्रपात व सुस्ती और इन्द्री की कमजोरी के कारण उचित रीति से स्त्री-प्रसंग न होने से स्त्री को होजाते है। ऊपर लिखे अनेक कारणो से स्त्री का गर्भ नहीं रहता इस लिये रोगी स्त्री के पति का भी पूरा हाल जानने की अत्यन्त आवश्यकता होती है।

पति पत्नी दोनो का हाल मालूम करके जिसमे जो रोग हुआ वह दूर कर दिया जाता है। तब सन्तान होने लगती है और रोग भी सदैव के लिये दूर होजाते हैं। इस प्रकार रोगी स्त्रियो के पतियो के रोगी फार्म देखने से मुझे इस बात का २५ पचीस वर्ष का अनुभव है कि ऐसे बेमेल विवाह की रोगी स्त्रियो की भी सख्या कम नहीं है। जब मैं ऐसी रोगी स्त्रियो के पति का फार्म देखती हू तो उनमे भी अनेक रोग पाती हू। मै रोगी स्त्री के साथ आई हुई माता या सास से पूछती हूं कि तुमने यह मूर्खता क्यो की कि लड़की का बेजोड़ विवाह कर दिया। लड़के से लड़की दूनी या ड्योढ़ी या सवाई है, इसी कारण यह दोनो रोगी हो रहे हैं और जिन्दगी भर रोगी रहेगे।

तब उस रोगी स्त्री की सास या माता कहती हैं कि हमने देखा नही, रिश्तेदारो ने विवाह करा दिया। रोगी स्त्री की सास साथ मे हुई तो वह कहती है कि हमलोग क्या जाने इसके मां

बाप ने कहा कि लड़की ऊंचे कद की है। उम्र अभी लड़के से बहुत कम है। यही बात विवाह ठीक कराने वाले रिश्तेदारों ने भी कही, हम लोगों ने लडकी देखी नहीं क्योंकि लड़की दिखलाने की प्रथा अभी कम है। विश्वास ही पर विवाह कर लिया।

यदि रोगी स्त्री की माता साथ में हुई तो वह कहती है कि क्या करें? लड़की की बात ठहरी लड़का कहीं मिलता नहीं था इस लिये कर दिया। कहीं लड़की लड़के से छोटी होती है, कहीं लडका छोटा होता है इनमें क्या हर्ज होगया? तब मुझे उस रोगी स्त्री की माता से खुलासा कहना पडता है कि तुम महामूर्ख हो। प्राचीन समय से बड़ों ने जो रिवाज चलाई है कि लडका लड़की से ड्योढ़ा न हो तो कम से कम सवाया जरूर होना चाहिये तब विवाह का मेल ठीक होता है। वे क्या हमलोगों की तरह मूर्ख थे जो व्यर्थ को ऐसा रिवाज चलाते, अब देखो तुमने जैसी मूर्खता लड़की के विवाह में की है उसीका यह फल है कि स्त्री पुरुष दोनों रोगी होरहे हैं। इनकी सन्तान भी रोगी अल्पायु होगी और यह दोनों जन्म भर रोवेंगे और तुम भी कष्ट उठाओगी; तब वह जवाब देती है कि क्या जिन लड़कियों का विवाह बराबर वाले लड़के या ज्यादह उम्र वाले लड़के से होता है, वे लोग बीमार नहीं पडते? इस प्रकार उस रोगी स्त्री की माता या सास जो साथ में हुई मुझसे हुज्जत करने लगती हैं।

पतिकी अवस्था कम होने का परिणाम

यह बात किसी को मालूम नहीं है कि लड़की से लड़के की

अवस्था कम होने से विवाह मे आगे चलकर कितना बुरा परिणाम होता है। यदि इस बात को सब मनुष्य भली भांति जान जावे तो कदाचित यह मूर्खता दूर होने मे कुछ सहायता मिले, इसलिये मैं सकोच छोडकर इस विषय को आयुर्वेद के आधार पर दाम्पत्य प्रेम-विज्ञान के अनुसार विस्तार पूर्वक लिखती हूँ। पाठक पाठिकाए ध्यान से पढे और इस पर विचार करे। विचार ही नही, इस दुष्ट प्रथा को बन्द करे और नीचे लिखे अनुसार अवस्था देखकर खूब सोच समझ कर और देख-सुनकर लडकी लड़के का विवाह करे।

मै तो यह कहूगी कि जो बाल विवाह करते है और जो बे-मेल विवाह करते है दोनो महा अज्ञान हैं, अथवा शास्त्रकारों के उद्देश्य को समझने मे उन्होने भूल की है। मुझे २५ पचीस वर्ष का इस विषय मे लाखो स्त्रियो की चिकित्सा करके पूरा अनुभव हुआ है कि बाल विवाह और बेमेल विवाह से ही पुरुषो मे रोगो की अधिकता और बच्चो की रोगी तथा मृत्यु-संख्या अधिक देखी जाती है। मुझे जो कुछ अनुभव इतने वर्षों मे रोगी स्त्रियो को देखकर तथा उनकी जबानी मालूम होने से हुआ है उसे मै सबके हितके लिये लिखती हूँ।

आयुर्वेद बतलाता है:—

पूर्णषोडशवर्षा स्त्री पूर्ण विंशेन संगता।
शुद्धेगर्भाशये मार्गे रक्ते शुक्रेऽनिलेहृदि॥

वीर्यवंतं सुतं सूते ततोन्यूनाद्वयोःपुनः ।
रोग्यल्पायुरधन्यो वा गर्भोभवति नैव वा ॥

इसका अर्थ यह है कि गर्भाशय, योनि, स्त्री का रज और पुरुष का वीर्य शुद्ध निर्मल हो, किसी प्रकार का दोष न हो वातादि से दूषित न हो, वायु भी शुद्ध हो, अर्थात् पित्तादि से दूषित न हो ऐसी अवस्था मे जब स्त्री पूरी सोलह वर्ष की हो जावे और पुरुष बीस वर्ष का हो जावे तब स्त्री-पुरुष के समागम से वीर्यवान बालक का जन्म होता है। इससे कम अवस्था वाले पति पत्नी के समागम से जो सन्तान उत्पन्न होती है वह रोगी अल्पायु और भाग्यहीन होती है और प्राय सन्तान नहीं भी होती ।

इस कारण किसी किसी शास्त्रकार का मत है कि सोलह वर्ष की स्त्री और पचीस वर्ष का पुरुष हो, तब गर्भाधान होने से आरोग्य और बलिष्ठ सन्तान उत्पन्न होती है। परन्तु पचीस वर्ष तक लड़के का विवाह न करना यह माता पिता को अखरता है। माता पिता जहां तक हो लड़कपन में ही विवाह करके शीघ्रही पतोहू की सेवा का फल चखना चाहते हैं और नाती खिलाने की बड़ी भारी अभिलाषा रखते हैं, परन्तु माता पिता को इस मूर्खता का फल भी वैसा ही मिलता है। बहुत कम पतोहू ऐसी मिलती हैं जो सास ससुर की सेवा करके उनको प्रसन्न रक्खे, और आरोग्य सन्तान उत्पन्न करे और सास ससुर नाती देखकर प्रसन्न हो। एक तो बाल्यावस्था में विवाह होने से गर्भ ही नहीं रहता

यदि सन्तान हुई भी तो गर्भस्राव व गर्भपात का रोग लग जाता है और लड़का पतोहू भी रोगी हो जाते हैं। इसका पता अभी किसी को नहीं है, इसीलिये बाल्यावस्था में विवाह कर देने के बुरे परिणाम का पता नहीं है।

बीस वर्ष की अवस्था लड़के के विवाह के लिये जिन शास्त्रकारों ने कही है वह भी ठीक है, यदि पचीस वर्ष की अवस्था तक न रहा जाय तो बीस वर्ष की अवस्था में सोलह वर्ष की लड़की से विवाह करने से मेलका विवाह होगा।

आजकल कुसंगति के कारण तथा अनेक प्रकार के स्त्री पुरुष के प्रेम सम्बन्धी उपन्यासों की शिक्षा के बुरे प्रभाव में पड़कर लड़के लड़कियाँ बचपन में ही विवाह के उत्सुक होजाते हैं, इस कारण समय देखकर माता पिता को भी विवाह करने की जल्दी पड़जाती है, इसलिये सबसे जरूरी अब यह बात रहगई है कि पति पत्नी स्वयं अपनी आरोग्यता और आरोग्य सन्तान उत्पन्न करने के लिये नियम पूर्वक रति-क्रिया करके उत्तम सन्तान उत्पन्न करें।

माता पिता को चाहिये कि लड़की का विवाह लड़के की अवस्था देखकर करें। ड्योढी अवस्था न हो तो सवाई अवश्य होनी चाहिये। जिस अवस्था में विवाह करने का शारदा एक्ट बना है यह बहुत उचित है, यद्यपि शास्त्रकारों के मत से यह भी अवस्था छोटी है परन्तु समय के देखते हुए ठीक ही समझना चाहिये। चौदह वर्ष की लड़की और १८ अट्ठारह वर्ष का लड़का—लड़की से सवाई

अवस्था वाला हुआ, इस प्रकार यदि चौदह वर्ष की लड़की का विवाह अठारह वर्ष के लड़के से होकर दो वर्ष वाद गौना किया जावे तो आयुर्वेद के उन ऋषियो की राय ठीक मिल जावेगी जिन्होने उत्तम सन्तान उत्पन्न करने के लिये सोलह वर्ष की स्त्री और वीस वर्ष का पुरुष योग्य वतलाया है। किसी की राय मे २५ वर्ष का लड़का और १६ की लडकी, और किसी की राय मे १८ की लड़की और वीस वर्ष का लड़का ठीक होता है।

जितने विवाह वड़ी लड़की और छोटा लड़का ऐसे हो गये हैं उनके सुधार का तो कोई उपाय नही। सम्भव है मूर्ख माता पिता को इस प्रकार के भयंकर परिणामो का पता न हो क्योकि आज तक इस विषय की कोई पुस्तक नही वनी, न कोई चर्चा ही इस विषय की है कि वेमेल विवाह का क्या परिणाम होता है। मुझे तो इसका परिणाम इसलिये मालूम है कि मेरे पास पचीस वर्षों मे लाखो स्त्रियां अनेक प्रकार के रोगों वाली इलाज के लिये आईं। इनमें हजारों इस प्रकार के बेमेल विवाह की भी थी जिनके पति की अवस्था पत्नी की अवस्था से वहुत कम और वहुत सी ऐसी स्त्रियां आईं जिनके पति वुड्ढे और स्त्रियां पन्द्रह, सोलह, अट्ठारह, या वीस वर्ष की थी। ऐसे विवाह वहुत हानिकारक हैं।

रतिक्रिया के योग्य स्त्री की अवस्था

स्त्री की गर्भाधान के योग्य अवस्था सोलह वर्ष की है अर्थात् स्त्री सोलह वर्ष की अवस्था से वालिग होती है

और पुरुष वीस वर्ष की अवस्था में बालिग होता है यह शास्त्रकारों का मत है; परन्तु अब समय के अनुसार चौदह वर्ष की स्त्री और अठारह वर्ष का पुरुष बालिग समझा जाता है। यदि पति की अवस्था कम हुई और स्त्री की अधिक तो वह प्रसंग ठीक नहीं कर सकता क्योंकि जब तक उसकी अवस्था प्रसंग के योग्य होगी तब तक स्त्री की अवस्था और भी अधिक हो जावेगी।

मेरे पास बनारस से एक स्त्री इलाज के लिये आई जिसकी अवस्था २७ सत्ताईस वर्ष की थी। उसे हिस्टीरिया (मूर्छा) रोग था। देखने से वह बहुत हृष्ट पुष्ट और सब प्रकार से आरोग्य थी। साथ में उसकी सास आई थी। मैंने उसे देखते ही कहा तुम्हें तो कोई रोग नहीं मालूम होता, तुम तो अच्छी खासी हो। तब उसकी सास ने कहा कि मैं इसे इसलिये लाई हूं कि विवाह हुए तीन वर्ष हुए, अभी तक कोई बच्चा नहीं हुआ और न कभी गर्भ ही रहा और इसे बेहोशी हो जाती है, सो इसे देखिये कि क्या खराबी है मैंने उसकी नाड़ी देखी कोई रोग नहीं था। नाड़ी से कोई रोग हो तो पता लगे तब मैं उसे एकान्त में जहां स्त्रियों के गुप्त रोगों की परीक्षा करती हू, ले गई। परीक्षा करने से भी किसी प्रकार का कोई गुप्त रोग न पाया, तब मैंने उस स्त्री से कहा कि तुम्हें कोई रोग नहीं है; तुम यह बताओ और सब सच्चा हाल कहो तुम्हारे पति में तो कोई खराबी नहीं है। तुम तो निरोग हो परन्तु तुम्हारे पति में खराबी मालूम होती है। तब उस स्त्री ने

लज्जित हो मुझसे कहा देवी जी आप ठीक कहती हैं, मेरे पति किसी योग्य नहीं हैं। उनकी अवस्था पन्द्रह वर्ष की है, मेरी अवस्था सत्ताईस वर्ष की है। तीन वर्ष विवाह को हुए, गौना भी विवाह के साथ ही हुआ। कुछ दिनों तक तो सास ससुर ने मेरे पास आने ही नहीं दिया। इधर डेढ़ वर्ष से पति मेरे पास आते तो हैं किन्तु वे किसी योग्य नहीं हैं। मुझसे बोलते हैं परन्तु मेरी इच्छा आज तक कभी नही हुई। मै यही नही जानती कि स्त्री की इच्छा कैसे होती है। मेरे साथ की और स्त्रियां जब मुझे मिलती हैं और इस विषय मे बातचीत होती है, तब मुझे बड़ा दु ख होता है। जब मै महीने से होती हूँ तब मेरी इच्छा कई दिनों तक होती है, जब कभी पति से सभोग हुआ तब वे दो चार मिनट मेरे पास रहे फिर सुस्त होकर सो रहते हैं। मै बेचैन होजाती हूं। इसी शोक और चिन्ता से बेहोशी आ जाया करती है। मेरा दस पांच दिन तक यही हाल रहता है।

जब प्रसंग होता है मुझे उस समय कुछ भी मालूम नही होता केवल क्रोध और शोक ही से काम पड़ता है। इसी चिन्ता का रोग है। जब इस विषय की अधिक चिन्ता करती हूं तभी बेहोशी आजाया करती है। रात दिन बेचैन सी रहा करती हूं। मेरे मूर्ख अन्धे मां बाप ने यह नही देखा कि जिसके साथ लड़की का विवाह कर रहे हैं वह लड़की के जोड़ का तो हो।

यह कहकर वह स्त्री रोने लगी और मेरे सामने ही उसे हिस्टीरिया का दौरा हुआ; उस समय मुझे उसके माता पिता और

सास ससुर दोनो पर बड़ा क्रोध आया। मैंने उसकी सास को बुलाकर पूछा तुम्हारे लड़के की अवस्था क्या है, जिसकी यह बहू है। उसने कहा पन्द्रह सोलह वर्ष की होगी। मैंने कहा तुम महामूर्ख हो, तुम्हारे पति भी बड़े अज्ञान हैं, जो इतनी कम उम्र में लड़के का विवाह कर दिया फिर भी इतनी ज्यादह उम्र की बहू से। इसकी बीमारी का यही कारण है, उस पर भी तुम सन्तान चाहती हो। तुमने अपने लड़के और दूसरे की लडकी, दोनों का जीवन बरबाद किया।

वह स्त्री बडी लज्जित हुई और कहने लगी देवी जी अब तो कुछ उपाय बतलाओ। रिश्तेदारों ने मिलकर धोखा दिया, लड़की की उम्र ठीक नही बतलाई। मैंने उस रोगी स्त्री से फिर एकान्त मे जाकर पूछा तो मालूम हुआ कि दहेज मे अच्छी रकम मिलने के कारण विवाह किया गया और इसी कारण रिश्तेदार दलालो ने लडके के बाप को मेरी उम्र ठीक नहीं बतलाई।

जो माता पिता केवल रिश्तेदारों और नाई-पंडित आदि की बातों मे आकर स्वय लड़की की अवस्था और आरोग्यता नही देखते, अन्धे होकर विवाह कर डालते हैं वे बड़ी भारी अज्ञानता करते है। इस प्रकार के मेरे पास हजारों उदाहरण मौजूद हैं, क्योंकि इस प्रकार की लाखों स्त्रियां मेरे पास आचुकी हैं, और उनके सब प्रकार के रोगों की चिकित्सा मैंने की है।

सौत के लड़के को दुःख देने का फल । पृ० ५०९

छोटा पति बड़ी पत्नी

पत्नी की अवस्था अधिक और पति की कम होने से दोनो का जीवन दुःखमय व्यतीत होता है, क्योंकि शास्त्रकारो ने वतलाया है :—

बालेति गीयते नारी यावद्वर्षाणि षोडश।
ततस्तु तरुणी ज्ञेया द्वात्रिंशद्वत्सरावधि ॥
तदूर्ध्वमधिरूढा स्यात्पंचाशद्वत्सरावधि।
वृद्धा तत्परतोज्ञेया सुरतोत्सववर्जिता ॥

अर्थात्—सोलह वर्ष तक स्त्री बाला कहलाती है। इसके बाद बत्तीस वर्ष की अवस्था तक तरुणी अर्थात् जवान रहती है बत्तीस वर्ष के बाद पचास वर्ष तक प्रौढ़ा और पचास वर्ष के बाद स्त्री वृद्धा हो जाती है। वृद्धा स्त्री सम्भोग के लिये वर्जित है। वृद्धा के साथ प्रसग करने से आयु कम होती है।

जिस स्त्री की अवस्था अट्ठाइस वर्ष की और पति की चौदह वर्ष की; जैसे कि अनेक जोड़े देखने मे आते हैं। इस हिसाब से स्त्री की बाल अवस्था तो व्यतीत होगई। अब बत्तीस वर्ष की अवस्था जब स्त्री की हुई अर्थात् बत्तीस वर्ष की अवस्था तक स्त्री तरुण (जवान) रही किन्तु तब पति की अवस्था अठारह वर्ष की हुई। देखिये अभी पति स्त्री प्रसग करने के योग्य नहीं हुआ और स्त्री की जवानी भी बिदा होना चाहती है। स्त्री

बत्तीस वर्ष के बाद जब प्रौढ़ा हुई, तब पति प्रसग करने योग्य हुए, और जब स्त्री पचास वर्ष की वृद्धा हुई तब पति छत्तीस वर्ष के जवान हुए।

जैसा कि पहिले लिख चुकी हूं और यहां प्रसंगवश फिर लिखती हूँ।

आयुर्वेद बतलाता है.—

निदाघशरदोर्बालाहिता विषयिणो मता।
तरुणी शीतसमये प्रौढ़ा वर्षावसन्तयो।
नित्यं वा सेव्यमाना हि बाला वर्द्धयते बलम्।
तरुणी ह्रासयेच्छक्तिं प्रौढोऽद्भायते जराम्॥

इसका अर्थ यह है कि गरमी की ऋतु और शरद ऋतु मे बाला स्त्री से प्रसग करना हितकारी है, तरुणी स्त्री शीतकाल मे हितकर है और प्रौढ़ा स्त्री वर्षा तथा वसंत ऋतु मे सेवन योग्य है क्योकि.—

बाला स्त्री से सम्भोग करने से बलकी वृद्धि होती है। तरुणी स्त्री से विषय करने से देह क्षीण होती है और प्रौढ़ा स्त्री से प्रसग करने से बुढ़ापा आता है अर्थात् प्रौढ़ा स्त्री पुरुष को शीघ्र वृद्ध करने वाली होती है।

जिस समय पति छत्तीस वर्ष का जवान हुआ तब स्त्री वृद्धा हुई वृद्धा स्त्री आयु को कम करती है और प्रौढ़ा बुढ़ापा जल्दी लाती है। जब स्त्री की बाला अवस्था थी तब पति जी नाबालिग थे,

किसी योग्य न थे। जब स्त्री तरुणी हुई तब भी पति नाबालिग ही रहे। जब पति प्रसंग करने योग्य हुए तब तक पत्नी वृद्धा हुई फिर बतलाइये दोनो का जीवन व्यर्थ हुआ या नही। यह बात दूसरी है कि लड़कपन से ही नाबालिगी मे ही पति प्रसंग करना शुरू करदे तो भी तो पति का जीवन रोगो का घर बन जाता है और पत्नी भी प्रसग के योग्य अवस्था होने पर, यदि पति ठीक न हुआ तो रोगी और दुष्ट स्वभाव की होजाती है। इस प्रकार कुसमय प्रसंग आरम्भ होने से पति पत्नी दोनों का जीवन बरबाद होता है।

यह बात मै अपने पचीस वर्ष के अनुभव से हजारो ऐसी स्त्रियो के रोगो की चिकित्सा करके तथा उनके शोक और चिन्ता को देख सुनकर लिख रही हूं क्योंकि ऐसे स्त्री पुरुषो का जीवन व्यर्थ जाता है और सन्तान भी नही होती। ऐसे कुटुम्ब वाले भी दु.खित और चिन्तित रहते हैं और स्त्रियां भी प्रायः दुष्ट स्वभाव की होजाती हैं।

ऐसी स्त्रियो को यदि दुष्ट स्त्रियो की संगति मिलगई तो वे कुल को कलंकित करती हैं और ऐसी स्त्रियों के पति भी व्यभिचारी हो जाते हैं। फिर गरमी सुजाक आदि भयंकर रोगो मे ग्रसित हो दुःखमय जीवन व्यतीत करते हैं अथवा जो कुसंगति से बचे रहे तो उदासीन रोगी निर्बल और दुर्बलता से जीवन व्यतीत करते है। परन्तु पता लगाया जावे तो ऐसे पति कम निकलेगे। स्त्रियां तो किसी प्रकार अपना जीवन पतिव्रत धर्म की रक्षा कर काट भी लेती हैं किन्तु अनेक पति इसी कारण दूसरा विवाह

कर लेते हैं और स्त्रियां आत्मघात कर लेती हैं। इस प्रकार दोनों का जीवन नष्ट होजाता है। यह उन अन्धे और मूर्ख माता पिता का दोष है जो विना लडका लडकी का मेल मिलाये ही विवाह कर देते है। ऐसे बेमेल विवाह वाली रोगी अनेक स्त्रियां मेरे पास आया करती है और अपने छोटे पति की दु:खद कहानी कहा करती है।

संभोग और निर्बलता

मेरे पास अनेक स्त्रियां ऐसी भी आईं जिनके पति विलकुल अनजान होते हैं। मूर्खतावश अथवा लालचवश माता पिता लड़के में कुछ भी नही देखते। केवल लडके मे मर्द के चिन्ह हैं यही देख कर विवाह करदेते हैं। लड़का बिलकुल अनजान और लड़की पूरी स्त्री यानी सत्तरह अठारह वर्ष की होती है। विवाह की खुशी मे लड़की तो फूली नही समाती। जव विवाह होकर पति से सामना होता है तो कर्म पर हाथ रखकर रोती है और माता पिता को कोसती है।

ऐसे माता पिता भी विवाह के बाद ही गौना करने को उत्साहित रहते हैं कि किसी तरह से पतोहू घर पर आवे इसलिये गौना भी हठ करके उसी वक्त कराते हैं। घर पर आकर लड़के की वहिन, भौजाई, चाची, ताई, और अड़ोस पडोस की स्त्रियां सोहाग रात की जल्दी मचाती हैं और लड़के को किसी तरह से उस कमरे मे जहां नई वहू है वन्द कर देती हैं। वन्द होने पर वह रोता

भी है परन्तु उन मूर्खा स्त्रियो को तो उसी मे आनन्द आता है, मानो उन्ही सब की सोहागरात हो रही है। बड़ी खुशी से गाना बजाना खाना पीना होता है। उस गाने बजाने मे लड़के की चिल्लाहट सुन कर भी कोई परवाह नहीं की जाती।

वहू तो पूरी अवस्था प्राप्त है और पतिजी अनजान है। संभोग का नाम भी नही जानते पत्नी तो अपनी इच्छा पूरी करना चाहती है, क्योंकि वह तो अनेक वार मासिकधर्म से होचुकी है; इसलिये उसे सभोग की प्रबल इच्छा है। गर्भाधान के लिये उसकी इन्द्रियां ऋतु होने पर सभोग के लिये उत्साहित हो चुकी हैं इस लिये वह इसी दिन का रास्ता देख रही थी। वह तो अपनी इच्छा पूरी करना चाहती है। परन्तु जव वह पति को इस काम में अनजान पाती है तो उस की सव इच्छाएं हृदय मे भस्म हो जाती है। उसी दिन के लिये नही सदैव के लिये वह निराश हो जाती है। वह किसी प्रकार उस छोटे से पति पर भी सन्तोष करके-यदि पति का प्यार करना चाहती है तो पति उससे डरता है, दूर भागता है।

यदि पति इस छोटी अवस्था में कुसंगति मे पड़कर कुछ इस विषय मे शिक्षा पा चुके होते हैं और उन्होने प्रसंग किया भी, तो उससे उस युवती पत्नी की काम वासना की तृप्ति नही होती वह यदि प्रतिदिन भी इस प्रकार प्रसग करता है तो भी पत्नी की इच्छा पूर्त्ति न होकर और भी उत्तेजना वढकर व्याकुलता होती है और पति जी दिन दिन निर्वल होते जाते हैं यहाँ तक कि वीर्य-क्षीण होने से कुछ दिन बाद किसी काम के नही रहते।

ऐसी स्त्रियां अनेक प्रकार के रोगों से ग्रसित होजाती हैं और चिड़चिड़े स्वभाव की होजाती हैं। हिस्टीरिया का दौरा होने लगता है। असाध्य प्रदर रोग होजाता है। वे पागल होजाती हैं। हर समय क्रोध मे भरी रहती है उनका स्वभाव कलह करने का होजाता है।

स्त्री हर प्रकार का कष्ट सहलेती है। आपत्ति का पहाड सिर पर आगिरे तो उससे भी नही घवडाती, परन्तु ऋतु स्नाता स्त्री को गर्भाधान क्रिया के समय यदि योग्य पति न मिले तो वह चित्त मे वडी दुखी होती है यदि पति रोगी हो, मरगया हो कही विदेश गया हो तो दु'ख नही मानती। परन्तु छोटा हो अथवा बूढा हो तो वड़ी दुःखी होती हैं। अपना जीवन ही व्यर्थ समझती हैं अनेक सुशीला स्त्रिया इस दु ख के कारण माता पिता की मूर्खता पर रो रो कर आत्मघात कर वैठती हैं। अथवा कुलको कलकित कर विधर्मिणी होजाती हैं।

इस विपय मे यदि पता लगाइये तो हजारो उदाहरण ऐसे मिलेगे कि इस प्रकार के अनमेल विवाहो से दुखी होकर कितनी ही स्त्रियो ने आत्मघात किया होगा।

मेरे पास अनेक स्त्रिया ऐसे विवाह वाली आई उन्ही से ऊपर लिखे विपय का वास्तविक पता लगा है।

आनन्द मन्दिर
पन्द्रहवाँ अध्याय
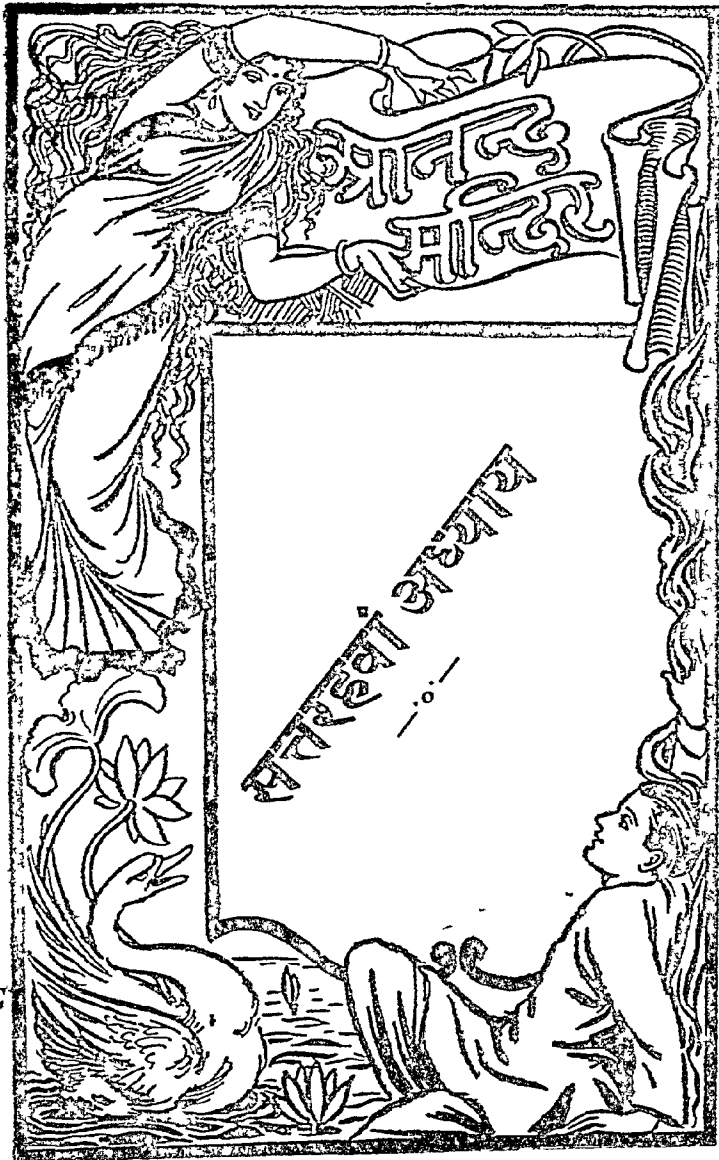
बाबा का विवाह

बूढ़ों का विवाह भी बड़ा भयंकर है। इसका बहुत बुरा परिणाम होता है। बूढ़े विवाह वाली स्त्रियां भी मेरे पास अब तक हजारो ही आईं वृद्ध विवाह से स्त्री को जो कष्ट और दुःख होता है उस दुःख और कष्ट की कहानी मैने अनेक स्त्रियो की जबानी सुनी है, जो इलाज के लिये मेरे पास आया करती हैं।

जो माता पिता अज्ञानतावश अथवा लालचवश या किसी दवाव अथवा धनवान पुरुष को देखकर अपनी प्यारी कन्या का विवाह बुड्ढों के साथ कर देते हैं, वे बड़ा भारी अधर्म्म, अन्याय और अत्याचार करते हैं। शास्त्रकारो ने बतलाया है कि कन्या को चाहे मरण पर्यन्त क्वारी रहने दे परन्तु बूढे वर के साथ कभी विवाह न करे इसी प्रकार छोटे वर के साथ न करे। बेचारी कन्या तो अबोध होती है प्रायः देखा गया है कि बूढ़े बाबा धन का लालच दिखला कर दस ग्यारह वर्ष की ही कन्या ढूढ़ते है। कन्या तो दस ग्यारह अथवा बारह वर्ष की होती है और पति जी उसके बाबा के समान पूरे खुर्राट। किसी २ के तो मुंह मे दांत तक नही होते। नकली दाँत और बालो मे खिजाब लगाये, आखो मे नजर की कमजोरी से चश्मा लगाये जब कि सभी इन्द्रियां कमजोर होजाती हैं ऐसी अवस्था मे भी वे विवाह करने के लिये जवान बनने की कोशिश करते है।

ऐसे मूर्ख और अत्याचारी पुरुषों को आगे चलकर वड़ा कष्ट भोगना पड़ता है और उनकी अन्तिम अवस्था बड़ी ही दुःखमय कटती है। वे दुनियां मे मुह दिखलाने लायक नही रहते। यदि स्त्री, दुष्ट पुरुषो अथवा दुष्ट स्त्रियो की सगति मे पडगई तो स्त्री भी अनेक कष्टो से जीवन व्यतीत करती है और दोनों कुलो को कलंकित करती है। जो अपने धर्म्म पर दृढ़ रहती हैं वे कितने ही कष्ट मिले दु ख को ही सुख समझकर जीवन व्यतीत करती है। इस प्रकार माता पिता की अज्ञानता से बाल पति अथवा वृद्ध पति जिन स्त्रियों को मिलता है उनका जीवन दुःखमय व्यतीत होता है।

इस विषय मे भी मेरे पास सैकड़ो उदाहरण सच्चे मौजूद हैं। मेरे पास बूढे पतियो की सैकड़ो ही स्त्रियां अनेक रोगो मे ग्रसित इलाज के लिये आई। स्त्रियो और उनके पतियो को इस बात का पता ही नही है कि स्त्री को रोग किस कारण से उत्पन्न हुए है। जहां इलाज के लिये पतिजी स्त्री को लेजाते हैं उन चिकित्सको को भी इस बात का अनुभव नही है कि बूढ़े पतिदेव ही इन रोगो का कारण हैं। इलाज मे हजारो रुपया बरबाद करते है कुछ लाभ नही होता।

चिकित्सको और लेडी डाक्टरो (स्त्री-चिकित्सक) को भी इस बात का अनुभव नही है जो ठीक ठीक रोगो का कारण समझ सके। इस विषय से मै अपने अनुभव की कुछ रोगी स्त्रियो का हाल लिखती हूँ, आशा है बूढे पति इन सच्चे उदाहरणो

को पढ कर इसे भलीभांति समझेंगे और उस पर विचार करेंगे तथा दूसरों को भी उपदेश करेंगे जिससे अन्य मूर्ख कामान्ध बूढे यदि आगे को अपना जीवन सुखमय बनाना चाहे तो बुढ़ापे मे कदापि विवाह न करे।

कई वर्ष व्यतीत हुए एक सेठ जी ने अपनी स्त्री को मेरे पास इलाज के लिये भेजा। उस स्त्री की अवस्था अठारह वर्ष की थी, उसे हिस्टीरिया, पागलपन हृदय की धड़कन और सिरकी पीड़ा आदि रोग थे। जब वह मेरे पास आई उसकी माता साथ में थी। मैंने उसे देखा, वह बडी हृष्ट पुष्ट स्त्री थी। उसे कोई बीमारी की शिकायत देखने मे नही थी मैं उसे रोगी स्त्रियो के देखने वाले कमरे मे उसकी माता से अलग लेगई। मैंने उसकी सब प्रकार से परीक्षा की। किसी प्रकार का गुप्त रोग भी नही था। तब मैंने उससे उसके पति की अवस्था पूछी पति की अवस्था पूछते ही उदास हो, नीचे को सिर करके बोली पचपन 'इतना कहते ही उसे हिस्टीरिया का दौरा हुआ। मैंने उसकी हालत देखी वास्तव मे उसे उस समय बडा ही कष्ट था मैं उस स्त्री को उठवा कर दूसरे कमरे मे लेगई और पलंग पर लिटाकर हिस्टीरिया शान्त करने के उपाय करके ठीक किया। मैंने उसकी माता को अलग करके एकान्त मे उससे पूछा कि पति की अवस्था पूछते ही तुम उदास क्यो हो गई, सच्चा हाल बतलाओ।

उसने कहा—देवी जी! क्या कहूं बडी लज्जा और दु:खकी बात है। मेरे मूर्ख माता पिता ने कुछ देखा नही केवल धन देखकर

विवाह कर दिया इसी से मेरी यह दशा है। जब उनकी सूरत देखती हूँ तभी मुझे इतना दुःख होता है जो कह नही सकती। जब वे मेरे पास आते हैं। तब मेरे दिमाग मे पागलपन सा हो जाता है और कई दिन तक शिर घूमता है। शरीर व्याकुल रहता है। लगभग पांच वर्ष विवाह को हुए। आज तक मैंने विवाह का सुख नही जाना। जब बहुत व्याकुल होजाती हूँ तब बीमारी का बहाना करके पिता के यहा चली जाती हूँ। ससुराल मे मुझे किसी प्रकार का कष्ट नही है धन की कमी नही है सभी सुख हैं परन्तु विवाह का कोई सुख नही है मैंने आपका नाम बहुत दिनो से सुन रक्खा था इसलिये आपसे अपने दुःख की कहानी सुनाने के लिये इलाज के बहाने से माता को लेकर आई हू। अगर कोई उपाय मेरे उद्धार का हो सके तो कीजिये नही तो मेरा जीवन रो रो कर ही व्यतीत होगा इस दशा में मैं जीवित नहीं रहना चाहती।

मैंने उस स्त्री की यह कष्ट कहानी सुनकर उसकी माता को पास बुलाकर कहा—तुम लोग कैसे अन्धे हो जो बूढ़े से विवाह कर दिया कैसी सुन्दर लड़की है तुम्हे इसके ऊपर दया नहीं आयी? तब उसने कहा कि लड़की को कमी किस बात की है, धनवान् देखकर हम लोगो ने शादी की थी।

मैंने उसकी माता से साफ २ कह दिया कि इसका पति बूढ़ा है, इसी कारण यह सब बीमारियां हुई हैं। तुम लोग इस बात को नहीं समझ सकते। तुम्हीं क्या बहुत से मूर्ख माता पिता इस

बात का खयाल नहीं करते। धन के लालच मे विवाह कर देते हैं। वर की अवस्था का खयाल नहीं करते, फिर पीछे पछताते हैं।

मैंने उस स्त्री के कहने के अनुसार जैसा कि उसने अपने पति की शिकायतें बतलाई थी निश्चय करने के लिये उसके पति के पास अपने औषधालय का रोगी फार्म भेजा वह रोगी स्त्री और उसकी माता मेरे औषधालय के रोगी आश्रम मे ठहरी रही। एक सप्ताह में जब उसके पति का रोगी फार्म भरकर आया उसे देखने से पता लगा कि उसके पति को विवाह होने के दो तीन वर्ष पहिले ही से अनेक रोग थे। शीघ्रपात और स्वप्नदोष तथा शिथिलता आदि ने अपना पूरा प्रभाव जमा लिया था। उस बूढे की बड़ी भारी मूर्खता थी जो उसने फिर से विवाह किया। वह स्त्री के बिलकुल काम का नहीं था क्योंकि उसने अपना भी इलाज कराने की इच्छा से अपना पूरा हाल लिख दिया था। इन्ही कारणों से उसकी पहिली स्त्री के भी कभी गर्भ नही रहा था।

वृद्ध विवाह के भेद

वृद्ध विवाह कई प्रकार के होते हैं:—

१—वृद्ध पुरुष वास्तव मे सन्तान की इच्छा से विवाह करते हैं। धनवान होने के कारण लोग उन्हे समझाते हैं कि यह धन क्या होगा इसे कौन लेगा इसलिये विवाह अवश्य करो। वे इन चापलूसों के समझाने पर इच्छा न होते हुए भी विवाह कर लेते हैं, परन्तु शक्ति न होने से फिर भी सन्तान नही

होती। ऐसे पुरुषो की स्त्रियां कुसगति मे पड़कर दुष्ट पुरुषो द्वारा ठगी जाती है। दुराचारिणी होकर वे कुलको कलंकित करती हैं तव इन्हीं बुढ़ाऊ वावा को लोग चिढ़ाते है

ऐसे पुरुषो को चाहिये कि अपने धन को किसी परोपकार मे लगा दे, विवाह कदापि न करें क्योंकि शक्तिहीण होजाने पर विवाह करने से धन भी नष्ट होता है और कुल को भी कलक लगता है। इस प्रकार के विवाह से जितना सुख नही मिलता उससे कही ज्याद दु:ख मिलता है।

कोई कोई बूढे केवल ऊपरी सेवा के लिये विवाह करते हैं। उन्हे वहकाने वाले कहते हैं कि बुढ़ापे मे अपनी ही स्त्री सेवा कर सकती है दूसरा नही कर सकता। इसलिये वे केवल सेवा के ही लिये विवाह करते हैं। परन्तु उस सेवा का फल वहुत बुरा होता है। उनसे केवल स्त्री से सेवा लेने का ही काम हो सकता है विवाह का कुछ भी सुख नही मिलता। वुढ़े पति की स्त्रिया दुष्टो की संगति मे पड़कर दुष्ट स्वभाव की हो जाती है क्योंकि पति शक्ति-हीन होते हैं।

जो कुलीन स्त्रियां अपने धर्म्म की रक्षा कर सकती है वे उन वूढ़े पति के दर्शनो को सर्व सुख समझकर दु:ख और कष्ट मय जीवन व्यतीत कर डालती है। वृद्ध विवाह और वाल विवाह तथा अन्य प्रकार के वेमेल विवाह से स्त्रियो को जो कष्ट और दु:ख होता है उसके मेरे पास हजारो उदाहरण हैं जो इस पुस्तक के दूसरे भाग मे लिखे जावेगे।

गर्भपात और मूढ़ गर्भों की उत्पत्ति

इस पुस्तक के दूसरे भाग मे रतिक्रिया रहस्य के गूढ़ से गूढ और अत्यन्त गुप्त विषय रक्खे गये हैं। रतिक्रिया अर्थात् गर्भाधान रहस्य की गूढ से गूढ़ और दाम्पत्य जीवन को सुख-मय बनाने वाले अनेक विषय प्रकाशित होंगे। उन गूढ तथा गुप्त विषयों के अभी चित्र भी तैय्यार न होसके इसलिये दूसरा भाग प्रकाशित नही होसका यह प्रथम भाग भी अन्दाज से अधिक बड़ा होगया है। विचार यह था कि दोनो भाग एक साथ ही तैय्यार हों परन्तु प्रथम भाग अधिक बड़ा होजाने के कारण दूसरा भाग तैय्यार न होसका। दोनो भागो का मूल्य १५) पन्द्रह रुपया होगा।

पुस्तक का यह प्रथम भाग कुछ विशेष उपयोगी और आवश्यक विषयों का वर्णन करके समाप्त होगा। यहां पाठक पाठिकाओ के हितार्थ अनियम रतिक्रिया से गर्भ और गर्भवती दोनो को हानि पहुंचती है इसका वर्णन करना अत्यन्त आवश्यक है। क्योकि पुस्तक के इस प्रथम भाग में केवल दाम्पत्य प्रेम और उससे दाम्पत्य जीवन का सच्चा सुख और आनन्द प्राप्त होने के उपाय ही बतलाये गये हैं और अनियम रतिक्रिया से जो हानि पति-पत्नी और सन्तान को होती है उसका वर्णन किया गया है; इसलिये यह अत्यन्त आवश्यक है कि अनियम रतिक्रिया से जो हानि गर्भ और गर्भवती को पहुंचती है और मूढ़ गर्भों की उत्पत्ति होती है। उससे पति पत्नी को सावधान किया जावे।

इस विषय के न जानने से सैकड़ा पीछे ७५ पचहत्तर स्त्रियां अनियम गर्भाधान क्रिया से गर्भवती होकर गर्भस्राव व गर्भपात के दु:ख से तथा प्रसव समय के कष्ट और मूढ गर्भों के कारण रोगी और दुर्बल हो तथा प्रसूत तपेदिक आदि अनेक भयंकर रोगों से ग्रसित हो दु:खमय जीवन व्यतीत करती हैं बहुतेरी तो प्रसव समय मे काल का कलेवा बन जाती हैं।

इसका कारण अभी तक किसी की समझ मे नही आया है, क्योंकि अभी तक इस विष्य की कोई पुस्तक नही बनी। इस विषय मे स्त्रियो को जितनी हानि, नकली मनगढत कामशास्त्र व कोकशास्त्र सम्बन्धी पुस्तकों से पहुंची है, वह लिखकर नहीं बतलाई जा सकती।

जितनी इस विषय की पुस्तके बनी हैं, वे सब आरोग्यता के नियम के विरुद्ध हैं। लोग बिना सोचे समझे अपनी कामाग्नि की शान्ति के लिये उन पुस्तकों मे लिखे प्रयोग तथा आसन काम मे लाते हैं, जिससे स्त्रियों को अनेक प्रकार की हानि पहुंच रही है और यदि उस मूर्खता पूर्ण विपरीत रति से गर्भ रह जाता है तो मूढ गर्भों की उत्पत्ति होती है। जिसके कारण जच्चा और बच्चा दोनो जीवन लीला समाप्त कर जाते हैं।

आशा है सब इस विषय को भलीभांति समझ कर पुरुषमात्र अनियम रति से बचेंगे और अपनी प्यारी पत्नी को भी बचवेंगे तथा उत्तम हृष्ट-पुष्ट सन्तान उत्पन्न कर दाम्पत्य-जीवन को सुखमय बनावेंगे।

आनन्द मन्दिर
अठारवाँ अध्याय
—:०:—
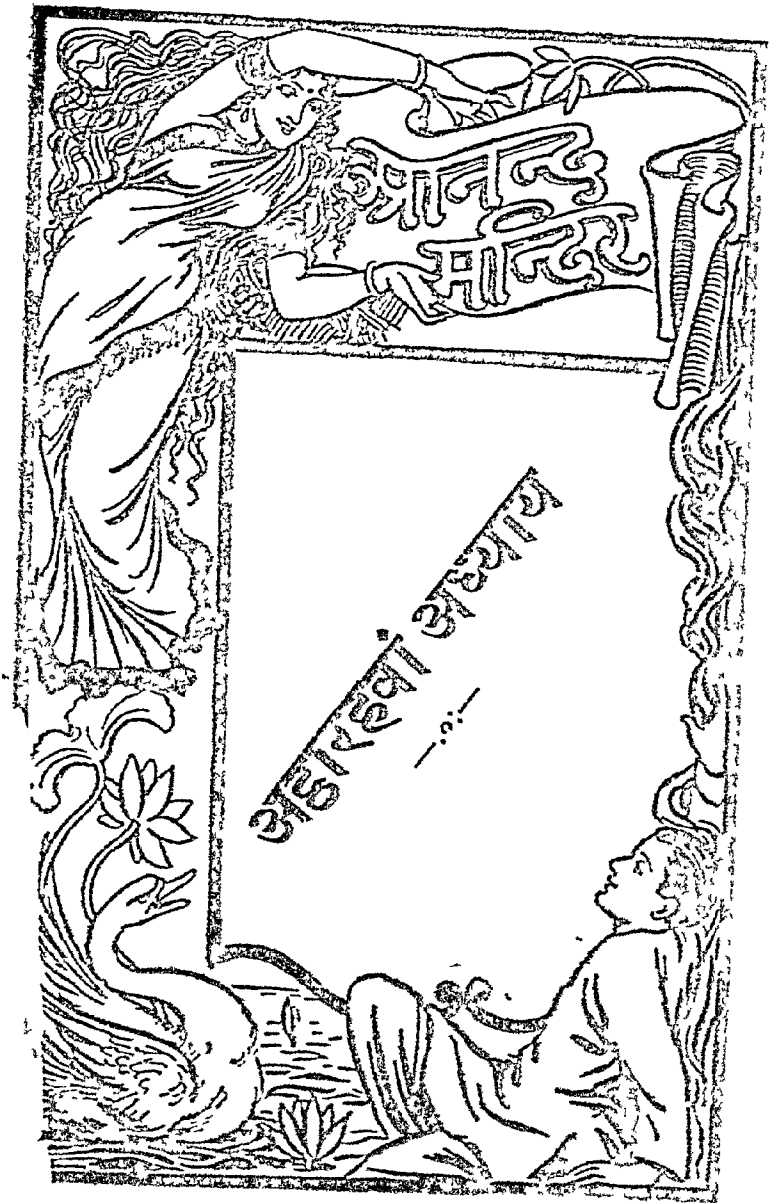
स्त्री का रति सुख

जो पुरुष बाल्यावस्था में हस्तक्रिया करते हैं अथवा जो मूर्ख लड़को के साथ दुष्ट कर्म करते हैं उनकी इन्द्री टेढ़ी और निर्बल, नीचे का हिस्सा पतला और आगे का भारी होजाता है। नीचे की नसें कमजोर होकर सिकुड़ जाती हैं जिसके कारण इन्द्री छोटी पड़जाती है इसलिये वह स्त्री के गर्भाशय के पास तक नहीं पहुँचती। ऐसे पतियो की स्त्रियां पति से रति का कुछ सुख प्राप्त नहीं करती और पति पत्नी दोनो आयु पर्यन्त पछताते हैं।

मेरे पास ऐसे पुरुषो की स्त्रियाँ और लाखो चिट्ठियां अबतक आचुकी हैं। ऐसे पुरुषो की स्त्रियो द्वारा उनका इलाज करके उनकी शिकायतें दूर कर दी गई हैं और उन्हें दाम्पत्य जीवन का सच्चा फल स्वरूप सन्तान उत्पन्न हुई और हो रही है।

यदि पुरुष के हस्तक्रिया आदि दुष्ट कर्म से कुछ भी खराबी उत्पन्न न हुई तो अधिक विषय और विपरीत आसन से रतिक्रिया करने से भी पुरुष की इन्द्री मे सुस्ती और कमजोरी आजाने से गर्भ नही रहता।

यदि पुरुष की इन्द्री मे किसी प्रकार की भी खराबी न हो केवल वीर्य मे खराबी हो तो भी गर्भ नहीं रहता। यदि पुरुष को वीर्य की खराबी से शीघ्रपात की शिकायत है तो भी उसकी स्त्री को रतिसुख प्राप्त नही होता और गर्भ नही रहता।

यदि पुरुष की उत्तेजना शक्ति ठीक है परन्तु स्त्री के पास

जाते ही वीर्य बहने लगता है तो इसमें भी उस पुरुष की स्त्री रति सुख से वंचित रहती है और उसके गर्भ नही रहता।

यदि संभोग आरम्भ करते ही पुरुष मे सिथिलता आजाती, है तो भी उसकी स्त्री को रतिसुख नही मिलता और गर्भ नहीं रहता।

रति सुख का आनन्द

रति सुख का आनन्द उन्ही पति पत्नियों को ठीक मिलता है जो आरोग्य हैं जो विपरीत रतिक्रिया आसन आदि और अधिक आनन्द की इच्छा नही रखते। जो पुरुष जीवन रखने के लिये आहार करते हैं वे ही आरोग्य रहते हैं और जो आहार के लिये अर्थात् अच्छे अच्छे पदार्थ अधिक स्वादिष्ट पदार्थ खाने के लिये ही अपना जीवन समझते हैं वे सदैव रोगी रहते हैं जिनकी जिह्वा अपने कावू मे नही है वे रोगो का घर बने रहते हैं।

इसी प्रकार जो रति सुख को ही जीवन का आनन्द माने हुए हैं और अधिक आनन्द के लिये अनियम रति करते हैं। वे भी रोगो का घर बने हुए है और जो प्राकृतिक नियम के अनुसार सन्तान के लिये रति सुख के इच्छुक हैं वे दाम्पत्य सुख का आनन्द प्राप्त करते हैं और उत्तम सन्तान प्राप्त करते हैं।

गर्भवती से रति करने का गर्भ पर बुरा प्रभाव

जो मूर्ख पति गर्भ रह जाने पर भी गर्भवती से रतिक्रिया करते है उनकी सन्तान दुष्ट स्वभाव रोगी और निर्वल होती है।
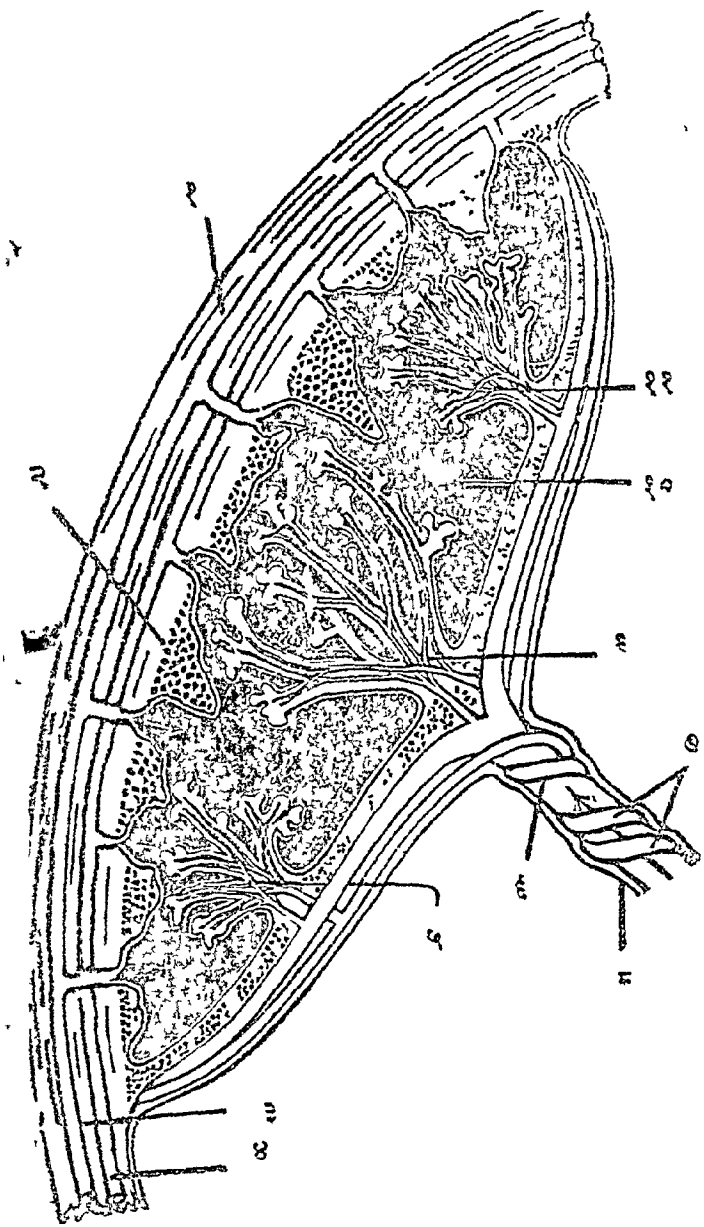
बहुतों के गर्भस्राव व गर्भपात होते हैं और बहुतो के मूढ़ गर्भ की उत्पत्ति होती है।

चित्र मे नम्बर १ के पास जिस स्थान से लकीर गई है वह सब चित्र के इस छोर मे उस छोर तक गर्भाशय की दीवार (हद) है।

न० २ के पास जिस स्थान मे लकीर गई है वह गर्भाशय का एक वह हिस्सा है जो कि गर्भ के साथ ही साथ बढ़ता जाता है वह बालक की सब से बाहरी झिल्ली है। यह गर्भाशय और बालक के बीच में रहती है इसका काम है बालक को गर्भाशय से मिलाकर माता के हृदय के रक्त को ले जाने और लाने वाली नलियो को मिलाना।

न० ३ के पास जिस स्थान से एक लकीर गई है वह गर्भाशय मे गर्भवती के शरीर से गर्भ को पोषण करने के लिये शुद्ध रक्त लाने वाली नली है।

न० ४ गर्भाशय से बच्चे को पोषण करके अशुद्ध रक्त माता के शरीर मे लौटा देने वाली नली जिसके द्वारा बालक से अशुद्ध रक्तमाता मे आकर शुद्ध हो फिर दूसरी शुद्ध रक्त लाने वाली नली द्वारा गर्भ को पोषण करने के लिये लौट जाता है। इस प्रकार शुद्ध और अशुद्ध रक्तवाली दो नलियां मिलकर नाड़ कहलाता है।

न० ५—७—११ के पास जिन स्थानों से लकीर चली है वह एक प्रकार की छोटी छोटी नलिया के छत्ते हैं जो रक्त में तैरते रहते हैं। जो काला स्थान है जिसमे नं० ५—७—११

तीन छत्ते दिखला रहे हैं ये सब रक्त से भरे हुए है जिसे न० १० के पास वाली लकीर वतलाती है। ये छत्ते रक्त मे तैरते रहते हैं और गर्भवती के शुद्ध रक्त को खींचकर उस नली मे लेजाते हैं जिस के द्वारा गर्भ का पालन होता है और वालक से अशुद्ध रक्त लाकर अशुद्ध रक्त वाली नली को देते हैं।

गर्भ और गर्भाशय के चित्र मे नं० ६—७ ये दो नलियां हैं जिनके मिलने से नाड़ वना है इन दोनो नलियो द्वारा माता से शुद्ध रक्त वालक मे और वालक से अशुद्ध रक्त माता मे ले जाने और लाने का काम होता है।

न० ८ यह वह सबसे भीतरी झिल्ली है जो कि नाड की दोनो नलियो को लपेटी हुई वच्चे के चारो ओर थैली रूप मे रहनी है अर्थात् इसी थैली मे वच्चा रहता है।

वच्चे की रक्षा और गर्भाशय को हर वक्त कोमल व तर वनाये रखने के लिये इस थैली मे पानी भरा रहता है। सन्तान उत्पन्न होने के समय यह थैली फट जाती है तव सव पानी निकल जाता है।

वह नाल जो वच्चे की नाभि मे लगा रहता है जिसके द्वारा वच्चे का पोषण होता है इस वालक और खेड़ी वाले दो रंगे चित्र से भली भांति समझ मे आजावेगा।

इसी प्राकृतिक नियम से माता जो कुछ आहार करती है उसका परिपाक होकर रस वनता है और रस से रक्त वनकर

गर्भ का पोषण करता है इस प्रकार माता के आहार का प्रभाव बच्चे पर पड़ता है और गर्भवती के आचार विचार का भी बहुत कुछ प्रभाव बालक की आत्मा पर पड़ता है।
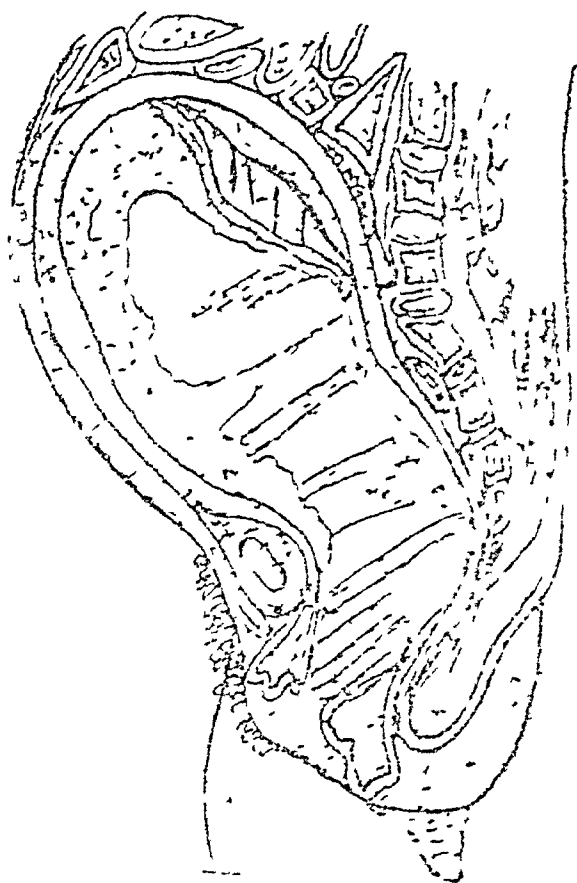
गर्भाधान क्रिया अर्थात् संभोग ठीक न होने से स्त्रियों का रोगी होना

गर्भाशय से जो नाड़ियां लगीहुई हैं वे स्त्री अण्डकोष से स्त्री का वीर्य (रज) लेजाकर गर्भाशय मे पहुँचाती हैं। पति को निर्बलता, सुस्ती और शीघ्रपात के कारण रतिक्रिया ठीक न होने से स्त्री के अण्डकोष से चला हुआ वीर्य अर्थात् रज गर्भाशय तक नही पहुँच सकता, बीच मे ही रुक जाता है।

इसलिये स्त्री को रति सुख भी प्राप्त नही होता और गर्भ भी नही रहता तथा अनेक प्रकार के रोग उत्पन्न होजाते है।

प्रेम संभोग और आरोग्यता

पति पत्नी मे प्रेम पूर्वक इच्छा होने पर सभोग हो और उस सच्ची इच्छा से दोनों सन्तुष्ट और प्रसन्न हो फिर किसी कारण से गर्भ न रहे तो आरोग्यता प्राप्त होती है। स्त्री को किसी प्रकार गर्भाशय तथा ऋतु सम्बन्धी रोग नही होता और पति पत्नी दोनो आरोग्य रहते हैं यदि गर्भ रहजावे तो गर्भस्राव व गर्भपात का भय नही रहता।

रतिक्रिया ठीक ठीक होने से स्त्रियां अनेक रोगो से बची रहकर उत्तम सन्तान उत्पन्न करती हैं। मेरे पास ऐसी भी अनेक स्त्रियां आया करती हैं जिनके पति नियम पूर्वक ऋतु-स्नान के बाद रतिक्रिया करते है और पति पत्नी दोनो संभोग

का आनन्द बराबर प्राप्त करके सन्तान उत्पन्न करते हैं वे गर्भ रहने पर ब्रह्मचर्य से रहते हैं।

ऐसी स्त्रियों की जवानी मालूम हुआ है कि उन स्त्रियों को सम्भोग की बीच मे कभी इच्छा नहीं होती। उनकी सन्तान भी आरोग्य और हृष्ट पुष्ट देखी जाती है।

पति की निर्बलता संभोग और रोग

जिन स्त्रियों के पति निर्बल दुर्बल हैं तथा जिन्हें वीर्य विकार सुस्ती शीघ्रपात आदि की शिकायत है उनकी स्त्रियां सभोग से सन्तुष्ट नही होती और उन्हे अनेक रोग इस कारण उत्पन्न होजाते हैं कि पति ने प्रसंग आरम्भ किया और स्त्री की इच्छा पूर्ण न हुई, पति शीघ्रपात आदि के कारण स्खलित होगया अथवा पति की सुस्ती के कारण उत्तेजना ठीक न हुई और स्त्री का रज स्खलित न होकर बीच मे ही रुक गया इससे स्त्री की जनेन्द्री मे जलन, हिस्ट्रिया, दिलकी धड़कन, चक्कर आना, पेशाव मे जलन, मासिकधर्म की खराबी, प्रदर रोग इत्यादि रोग उत्पन्न होजाते हैं।

रज को वहाने वाली नसों मे खराबी उत्पन्न होजाती है मासिकधर्म्म का रक्त कम आने लगता है और वह नसों मे इकट्ठा हो हो कर गुल्म आदि रोग उत्पन्न करता है। इससे स्त्री वन्ध्या होजाती है और उसे संभोग की इच्छा बहुत कम होती है। रोग अधिक बढ़ जाने से सभोग की इच्छा बिलकुल नष्ट होजाती है।

याद रखने की बात

स्त्रियों के रोगो के विषय में इस पुस्तक के दूसरे भाग मे विस्तार पूर्वक स्त्री रोग निदान और चिकित्सा लिखी जावेगी क्योंकि यदि रति क्रिया ठीक न होने से स्त्रियों के जो रोग उत्पन्न होते हैं उनका विस्तार से निदान और चिकित्सा यहां लिखी जाय तो केवल इसी विषय की एक बड़ी पुस्तक बन जावेगी।

इस पुस्तक का दूसरा भाग लगभग १००० एक हजार पृष्ठ का होगा और सचित्र होगा। पृष्ठ संख्या एक हजार होने पर तथा चित्र संख्या भी इस प्रथम भाग से अधिक होने पर भी मूल्य ७॥) साढ़े सात ही रुपया होगा और अभी से ग्राहको में नाम लिखाने से ५) पांच रुपये में ही दीजावेगी। पुस्तक बहुत बड़ी होने के कारण केवल एक ही हजार छापी जावेगी इस लिये आज ही पत्र लिखकर ग्राहको में नाम लिखाकर १०) दस रुपये की पुस्तक ५) पांच रुपये मे ही लीजिये। १०) दस रुपया मूल्य होने पर भी ७॥) साढ़े सात ही रुपया मूल्य रक्खा जावेगा और अभी से होने वाले ग्राहकों को ५) पांच रुपये मे ही दी जावेगी।

स्त्रियां वन्ध्या क्यों होती हैं

स्त्रियों के वन्ध्या होने के कारण उनके पति ही होते हैं मेरे देखने मे २५ वर्षों मे बीसो हजार वन्ध्या स्त्रियां आईं। सबके

रोगो की परीक्षा करने से इस बात का मुझे अनुभव हुआ है कि सभी स्त्रियां पति के दोषो के कारण वन्ध्या कही जाती हैं ।

पुरुष के दोषों को कोई नहीं देखता न समझता है । पति स्वय पत्नी का ही दोष देकर एक दो से भी अधिक कई कई विवाह करलेते हैं और फिर भी सन्तान नही होती । उनके घर वाले भी स्त्री का ही दोष समझते हैं ।

जितनी स्त्रिया मेरे पास वन्ध्या कही जाने वाली आई उनको देखने से सैकडा पीछे दो तीन ही ऐसी निकली जो वास्तव में वन्ध्या थी जिनको आयुर्वेद में आदि वन्ध्या कहा है, जिनके माता पिता के रज वीर्य के दोष से गर्भाशय होता ही नही। इस लिये उनके कभी गर्भ नही रहता । किसी किसी के योनि मार्ग ही नही होता। पुरुषों की भाति स्त्रियां भी हिजड़ी होती हैं ।

स्त्रियों के अंडकोष

पुरुषो की भाति स्त्रियों के भी अडकोष (गिलटियां) होते हैं जिस पुरुष के अडकोष नही होते वह हिजड़ा होता है इसी प्रकार स्त्रियां भी अडकोष न होने से हिजड़ी होती हैं ।

किसी स्त्री के ऐसा भी होता है कि बाल्यावस्था से गर्भाशय क्रमश. बढता जाता है परन्तु युवावस्था प्राप्त होने पर गर्भाशय का बढ़ना किसी कारण से बन्द होजाता है अर्थात् सिकुड़ जाता है इसलिये ऐसी स्त्री को मासिकधर्म होना बन्द हो जाता है इसलिये गर्भ नही रहता ।
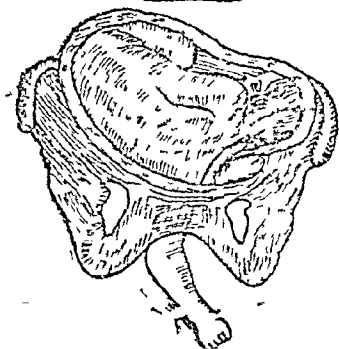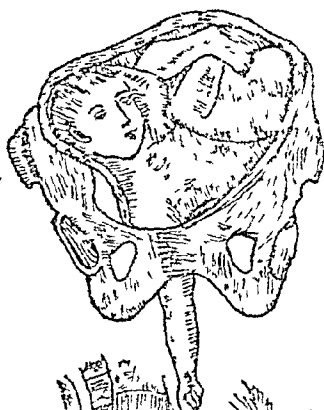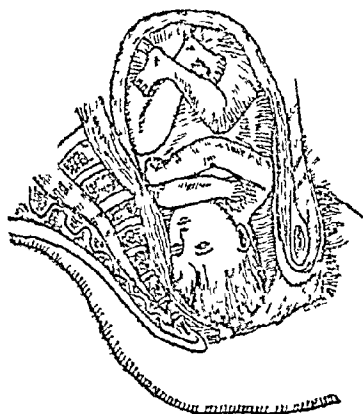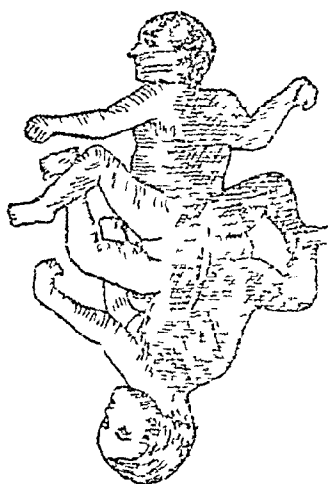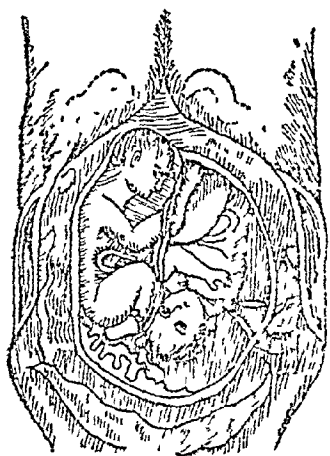
विपरीत आसन से गर्भाशय को हानि

विपरीत आसन से जो मूर्ख पुरुष रतिक्रिया करते हैं उनकी स्त्रियो के गर्भाशय को बडी हानि पहुँचती है गर्भाशय के मुख को हानि पहुँचने से पुरुष का वीर्य गर्भाशय मे जा ही नही सकता और जब गर्भाशय के भीतरी हिस्से मे खराबी होजाती है तब प्राय: गर्भस्राव व गर्भपात हो जाया करता है। इसलिये तरह तरह के उलटे सीधे तिरछे आसनों से सभोग करना आयुर्वेद मे हानिकारक बतलाया गया है।

गर्भाशय का आगे का हिस्सा
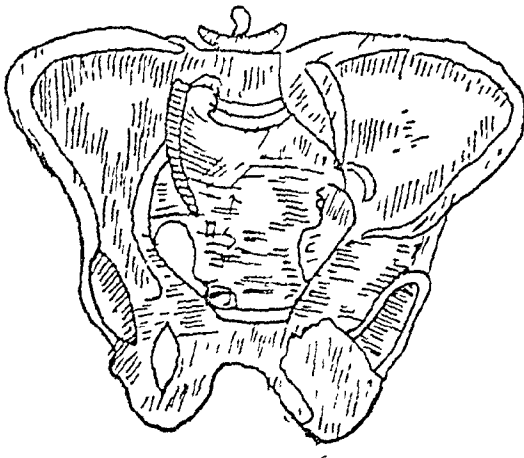
ऊपर वाला चित्र स्त्री के गर्भाशय के स्थान का आगे का हिस्सा है। जब कभी गर्भवती स्त्री नितम्बो के बल किसी कारण से गिर

बुढ़ापा । पृ० ५००

बाल्यावस्था में विवाह होने से पति के घर जाते ही मासिक-धर्म होना और ऋतु के दिनों में प्रसंग होने से गर्भाशय पर दबाव पड़ने के कारण गर्भाशय खराब होजाता है इसलिये मासिकधर्म भी ठीक नहीं होता और स्त्री वन्ध्या होजाती है।

वन्ध्या स्त्रियों का शर्तिया इलाज

आदि वन्ध्या को छोड़कर जिसके गर्भाशय होता ही नहीं बाकी सब प्रकार की खराबियों वाली वन्ध्या स्त्रियां मेरे देशी इलाज से आराम होगई हैं और हजारों सन्तान हीन स्त्रियां सन्तानवती होगई हैं इसलिये.—

सन्तानहीन स्त्रियां निराश न हों

किसी स्त्री के किसी कारण से भी सन्तान न होती हो अथवा गर्भ कभी रहा ही न हो या एक ही बालक होकर फिर गर्भ धारण न हुआ हो, कुछ भी शिकायत हो तो इलाहाबाद लाकर मुझे दिखलावें। आदि वन्ध्या को छोड़कर बाकी सब वन्ध्याओं का इलाज कर दिया जायगा सन्तान होने लगेगी।

पुरुष रोगियों को सूचना

किसी स्त्री का पति शीघ्रपात, सुस्ती, निर्बलता, शिथिलता, वीर्य विकार, प्रमेह, नसों की कमजोरी, स्वप्नदोष और नपुसकता आदि किसी भी रोग का रोगी हो तो एकबार अपना पूरा हाल लिखकर भेजे उसका रोग दूर कर दिया जावेगा। २५ पचीस

वर्षों मे लाखों पुरुषों का इलाज उनकी स्त्रियों द्वारा करके आराम कर दिया गया है।

सब प्रकार की चिट्ठियां गुप्त रक्खी जाती हैं इसलिये संकोच न कर रोग का पूरा हाल लिखकर फायदा उठाइये।

मूढ़ गर्भों की उत्पत्ति

विपरीत आसन से रतिक्रिया करने से गर्भाशय को हानि पहुँच कर तथा गर्भवती स्त्री से रतिक्रिया करने से गर्भ को हानि पहुँच कर मूढ़ गर्भों की उत्पत्ति होती है। मूढ़ गर्भों के कुछ चित्र दो बच्चे होने के चित्रों के साथ बतलाए गये हैं। यहां पर नीचे दिए गए चित्रों से पाठक पाठिकाओं की यह भलीभांति समझ में आजावेगा कि गर्भवती से रतिक्रिया करने से गर्भ की स्थिति अनेक प्रकार की होजाती है जिसके कारण गर्भ और गर्भवती दोनों के प्राणान्त तक का समय आजाता है।

गर्भों की स्थिति

गर्भों की स्थिति
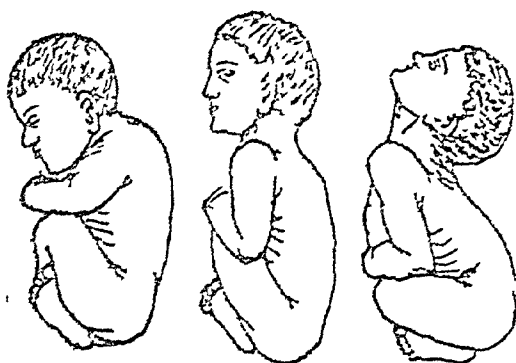
मूढ़ गर्भों की उत्पत्ति चित्र नं० १
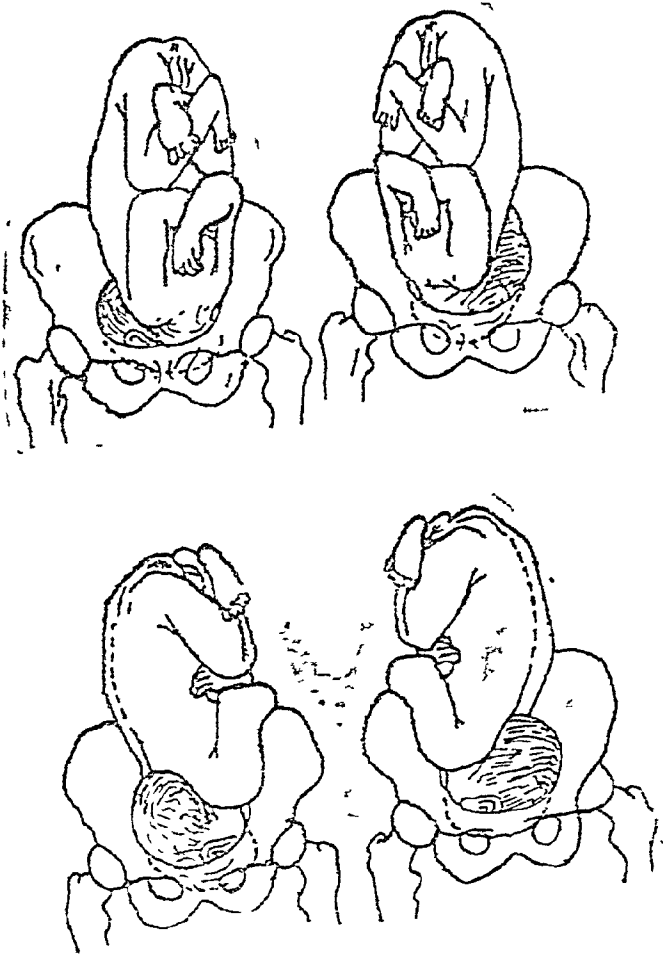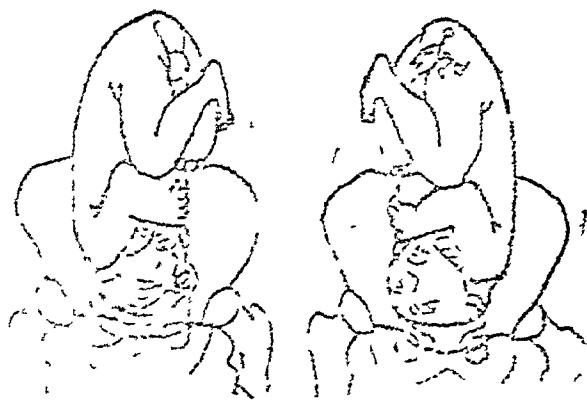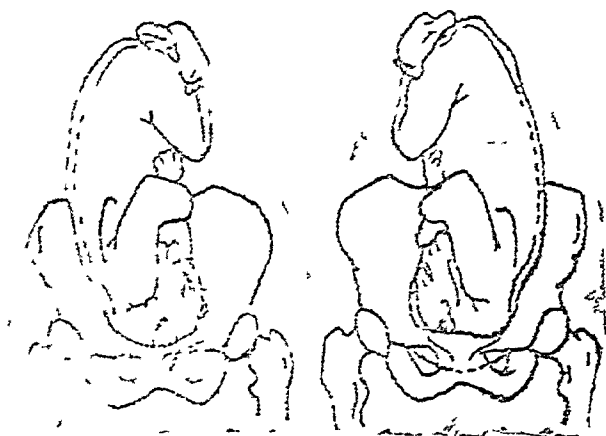
चित्र नं० २

चित्र नं० ३
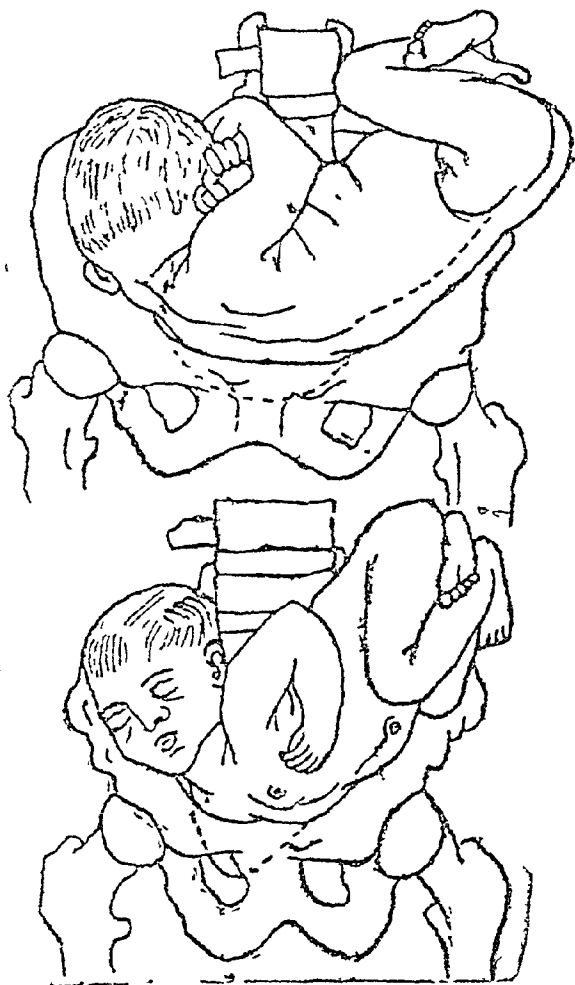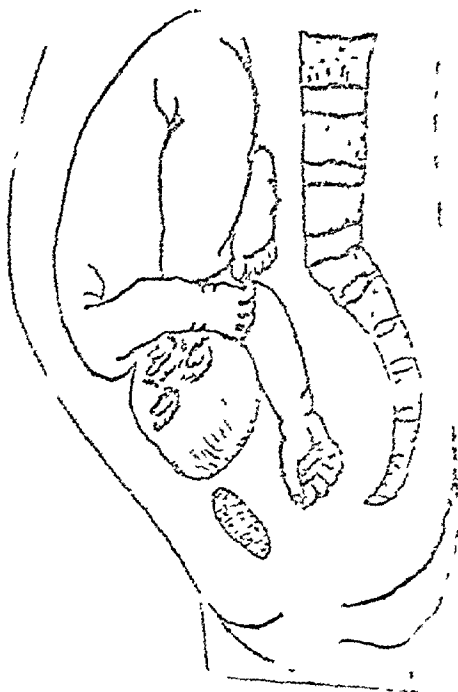
चित्र नं० ४
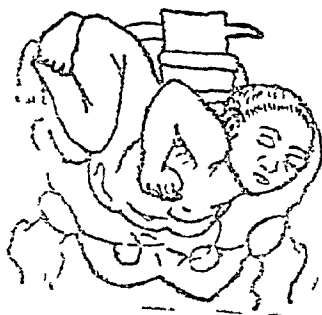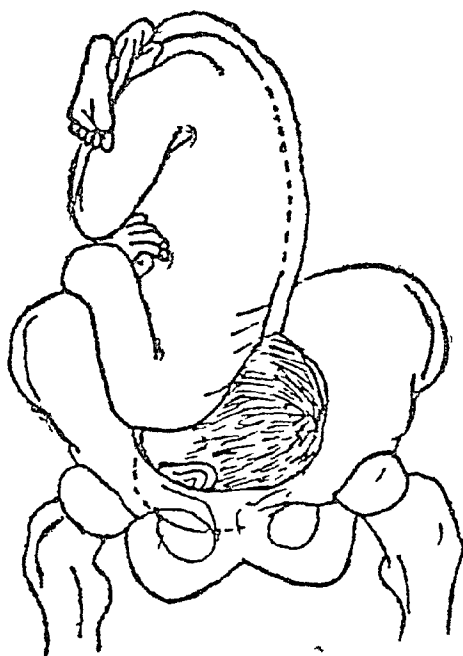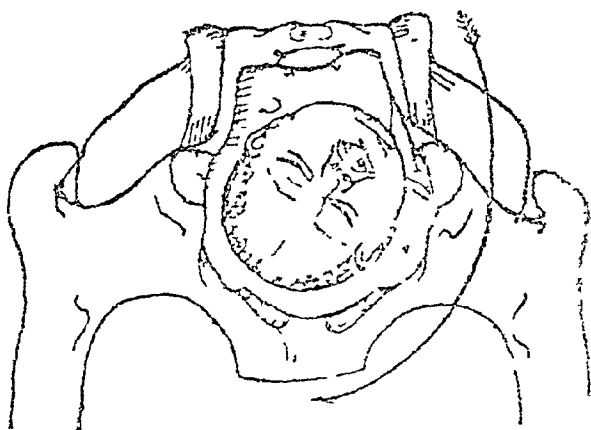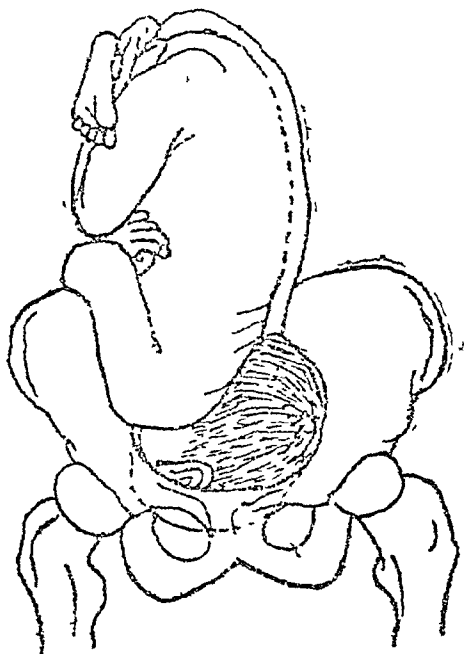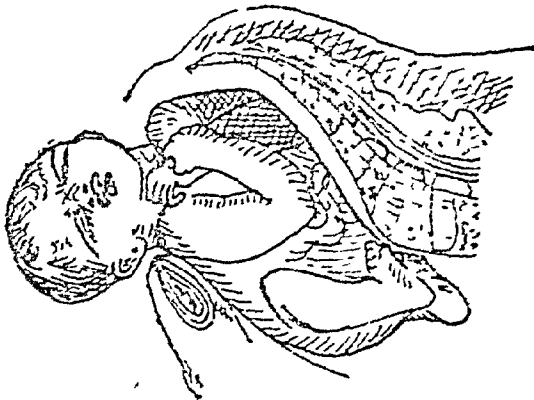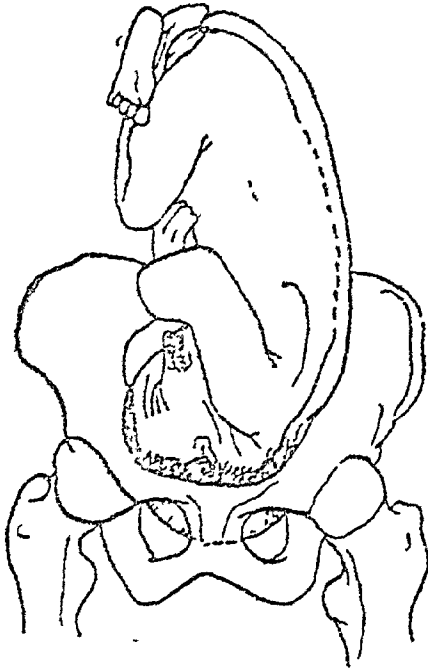
चित्र नं० ४
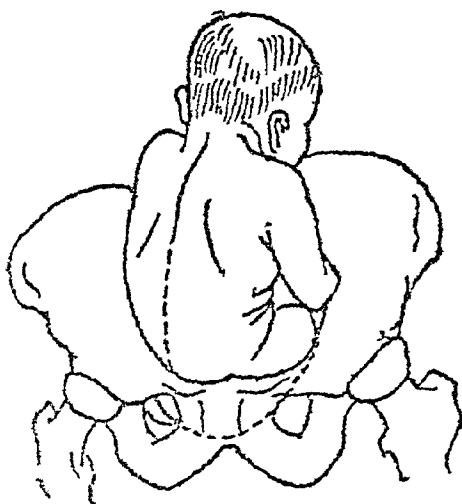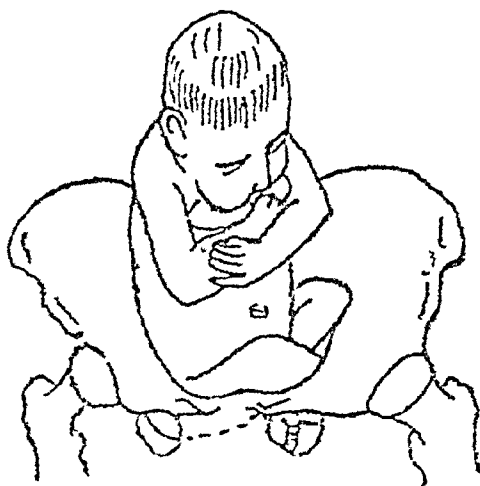
चित्र नं० ३
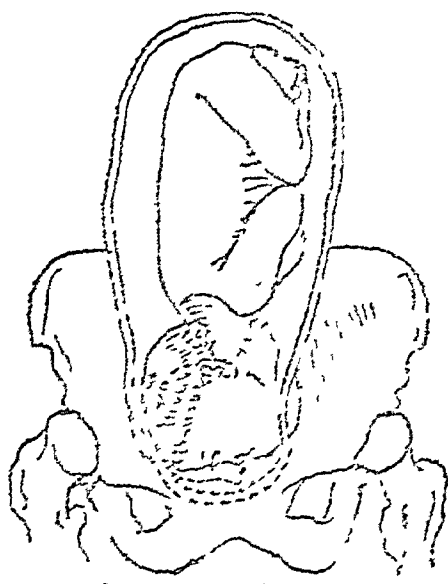
चित्र नं० ८
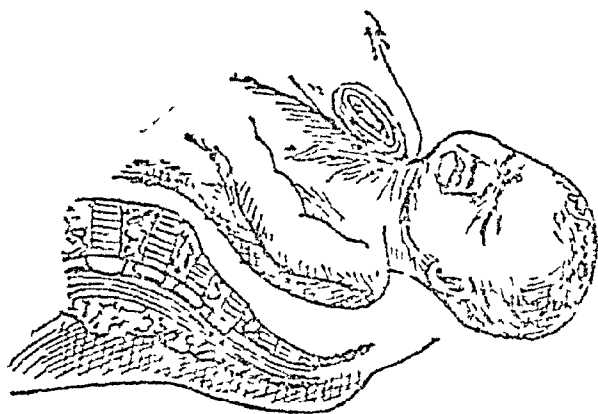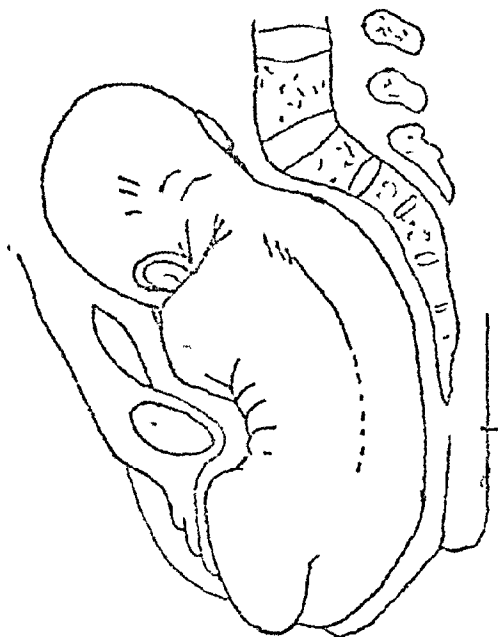
चित्र नं० ८
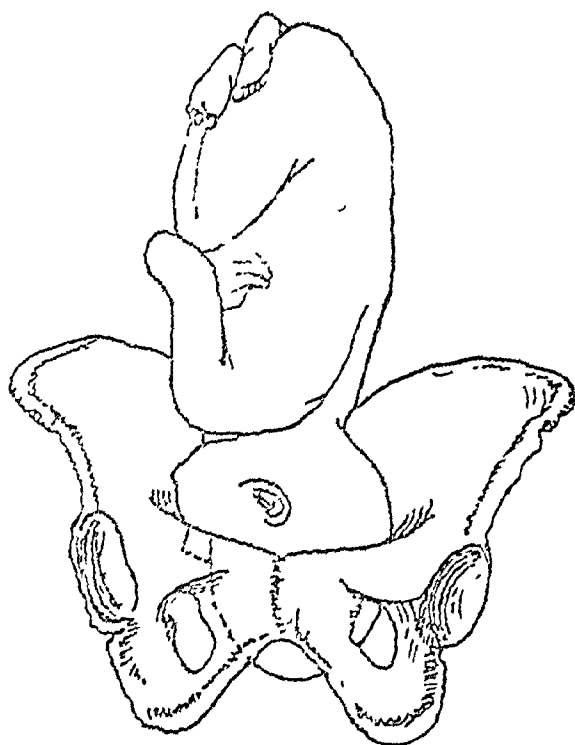
चित्र नं० १

चित्र नं० १०

कभी कभी अनियम आहार विहार के कारण तथा रति क्रिया से गर्भ का बालक योनिमार्ग में आकर अटक जाता है। इसलिये प्रसव के समय बड़ा कष्ट होता है।

चित्र नं० ११
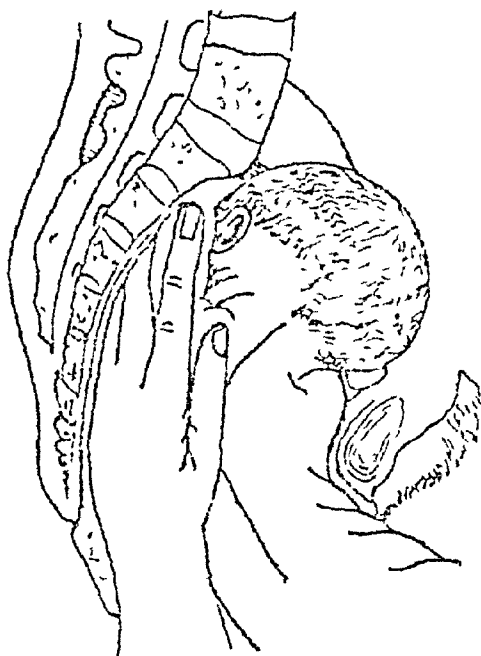
गर्भवती के कुपथ्य तथा गर्मी अवस्था में रतिक्रिया होने के कारण गर्भ उलट जाता है और प्रसव के समय प्रसव होना कठिन होजाता है तब काटकर निकाला जाता है इससे जच्चा और बच्चा दोनो का कभी २ प्राणान्त तक होजाता है।

चित्र नं० १२
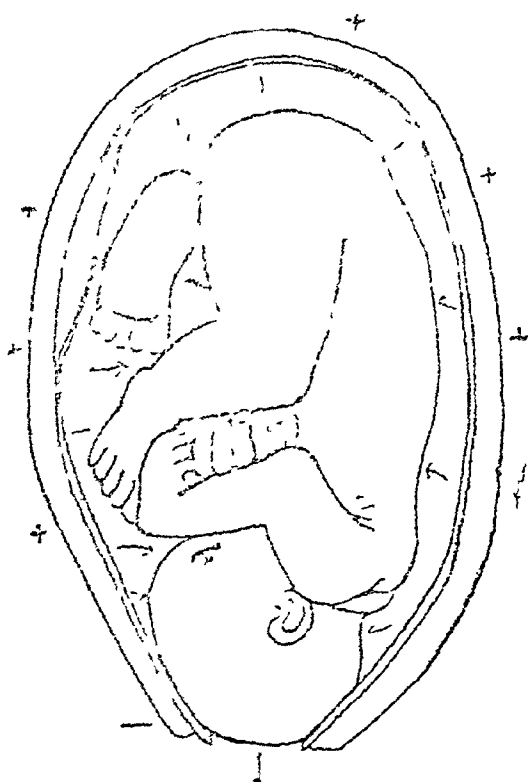
कभी कभी अनियम से गर्भ के बालक का सिर टेढ़ा तिरछा हो जाता है इससे गर्भवती को बड़ा कष्ट होता है।

चित्र नं० १३

गर्भवती स्त्रियो को बडी सावधानी और पथ्य से रहना चाहिए। प्रसग से बहुत बचना चाहिये अनियम आहार विहार तथा इस दशा मे रतिक्रिया होने से गर्भ को अनेक प्रकार से हानि पहुँचती है।

चित्र नं० १४

गर्भ का बालक अनियम रतिक्रिया से दबाव पड़ने के कारण उलटा सुलटा टेढा तिरछा होजाता है।

चित्र नं० १५
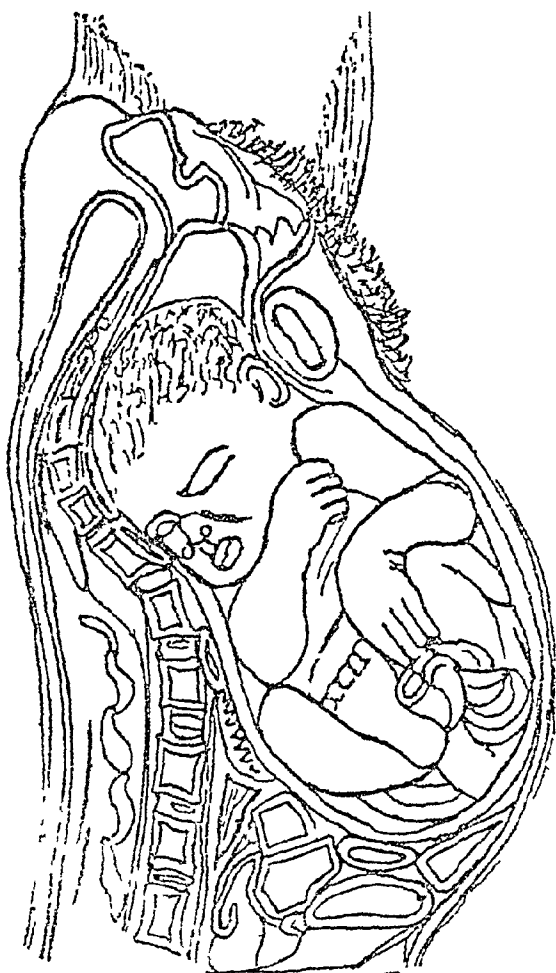
चित्र नं० १६
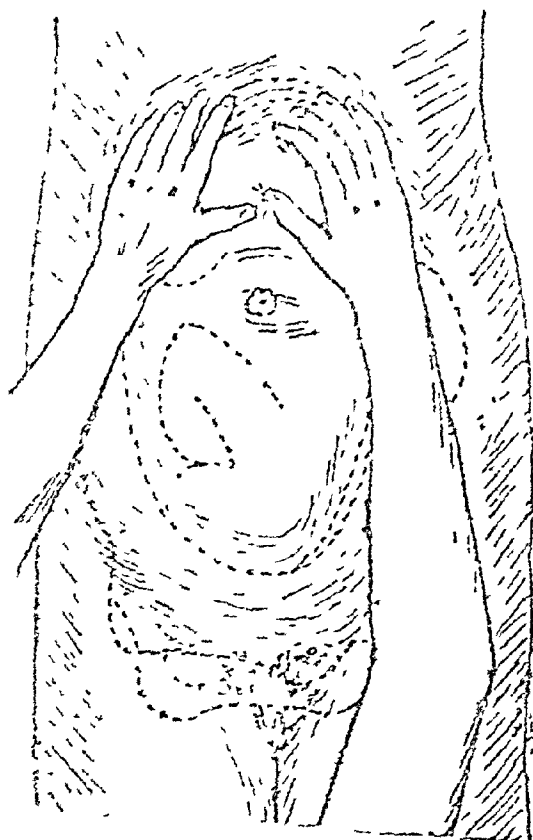
धात्री का कर्तव्य है, यदि वह चतुर हुई तो उलटे सुलटे तिरछे गर्भ को ठीक कर सकती है। देखिये दूसरा भाग।
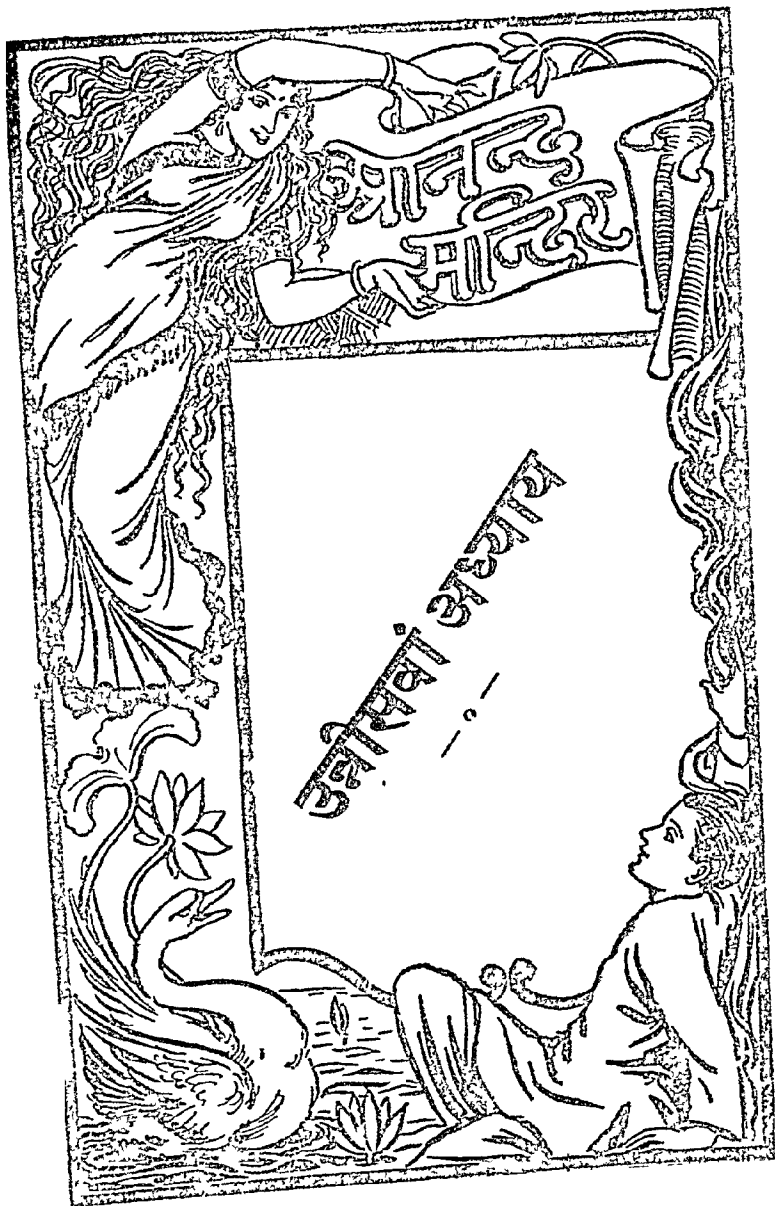
आनन्द मन्दिर
छठवाँ अध्याय

गर्भिणी और गर्भ को हानि पहुंचने का कारण

जो गर्भवती स्त्रियां ऊंचे नीचे स्थान पर चढ़ती उतरती हैं और बहुधा उकड़ू बैठा करती हैं जो धमक कर तेजी से चलती हैं, जो सवारी पर बैठती हैं और जो बहुधा तख्त, चौकी अथवा पृथ्वी आदि कठोर स्थान पर बैठी रहती है जो एक ही करवट से बैठी रहती हैं और जो अधोवायु, दिशा, पेशाब आदि वेगों को रोकती हैं जो कठिन परिश्रम करती है और जो अपनी शक्ति से अधिक काम करती हैं जो बोझा उठाती हैं, जो गरम वस्तुएं अधिक सेवन करती हैं, अथवा उपवास अधिक करती हैं।

ऊपर के इन कारणों से और अधिक कलह चिंता और शोक से उनका गर्भ पेट मे ही मरजाता है अथवा उलटा तिरछा टेढ़ा होकर गर्भवती के प्राणों को नष्ट करता है और आप भी नष्ट होता है।

अधिक दिन का गर्भ होने से टेढ़ा हो जाने से गर्भिणी को बड़ा कष्ट पहुचता है जो गर्भवती स्त्री सदैव चित्त लेटा करती है उसके गर्भ के बालक को बड़ी भारी हानि पहुंचती है इस कारण गर्भवती को सब प्रकार से सावधान रहना चाहिये।

यदि गर्भवती को ऊपर लिखे अनुसार किसी प्रकार का कष्ट हो जावे तो किसी चतुर दाई को बुलाकर ठीक कराले। इस पुस्तक के दूसरे भाग मे यह विषय भी विस्तार पूर्वक समझाया जावेगा।

पति पत्नी की प्रेम वार्ता

उत्तम सन्तान की इच्छा रखने वाले पतियों को चाहिये केवल विषय वासना की तृप्ति के लिये ही स्त्री से प्रेम न करके प्रतिदिन हृदय से प्रेम करे और स्त्री को अपने जीवन की साथिन समझ कर गृहस्थी के कार्य और व्यवहार मे सम्मति लिया करे।

जिन दिनो स्त्री गर्भवती हो उन दिनो इस बात का नियम करले कि प्रतिदिन कुछ देरी के लिये स्त्री के पास बैठकर स्त्री से प्रेम वार्ता और धर्म चर्चा किया करे और इस बात का ध्यान रक्खे कि स्त्री पति के प्यार और प्रेमवार्ता मे अधिक प्रसन्न रहती है किसी स्त्री का पति चाहे जितना धनवान और सुन्दर हो स्त्री को चाहे जितना वस्त्राभूषणो से प्रसन्न रक्खे परन्तु प्रेम न करता हो तो स्त्री सब व्यर्थ समझती है।

पति का प्यार संसार के बहुमूल्य आभूषणों से भी बढ़कर है

याज्ञवल्क्य ऋषि के दो स्त्रिया थी कात्यायनी और मैत्रेयी इन दोनो पत्नियो मे से मैत्रेयी मे पति का प्यार कुछ अधिक था जब याज्ञवल्क्य सन्यास लेकर तपस्या करने के लिये घर से जाने लगे तब उन्होंने अपना कुल गृहस्थी का सामान वस्त्राभूषण आदि दोनो स्त्रियों को दो हिस्से बराबर बराबर करके बांट दिया और आप तपस्या के लिये वन को चल दिये।

एक पत्नी कात्यायनी तो अपने हिस्से के वस्त्राभूषण सम्हालने मे लगी, आभूषणो की देख रेख मे मग्न हुई पत्नी को पति के वन जाने का अर्थात् विछोह का कुछ भी ख्याल न रहा, परन्तु दूसरी पत्नी मैत्रेयी जो पति के प्यार का मूल्य समझती थी उसने उन बहुमूल्य आभूषणों की ओर देखा भी नही और हाथ जोड कर पति के सामने खडी होकर प्रार्थना करने लगी कि हे प्राण-नाथ ! प्राणधन !! इस झूठे धन को लेकर मैं क्या करूगी क्या इस धन से मुझे शान्ति मिल जायगी ? क्या आप तत्वदर्शी विद्वान होकर भी यह नही जानते कि स्त्री के लिये पति से बढ-कर ससार मे दूसरा कोई धन नही है जब पत्नी के प्राणो का धन पति ही छूट रहा है तो यह ससार के बहुमूल्य आभूषणो को लेकर ही मै क्या करूगी मेरे लिये अब संसार का कोई अधिक से अधिक बहुमूल्य पदार्थ प्रसन्न नहीं कर सकता यह सब व्यर्थ है मै भी आपके साथ चलूगी ।

पति पत्नी मे सच्चा प्रेम हो तो उत्तम सुन्दर सुशील माता पिता की आज्ञा कारिणी सन्तान उत्पन्न होती है इस विषय को आनन्द मन्दिर के दूसरे भाग मे विस्तार से पढ़िये ।

जवानी और बुढ़ापा

स्त्री हो या पुरुष जवानी की अवस्था मे मदान्ध होकर बुढापे को भूल न जाना चाहिये बुढ़ापा बुरा होता है इस लिये ऐसे उपाय और साधन काम मे लाने चाहिये जिससे बुढ़ापा शीघ्र न आघेरे क्योंकि जो मनुष्य नियम पूर्वक नहीं रहते मदान्धता

से समय कुसमय न देखकर विषयाग्नि की शान्ति मे ही लीन रहते हैं वे अपनी अमूल्य जवानी को विषयाग्नि मे शीघ्र ही भस्म करदेते हैं और समय के पहिले ही बुढ़ापे के चगुल मे फसकर कष्ट और दु:खमय जीवन व्यतीत करते हैं।

याद रखिये बुढापा आकर फिर नही जाता और जवानी जाकर फिर नही आती।

"जवानी आनही सकती, बुढापा जा नही सकता"

भर्तृहरि जी ने ठीक कहा है—

व्याघ्रीव तिष्ठति जरा परितर्जयन्ती,
रोगाश्च शत्रु इव प्रहरन्ति देहम्।
आयु:परिस्रवति भिन्नघटादिवाम्भो,
लोकस्तथाप्यहितमा च रतीति चित्रम्॥

अर्थात्—वृद्धावस्था बाघिनी की समान जवानी को खालेने के लिये सामने खडी है, सब रोग शत्रुओं की समान देहपर दण्ड प्रहार कर रहे हैं, आयु (उम्र) प्रति दिन इस प्रकार निकलती जाती है, जैसे कच्चे घडे से पानी निकलताजाय, तिस पर भी मनुष्य जिसमे बुरा हो वही काम करते जाते हैं।

प्रेम की प्रार्थना

पुस्तक का यह प्रथम भाग "आनन्द मन्दिर" अब समाप्त होरहा है इसका दूसरा भाग शीघ्रही तैय्यार होगा। यहां हम

दाम्पत्य प्रेम के विषय मे कुछ लाइने और लिखकर पुस्तक समाप्त करती हैं।

पीछे बतलाया गया है इस बात को बड़े बड़े महर्षियो ने भी माना है श्रीरामचन्द्र, श्रीकृष्णचन्द्र, शिव, ब्रह्मा इत्यादि देवताओ ने भी पति पत्नी के प्रेम की महिमा गाई है वेदो मे भी दाम्पत्य प्रेम दृढ़ और जीवन पर्यन्त बने रखने के लिये बहुत कुछ आज्ञा दी है इस विषय मे अब अधिक लिखना व्यर्थ है:-

दाम्पत्य प्रेम स्वर्ग का भी दुर्लभ पदार्थ है वे ही पति पत्नी स्वर्ग सुख भोगते है उन्ही को मनुष्य जीवन का सच्चा आनन्द और सुख मिलता है जो एक दूसरे के प्रेम बन्धन मे रहकर उत्तम सन्तान उत्पन्न करते हैं:—

एक साहसी वीर युवक भयकर वनो मे जाकर बड़े बड़े बलवान् हाथी और सिहो को मारता है जिसके सामने बड़े बड़े बली और भयकर जीव घबड़ा कर भागने का मार्ग तक भूल जाते हैं परन्तु जब वह अपनी प्यारी पत्नी के पास घर पर आता है और उसे किसी कारण से उदास मलिन मुख देखता है तो प्रेम की प्रार्थना करता है क्योंकि वह जानता है कि दाम्पत्य प्रेम का आनन्द और सुख वही है जो दोनो ओर से बराबर हो इस बात को न जानने वाले, पति पत्नी के प्रेम का महत्व न समझने वाले मूर्ख और स्वार्थी कामान्ध पति इस बात की कुछ भी परवाह नहीं करते केवल अपनी कामाग्नि की शान्ति के लिये पत्नियों पर अनेक प्रकार के अत्याचार करते हैं इसी कारण आज हमारे

देश की सैकड़ा पीछे निन्नानवे स्त्रियां रोगी पाई जाती हैं और यही कारण सन्तान के रोगी निर्बल दुर्बल और अकालमृत्यु होने की अधिकता का है। इसी कारण सन्तान माता पिता का निरादर करने वाली बुरे स्वभाव वाली साहस हीन और कुमार्गी होती है। इस विषय मे प्रमाण देने की जरूरत नहीं क्योंकि पता लगाइये तो बहुत कम ऐसे घर मिलेंगे जिनमे स्त्री पुरुष या बालक कोई रोगी न हो।

अनुभव की बात

मुझे इस बात का अनुभव है क्योंकि मेरे पास २५ पचीस वर्षों मे लाखो स्त्रियां इलाज के लिये आई उनकी जवानी उनके पति और सन्तान के रोगी होने का हाल मालूम कर उन स्त्रियो द्वारा उनके पति तथा सन्तान की भी चिकित्सा की गई।

मेरे इलाज से अब तक लाखों स्त्रियां और इतने ही पुरुष आराम होचुके है और हजारो सन्तान हीन स्त्रियां सन्तानवती होगई हैं। इसी प्रकार अनुभव प्राप्त हुआ है कि स्त्रियो और बालकों के रोगो का कारण पुरुष ही हैं।

आनन्द मन्दिर
बीसवाँ अध्याय

यमराज की कचेहरी

अत्याचारी और व्यभिचारी पतियों का न्याय

अत्याचारी और व्यभिचारी पति अपनी निरपराध पत्नियों पर जो अत्याचार करते हैं उन्हे अपनी कामाग्नि शान्ति की मशीन समझकर उनके साथ अन्याय करते हैं अनेक प्रकार के विपरीत आसन और अनियम रति करके उन्हे रोगी बना देते हैं और फिर कुछ परवाह नही करते वे रोगो मे ग्रसित हो दुःखमय जीवन व्यतीत करती हैं तथा सन्तान हीन (वन्ध्या) हो रोरो कर मृत्यु के दिन गिना करती हैं इन्ही कष्टो मे ही जब जीवन लीला समाप्त कर जाती हैं तब वे शक्तिहीन होने पर भी अपनी विषय लोलुपता के कारण दूसरा विवाह कर लेते हैं ।

बहुतेरे अपनी विवाहित स्त्री के रहते हुए भी उससे तृप्त न होकर उसका निरादर कर वेश्यागामी होजाते हैं तथा पर स्त्री को बहका कर धमका कर लालच दिखाकर व्यभिचार करते हैं उनको इस अत्याचार और व्यभिचार का फल स्वरूप अनेक प्रकार के रोगो में ग्रसित हो कष्ट से जीवन व्यतीत करना पड़ता है और उन्हें गरमी सुजाक प्रमेह नपुंसकता आदि रोग घेर लेते हैं जिससे वे रोरो कर मौत के दिन गिना करते हैं इस प्रकार इस मनुष्य शरीर में उन्हें पत्नी पर अत्याचार अन्याय और पर स्त्री गमन वेश्यागमन की सजा रोग रूप में मिलती है ।

इस अत्याचार की सजा इस लोक की तो सब देखते ही हैं। मरने पर उन्हे यमराज के यहां से जो सजा मिलती है वह भी कम नही है ऐसे अत्याचारी और व्यभिचारी पतियो को सावधान करने के लिये प्राचीन ग्रन्थो के अनुसार यमराज की कचेहरी मे यमराज द्वारा न्याय होकर जो सजा मिलती है और उन दुष्ट पतियों की आत्माओं को जो कष्ट होता है वह चित्रों मे देखिये।

अत्याचारी पति को यमराज का दण्ड

जिस प्रकार अत्याचार और व्यभिचार का दण्ड इस लोक मे अनेक प्रकार के रोग और अधिक अत्याचारी को सरकार से दण्ड मिलता है उसी प्रकार यमराज की अदालत मे भी मरने पर अत्याचारी की आत्मा को दण्ड मिलता है देखिये चित्र अत्याचारी पति को पत्नी के दुःख देने का फल।

पर स्त्री गमन का फल

पर स्त्री गमन करने वाले दुष्ट पुरुष भोली भाली मूर्खा स्त्रियों को बहकाकर फुसला कर और लालच दिखाकर उनका धर्म नष्ट करते हैं जो मूर्खा स्त्रिया पर पुरुष के धमकाने बहकाने और लालच दिखाने से पर पुरुष की धमकी या लोभ मे आजाती हैं उनको इस लोक मे तो निन्दा और कष्ट सहने ही पड़ते हैं किन्तु मरने पर भी यमराज की कचेहरी मे उनको कठोर दण्ड मिलते हैं देखिये चित्र पर स्त्री गमन का फल।

दुष्ट पुरुषों से ठगी गई पर पुरुषरता स्त्री को यमराज का दंड

जो स्त्रियां अपने पति का निरादर कर अपने धर्म्म का त्याग करती है उन्हें इस जन्म में अनेक प्रकार के कष्ट और दु.ख मिलते हैं उनकी ससार में निन्दा होती है मरने पर यमराज के यहां अनेक दु ख दिये जाते है। देखिये चित्र पर पुरुषरता स्त्री को दण्ड।

अपने सुख और आराम के लिये सौतेली सन्तान को कष्ट देने का फल

जो स्त्रिया सौतेली सन्तान को दु ख देती हैं उन बच्चों की आत्मा दु:खी होकर उन स्त्रियों को शाप देती है उसके प्रभाव से उन स्त्रियों को मरने पर यमराज के यहां जो दण्ड मिलता है वह चित्र सौत के लडके को दु ख देने का फल मे दिखलाया गया है।

पति का निरादर

जो स्त्रिया अपने रोगी निर्बल शक्ति हीन और नपुसक पति का निरादर करती हैं और दूसरो के बहकाने तथा लालच दिलाने से अथवा जो स्त्रिया अपने निर्धन पति का निरादर करके सुख भोग की इच्छा से पर पुरुप के लालच देने पर और जो सन्तान हीन स्त्रियां सन्तान की इच्छा से पर पुरुप से गर्भधारण करती है।

जो स्त्रियां अपने कुरूप तथा अंगभंग पति का निरादर करके स्वरूपवान पर पुरुष की मन में भी इच्छा करती हैं। जो स्त्रिया किसी कारण से भी पर पुरुष गामिनी होती है अथवा पर पुरुष की इच्छा करती हैं ऐसी सब स्त्रियों को मरने पर यमराज के यहां बड़ा कठोर दण्ड मिलता है।

जिस पुरुष के साथ उनकी बुद्धि भ्रष्ट होती है उसी पुरुष के साथ उन्हे दण्ड मिलता है इसी लिये धर्म्म शास्त्रों में महात्माओं ने पर स्त्री गमन तथा पर पुरुष प्रसग से इस लोक और परलोक दोनों का कर्म्म फल बतलाया है।

अपनी ही स्त्री से प्रेम अपने ही पति से स्नेह और सुख तथा आनन्द भोग की इच्छा पति पत्नियो को रखनी चाहिये।
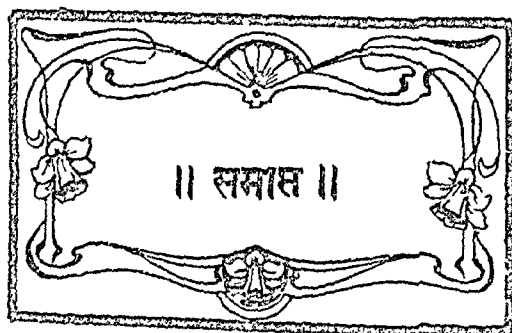
आनन्द मन्दिर का दूसरा भाग

सचित्र चिकित्सा खण्ड

आनन्द मन्दिर का दूसरा भाग भी तैय्यार होरहा है इसके दूसरे भाग मे स्त्री पुरुष और बालको के रोगों के उत्पन्न होने के कारण रोगो की पहिचान और रोग दूर होने के अनेक उपाय तथा अनेक परीक्षा किये हुए नुस्खे लिखे गये हैं।

दूसरे भाग की पृष्ठ संख्या लगभग ८५० सौ है

आनन्द मन्दिर का दूसरा भाग

बड़ा ही उपयोगी हर समय काम आने वाला:—

स्त्री रोगो का निदान और चिकित्सा स्त्री रोगों के हर एक रोग पर मेरे २५ पच्चीस वर्ष के हजारो बार परीक्षा किये हुए बहुमूल्य नुस्खे है और इसी प्रकार पुरुषो के अनेक रोग उत्पन्न होने के कारण रोगो की पहिचान और रोगो के दूर करने के हर एक रोग के बहुमूल्य अनेक नुस्खे हैं। इसके सिवाय.—

रतिक्रिया रहस्य की गुप्त से गुप्त और गूढ़ से गूढ़ विषय बड़ी सरलता से समझाये गये हैं, रतिक्रिया रहस्य के जो उपयोगी और अत्यन्त आवश्यक विषय इस प्रथम भाग मे नही आसके वे दूसरे भाग में लिखे गये है।

रतिक्रिया रहस्य के छै सौ ६०० से भी अधिक विषय तथा स्त्री पुरुषो के रोगो पर हजारो बार परीक्षा किये हुए नुस्खे बतलाये गये हैं जिनको अपने हाथो ही स्त्रियां घर पर तैय्यार करके अपने तथा अपने पति के रोगो को आप ही आराम करलेगी।

इधर देखिये

आनन्द मन्दिर का प्रथम भाग आपके सामने है दूसरा भाग इससे अधिक उपयोगी और लाभदायक होगा।

दूसरे भाग का भी मूल्य ७॥) साढ़े सात रुपया है परन्तु दोनो भाग एक साथ लेने मे दस रुपये मे भेजा जावैगा और जो सज्जन अभी से दूसरे भाग का ग्राहक होगे उन्हे ५) पांच ही रुपये मे दूसरा भाग भेजा जावेगा।

जिन सज्जनो की सेवा मे प्रथम भाग पहुँच चुका है वे अभी से दूसरे भाग के ग्राहको मे नाम लिखाले तो उन्हें पाच रुपये मे ही भेजा जावेगा। देरी से ग्राहक होने से विकजाने पर हम किसी मूल्य मे भी दूसरा भाग न देसकेगी दूसरा भा प्रथम भागसे वड़ा है दूसरी बार छपने मे देरी होगी।

हमारा दोष नहीं है

प्रथम भाग के ग्राहक फिर इस बात की शिकायत न करे कि हमे दूसरा भाग नही मिला क्योंकि इस अमूल्य ग्रन्थ का दूसरा भाग नवयुवक स्त्री पुरुषो के लिये तथा युवावस्था मे अधिक तथा अनियम रति क्रिया मे शक्ति हीन वृद्ध पुरुषों के लिये भी यह अमूल्य ग्रन्थ अमृत का काम देगा। इस लिये जवान और बुड्ढे सभी प्रकार के स्त्री पुरुषो के लिये आनन्द मन्दिर का दूसरा भाग अमूल्य और दुर्लभ ग्रन्थ सावित होगा।

कर्नलगंज इलाहाबाद की
भारत विख्यात श्रीमती यशोदादेवी का
स्त्रीशिक्षा पुस्तकालय

यशोदादेवी कृत स्त्रीशिक्षा की उपयोगी पुस्तकें

यदि आप अपने घर की स्त्रियों, पुत्रियों और पुत्र वधुओं को धार्मिक-गृहणी, आदर्श माता, सुशीला-वहू, चतुर-कन्या, वीर, विदुषी और पतिव्रता स्त्रियों का आदर्श बनाना चाहते हैं, तो श्रीमती यशोदादेवी कृत स्त्री-शिक्षा की कुल पुस्तकें या जिनकी जरूरत हो मंगाकर पढ़ाइये और सुनाइये स्त्री-उपयोगी कोई विषय ऐसा नहीं जिस विषय की पुस्तकें इन पुस्तकों में मौजूद न हों एक बार मंगाकर परीक्षा कीजिये।

श्रीमती यशोदादेवी ने स्त्री जाति के कल्याण के लिये उनमें धर्म भाव भरने के लिये स्त्रियों की आरोग्यता के लिये वर्षों तक अनेक वैद्यक ग्रन्थों और धार्मिक शास्त्रादि ग्रन्थों का मथन कर बड़े परिश्रम से इन पुस्तकों को तयार किया है।

दम्पति आरोग्य शास्त्र जीवन शास्त्र रतिशा

रतिक्रिया की वैद्यक विधि

असली कोकशास्त्र

सिर्फ़ प्रचार के लिये थोड़े समय तक

२) दो रुपया मूल्य का अमूल्य ग्रन्थ

१।-) एक रुपया एक आने में

इस ग्रन्थ के अधिक प्रचार के लिये मूल्य कम कर गया है क्योंकि रतिक्रिया की वैद्यक विधि न जानने से, अ रतिक्रिया करने से स्त्री पुरुष अनेक प्रकार के रोगों में फ हैं, सैकड़ा पीछे निन्नानवे स्त्रियां और पुरुष रोगी पाये जा श्रीमती यशोदादेवी ने इसे वैद्यकशास्त्र की खोज कर बना

इस पुस्तक को पढ़ सुनकर पुरुष रतिक्रिया की वैद्यक जानकर रतिक्रिया करने से स्त्री पुरुष दोनों, मनुष्य जीव सच्चा सुख प्राप्त करेंगे, कभी निर्बल न होंगे, स्वप्नदोष, प्र और नपुंसकता, गर्मी, सुजाक, प्रमेह आदि सब प्रकार से बचेंगे और आरोग्य, हृष्ट पुष्ट सुन्दर सन्तान उत्पन्न क

जिस असली कोकशास्त्र की पुरुषों के लिये अत्यन्त श्यकता थी परन्तु मिलना दुर्लभ था वही दुर्लभ ग्रन्थ तैयार है, शीघ्र ही मंगाकर इसे पढ़, सुनकर आरोग्यता करके मनुष्य जीवन का सच्चा आनन्द उठाइये।

मैनेजर स्त्रीशिक्षा पुस्तकालय कर्नलगंज, प्र